एग्री-क्लिनिक्स और एग्री-बिज़िनेस सेंटर्स (एसी व एबीसी) योजना

ग्रामीण भारत में 200 उद्यमशील कृषिउद्यमी

राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान (मैनेज)

(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार का संगठन)

राजेंद्रनगर, हैदराबाद – 500 030, तेलंगना राज्य, भारत

www.manage.gov.in

एग्री-क्लिनिक्स और एग्री-बिजिनेस सेंटर्स (एसी व एबीसी) योजना

ग्रामीण भारत में 200 उद्यमशील कृषिउद्यमी

राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान (मैनेज)

(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार का संगठन)

राजेन्द्रनगर, हैदराबाद - 500 030 तेलंगाना, भारत.

www.manage.gov.in

प्रकाशक
श्रीमती. वी. ऊषा रानी, भा प्र से
महानिदेशक
राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान (मैनेज)
(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार का संगठन)
राजेंद्रनगर, हैदराबाद - 500 030, तेलंगाना राज्य, भारत

संपादक
डॉ. सरवनन राज, निदेशक (कृषि विस्तार), मैनेज
श्रीमती. ज्योति सहारे, सलाहकार (प्रलेखन), एसी व एबीसी योजना, मैनेज

© मैनेज, 2019

हिंदी अनुवाद
डॉ. के. श्रीवल्ली, हिंदी अनुवादक, मैनेज

डिज़ाइन
सुश्री निहारिका लेंका

मैनेज सही स्वीकृति के स्रोत और कॉपीराइट धारक के रूप में व्यक्तिगत अध्ययन तथा गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए इस प्रकाशन के उपयोग, पुन:प्रकाशन और प्रसार को प्रोत्साहित करता है। इस पुस्तक का मूल अंग्रेजी भाषा में है अतः अधिक स्पष्टता हेतु अंग्रेजी पुस्तक को देखें।

वी. ऊषा रानी, भा प्र से
महानिदेशक, मैनेज

प्रस्तावना

जब हम उद्यमिता के बारे में बात करते हैं, तो हम हमेशा शहरी उद्यमियों को याद करते हैं जो या तो व्यापार या आईटी से संबंधित सेवा क्षेत्र से जुड़े हैं। हम अक्सर छोटे ग्रामीण उद्यमियों की उपेक्षा करते हैं, जो कृषि कार्य में पिछले और अगले कड़ी से जुड़े होते हैं तथा कृषि-उत्पादों में मूल्य संवर्धन करते हुए ग्रामीण युवाओं में रोजगार सृजित करते है। भारत सरकार का कृषि, सहकारिता और किसान कल्याण विभाग का उद्देश्य एग्री-क्लिनिक्स और एग्री-बिजिनेस सेंटर्स (एसी व एबीसी) योजना के माध्यम से कृषि में शैक्षिक पृष्ठभूमि रखने वाले ग्रामीण युवाओं को स्वयं का कृषि-उद्यम प्रारंभ करने के लिए प्रशिक्षण देना है तथा इस प्रकार किसानों की मदद करना है। ये उद्यमी किसानों को बेहतर आय के लिए योगदान देने के अलावा किसानों को विभिन्न सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार कर रहे हैं।

मैनेज ने देश भर से उद्यमिता में सफलता की 200 कहानियाँ एकत्रित की है, जो ग्रामीण युवाओं को कृषि क्षेत्र में उपलब्ध अवसरों के बारे में आशावादी तरीके से सोचने के लिए प्रेरित करेंगी। मैं सभी उद्यमियों की, उनकी मेहनत और नवाचार के लिए सराहना करती हूं, जिन्होंने अपने उद्यमों को उल्लेखनीय बनाया है। मैं इन उद्यमियों के विवरणों को संकलित करने के लिए डॉ. सरवणन राज और सुश्री ज्योति सहारे की भी सराहना करती हूं।

उषा रानी

(वी. ऊषा रानी)

विषयसूची

क्र.सं	कृषि बिजिनेस का नाम	इस प्रकृति की गतिविधि	कृषिउद्यमी का नाम	पृ.सं.
1	बागवानी उद्योग का प्रचार करने वाला टिशू कल्चर **ग्रीनो एग्रोटेक**	टिशू कल्चर केले की कृषि	श्री सीम्हाद्री राघवेंद्र अनंतपुर, आंध्र प्रदेश	1
2	बीज व्यपार **शांति एग्रोटेक**	सब्जियों के बीज का उत्पादन	श्री बी. नागेस्वर राव नंद्याल, आंध्र प्रदेश	2
3	मत्स्यपालन के क्षेत्र में महिला सशक्तीकरण **ब्युटी फिश फार्मिंग**	मत्स्यपालन	सुश्री विथिका हल्दर कांकेर छत्तीसगढ़	3
4	मशरूमिंग इनडोर इनकम **मोनीता मशरूम**	मशरूम फार्मिंग	सुश्री मोनिता केराम बलोड, छत्तीसगढ़	4
5	गाय के गोबर से मच्छर रिपेलेंट कॉयल **के.के. उत्पाद**	गाय के गोबर से मच्छर रिपेलेंट कॉयल	श्री निखिल प्रकाश कदम सोलापुर, महाराष्ट्र	5
6	अधिक अंडे देने वाले व्यावसायिक उपभेद **एम एम लेयर फार्मिंग**	लेयर फार्मिंग	श्री महेश मुकुंद पाटिल सांगली, महाराष्ट्र	6
7	सूअर के मांस (पोर्क) से शीघ्र मुनाफा **पिग कार्नर**	सूअर पालन	श्री अजिंक्य श्रीनिवास टिपुगड़े कोल्हापुर, महाराष्ट्र	7
8	ऑल टाईम काजू **स्नेह कैश्यू**	काजू प्रसंस्करण इकाई	श्री सांकेत दिलीप पुणालकर सिंधुदुर्ग, महाराष्ट्र	8
9	छोटे धारकों की आय में सब्जियों का योगदान **आर के एग्रोटेक**	सब्जियों की खेती तथा परामर्श	श्री राकेश केवट बिलासपुर, छत्तीसगढ़	9
10	पालतू जानवरों की देखभाल **वेट-फार्म**	पशुचिकित्सालय	डा.नीलेश एस. पटेल पंचमहल, गुजरात	10
11	स्वस्थ स्मूदीज़ **गब्बर जूस**	सॉफ्ट ड्रिंक (फल रस)	श्री हार्दिक एच. वछानी अहमदाबाद, गुजरात	11
12	मुर्गी पालन में युवाओं की निपुणता **योगदन एग्रीक्लिनिक व एग्रीबिजिनेस सेंटर**	मुर्गी पालन प्रशिक्षण केंद्र	श्री आशुतोष कुमार सिंह लखनऊ, उत्तर प्रदेश	12
13	फसल कटाई कर अन्न भंडारण **सल्वपेरुमाल धान काटने वाला**	धान काटने की कंबाइन मशीन किराए पर देना	श्री सेल्वपेरुमाल तिरुवन्नमलाई, तमिल नाडु	13

14	प्याज, खुशी के आंसू लाता **पद्मिनी बीज**	प्याज के बीज का उत्पादन	श्री प्रदीप रामदास मकोडे आशिर्वत, महाराष्ट्र	14
15	जैव-ईंधन, कोयले का विकल्प **हिंदुस्तान बॉयो-कोल**	जैव-ईंधन का उत्पादन	श्री स्वप्निल सतप्पा पाटिल कोल्हापुर, महाराष्ट्र	15
16	आवश्यक तेल सबके पास **मारुती फार्मा**	आवश्यक तेल	सुश्री ऐशवर्या जाधव कोल्हापुर, महाराष्ट्र,	16
17	सब्जियों से लाभ अर्जन **छत्रपति शेड नेट**	शेड नेट सब्जियों की बुआई तथा बिक्री	श्री राजेंद्र सदम काले जालना, महाराष्ट्र	17
18	लाभदायक केले का अर्थशास्त्र **सीमा बॉयोटेक**	टिशू कल्चर द्वारा केले के पौधों का उत्पादन तथा बिक्री	श्री विश्वास चवन कोल्हापुर, महाराष्ट्र	18
19	काली मिर्च के उत्पादन में वृद्धि **मोहन एंटरप्राइजेज़**	काली मिर्च प्रसंस्करण ईकाई	श्री मोहनराज.एम नमक्कल, तमिल नाडु	19
20	फूलों की व्यावसायिक खेती **रावलानाथ पॉलीहाउस**	गुलाब के फूलों की खेती	सुश्री शीतल दिलीप गौरव कोल्हापुर, महाराष्ट्र	20
21	झींगा हैचरी में सुधार करता पीसीआर जांच **एन के मेराईन पीसीआर प्रयोगशाला**	झींगा के बीज की जांच के लिए पीसीआर प्रयोगशाला	सुश्री के. निर्मला विल्लुपुरम तमिल नाडु	21
22	लैंडस्केपिंग भलाई की भावना को बढ़ाता है **मीडो गार्डनर्स फार्म**	नर्सरी व लैंडस्केपिंग	सुश्री के. कलादेवी व श्री एस वेणुगोपाल कोयंबटूर, तमिल नाडु	22
23	कृत्रिम बाड़े में मत्स्य पालन **जवारे फिश सीड फार्म**	मत्स्य हैचरी प्रशिक्षण केंद्र	श्री श्यामल महेंद्र जावड़े जलगांव, महाराष्ट्र,	23
24	कृषि कार्य को स्वचालित करती उपयोगकर्ता हितैषी मशीनें **काकड़े एग्रो उपकरण**	कृषि की मशीनों का निर्माण	श्री सुभाष नारायण काकडे सोलापुर, महाराष्ट्र	24
25	आहार में योजक से दुग्ध उत्पादन में बढोत्तरी **गणपती पशु आहार**	पशु आहार की तैयारि	श्री मनोज भरत गोरे सोलापुर, महाराष्ट्र	25
26	काजू लाता है समृद्धि **मिलिंद एग्रो प्रोडेक्सन**	काजू संस्करण ईकाई	श्री मिलिंद सखाराम पवार रत्नागिरी, महाराष्ट्र	26
27	मृदा परिक्षण **लक्ष्मई फाउंडेशन साइल एंड टेस्टिंग लेबोरेटरी**	मृदा व जल जांच प्रयोगशाला	श्री निखिल चावड़े अकोला, महाराष्ट्र	27
28	दुग्ध व्यापार **फॉर्च्यून मिल्क कलेक्शन सेंटर**	डेयरी व दूध संग्रहण केंद्र	श्री जाकिर करीम मुलानी सोलापुर, महाराष्ट्र	28

29	पैक करो, ले जाओ **रीगल पैकेजिंग**	पैकिंग बैग निर्माण की ईकाई	श्री रोहन शंकर अवघांड़े आमरावती, महाराष्ट्र	29
30	स्वास्थ्यवर्धक गुड़ **जेके जागरी यूनिट**	गुड़ उत्पादन	श्री सोहन वीर मुजफ्फरपुर, उत्तर प्रदेश	30
31	सूपर फूड स्पिरुलिना **नेट्रिन्स स्पिरुलाइफ़**	स्पिरुलिना उत्पादन	श्री मंदाड़ी वम्सी कृष्णा रंगा रेड्डी, तेलंगना	31
32	सौर सुरंग ड्रैय्यर (सुखाने वाली मशीन) **हाइजीनिक फिश ड्रैय्यर**	सोलार आधारित फिश ड्रैय्यर का उत्पादन	श्री संतोष शेखर मांडवकर रत्नागिरी, महाराष्ट्र	32
33	कोशकिट पालन से समृद्धि **कटारे रेशम उद्योग**	सेरीकल्चर	श्री आकाश बालासाहेब कटारे परभणी, महाराष्ट्र	33
34	प्रसंस्करण से सेल्फ लैफ में वृद्धि है **न्यू प्राइम एग्री./मार्केटिंग कं. सोसायटी**	फल संस्करण ईकाई	श्री केदार गणपत तांबे सिंधुदुर्ग, महाराष्ट्र	34
35	फसल के पोषण में संतुलन **प्रज बॉयोटेक**	जैविक खादों का निर्माण तथा पीजीआर	श्री महेश तुकाराम पाठक अहमदनगर, महाराष्ट्र	35
36	पालतू पशुओं की देखभाल **गोल्डन कोर्ड पशु चिकित्सालय**	पशुचिकित्सालय व परामर्श	डॉ. अंकुश अरोड़ा गांधी नगर, जम्मू	36
37	पशुधन की देखभाल **गेटवेल फार्मास्युटीकल्स**	पशु फार्मेसी व परामर्श	डॉ. फरहीन मुस्ताक बडगाम, जम्मू व काश्मीर	37
38	सफाई से दूध दुहना **पाटीदार डेयरी**	डेयरी फार्मिंग	श्री भूपेंद्र पाटीदार खरगोन, मध्य प्रदेश	38
39	स्वाद के लिए मसाले **आर्य मसाला उद्योग**	मसालों का प्रसंस्करण	श्री भूपेंद्र आर्य खरगोन, मध्य प्रदेश	39
40	बकरी पालन क्षेत्र का व्यवसायीकरण **गोट वाला फार्म**	बकरी पालन व प्रशिक्षण केंद्र	श्री दीपक पाटीदार धार, मध्य प्रदेश	40
41	वर्ष भर अपनी फसल काटें **ऋषु एग्री-टेक**	संरक्षित सब्जियों की खेती	श्री ऋषु शेखर सिंह भीवानी, हरियाणा	41
42	पर्यावरण-हितैषी पेस्ट ट्रैप **कृषि विकास फाउंडेशन**	एनजीओ जैविक फार्मिंग प्रशिक्षण केंद्र	श्री सरदार सिंह करनाल, हरियाणा	42
43	मधुमक्खी पालन से आय **रविंदर बी कीपिंग**	मधुमक्खी पालन तथा परामर्श	श्री रविंदर कुमार यमुना नगर, हरियाणा	43
44	डेयरी से मुनाफा **श्री बालाजी मिल्क डेयरी**	मूल्य संवर्धित डेयरी उत्पाद	श्री मोहनलाल कैथल, हरियाणा	44
45	गुणवत्ता वाले बीज गुणवत्ता वाले पैदावार **यूनीक हाईब्रिड सीड्स** प्राइवेट लिमिटेड	बीज उत्पादन व प्रसंस्करण	श्री हरजीत सिंह ग्रेवाल हापुर, उत्तर प्रदेश	45

46	पालतू पशुओं के लिए ऑनलाइन हेल्पलाइन डेस्क **टार्ज़ू पेट कैर**	ऑनलाइन पेट सेवाएं	डॉ. देबासीस दास भुबनेश्वर, ओड़ीसा	46
47	निर्यात योग्य केला **कटेवाड़ी निर्यात योग्य केला**	केले का निर्यात	श्री घूले यतीन बापूराव पूणे, महाराष्ट्र	47
48	गाय के गोबर के उत्पादों का डी-रूटिंग **यशवंत उत्पाद**	पंचगाव्य उत्पाद	श्री स्वप्निल कुंभार सतारा, महाराष्ट्र	48
49	चारे के लिए बीज **गो ग्रीन फार्म**	सब्जी की खेती व विपणन	श्री प्रशांत राजबंशी माल्दा, पश्चिम बंगाल	49
50	दरवाजे पर पालतू जानवरों की देखभाल **नंदिनी पशु चिकित्सालय**	पशु चिकित्सालय	डॉ. घाना कांत डोले धेमजी, असम	50
51	समृद्धि के लिए मूल्य संवर्धन **हिमालयन महरानी**	वर्मीकॉपोस्टिंग ईकाई व जैविक उत्पाद की बिक्री	श्री चितपाल सिंह हर्केशनगर, नई दिल्ली	51
52	कोई भी भूमि कृषि योग्य है **किसान विद्यालय**	एग्री-परामर्श (2 लाख फल देने वाले पेंड़ लगाए गए)	श्री संतोष कुमार सिंह अंबेडकरनगर नगर, उत्तर प्रदेश	52
53	गुणवत्ता वाले पौधों की खेती **जय भारत नर्सरी**	नर्सरी व लैंडस्केपिंग	श्री बंस गोपाल सिंह आजमगढ़, उत्तर प्रदेश	53
54	दरवाजे पर (डोरस्टेप) व्यावहारिक कृत्रिम गर्भाधान सेवाएं **पशुधन कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र**	पशु चिकित्सालय	डॉ. कमलेश बहादुर सिंह प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश	54
55	अपने चूजों का उत्पादन करें **आल्पाइन हैचरीज़ प्राइवेट लिमिटेड**	पॉल्ट्री हैचरी	डॉ. बितुल बरुआ व डॉ. ख्सिरूद शैकिया गुवाहाटी, असम, भारत	55
56	बीज से लाभार्जन **समृद्धि बीज**	सब्जी बीज उत्पादन	श्री नीतेश कुमार मौर्य वाराणसी, उत्तर प्रदेश	56
57	प्रतिदिन अंडे खाएं **प्रभुराज लेयर फार्मिंग**	लेयर फार्मिंग	श्री प्रभुराज सिंह कुशीािनगर, उत्तर प्रदेश	57
58	खाद बनाने वाले कृमि **भगवान-वर्मीकॉपोस्ट इकाई**	जैविक फार्मिंग को बढ़वा	श्री प्रवीण श्रीवास्तव वाराणसी, उत्तर प्रदेश	58
59	लाभदायक सूअर फार्म **बेकर पिग फार्म**	सूअर फार्मिंग	श्री नितिन बारकर इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश	59
60	दरवाजे तक पशुधन सेवाएं **एनीमल प्लैनट**	पशु चिकित्सालय	डॉ. जे. टीना मोनीषा मदुरै, तमिल नाडु	60
61	सामूहिक रूप से व्यवसाय के विकास की शक्ति **सीसीपीए**	नारियल के चिप्स का बनाना	श्री जी.कृष्णकुमार पोल्लाची, तमिल नाडु	61
62	हैचिंग कार्प **शुभम फिश हैचरी**	फिश हैचरी	श्री बालसुब्रमण्यिन यू. तिरुवरुर, तमिल नाडु	62

63	अनिवार्य तेलों में उपचार करने की शक्ति **श्री वेंकट राघवेंद्र इंडस्ट्रीज़**	आवश्यक तेल	श्री रवी तेजा लबूरी हैदराबाद, तेलंगाना	63
64	पेंड़ पर सुरक्षित चढ़ें **पाम ट्री क्लाइंबर**	ट्री क्लाइंबर	श्री वाई. वेंकटेश गौड हैदराबाद, तेलंगाना	64
65	जैविक उत्पाद के निर्यात का प्रोत्साहन **एसएनवो उद्यम**	जैविक दूध उत्पादन, बिक्री, निर्यात	श्री ओमवीर सिंह मेरठ, उत्तर प्रदेश	65
66	किसानो का सशक्तीकरण करता मधुमक्खी पालन **मधुपालन सेंटर**	मधुमक्खी पालन	श्री गजेंद्र सिंह औरैया, उत्तर प्रदेश	66
67	सूक्ष्मजीवियों से फसल की पैदावार में तेजी **जैविक कृषि उत्पादन**	जैविक खाद का निर्माण	श्री रवीश राव सिंह औरैया, उत्तर प्रदेश	67
68	सूअर पालन को भढावा **सिंह पिग फार्म**	सूअर पालन	श्री नागेंद्र प्रताप सिंह इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश	68
69	खेती के इर्द-गिर्द यात्रा का आयोजन **गरवा एग्रो-टूरिज्म**	एग्रो-पर्यटन	श्री सचिन कमलाकर कारेकर रत्नागिरी, महाराष्ट्र	69
70	गुणवत्ता पूर्ण पौधों के लिए पौधशाला निर्माण **ग्रीन वर्ल्ड नर्सरी**	पौधशाला	श्री समीर पिंगले रायगढ़, महाराष्ट्र	70
71	डेयरी के बारे में **झोर दूध डेयरी**	दूध संग्रहण व डेयरी	श्रीमती वैभवी रामचंद्र यडगे पूणे, महाराष्ट्र	71
72	सजावटी मछली पालन-ग्रामीण युवाओं के उभरता व्यवसाय **प्रसिक एक्वा**	सजावटी मछलियों की हैचरी	श्री विनोद बाबूराव सावंत रत्नागिरी, महाराष्ट्र	72
73	एग्री-प्लास्टिक एक आशाजनक उत्पाद है **रुद्रानी सिंचाई और कृषि सेवाएं**	प्लास्टीकल्चर व प्रिसिसन फार्मिंग	श्री कोणार्क भीमराव ठाकुर जलगांव, महाराष्ट्र	73
74	खीरा उत्पादन से लाभ **मैक्स एग्रीटेक प्राइवेट लिमिटेड**	खीरा निर्यात	श्री डी. इन्बेसेकरन शिवगंगा, तमिल नाडु	74
75	जल संरक्षण से जीवन का संरक्षण करें **यूनिटेक इरगेशन सिस्टम**	सूक्ष्म-सिंचाई व्यवस्था	श्री प्रवीन बिभीषण चवान सोलापुर, महाराष्ट्र	75
76	मसाले: प्रकृति की प्राकृतिक दवाइयां **सावी नैचुरल फार्मिंग प्राइवेट लिमिटेड**	मसाला प्रसंस्करण ईकाई	श्री पुरुषोत्तम जामजी भूडे नागपुर, महाराष्ट्र	76
77	बांस एक उत्कृष्ट सफाई कामगार है **शिवशंभु एग्रो सर्च**	बांस की खेती तथा परामर्श	श्री नीलेश दत्तत्रै नांद्रे नासिक, अहमदनगर	77

78	मिट्टी जीव विज्ञान से सराबोर **पी के ऑर्गनिक व फर्टिलाइज़र**	जैविक खाद तथा सूक्ष्म पोषक तत्वों का निर्माण	श्री कृशिकेश सुनील पाटिल जलगांव, महाराष्ट्र	78
79	अपने मिट्टी के स्वास्थ्य की जाँच करें **बयोक्राप्स एग्रो इंडस्ट्रीज़**	मृदा जांच तथा फसल- सलाहकार	श्री राजू मुरती लांबे कोल्हापुर, महाराष्ट्र	79
80	प्रति लीटर दूध का मुनाफा **श्री कृष्णा डेयरी फार्म**	डेयरी फार्मिंग व परामर्श	श्री रविंद्र पुरषोत्तम भोगे जलगांव, महाराष्ट्र	80
81	काजू द्वारा अपनी आय को तिगुना करें **नेरूरकर कैश्यु इंडस्ट्री**	काजू संस्करण ईकाई	सुश्री आश्रुता राजाराम नेरुकर सिंधुदुर्ग, महाराष्ट्र	81
82	हरियाली का तीखा पोषक तत्व **सरबियोजिवन इंडस्ट्री**	जैविक खाद का निर्माण	श्री इनामदार शेख मोहम्मद सलीम सरदार अहमदनगर, महाराष्ट्र	82
83	बकरियों के पालन से लाभ **साई गोट फार्म**	बकरी फार्मिंग	डॉ. रघुनाथ रेवनाथ पगिरे अहमदनगर, महाराष्ट्र	83
84	छोटे पौधों से धन की प्राप्ति **मैत्री नर्सरी**	वानिकी नर्सरी	सुश्री ममता शिरके रत्नागिरी, महाराष्ट्र	84
85	दालों का मिल्लिंग **बलिराज दाल मिल**	दलहन प्रसंस्करण ईकाई	श्री दयानंद गोविंदराव हंपाले नांदेड, महाराष्ट्र	85
86	मुर्गी पालन से लाभ **जगताप लेयर्स फार्म**	लेयर फार्मिंग	श्री राजेंद्र रामचंद्र जगताप पूणे, महाराष्ट्र	86
87	मिट्टी में अति उर्वरण पर रोक **सहयाद्री बयो-एनलिटिकल लैब**	मृदा व जल जांच प्रयोगशाला	सुश्री सारिका दौलत पाटिल नासिक, महाराष्ट्र	87
88	अपने पालतू जानवरों की देखभाल करने वाले डोरस्टेप वेट **राधा एग्रो वेट**	पशु आहार का व्यापार	श्री निरंजन मधुकर तयाडे आशीर्वती, महाराष्ट्र	88
89	जावा बेर से मधुमेह में कमी **मायुरेश फुड**	फल संस्करण ईकाई	श्री हेमंत नंदकिशोर वल्वालकर सिंधुदुर्ग, महाराष्ट्र	89
90	किशमिश: ऊर्जा का एक सघन स्रोत **मां बेदाना प्रासेसिंग**	किसमिस संस्करण ईकाई	श्री अब्दुलवाहेब जहांगीर देवर्षि सांगली, महाराष्ट्र	90
91	गुणवत्ता के कारण बीजदर मे कमी **कुलकर्णी सीड्स**	सब्जी बीज उत्पादन	श्री महेश मोहन कुलकर्णी सांगली, महाराष्ट्र	91

92	600 ससीले एरिल्स की कहानी **सिद्धनाथ अनारदाना प्रासेसिंग यूनिट**	अनार बीज संस्करण ईकाई	श्री स्वप्निल शिवाजी माली सोलापुर, महाराष्ट्र	92
93	मिट्टी की उर्वरता की पुनः प्राप्ति **विराज ऑर्गनिक**	जैविक खाद का निर्माण	श्री बालकृष्ण सदाशिव हसुर जयसिंगपुर, महाराष्ट्र	93
94	लिली फूलों से आय में होगी सालभर वृद्धि **तवाडे लिली फार्म**	फ्लोरीकल्चर (लिली)	श्री सहदेव आत्माराम तावड़े सिंधुदुर्ग, महाराष्ट्र	94
95	लाभ के लिए मवेशी पालन **नीलकांतेश्वर डेयरी**	डेयरी फार्मिंग	श्री नीलेश सदाशिव पाटिल जलगांव, महाराष्ट्र	95
96	कस्टम हायरिंग केंद्र एक बढ़ती प्रवृत्ति **रमेश मिनि मशीनरी**	कस्टम हॉयरिंग केंद्र	श्री रमेश आनंद पाटिल कोल्हापुर, महाराष्ट्र	96
97	ग्रामीण पर्यटन को बढ़ाना **एनवी ईको फार्म**	एग्रो- पर्यटन	श्री महेश के. पाटिल मीरमर, गोवा	97
98	प्रतिस्पर्धी बाजार के लिए नवोन्मेषी इनपुट **आयडियल एग्री सर्च**	जैविक खाद, सूक्ष्म पोषकतत्व का निर्माण	श्री प्रकाश रघुनाथ अटाडे सांगली, महाराष्ट्र	98
99	पौल्ट्री एक व्यवहार्य व्यवसाय कभी भी किसी भी दिन **माने पौल्ट्री फार्म**	ब्रायलरपॉल्ट्री फार्मिंग	श्री अनिल अशोक माने सांगली, महाराष्ट्र	99
100	पशुचिकित्स के लिए वन स्टॉप **भोले का पेट केर क्लिनिक**	पशु चिकित्सालय	डॉ दिलीप आर. भोले सांगली, महाराष्ट्र	100
101	चारा गोले बनाना **आनंदराज एग्रो प्रोसेसिंग**	पशु चारा प्रसंस्करण इकाई	श्री अरविंद बाबासाहेब गडाडे सांगली, महाराष्ट्र	101
102	छोटे किसान बड़ी मशीनों को किराए से ले रहे हैं **जय मल्हार फार्म मशीनरी**	जय मल्हार फार्म मशीनरी	श्री सुरेश पाटालू कोडुलकर सांगली, महाराष्ट्र	102
103	छोटे अंकुर करोड़पति बनाते हैं **प्रथमेश रोपवाटिका**	संरक्षित वनस्पति नर्सरी	श्री कुणाल आनंद माली कोल्हापुर, महाराष्ट्र	103
104	मधुमक्खी पालन एक स्थायी आजिविका है **विद्यासागर मधुमक्खी पालन और कृषि परामर्श**	मधुमक्खी पालन और कृषि-परामर्श	श्री विद्यानंद सुखराम अहिर जलगांव, महाराष्ट्र	104
105	बकरी: दूध, मांस और फाइबर की प्राप्ती **जाधव बकरी फार्म**	बकरी पालन	श्री स्वप्निल राजेश जाधव सतारा, महाराष्ट्र	105

106	फलदार पेड़ों की बढ़ती आयु को रोकने का कायाकल्प **आराध्या नर्सरी**	फल नर्सरी	श्री सुंदर जनार्दन ज़ोर सिंधुदुर्ग, महाराष्ट्र	106
107	डेरी एक सार्वभौमिक कृषि उत्पादन है **तुषार डेरी और वर्मीकंपोस्ट यूनिट**	डेरी एवं वर्मीकंपोस्ट यूनिट	श्री तुषार तानाजी गायकवाड़ सतारा, महाराष्ट्र	107
108	स्वस्थ पक्षियों से अधिक लाभ **श्री साई पौल्ट्री फार्म**	ब्रायलर पौल्ट्री फार्मिंग	श्री रंजीत मनोहर पोमाने पूणे, महाराष्ट्र	108
109	मुनाफा पौल्ट्री को प्रोत्साहित करता हैं **राहुल प्रकाशकर पौल्ट्री**	मुर्गी पालन	श्री राहुलकुमार अशोक प्रकाशकर नंदुरबार, महाराष्ट्र	109
110	नीम सीड केक से मृदा का बनावट **विजिलेंट एग्रो**	नीम बीज सीड निर्माता	श्री रोहित सुधाकर पाटिल धुले, महाराष्ट्र	110
111	मृदा विश्लेषण कम से कम वर्ष में एक बार या हर मौसम में **एग्रिकोस बायोटेक मृदा परीक्षण प्रयोगशाला**	मृदा विश्लेषण प्रयोगशाला	श्री विवेक राजाराम पाटिल नासिक, महाराष्ट्र	111
112	छोटे अंकुरों के लिए देखभाल की आवश्यकता है **मधुरम नर्सरी**	वनस्पति नर्सरी	श्री योगेश विजय पाटिल जलगांव, महाराष्ट्र	112
113	लाभ के लिए पक्षियों का पालन कर रहे हैं **स्वाभिमान पौल्ट्री**	मुर्गी पालन	श्रीमती दीपाली हरिभाऊ बेलोट अहमदनगर, महाराष्ट्र	113
114	मृदा पोषक फसलों को बढ़ाना **हाईरिंग सेंटर**	जेसीबी, कस्टम हायरिंग केंद्र	श्री मोहित विजय गिरि नागपुर, महाराष्ट्र	114
115	नीम प्राकृतिक रूप से कीटनाशक है **काड्लास ऑइल मिल**	नीम और करंज तेल निष्कर्षण	श्री प्रशांत एन. वाघमोडे सोलापुर, महाराष्ट्र	115
116	लाभ के लिए अकुरों की खुदरा बिक्री **नर्सरी महाकाली**	नर्सरी	श्री तापुभाई जी परमार देवभूमी द्वारका, गुजरात	116
117	मांस के लिए चिकन **वंड्रे पौल्ट्री फार्म**	ब्रायलर पौल्ट्री फार्मिंग	श्री किरन कुमार रामाजी वंड्रे नागपुर, महाराष्ट्र	117
118	ब्लैक गोल्ड से लाभ **कृषि चैतन्य गंडुलखत**	वर्मी-कम्पोस्ट यूनिट	श्री बाबासाहेब भउसाहेब ताम्बे अहमदनगर, महाराष्ट्र	118
119	ऑर्गेनिक्स: मिट्टी को जीवंत रखना **भद्रा एग्रो कॉर्पोरेशन**	जैव उर्वरकों और सूक्ष्म पोषक तत्वों का विनिर्माण	श्री अश्विन कुमार गंगाधर कल्लावे यवतमाल, महाराष्ट्र	119

120	जैविक बीज उपचार से अंकुरण में बढ़ोत्तरी **जेन एग्रोटेक**	प्लांट ग्रोथ रेगुलेटर का विनिर्माण	श्री अतुल कछरूजी लोखंडे नागपुर, महाराष्ट्र	120
121	बकरी गरीब आदमी की गाय है **देसाले बकरी फार्म**	बकरी पालन	श्री अभय प्रभाकर देसले धुले, महाराष्ट्र	121
122	किसान की आय सुरक्षित करने के लिए दूध संग्रह केंद्र **वाजे डेयरी फार्म**	डेरी और दूध संग्रह केंद्र	श्री महेश बाबन वाजे सांगली, महाराष्ट्र	122
123	सभी के लिए लाभदायक पौल्ट्री **अंबिका पौल्ट्री**	मुर्गी पालन	श्री विद्यानंद सूर्यकांत खांडरे सिंधुदुर्ग, महाराष्ट्र	123
124	स्वस्थ बीजों से अधिक फलों की प्राप्ति **गावेड़ नर्सरी**	सजावटी नर्सरी	श्री राघो आत्माराम गावडे सिंधुदुर्ग, महाराष्ट्र	124
125	पक्षियों की मृत्यु दर को कम करने वाली संतुलित फ़ीड **लोधी पौल्ट्री फार्म**	ब्रायलर पौल्ट्री फार्मिंग	श्री पीतांबर पन्ना लाल लोधी नांगल्डाका, छत्तीसगढ़	125
126	कम से कम निवेश से होने वाली आय **किसान मितान मशरूम प्रोडक्शन हाउस**	मशरूम की खेती (सीप)	श्री तोशन कुमार सिन्हा धमतरी, छत्तीसगढ़	126
127	तमिलनाडु में तेजी से बढ़ता हुआ कुक्कुट पालन **जे. आर. पौल्ट्रीज़ एण्ड जे. आर. वेट सेंटर**	मुर्गी पालन	डॉ. जे. जयबलान कांचीपुरम, तमिलनाडु	127
128	ग्रीन बिजनेस पर्यावरण सुरक्षा लाता है **पी एंड जी एग्रो इंडिया**	जैव उर्वरकों और पीजीआर का विनिर्माण	श्री राजकुमार मुरलीधर पुराद कोल्हापुर, महाराष्ट्र	128
129	अपनी मिट्टी का परीक्षण मौसम पूर्व ही करें **शिवराज हंस माटी परीक्षण केंद्र**	मृदा परीक्षण प्रयोगशाला	श्री शिवराज पोपटराव कटकर सतारा, महाराष्ट्र	129
130	मशरूम से बढ़ती आय **प्रशांत मशरूम**	सीप मशरूम की खेती	श्री प्रशांत गोविंद जम्भुलकर नागपुर, महाराष्ट्र	130
131	माइसेलियम से बढ़ता लाभ **एस.के. मशरूम फार्म**	बटन मशरुम	श्री ऋषभ पांडे सीतापुर, उत्तर प्रदेश	131
132	सूअर पालन ग्रामीण भारत में उभरता हुआ व्यवसाय है **श्री गंगा राम सूअर पालन केंद्र**	सूअर पालन	श्री योगेश कुमार लखीमपुर खेरी, उत्तर प्रदेश	132
133	सीमाओं को पार करती कोटगिरी गोल्ड चाय **विष्णु गणेशन इंडस्ट्री**	चाय प्रसंस्करण इकाई	श्री आर. गणेश कोयंबटूर, तमिलनाडु	133

134	पशुधन राशन को संतुलित रखना **फ़ीड मिल**	पशु आहार का विनिर्माण	डॉ. पी. जयावेल नमक्कल, तमिलनाडु	134
135	दोहरे लाभ के लिए डेरीरकब-पालन **क्रांति डेयरी और बकरी फार्म**	डेयरी और बकरी पालन	श्री रवि शंकरराव उकंडे यवतमाल, महाराष्ट्र	135
136	अंडों से लाभ **दामोदरन पौल्ट्री फार्म**	लेयर फार्मिंग	श्री एम. दमोदरन नमक्कल, तमिलनाडु	136
137	मिट्टी को संशोधित करे और पोषक तत्वों को बनाए रखें **सिद्धराम कृषि भंडार**	जैव उर्वरकों और पीजीआर का विनिर्माण	सुश्री सोनाली चंद्रकांत जाधव सांगली, महाराष्ट्र	137
138	मशीनरी किराए पर देकर पैसा बना रहे है **एस.बी. फार्म मशीनरी सेवाएँ**	कस्टम हायरिंग केंद्र	श्री संजय मारुति भोंग पूणे, महाराष्ट्र	138
139	जैविक चारा जैविक रूप से उगाएं **जैविक गेहूं**	जैविक गेहूं का उत्पादन	श्री अरविंदर कुमार मेरठ, उत्तर प्रदेश	139
140	अधिक पक्षी अधिक मार्जिन **भवानी पौल्ट्री फार्म**	मुर्गी पालन	श्री गिरीश वामनराव दलवी नागपुर, महाराष्ट्र	140
141	ट्रेडिंग ऑर्गेनिक्स **श्री शक्ति एग्रो ट्रेडर्स**	जैव उर्वरकों और कीटनाशक का विनिर्माण	श्री ए. गोविंदराजन सलेम, तमिलनाडु	141
142	हरियाली पसंद करने वालों के लिए जैविक कीटनाशक **सन एग्रो केमिकल्स**	जैव उर्वरकों का विनिर्माण	श्री वी. उदयकुमार सेलम, तमिलनाडु	142
143	बूँद-बूँद अधिक फसल **चवाण ड्रिप एग्रो केयर**	सिंचाई का व्यापार	श्री युवराज दगड़ू चवाण कोल्हापुर, महाराष्ट्र	143
144	गुड़ सा मीठा पैसा **क्रॉप एग्रो एंटरप्राइज**	सिंचाई का व्यापार	श्री प्रतीक भीमराव गोनुगडे कोल्हापुर, महाराष्ट्र	144
145	जैविक खाद्य पदार्थ ऑनलाइन खरीदें **एग्रिकार्ट को**	जैविक उत्पादों की ऑनलाइन बिक्री	श्री राकेश सिंदगी दारवाड़, कर्नाटक	145
146	महिला उद्यमी के लिए सतत डेयरी **पाटिल डेरी फार्म**	दूध उत्पादन	श्रीमती शुभांगी भास्कर पाटिल कोल्हापुर, महाराष्ट्र	146
147	भारत में हरियाली **निसार्गा रोप वाटिका**	नर्सरी और भूनिर्माण	श्री सिद्धेश्वर भालचंद्र बारबड़े सोलापुर, महाराष्ट्र	147
148	बकरी पालन से आय **ब्राउजिंग गोट फार्म**	बकरी पालन	श्री शांतिपाल आनंद सोन्यून बुलढाणा, महाराष्ट्र	148
149	गोल्डेन मधुमक्खियों द्वारा मुनाफा **जे के एग्रो**	मधुमक्खि पालन और परामर्श	श्री जय कुंवर श्योराण करनाल, हरियाणा	149

150	शाकाहारी पौधे विविधता सिखाते हैं **भाई फार्म और नर्सरी**	नर्सरी, लैंडस्केपइंग	श्री सुनील कुमार करनाल, हरियाणा	150
151	मशरूम से ग्रामीण आजीविका में मजबूती **सरवान एमएस फार्म**	बटन मशरूम की खेती	श्री सरवन कुमार सोनीपत, हरियाणा	151
152	बकरियों के व्यापार से आय **शिरकर एग्रो टेक**	बकरी का व्यापार	श्री अमोल गंगाराम शिरकर रत्नागिरी, महाराष्ट्र	152
153	पशुचिकित्सा सेवाएं पशुओं के स्वास्थ्य में सुधार **शुभम हेल्थ केयर**	पशु आहार के निर्माता	श्री ब्रह्मपाल सिंह करनाल, हरियाणा	153
154	विकास के लिए फ़ीड **पर्ल एग्रीफीड स्पॉट**	पशु आहार का व्यापार	डॉ. मुदासिर रशीद गांदरबल, जम्मू और कश्मीर	154
155	पशु चिकित्सा सेवाओं के लिए वन स्टॉप सोलुशन **स्काईलाइन न्यूट्रिशन (प्र.) लिमिटेड**	पशु चिकित्सक फ़ीड और खनिजों का विनिर्माण	डॉ. अजय कुमार तोमर करनाल, हरियाणा	155
156	अंकुरों से समय पर प्राप्त आय **विश्वसनीय एग्रीक्लिनिक और नर्सरी यूनिट**	सब्जी की खेती	श्री इंद्र राज जाट जयपुर, राजस्थान	156
157	एपिल से हुआ लाभ **बिग फार्मर**	एप्पल गार्डन के लिए इनपुट्स	श्री मीर गोहवार श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर	157
158	मसालों के लिए मूल्य वर्धित विस्तार सेवाएं **श्रावणी एग्रो बिजनेस सेंटर**	हल्दी फसल पर परामर्श	श्री सचिन मलकर अमरावती, महाराष्ट्र	158
159	जेसीबी: भारी श्रम इनपुटों का प्रतिस्थापना **ज्योतिर्लिंग फार्मर्स मशीनरी**	जेसीबी कस्टम हायरिंग सेंटर	श्री महेंद्र मारुति मोहिते सातारा, महाराष्ट्र	159
160	इनपुट सहित कृषि सेवाओं के साथ कृषि का व्यवसायीकरण **रमन बिहारी कृषि व्यवसाय केंद्र**	कृषि कंसल्टेंसी	श्री मंगेश घनश्याम रोडजे अमरावती, महाराष्ट्र	160
161	कृषि उत्पादों में मूल्य जोड़ के साथ लाभप्रदता बढ़ाना **सेजल खाद्य पदार्थ**	फल प्रसंस्करण इकाई	श्री सुनील कुमार राठी करनाल, हरियाणा	161
162	डायरी में लाभप्रदता और स्थिरता **परिश्वंता डेरी फार्म**	दूध उत्पादन	श्री प्रद्युम्न उगर बेलगाम, कर्नाटक	162
163	केले के विकास पर सूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रभाव **जैन बायोसाइंस प्रा. लिमिटेड**	सूक्ष्म पोषक तत्वों का विनिर्माण	श्री सुमित किशोर सांघवी जलगांव, महाराष्ट्र	163

164	खिलते फूलों सी सफलता **महेश फ्लोरिकल्चरल और एग्रों सेंटर**	ओपन फील्ड फ्लोरीकल्चर	श्री महेश वसंत रंडेले जलगाँव, महाराष्ट्र	164
165	स्वस्थ चिकन आय का स्रोत **गोराइन पौल्ट्री**	मुर्गी पालन	श्री महेश्वर गोराइन पुरुलिया, पश्चिम बंगाल	165
166	स्वस्थ जीवन का मूल मंत्र जैविक विकास करें **एग्री-क्लिनिक एंड एग्री-बिजनेस पौरपुर**	कृषि कंसल्टेंसी	श्री रामेश्वर सिंह ज्ञानपुर भदोही, उत्तर प्रदेश	166
167	डेयरी में आावश्यकता आधारित प्रशिक्षण **चौधरी डेयरी**	डेयरी और प्रशिक्षण केंद्र	श्री मनीष चौधरी शामली, उत्तर प्रदेश	167
168	वर्मीकम्पोस्टिंग के साथ डेयरी लाभदायक ग्रामीण व्यवसाय है **सोनभद्र डेयरी फार्म**	दूध उत्पादन	श्री भानु भास्कर सिंह सोनभद्र, उत्तर प्रदेश	168
169	छोटे किसानों को सशक्त बनाने वाला वर्मीकम्पोस्टिंग **नेशनल एग्रिक्लिनिक्स एवं एग्रिबिजिनेस सेंटर्स**	कृषि कंसल्टेंसी	श्री रंजीत कुमार शुक्ल गोंडा, उत्तर प्रदेश	169
170	मछली पालन से पैसा कमाएं **सोनकुसरे फिशरीस**	मछली पकड़ना	श्री संजय रामदासजी सोनकुसरे गढ़चिरोली, महाराष्ट्र,	170
171	मैरीगोल्ड साल भर में पैसे कमाते हैं **एग्रीक्लिनिक्स और एग्रीबिजनेस सेंटर**	मैरीगोल्ड नर्सरी	श्री रमेश कुमार पटेल वाराणसी, उत्तर प्रदेश	171
172	स्वच्छ ऊर्जा हरित ऊर्जा **रिशिका एग्रीक्लिनिक्स व एग्रीबिजनेस सेंटर**	कृषि परामर्श	श्री शंकषर्न शाही देवरिया, उत्तर प्रदेश	172
173	छोटे किसानों के लिए कृषि उपकरणों का केंद्र **अवधेश कस्टम हायरिंग सेंटर**	कस्टम हायरिंग सेंटर	श्री अवधेश कुमार अलीगढ़, उत्तर प्रदेश	173
174	एडवांस तकनीक से बहु-आयामी डेयरी व्यवसाय का अनुकूलन **पंच कृष्ण डेयरी फार्म**	डेयरी पालन	श्री दीपक कैचेश्वर लुटे अहमदनगर, महाराष्ट्र	174
175	पोल्ट्री ग्रामीण युवाओं को उद्यमी में बदल देता है **अंजनी पोल्ट्री फार्म और कंसल्टेंसी**	पौल्ट्री फार्मिंग और परामर्श	श्री पवन शंकरराव गजबे नागपुर, महाराष्ट्र	175

176	ग्रामीण मुर्गीपालन से प्रवास में कमी **उत्कर्ष पोल्ट्री फार्म और कंसल्टेंसी**	ब्रायलर पौल्ट्री फार्मिंग	श्री जोतीराम भगवान यादव कोल्हापुर, महाराष्ट्र	176
177	मशरूम की खेती ग्रामीण युवाओं को आकर्षित करती है **उमा मशरूम खेती**	मशरूम की खेती	श्री रमेश कुमार गुप्ता पूर्वी चंपारण जिला, बिहार	177
178	फार्म मशीनरी के लिए हब बनाना **जय श्री दादाजी एंटरप्राइज**	कस्टम हायरिंग सेंटर	श्री प्रदीप भगीरथ यादव नागपुर, महाराष्ट्र	178
179	डेयरी मेकिंग इंडिया **समर्थ डेयरी**	दूध की डेयरी और खुदरा बिक्री	श्री अजिंक्य शिरीषकुमार नाइक ठाणे, महाराष्ट्र	179
180	भारत में बकरी के मांस की मांग बढ़ रही है **बलिराजा बकरी फार्म**	बकरी पालन	श्री भरत पद्माकर भुटेकर जालना, महाराष्ट्र	180
181	भूमिहीन ग्रामीण युवाओं के लिए लाभदायक डेयरी **गुरुकृपा दुग्ध डेयरी**	दूध संग्रहण केंद्र	श्री हर्सल पाटिल बुल्धना, महाराष्ट्र	181
182	ड्राइवर बनता है मालिक **मोर एग्री फार्म**	कस्टम हॉयरिंग केंद्र	श्री किरण तानाजी मोरे कोल्हापुर, महाराष्ट्र	182
183	ग्रामीण भारत मे मुर्गीपालन एक उभरता हुआ व्यवसाय **श्री बालाजी एग्रोटेक फारम**	ब्रायलर पॉल्ट्री फार्मिंग	श्री सुधीर रामेशराव वडियाकर नागपुर, महाराष्ट्र	183
184	मुर्गीपालन उन्हे रोल मॉडल बनाती है **मोहित पौल्ट्री फार्म**	ब्रायलर पॉल्ट्री फार्मिंग	श्री सदानंद सिवदासजी नटकर नागपुर, महाराष्ट्र	184
185	सफलता के बीज बोना **श्री स्वामी समर्थ रोप वाटिका**	शुगरकेन सीडलिंग नर्सरी	श्री शिवाजी अकरम पाटिल कोल्हापुर, महाराष्ट्र	185
186	श्रम को कम करने वाली लागत को बचने वाली गण विशिष्ट मशीनरी **मौली फार्म सेंटर**	कस्टम हॉयरिंग केंद्र	श्री संजय महादेव वडगांवकर कोल्हापुर, महाराष्ट्र	186
187	डेयरी भरोसेमंद ग्रामीण उद्यम है **श्री बलिराज डेयरी फार्म**	डेयरी व दूध संग्रहण केंद्र	श्री प्रकाश जयसिंह सावंत कोल्हापुर, महाराष्ट्र	187
188	बिना जुताई के गेहूं के किसानों की आमदनी में वृध्दी **श्रीवास्तव एग्री-क्लिनिक**	जे टी सीड ड्रिल	श्री आशुतोष श्रीवास्तव प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश	188

189	आजीविका के लिए पौधे उगाएं **साईश्रुष्टि नर्सरी व गार्डन डेवलपर्स**	नर्सरी व बागीचा डेवलपर्स	श्री ज्योति महादेव हावल लातुर, महाराष्ट्र	189
190	बूंद-बूंद, जल की बचत उत्पादन में सुधार **पार्थ एग्रो सेवाएं**	ड्रिप ट्रेडिंग केंद्र	श्री सुनील दिलीपराव तोनगे उस्मानाबाद, महाराष्ट्र	190
191	डेयरी फार्म से मिलेंगे अच्छे लाभ **टीएसजी डेयरी**	डेयरी फार्मिंग	श्री योगेश शिवाजी गवांडे जालना, महाराष्ट्र	191
192	ग्रीन इंडस्ट्री में लाभप्रद कैरियर **कुमरन नर्सरी गार्डन**	नर्सरी तथा परामर्श	श्री एस. इलंगॉवन वाडिपत्ती, तमिल नाडु	192
193	कृषि कार्यों के संचालन में सामयिकता की सुविधा **रमन अग्री-क्लीनिक**	कस्टम हॉयरिंग केंद्र	श्री ई. रामन तिरुवन्नमलै, तमिल नाडु	193
194	सुविधाजनक बागवानी के लिए उभरती हुई प्रवृत्ति **एमजेएस नर्सरी**	नर्सरी	श्री एम.जे. सोलमन अरोक्या डॉस डिंडीगुल, तमिल नाडु	194
195	ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बदलती एग्री-हाई-टेक कंसल्टेंसी **भारती एजेंसीस**	एग्री-परामर्श	श्री एफ. थॉमस सहाय राज सलेम, तमिल नाडु	195
196	'कडकनाथ' के साथ पिछवाडे में मुर्गी पालन **सत्यपाल पौल्ट्री फार्म**	केदारनाथ पॉल्ट्री फार्मिंग	श्री सत्यपाल सिंह मुज़फ्फरनगर, उत्तर प्रदेश	196
197	फसल से पहले कृषि मशीनरी **गर्गी एग्रो इंडस्ट्रीस**	कृषि मशीनीकरण ईकाई	श्री अमित कुमार तलियान मेरठ, उत्तर प्रदेश	197
198	मछली पालन में बेहतर प्रॉफिट मार्जिन **सोना मछली फार्म**	फिश फार्मिंग	श्री मदन पाल बागपत, उत्तर प्रदेश	198
199	लाभ के लिए अंकुरों की खुदरा बिक्री **किसान जीवन नर्सरी**	सब्जी नर्सरी	श्री रसीद अहमद सहारनपुर, उत्तर प्रदेश	199
200	राईस ब्रान से आय में वृद्धी **ओम एग्रो एजेंसी**	कस्टम हॉयरिंग केंद्र	श्री तारा प्रसाद गौड़ गंजाम, उडीसा	200

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
30 गांवों से **500** किसान	**46** व्यक्ति	**86** लाख रुपए

श्री सीम्हाद्री राघवेंद्र
ग्रीनो एग्रोटेक, # 6-5-765-4,
एडीसीसी बैंक कॉलोनी, रामनगर,
अनंतपुर, आंध्र प्रदेश, भारत

greenoagrotech@gmail.com
+91 8985235438

उद्यम: आंध्र प्रदेश में उच्चतम गुणवत्ता वाले केलों के टिशू कल्चर पौधों के माध्यम से टिशू कल्चर केले की कृषि को बढ़ावा देना तथा कृषि - परामर्श देना।

मूल गतिविधि: ग्रीनो एग्रोटेक अनंतपुर और आसपास के जिलों में टिशू कल्चर केले की कृषि के प्रचार में अग्रणी टिशू कल्चर प्रयोगशाला है। ग्रीनो एग्रोटेक कृषि संबंधी परामर्श और टिशू कल्चर केले के पौधों की आपूर्ति करता है। ग्रीनो एग्रोटेक कृषि सहायता भी प्रदान कर रहा है जैसे रोपण सामग्री, कृषि कार्य, सिंचाई समय सारिणी, प्रजनन समय सारिणी, कीटनाशकप्रबंधन, मशीनीकृत फसल कटाई इत्यादि।

कृषिउद्यमी: प्रयोगशाला के संस्थापक श्री एस राघवेंद्र (37), कृषि उद्यमी, बोज्जा वेंकटरेड्डी कृषि फाउंडेशन, नंद्याल जो आंध्र प्रदेश का एक नोडल प्रशिक्षण संस्थान है, से प्रशिक्षित हैं। श्री राघवेंद्र एक कृषि स्नातक हैं और अनंतपुर जिले में सुव्यवस्थित कृषि को बढ़ावा दे रहे हैं। ग्रीनो एग्रोटेक को सिंडिकेट बैंक से वित्तीय सहायता के रूप में 17.50/- लाख रुपये का ऋण और नाबार्ड से 36% सब्सिडी प्राप्त है। इसमे 46 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त है तथा यह अनंतपुर जिले में पेशेवर रूप से कार्य करती है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
15 गांवों से **500** किसान	**24** पुरुष और **10** महिला कुशल श्रमिक	**1.6** करोड़ रुपए

श्री बी. नागेश्वर राव
शांति एग्रो टेक, 26/160 जी3, पुरानी आईटीएस काम्पाऊंड, नंद्याल- 518502, आंध्र प्रदेश, भारत

shantiagrotech@gmail.com
+91 9989882928

उद्यम: व्यापारिक बीजों का उत्पादन तथा सब्जियों की फसलों जैसे टमाटर, गोभी, बैंगन, मिर्ची, भिण्डी(ओकरा) और कद्दू (ककर्बिट) की बिक्री।

मूल गतिविधि: शांति एग्रो टेक 6 एकड़ भूमि पर स्थापित है। तीन एकड़ भूमि को संयुक्त कृषि विकास परियोजना स्थापित करने के लिए विकसित किया गया है जहां पर धान, दालें और सब्जियां उगाई जाती हैं। आंध्र प्रदेश के कर्नूल, प्रकाशम, गुंटूर, कड़पा तथा नंद्याल जिलों में 20 से अधिक सब्जियों के फसलों की किस्में विकसित की गई हैं जिनके बीजों की बिक्री 6 वितरकों के नेटवर्क द्वारा आंन्ध्र प्रदेश कर्नूल, प्रकाशम, गुंटूर, कडपा और नंयाल में बिना रुकावट के नियमित रूप से कर रहे हैं।

कृषिउद्यमी: श्री नागेश्वर राव (60) ने आनुवंशिकी और वनस्पति प्रजनन में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की है। श्री नागेश्वर राव (60) ने स्वेच्छा से स्वरोजगार का विकल्प चुना और अपना स्वयं का व्यवसाय चलाने का सपना देखा । इस उद्यम को शुरू करने से पहले, उन्होने कृषि- क्लीनिक और कृषि- -व्यापार केंद्र (एसी व एबीसी) योजना के अंतर्गत हैदराबाद में नोडल प्रशिक्षण संस्थान पार्टिसिपेटरी रुरल डेवलेपमेंट इनीसिएटिव (पीआरडीआईएस) में दाखिला लिया । स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, नंद्याल शाखा से 10/- लाख रुपये का ऋण लेकर तथा नाबार्ड से 36 प्रतिशत की सब्सिडी की सहायता से नागेश्वर ने बीज उत्पादन और कृषि - परामर्श के क्षेत्र में उद्यमी के रूप में अपनी यात्रा प्रारंभ की ।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
एक गांव से **50** किसान	**2** परिवार के सदस्य	**3** लाख रुपए

सुश्री विथिका हल्दर
पी.वी-51 पोस्ट - गोंडहुर
जिला- कांकेर
छत्तीसगढ़, भारत

isapraipur@isapindia.org
+91 9424213291

उद्यम: मछलियों का व्यापारिक उत्पादन तथा भारतीय मुख्य कार्पों जैसे रोहू, कटला एवं मृगाल मछलियों की बिक्री के साथ-साथ मत्स्य पालन पर परामर्श।

मूल गतिविधि: कृषि-क्लीनिक तथा कृषि-व्यापार केंद्र के प्रशिक्षण ने सुश्री विथिका हलदर को मत्स्य पालन में तकनीकी जानकारी हासिल करने में मदद की। प्रशिक्षण के बाद उन्होने दो मत्स्य व्यापारिक घरों से संपर्क किया और छोटी मछलियों (फिंगरलिंग्स) की उपलब्धता के लिए अनुरोध किया। एक दुकान ने उन्हे क्रेडिट पर छोटी मछलियों (फिंगरलिंग्स) की आपूर्ति करने का वादा किया। अभिभूत होकर बिना किसी देरी के उन्होने अपने परिवार के सदस्यों की मदद से अपने सूखे तालाब की खुदाई की। बरसात के मौसम में तालाब पानी से भर गया और पहले ही सीज़न में उन्होने रोहू, कटला और मृगाल प्रजातियों की छोटी मछलियों (फिंगरलिंग्स) को तालाब में डाल दिया। पहली फसल में उन्होने 20000/- रु. का शुद्ध लाभ अर्जित किया। उन्होने कहा कि इससे पहले उन्होने अपने जीवन में इतनी बड़ी राशि कभी नहीं देखी।

कृषि उद्यमी: सुश्री विथिका हलदर (22) छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले से मत्स्य पालन के क्षेत्र में एक सफल महिला कृषि उद्यमी है। सुश्री विथिका ने कृषि में केवल माध्यमिक स्तर तक अध्ययन किया है। उन्होंने अपनी मां के साथ कृषि श्रमिक के रूप में काम करना शुरू कर दिया था। इस दौरान, उन्हे कृषि - क्लीनिक तथा कृषि - व्यापार केंद्र (एसी व एबीसी) योजना की जानकारी मिली। उन्होंने इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्री - बिजनेस प्रोफेशनल (आईएसएपी) के नोडल अधिकारी से संपर्क किया और प्रशिक्षण में शामिल हो गईं। सुश्री विथिका जिले के कई महिला किसानों के लिए एक उदाहरण बन गईं । उन्होंने ऋण के लिए आवेदन किया और अपने व्यापार का विस्तार करना चाहा।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 गांवों से 150 किसान	1 व्यक्ति	5 लाख रुपए

सुश्री मोनिता केराम
ग्राम- आमपारा, वार्ड 13,
पोस्ट- बलोड,
जिला- बलोड छत्तीसगढ़
पिन-491226, भारत

kerammoni@gmail.com
+91 9669686957

उद्यम: ऑयस्टर मशरूम की खेती और परामर्श

मूल गतिविधि: मोनीता मशरूम इकाई न्यूनतम 25,000/- रु. की पूंजी से स्थापित की गई है। उन्होने मशरूम की खेती की शुरूआत में अपने 10x10 वर्ग मीटर कच्चे घर से की। उन्होने मशरूम बैग की स्थापना के लिए कम लागत वाली स्ट्रिंग विधि का उपयोग किया। स्थानीय रूप से उपलब्ध गेहूं / धान के भूसे को सावधानी पूर्वक रोगाणुहीन किए गए तथा बाजार में सुलभता से उपलब्ध स्पॉन (अण्डे) इसमे जोडे गए हैं। कॉम्पोस्ट को प्रत्येक परत में समान रूप से डालने के बाद स्पॉन (अण्डे) को प्रत्येक परत में फैलाया गया है। परिणामस्वरूप विभिन्न परतों में स्पॉन (अण्डे) फैल गए। मशरूम 30-35 दिनों में बड़े हो जाते हैं। 8-10 सप्ताह के फसल चक्र में 8 किलो प्रति वर्ग मीटर की औसत उपज होती है।

कृषिउद्यमी: सुश्री मोनीता केराम (25) एक महिला कृषि उद्यमी हैं जिन्होने कृषि में स्नातक किया है। मोनीता ने अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद प्राइवेट नौकरी कर ली, जिसे उन्होने थक कर दो साल बाद छोड़ दी। तुरंत ही वे कृषि - क्लीनिक तथा कृषि - व्यापार केंद्र (एसी व एबीसी) योजना के अंतर्गत इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्री-बिजनेस प्रोफेशनल (आईएसएपी), रायपुर द्वारा आयोजित दो महीने के आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हो गईं। उन्होंने उद्यमिता में वित्तीय प्रबंधन, लेखा के मौलिक सिद्धांतों, विपणन, प्रबंधन, उद्यमिता विकास, संचार कौशल और परियोजना नियोजन तथा अन्य संबंधित पहलुओं पर ज्ञान हासिल किया। मोनिता कहती हैं- “कृषि क्षेत्र में सफल उद्यमिता के लिए कृषि व्यवसाय की सीमाओं को निस्संदेह फिर से परिभाषित करना होगा”।

5 गाय के गोबर से मच्छर रिपेलेंट कॉयल

के.के. उत्पाद

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
12 गांवों से 300 किसान	2 व्यक्ति	3 लाख रुपए

श्री निखिल प्रकाश कदम
पोस्ट- मढा, तालुका- मढा,
जिला- सोलापुर,
महाराष्ट्र- 413209, भारत

nikhilkadammadha5283
@gmail.com
+91 9028262765

उद्यम: गाय का गोबर आधारित उप-उत्पादों का उत्पादन तथा ग्रामीण युवा उद्यमियों को पंचगव्य आधारित परामर्श।

मूल गतिविधि: बाजार में उपलब्ध मच्छरों के रिपेलेंट में हानिकारक और जहरीले रसायन होते हैं, जो मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण के दौरान कृष्णा वैली एडवांसड एग्रिकल्चर फाउंडेशन, नागपुर द्वारा गोशाला (डेयरी इकाई) के दौरे का आयोजन किया गया था। "मैंने देखा कि गोबर से कई उप-उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं। पर्यावरण हितैषी उत्पादों के महत्व से प्रेरित होकर, मैंने उसी व्यवसाय में शामिल होने का फैसला किया। मैंने अपनी एक छोटी इकाई लगाकर मच्छर रिपेलेंट बनाने की शुरुआत की", निखिल ने कहा।

कृषिउद्यमी: श्री निखिल कदम (24) ने महाराष्ट्र के सोलापुर जिले से कृषि विज्ञान में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। स्नातक करने के बाद एसी व एबीसी योजना के अंतर्गत दो माह की उद्यमशीलता कार्यक्रम में शामिल हुए।एक किसान का बेटा होने के नाते, उन्हे ग्रामीण उद्यमों में काफी दिलचस्पी है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 गांवों से 90 किसान	4 व्यक्ति	18 लाख रुपए

श्री महेश मुकुंद पाटिल
पोस्ट - बाहे बोरगांवणे,
तालुका:वालवा, जिला:सांगली,
महाराष्ट्र, पिन- 413 415, भारत

ngkay@yahoo.com
+91 8378049883,
+91 8623845989

उद्यम: वाणिज्यिक अंडो का उत्पादन तथा परामर्श

मूल गतिविधि: लेयर पोल्ट्री फार्मिंग का अर्थ है वाणिज्यिक अंडों के उत्पादन के उद्देश्य से अंडे देने वाली पोल्ट्री पक्षियों का पालन। लेयर मुर्गियां 18-19 सप्ताह की आयु में व्यावसायिक रूप से अंडे देना शुरू कर देती हैं। वे 72-78 सप्ताह की आयु तक लगातार अंडे देती रहती हैं। वे अंडे देने की अवधि के दौरान लगभग 2.25 किलोग्राम चुग्गे का उपभोग कर लगभग एक किलो अंडे का उत्पादन कर सकती हैं। मैने अपने अभिभावकों से 20.00/- लाख रुपए उधार लेकर 10000 पक्षियों के साभ लेयर फार्मिंग यूनिट की स्थापना की। मैं आहार और पूरक आहार जिसे आवश्यक खाद्य मूल्यों के साथ समृद्ध होना चाहिए के प्रति बहुत जागरूक हूं। प्रोटीन, विटामिन और खनिज लेयर मुर्गियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं जो अंडे की गुणवत्ता, लेयर पोल्ट्री की प्रजनन क्षमता तथा लेयर पक्षी के स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं", महेश ने बताया।

कृषिउद्यमी: श्री महेश पाटिल (26) की कृषि में न्यूनतम योग्यता थी, अत: उनके लिए नौकरी का विकल्प सुरक्षित नहीं था। इसलिए, उन्होंने कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रीकल्चर फाउंडेशन, कुपवाड, सांगली में एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के अंतर्गत दो महीने के उद्यमिता प्रशिक्षण में भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान उन्होंने लेयर पोल्ट्री में शामिल होने का निर्णय लिया। महेश ने सलाह दी कि चिकन को बीमारियों से बचाने के लिए चिकन हाउस में प्रवेश करने से पहले सभी को डिसइनफेक्टेंट का प्रयोग करना चाहिए।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
25 गांवों से 450 किसान	4 व्यक्ति	25 लाख रुपए

श्री अजिंक्य श्रीनिवास टिपुगड़े
पोस्ट- कालंबा, तालुका- करवीर
जिला- कोल्हापुर,
महाराष्ट्र, भारत

ngkay@yahoo.com
+91 8208369400

उद्यम: सुअर पालन और परामर्श

मूल गतिविधि: 'पिग कार्नर' की स्थापना 70,000/- रुपये की पूंजी के साथ की गई है। वर्तमान में 14 सूअर के बच्चों के साथ 82 व्यक्तियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। चारे को मांस और अन्य महत्वपूर्ण सह-उत्पादों में परिवर्तित करने मे सूअर सबसे दक्ष जानवर है। आमतौर पर, किसान सूअर पालन शून्य लागत के निवेश से कर रहे हैं, जैसे उसे भोजन के रूप में रसोई और सब्जी के कचरे के साथ केवल धान/गेहूं की भूसी को मिलाकर खिलाता है। हालांकि, इस भोजन से वांछित शरीरिक वज़न और अन्य उत्पादन मानदंडों को प्राप्त करना संभव नहीं है। "इसलिए मैंने जानवरों को किफायती लेकिन संतुलित भोजन खिलाने को अत्यधिक महत्व दिया जिसमें विकास के लिए सभी पोषक तत्व शामिल हैं। शकरकंद, टैपिओका, कोलोकॉसिया, सब्जियां जैसी कंद वाली फसलों के साथ और किचन वेस्ट आदि का मिश्रित चारा वजन बढ़ाने के लिए अति उत्तम है" अजिंक्या ने बताया।

कृषिउद्यमी: श्री आजिंक्या टिपुगडा (33) ने महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले से कृषि मे डिप्लोमा किया है और सूअर पालन करते हैं। उन्होने महाराष्ट्र के कृष्णा वैली एडवांस्ड एग्रिकल्चर फाउंडेशन, उत्तूर से उद्यमिता प्रशिक्षण प्राप्त किया है। "मैने एसी व एबीसी" योजना के अंतर्गत सूअर पालन पर तीन दिनों के व्यावहारिक सत्र में भाग लिया था। "सूअर चारागाह को बिना नुकसान पहुंचाए मीट (सूअर का मास) पैदा करती हैं। पोर्क विशेष रूप से प्रोसेशिंग के लिए उपयुक्त है। इसके अतिरिक्त सूअर उन कुछ पशुधनों में से एक है जहां पशु के लगभग सभी हिस्सों को कृषक परिवार द्वारा उपभोग किया जा सकता है या बेचा जा सकता है। अत: मैने सूअर पालन को चुना" अजिंक्या ने कहा।

सेवा प्राप्त किसान

5
गांवों से
80 किसान

रोजगार

9
व्यक्ति

वार्षिक टर्नओवर

15
लाख
रुपए

श्री सांकेत दिलीप पुणालेकर
अरोस तालुका-सावंतवाड़ी जिला-सिंधुदुर्ग, महाराष्ट्र, भारत

sanketpunalekar@gmail.com
+91 8275390911

उद्यम: काजू प्रोसेसिंग तथा परामर्श

मूल गतिविधि: 'स्नेह कैश्यू' प्रोसेशिंग इकाई की स्थापना कुल 10 टन काजू प्रोसेसिंग की क्षमता के साथ हुई थी। इसकी स्थापना में 15/- लाख रु. की पूंजी लगी थी। "कच्चा काजू खरीदने के लिए मैने 80 किसानों का सहयोग लिया। खाने योग्य काजू को उपलब्ध कराने के लिए काजू प्रोसेसिंग एक आवश्यक श्रंखलाबद्ध संचालन इकाई है। काजू की गुणवत्ता में अंतर के लिए विभिन्न उत्पादकों द्वारा अपनाई जाने वाली प्रोसेसिंग कार्यप्रणाली की भिन्नता है। मैं व्यापारिक काजू प्रोसेसिंग करता हूं," साकेत ने कहा।

कृषिउद्यमी: सांवंतवाड़ी से श्री सांकेत दिलीप पुनालकर (28) ने अपने उपक्रम की जानकारी दी। श्री सांकेत ने उद्यमशीलता कौशल प्रशिक्षण महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग जिले के ओरोस कृष्णा वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चर फाउंडेशन से लिया है। काजू को प्राय: 'गरीब आदमी का फसल और अमीर आदमी का भोजन" माना जाता है। यह एक महत्वपूर्ण नकदी फसल है तथा वैश्विक बाजार में बहुत मूल्यवान है। भारतीय काजू उद्योग में काजू किसानो के लिए आजीविका के साधन, रोजगार के अनेकों अवसर और वैश्विक व्यापार से बेहतर आय की अत्यधिक अप्रयुक्त संभावनाएं हैं। "कृषि विज्ञान में स्नातक करने के बाद, मैंने काजू प्रोसेसिंग में शामिल होने का निर्णय लिया। हम अपनी स्वयं की 5 एकड़ जमीन पर काजू की खेती करते हैं", सांकेत ने कहा।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
10 गांवों से **400** किसान	**10** व्यक्ति	**10** लाख रुपए

श्री राकेश केवट
पोस्ट-परासी, मारवाही,
जिला-बिलासपुर छत्तीसगढ़-
पिनकोड-495118, भारत

rkagrotech@gmail.com
+91 9630645157

उद्यम: सब्जियों की खेती, परामर्श तथा विपणन

मूल गतिविधि: श्री राकेश रावत के पास 5 एकड़ भूमि है जिसमे 3 एकड़ सिंचित भूमि है। उन्होने अनाज की खेती के बजाय सब्जियों की खेती करना उचित समझा। उन्हे नई तकनीकों को सीखने में और अपने खेतों में उनका प्रदर्शन करने में बहुत रुचि है। उन्होने सब्जी की खेती से सालाना 200,000/-रु (दो लाख रुपए) अर्जित किया है। उन्होने अनुबंध के आधार पर किसानों के साथ गठ-जोड़ किया हुआ है और उन्हे सब्जी की खेती करने तथा बाजार में सीधे बिक्री करने की सलाह देते हैं। वह पौधशाला से लेकर फसल/उत्पाद की कटाई तक की परामर्श देते हैं। वह मुख्य रूप से टमाटर, करेले, लौकी, लोबिया, ककड़ी, मिर्ची, शिमला मिर्च तथा अदरक की खेती करते हैं।

कृषिउद्यमी: श्री राकेश रावत (27) ने कृषि-व्यवसाय प्रबंधन में मास्टर डिग्री की है तथा छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले में अनुबंध कृषि के माध्यम से 10 गांवों में सब्जी के उत्पादन और विपणन में शामिल हैं। श्री राकेश एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिज़नेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण प्राप्त उद्यमी हैं। उन्होने इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्री-बिज़नेस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी), छत्तीसगढ़ के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
15 गांवों से **150** प्रति माह	**1** व्यक्ति	**6** लाख रुपए

डॉ नीलेश एस. पटेल
5 सुभालय बंगला, कलोल,
जिला: पंचमहल
गुजरात, पिनकोड-389330, भारत

pateldrnilesh@gmail.com,
drnsp@yahoo.in
+91 9979857189,
+91 9909868685

उद्यम: पशु चिकित्सा सेवाएं और स्वदेशी मवेशियों के संरक्षण पर परामर्श

मूल गतिविधि: वेट-फार्म डेयरी किसानों के लिए एक मात्र सेवा परामर्शदाता है तथा पशु आहार की आपूर्ति करता है। डॉ नीलेश ने बैठकर ग्राहकों का इंतजार करने के बजाय ग्राहकों के दरवाजे तक विस्तारित सेवाओं के महत्व को जाना। डॉ नीलेश ने डेयरियों का दौरा करना शुरू किया। दिन-प्रतिदिन, उनकी लोकप्रियता और उनकी समय पर सेवाएं पंचमहल जिले के 15 गांवों में प्रसिद्ध हो गई। डॉ नीलेश गिर नस्ल की गायों के संरक्षण के लिए डेयरी किसानों में जागरूकता पैदा कर रहे हैं। डॉ नीलेश ने कहा, “डेयरी किसानों द्वारा देसी नस्लों का संरक्षण मेरी सेवाओं का सबसे अच्छा प्रतिफल है”।

कृषिउद्यमी: डॉ नीलेश एस. पटेल (45) गुजरात के पंचमहल जिले के कलोल गांव का एक पशुचिकित्सक हैं। पशु चिकित्सा विज्ञान और पशुपालन में स्नातक करने के बाद उन्होने पंचमहल डेयरी में वरिष्ठ पशु चिकित्सा अधिकारी के रूप में कार्यभार संभाला। अपने कार्यकाल के दौरान, उन्हें डेयरी सेक्टर में समय पर सेवाओं की आवश्यकता का एहसास हुआ। उन्होंने नौकरी छोड़ दी और अपने गांव में एक पशु चिकित्सालय शुरू किया। धन की कमी के कारण, वह आवश्यक उपकरण और दवा नहीं खरीद सके तथा किसानों को उचित पशु चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने में पीछे रह गए। इस अवधि के दौरान, उन्हे एग्री-क्लीनिक और एग्री-बिज़नेस सेंटर(एसी व एबीसी) योजना और स्टार्टअप के लिए वित्तीय सहायता के बारे में जानकारी मिली। उन्होंने अपने चिकित्सालय को बंद कर दिया और इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीबिज़नेस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी), वडोदरा में दो माह के उद्यमशीलता कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हो गए।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
50 गांवों से 5 प्रति माह	5 व्यक्ति	15 लाख रुपए

श्री हार्दिक एच. वछानी
ए-307, ऑर्चिड सेंटर, सफल परिसर, कार्यालय-एसपी रिंग रोड,दक्षिण भोपाल
अहमदाबाद, गुजरात, भारत

vachhnihardik@hotmail.com
+91 9898189922

उद्यम: बादाम, केला, स्ट्रॉबरी तथा शहद से सॉफ्ट ड्रिंक और स्मूथीज़ बनाना और उनका विक्रय करना।

मूल गतिविधि: हार्दिक ने अहमदाबाद के इंडियन ओवरसीज बैंक, सोला शाखा, से 20/- लाख रुपए का ऋण लिया। मशीनरी और कच्चे माल तथा 5 कुशल कारीगरों की टीम से लैस, हार्दिक ने 'गब्बर जूस'को पंजीकृत किया और फलों के रस और स्मूदीज़ बनाने लगे। उन्होंने बादाम, केला, स्ट्रॉबरी खरीद के लिए 50 प्रगतिशील किसानों के साथ साथ कुछ मधुमक्खी पालकों को भी पंजीकृत किया। हार्दिक ने कहा, "मैंने 250 वर्ग फीट में, दो कर्मचारियों के साथ जूस की बिक्री के लिए अपना पहला आउटलेट शुरू किया।"

कृषिउद्यमी: मध्यम वर्गीय परिवार से आने वाले श्री हार्दिक ने कृषि इंजीनियरी में अपना अध्ययन पूरा करने के लिए कॉलेज के समय में कड़ी मेहनत की। हार्दिक खुद का मालिक बनना चाहते थे लेकिन आर्थिक परेशानी इसमें कठिनाई बनी। उनके एक मित्र ने उन्हें एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना तथा उसके वित्तीय लाभ के बारे में जानकारी दी। हार्दिक ने इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्री-बिजिनेस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी), वडोदरा में नोडल अधिकारी से संपर्क कर साक्षात्कार का समय लिया। साक्षात्कार के बाद उन्हे प्रशिक्षण के लिए उनका चयन किया गया। हार्दिक ने कहा, "संस्थान में क्षेत्रों के प्रेरक दौरे, अच्छे व्याख्यान और सीखाने वाले विद्वान कर्मी बहुत सहायक सिद्ध हुए।" सहायक प्रशिक्षण प्रभाग के कारण बैंक से ऋण लेना आसान हो गया, उन्होंने परियोजना रिपोर्ट को बैंक में प्रस्तुत करने में भी मदद की। इस प्रस्ताव के लिए बैंकरों की प्रतिक्रिया अच्छी रही।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 जिलों से **1000** ग्रामीण युवा	**12** व्यक्ति	**1** करोड़ रुपए

श्री आशुतोष कुमार सिंह
लखनऊ, उत्तर प्रदेश,
भारत

yogdanpoultry@gmail.com
+91 7905236352,
+91 8081022666

उद्यम: व्यावसायिक मुर्गी पालन और प्रशिक्षण केंद्र

मूल गतिविधि: प्रारंभ में बैंक के 15/- लाख रुपए ऋण ने 15000 मुर्गियों के साथ ब्रायलर पोल्ट्री इकाई स्थापित करने में मदद की। यह इकाई केवल मुर्गीपालन और बिक्री का कार्य करती थी। "ग्रामीण युवाओं की प्रशिक्षण आवश्यकताओं की बढ़ती माँग को देखते हुए मैंने व्यावसायिक मुर्गी पालन के लिए 21 दिनों का प्रशिक्षण मैनुअल तैयार किया और अब 'योगदन एग्रीक्लिनिक संेटर' मुर्गी पालन पर 21 दिनों का प्रशिक्षण कार्यक्रम चला रहा है। इस कार्यक्रम के तहत हम चूजों तथा मवेशियों को पालने का प्रशिक्षण देते हैं। पाठ्यक्रम ब्रॉयलर, लेयर (अंडा देने वाले) और स्थानीय नस्लों (फ्री रेंज) के पालन पर जानकारी प्रदान करता है। यह प्रशिक्षण चूजों के पालन-पोषण और इस उद्यम को एक लाभदायक व्यवसाय में परिवर्तित करने की व्यावसायिक जानकारी प्रदान करता है। हम मुर्गी पालन और ऋण उपलब्धता विवरण से संबंधित विभिन्न सरकारी योजनाओं की भी जानकारी देते हैं। 1000 से अधिक प्रशिक्षित ग्रामीण युवाओं ने छोटे स्तर पर अपनी मुर्गी पालन इकाई प्रारंभ की है। फर्म एक दिन पुराने चूजें, चिकन, खाद और अंडा बेचती है। "श्री आशुतोष ने बताया।

कृषिउद्यमी: लखनऊ के रहने वाले श्री आशुतोष कुमार सिंह (25) एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षित एक उद्यमी हैं। कृषि से स्नातक करने के बाद उन्होंने श्री माँ गुरु ग्रामोद्योग संस्थान, (एसएमजीजीएस) वाराणसी में प्रशिक्षण प्राप्त किया। आशुतोष ने कहा, "संस्थान नए कृषि व्यवसायियों को प्रोत्साहित करती है तथा उन्हें एग्री-बिजिनेस और सेवाओं के विस्तार के लिए प्रेरित कर रही है।"

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
45-50 गांवों से **600-800** किसान	**1** व्यक्ति	**1.30** करोड़ रुपए

श्री सल्वपेरुमाल
मट्टूथेरू, कुरिप्पेडु ग्राम,
वांडवासी तालुका
जिला- तिरुवन्नमलाई,
तमिल नाडु, भारत

kumarperumal876@gmail.com
+91 95663 69288

उद्यम: कस्टम हायरिंग सेंटर

मूल गतिविधि: 'सेल्वपेरुमाल धान काटने वाला' धान उत्पादकों को संयुक्त धान कटाई मशीन किराए पर देता है। कटाई के मौसम के दौरान, श्री सेल्वपेरुमाल अपनी कटाई मशीन प्रति माह लगभग 150 से 200 घंटे चलाते हैं और 1300/- रुपए प्रति घंटे की दर से 2,30,000/- रुपए प्रति माह कमाते हैं। प्रति माह डीजल का खर्च 90,000/- रु. और अनुरक्षण शुल्क 18,000/-रु. है। चूंकि श्री सेल्वपेरुमाल स्वयं चलाते हैं, इसलिए उन्हें एक सहायक के अलावा किसी चालक की आवश्यकता नहीं है। फसल कटाई के मौसम के दौरान उनका औसतन मासिक लाभ 1,15000/-रु. है। श्री सेल्वपेरुमाल धान उत्पादकों को धान प्रोसेसिंग के प्राथमिक घटकों और धान कटाई के बाद के नुकसान से बचने के लिए परामर्श भी देते हैं।

कृषिउद्यमी: श्री सेल्वपेरुमाल (32), तमिलनाडु के तिरुवन्नामलाई जिले के वांडवसी तालुक से मट्टुथेरू कुरिप्पेडु गांव के निवासी हैं। वह एक उत्साही उद्यमी हैं जो साबित कर रहें हैं कि मशीन जो न केवल उनके अन्न भंडार को बल्कि उनके खजाने को भी भर रही है। एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर योजना के अंतर्गत नेशनल एग्रो फाउंडेशन (एनटीआई) से प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद श्री सेल्वपेरुमाल ने संयुक्त धान कटाई की मशीन खरीदने का फैसला किया। उन्होंने बैंक से ऋण लेने का प्रयास किया लेकिन प्रक्रियागत औपचारिकताओं के कारण इसमें देरी हुई। एक सीज़न के नुकसान से बचने के लिए श्री सेल्वपेरुमाल ने संयुक्त धान कटाई की मशीन को अपनी बचत और रिश्तेदारों से उधार लेकर खरीदा।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
150 गांवों से 700 किसान	9 व्यक्ति	30 लाख रुपए

श्री प्रदीप रामदास मकोडे
पोस्ट-जमगांव, तालुका-वरूड,
जिला-अमरावती, महाराष्ट्र, भारत

padminiseeds3@gmail.com
+91 8788380881
+91 9404337380

उद्यम: प्याज के बीज का उत्पादन, विपणन और कृषि-परामर्श

मूल गतिविधि: पद्मिनी बीज प्याज के बीज की किस्मों के उत्पादन और विपणन में शामिल है। उद्यम विभिन्न विशेषताओं वाली प्याज के पांच किस्मों का उत्पादन करती है। इकाई के मालिक श्री प्रदीप ने 50 किसानों के साथ उनसे खरीद के अनुबंध के आधार पर सहयोगिता की है तथा सभी आवश्यक कृषि-इनपुट की आपूर्ति के साथ हर प्रकार की तकनीकी सलाह प्रदान कर रहे हैं।

कृषिउद्यमी: "भारत में प्याज की कम उत्पादकता के कारणों को गुणवत्ता वाले बीज की किस्म की सीमित उपलब्धता को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। मैने प्याज की खेती के लिए संकर बीज उत्पादन करने का निर्णय लिया। मैंने अमरावती के कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक से संपर्क किया। चर्चा के दौरान, कार्यक्रम समन्वयक ने मुझे एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के बारे में जानकारी दी। मैंने वेबसाइट पर सर्फ किया और पाया कि वर्तमान बैच कृष्णा वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चर फाउंडेशन (केवीएएएफ), नागपुर में शुरू होने जा रहा है। मैंने सेंटर से संपर्क किया और प्रशिक्षण के लिए दाखिला लिया", प्रदीप ने बताया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
12 गांवों से 250 किसान	4 व्यक्ति	35 लाख रुपए

श्री स्वप्निल सतप्पा पाटिल
पोस्ट - बागरवाड़ी,
तालुका- राधानगरी,
जिला- कोल्हापुर, महाराष्ट्र,
भारत

+91 9112256111

उद्यम: बयोमास ब्रिकेट (ईंट) का विनिर्माण और कृषि में बायोमास के उपयोग पर परामर्श

मूल गतिविधि: बायोमास ब्रिकेट्स (ईंटों) का उपयोग निरंतर बढ़ रहा है क्योंकि उद्योगों को बायोमास ब्रिकेट (ईंट) के उपयोग से प्रदूषण में कमी से होने वाले लाभ का एहसास हो रहा है। कोयले और चारकोल के लिए बयोमास ब्रिकेट् एक जैव ईंधन विकल्प है। ब्रिकेट का उपयोग अधिकतर भाप से बिजली का उत्पादन करने के लिए औद्योगिक बॉयलरों को गर्म करने के लिए किया जाता है। बायलर को ऊर्जा की आपूर्ति कोयले के साथ ब्रिकेट को जलाकर की जाती है। बयोमास ब्रिकेट ज्यादातर हरे कचरे और अन्य कार्बनिक पदार्थों से बने होते हैं। "मैं किसानों से बयोमास कचरा जैसे कि चावल की भूसी, खोई, मूंगफली के छिल्के, नगरपालिका के ठोस अपशिष्ट, कृषि अपशिष्ट आदि खरीदने के लिए जुड़ा हूं। मैंने तीन कारखानों जो बायलर से अपने उत्पादों का विनिर्माण कर रहे हैं, के साथ अनुबंध पर हस्ताक्षर किया हैं", स्वप्निल ने बताया।

कृषिउद्यमी: श्री स्वप्निल सतप्पा पाटिल (30) ने महाराष्ट्र के कृष्णा वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चर फाउंडेशन, उत्तूर में आयोजित एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। "खाद्य विज्ञान प्रौद्योगिकी में पैरा-स्नातक करने के दौरान मैंने जैव ईट निर्माण इकाई का दौरा किया। मैं इकाई पर मोहित हो गया और अपनी स्वयं की ईकाई शुरू करने का फैसला किया, परंतु वित्त की कमी के कारण, मैंने अपने इस विचार को दबाए रखा। एसी व एबीसी के तहत प्रशिक्षण के बाद, 5/- लाख रुपये के बैंक ऋण के वित्तीय सहयोग से मैंने अपनी इकाई शुरू की", श्री स्वप्निल ने उद्यमिता की अपनी यात्रा को याद करते हुए बताया।

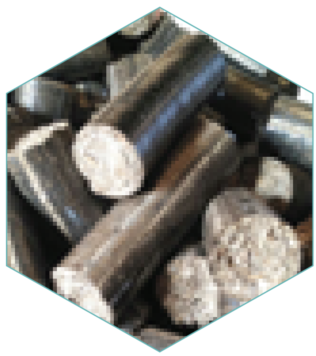

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
4 गांवों से **6** किसान	**4** व्यक्ति	**2** लाख रुपए

सुश्री ऐश्वर्या जाधव
पोस्ट- वरननागरे, केखले जोतिबा रोड, तालुका- पन्हाला
जिला-कोल्हापुर, महाराष्ट्र, भारत

aishujadhav2796@gmail.com
+91 7517940345,
+91 9623284180

उद्यम: आवश्यक तेलों का निष्कर्षण और उसकी बिक्री करना

मूल गतिविधि: आवश्यक तेलों का लाभ जलने, कटने तथा खरोंच से लेकर सिरदर्द, श्वसन उपयोग, पाचन उपयोग व कई प्रकार के संक्रमणों के लिए होता है। “मेरे पूर्वज आवश्यक तेलों के निष्कर्षण और समाज की सेवा में शामिल थे। प्रशिक्षित कृषि-उद्यमी होने और कृषि में डिग्री धारी होने के कारण, मैं आवश्यक तेलों के निष्कर्षण में शामिल था। मैंने किसानों से लेमन ग्रास, नीलगिरी (युकलिप्टुस), तुलसी के पत्तों की खरीद की और आवश्यक तेलों को निकालने लगा। वर्तमान में, मैं पारंपरिक तरीके से तेल निकाल रहा हूं, लेकिन मैंने अपने व्यवसाय का वैज्ञानिक रूप से विस्तार करने के लिए बैंक ऋण के लिए आवेदन किया है”, सुश्री ऐश्वर्या जाधव ने बताया।

कृषिउद्यमी: कृषि में स्नातक के बाद, एसी व एबीसी योजना से वित्तीय सहायता प्राप्त करने के उद्देश्य से, मैं कृष्णा वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चर फाउंडेशन, उत्तूर में उद्यमशीलता प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हुई। प्रशिक्षण के दौरान मैंने व्यावसायिक कौशल भी सीखा है और अपनी विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार की। मैंने सभी सहायक दस्तावेजों की व्यवस्था की और अपना ऋण स्वीकृत कराने के लिए बैंकरों के साक्षात्कार का सामना करने के लिए तैयार थी। ”ऐश्वर्या ने बताया। ऐश्वर्या महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले के वारनानगारे गांव की 21 वर्ष की एक महिला कृषि उद्यमी हैं।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
1300 गांवों से **8** किसान	**3** व्यक्ति	**10** लाख रुपए

श्री राजेंद्र सदम काले
पोस्ट- वरुड़, तालुका- जाफराबाद,
जिला- जालना-431206,
महाराष्ट्र, भारत

rajkale142@gmail.com
+91 7276753002

उद्यम: शेड नेट में सब्जी की खेती, विपणन और परामर्श

मूल गतिविधि: संरक्षित सब्जियों के बीज के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए, राजेंद्र ने शेड नेट विनिर्माण कंपनियों से संपर्क किया और सरल डिजाइन, कम सामग्री तथा छोटे पहियों वाले कम लागत के शेड नेट की मांग की। छत पर छाया जाल की दो परतों का उपयोग, तापमान को 5-8 डिग्री सेल्सियस तक कम करने के लिए किया गया था। चारों ओर से कीट जाल ने कीट के हमलों को 90 प्रतिशत तक कम कर दिया। ड्रिप सिंचाई प्रणाली के साथ पलवार से गर्मी और वाष्पीकरण कम हो जाता है तथा इससे पानी के उपयोग में 90 प्रतिशत तक की कमी आती है। उन्होंने किसानों को बीज का उत्पादन कर और कंपनियों को आपूर्ति करने की सलाह दी। उन्होंने समान विचारों वाले किसानों के समूह का भी गठन किया और जल्द ही वह किसान संगठन के तहत पंजीकृत होंगे, राजेंद्र ने सूचित किया।

कृषिउद्यमी: श्री राजेंद्र सदम काले (30) कृषि विज्ञान में डिग्री प्राप्त हैं। श्री राजेंद्र, महाराष्ट्र राज्य के कृष्णा वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चर फ़ाउंडेशन, उत्तूर से प्रशिक्षित कृषि उद्यमी हैं। वह जालौन जिले के मूल निवासी हैं जो भारत में बीज उत्पादन का एक प्रमुख केंद्र है। "भारत में उपलब्ध हाई-टेक पॉलीहाउस मूल रूप से प्रगतिशील किसानों के लिए डिज़ाइन किए गए थे जो उच्च मूल्य के फूल या सब्जियां उगाते हैं और यह छोटे और मध्यम आय वर्ग के किसानों की आय सीमा से बाहर है। इसलिए, मैं सब्जी की खेती के लिए कम लागत वाले शेड नेट का प्रचार करता हूं", राजेंद्र ने बताया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
पांच राज्यों से **5000** किसान	**70** व्यक्ति	**2** करोड़ रुपए

श्री विश्वास चवन
पोस्ट-तलसांडे, वारन नगर रोड,
तालुक- हट्कनांगले,
जिला- कोल्हापुर, महाराष्ट्र, भारत

seemabiotech04@gmail.com
+91 9834364041

उद्यम: टिशू कल्चर द्वारा केले, अनार और सागौन के पौधों का व्यावसायिक उत्पादन और बिक्री

मूल गतिविधि: सीमा बॉयोटेक टिशू कल्चर द्वारा विभिन्न प्रकार के पौधों के प्रख्यात उत्पादन और आपूर्ति कर्ताओं में से एक है। "हम टिशू कल्चर द्वारा उगाए गए पौधों की ग्राहकों की मांग को पूरा करते हैं, जिनमें सागौन, अनार, बर्मा टीक (सागौन) और नेट पॉट टीक (सागौन) पौधे शामिल हैं। हमारे पास पौधों की खेती के लिए बड़े जैविक खेत हैं। हमारे टीम के प्रशिक्षित तकनीशियनो सहित अनुभवी सदस्य यह सुनिश्चित करते हैं कि पौधों को प्राकृतिक उर्वरकों और जैविक सामग्री का उपयोग करके उगाया जाए। हम कुशलतापूर्वक स्वस्थ और रोग मुक्त पौधों को नालीदार बक्सों या थैली में पैक करके विशेष रूप के टोकरों में वितरित करते हैं। इस तरह, यात्रा के दौरान पौधे 48 घंटे से अधिक समय तक जीवित रहते हैं। मैं भारत के पांच राज्यों के लगभग 5000 किसानों को 25 लाख टिशू कल्चर केले के पौधे बेच रहा हूं। श्री विश्वास ने अपनी सेवाओं के बारे में जानकारी दी।

कृषिउद्यमी: महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले के तलसांडे गाँव के कृषि स्नातक श्री विश्वास चौव्हाण (30) बताते हैं कि"उद्यमशीलता की यात्रा किसानों को कीटों और रोगों से मुक्त उत्पादन सामग्री की आपूर्ति करने के साथ शुरू की थी"। श्री विश्वास ने कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रीकल्चर फाउंडेशन, सांगली, महाराष्ट्र में कृषि-क्लीनिक और कृषि-बिज़नेस केन्द्र योजना के तहत उद्यमशीलता प्रशिक्षण लिया था।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
तमिल नाडु में नमक्कल जिले से **200** किसान	**10** व्यक्ति	**10** लाख रुपए

श्री मोहनराज एम
15/6 नज्डुवलावू पट्टी, तिन्नानुर, पेरियाकोविलूर पोसेट, कोली हिल्स नमक्कल, तमिल नाडु, भारत

mohanrajbaby246@gmail.com
+91 9444513466,
+91 9087572139

उद्यम: काली और सफेद मिर्च की व्यावसायिक कृषि, प्रसंस्करण तथा विपणन

मूल गतिविधि: 'मोहन एंटरप्राइजेज़' एक मसाला प्रसंस्करण(प्रोसेशिंग) इकाई है, जिसे कोल्ली पहाड़ियों, नमक्कल के इंडियन बैंक, सेम्मेटु से 20/- लाख रुपए की वित्तीय सहायता से स्थापित किया गया है। उन्होंने कर्नाटक से मशीने खरीदकर फैक्ट्री में लगाया। उन्हें सफ़ेद मिर्ची, काली मिर्च पाउडर, ताज़ी हरी मिर्च आदि के मूल्य वर्धित उत्पादों की पूरी जानकारी है। अनुबंध कृषि के अंतर्गत 200 एकड़ से अधिक काली मिर्च के खेत आते हैं। वह आदिवासियों को सिल्वर ओक और पीपर वीन्स को उगाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वह कोल्ली पहाड़ियों की आदिवासी आबादी को तकनीकी सलाह के साथ सिल्वर ऑक और काली मिर्च के पौधों की आपूर्ति कर रहे हैं।

कृषिउद्यमी: श्री एम. मोहन राज (23) अन्नामलाई विश्वविद्यालय, तमिलनाडु से कृषि स्नातक हैं। वह कोल्ली पहाड़ियों के आदिवासी समुदाय से है। उनके पिता एक कृषक हैं और ज्यादातर काली मिर्च (पाइपर नाइग्रम) की खेती करते हैं। एम. मोहन राज को वृक्षारोपण से लेकर कटाई तक काली मिर्च की फसल की खेती की जानकारी है। हालांकि, अच्छे बाजार की कमी के कारण उन्हें काली मिर्च की बिक्री पर बहुत कम लाभ मिलता है। वर्ष 2017 में, उन्हें एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना की जानकारी दी गई। इस योजना के वित्तीय लाभ को समजझने के साथ ही, वह तमिलनाडु के नामक्कल जिले के कम्यूनिटी एवेरनेस रूरल एड्युकेशन ट्रस्ट (सीएआरई) संस्थान में प्रशिक्षण के लिए शामिल हो गए।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
8 गांवों से **250** किसान	**2** व्यक्ति	**10** लाख रुपए

सुश्री शीतल दिलीप गौरव
खमोले, पोस्ट-हेरे,
तालुका- चांदगढ,
जिला-कोल्हापुर, महाराष्ट्र, भारत

flowersfregrence1388@gmail.com
+91 9011509702,
+91 8805635687

उद्यम: गुलाब की संरक्षित खेती और बिक्री

मूल गतिविधि: श्रीमती शीतल ने गुलाब की खेती करने के लिए 10 गुंटा भूमि पर एक पॉलीहाउस स्थापित किया है। पॉलीहाउस की खेती, जिसे संरक्षित खेती के रूप में भी जाना जाता है, उच्च उपज देने के मामले में थोड़ी महंगी लेकिन लागत प्रभावी है। शीतल ने लगभग रु. 20/- लाख पॉलीहाउस स्थापित करने पर लगाया है और उसका निवेश समृद्ध लाभांश दे रहा है। शीतल गुलाब की पांच किस्मों की खेती कर रही है। गुलाबी की मार्केटिंग उनके पति की देखरेख में होती है। शीतल ऑनलाइन ऑर्डर भी लेती है। वह गुलाब की खेती में ग्रामीण महिलाओं को प्रोत्साहित करती हैं।

कृषिउद्यमी: कृषि में स्नातक, फ्लोरीकल्चर श्रीमती शीतल गुरव (23) का जुनून था, जो महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले के खामोले गांव में अपने जुनून को अपना करियर बनाना चाहती थीं। शीतल कृष्णा वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चर फाउंडेशन, उत्तूरा, महाराष्ट्र से प्रशिक्षित एग्रीप्रेन्योर हैं। श्रीमती शीतल ने रुपये 20/- लाख की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार की है और बैंक को प्रस्तुत किया। शीतल ने कहा, “मेरा इरादा एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी एंड एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण में भाग लेने और उसके समर्थन का लाभ उठाने का था।”

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
नमक्कल जिले से **500** किसान	**5** स्थाई तथा **25** अकुशल श्रमिक	**1** करोड़ रुपए

सुश्री के. निर्मला
117/5, ईस्ट कोस्ट रोड,
(बूमिस्वनन मंदिर के निकट),
मारक्कणम, विल्लुपुरम-604303,
तमिल नाडु, भारत

+91 9940305953

उद्यम: झींगा के बीज का परीक्षण करने के लिए पीसीआर प्रयोगशाला चलाना।

मूल गतिविधि: श्रीमती निर्मला ने "एन के मेराईन पीसीआर प्रयोगशाला" स्थापित करने के लिए 15/-लाख रु. का शुरुआती ऋण लिया था। प्रयोगशाला को झींगा के बीज का परीक्षण करने के लिए एक योग्य पीसीआर प्रयोगशाला के रूप में भारत सरकार के समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण, वाणिज्य व उद्योग मंत्रालय द्वारा अनुमोदन प्राप्त है। इसके साथ ही, वह झींगा के विश्लेषण, विषाणु और जीवाणु रोगों के लिए प्रोबायोटिक्स और रसायनों के परामर्श का भी काम कर रही हैं। उन्होने संपूर्ण भारत में 500 से अधिक परिवारों को सम्मिलित किया है और किसानों को क्लिनिकल सेवाएं प्रदान की हैं। तमिलनाडु के नमक्कल जिले में एन के मेराईन पीसीआर प्रयोगशाला झींगा क्षेत्र की रीढ़ है।

कृषिउद्यमी: श्रीमती के. निर्मला (26) मत्स्य विज्ञान में स्नातक हैं। अपनी पढ़ाई पूरा करने के बाद, वह कम्यूनिटी एवेरनेस रूरल एड्युकेशन ट्रस्ट (सीएआरई), नमक्कल, तमिलनाडु में एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिज़नेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हुईं।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
30 गांवों से **1000** किसान	**7** व्यक्ति	**1** करोड़ रुपए

सुश्री के. कलादेवी व
श्री एस. वेणुगोपाल
सबजम, नं: 450, रोड नं: 6,
के.के. पुधूर जिला- कोयंबटूर,
तमिल नाडु, भारत

venoo_2001@yahoo.com
+91 9943916099

उद्यम: पौधशाला और लैंडस्केपिंग परामर्श

मूल गतिविधि: श्री बी. वेणुगोपाल ने 32/- लाख रु. की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार की। परियोजना अभिनव थी, अत: बैंक ने 22/- लाख रुपये की राशि का ऋण स्वीकृत कर दिया। पौधशाला और लैंडस्केपिंग सेवाएं एक साथ सफलता का फल लेकर आयीं। फार्म, माली प्रशिक्षण केंद्र के रूप में लोकप्रिय हो गया है। 500 से अधिक ग्रामीण युवाओं ने प्रशिक्षण लिया और पौधशाला-आधारित उद्यमिता में शामिल हुए। इस नेक काम को पहचानते हुए, नाबार्ड ने उन्हें 44% सब्सिडी दी है।

कृषिउद्यमी: श्री बी. वेणुगोपाल कृषि इंजीनियरी से स्नातक हैं तथा उनकी पत्नी सुश्री के. कलादेवी कृषि से स्नातक हैं। वे तमिलनाडु के कोयमबटूर जिले में रहते हैं और लगभग अपनी 10 एकड़ पैतृक भूमि पर खेती करते हैं। इसके साथ ही, वे आसपास के किसानों को फलों और सब्जियों के पौधों की आपूर्ति के लिए एक छोटे सी इकाई भी चलाते हैं। एक इंजीनियर होने के नाते, वेणुगोपाल ने भूनिर्माण (लैंडस्केपिंग) में रुचि विकसित की तथा अपने व्यवसाय का विस्तार करना चाहते हैं। इस दौरान, उन्हे एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस संटर (एसी व एबीसी) योजना की जानकारी मिली। उन्होंने नमक्कल में प्रशिक्षण संस्थान, कम्यूनिटी एवेरनेस रूरल एड्युकेशन ट्रस्ट से संपर्क किया। चर्चा के दौरान, एसी व एबीसी योजना के लाभों से संतुष्ट होकर प्रशिक्षण के लिए पंजीकृत हो गए।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
महाराष्ट्र राज्य से **1000**	**6** व्यक्ति	**10** लाख रुपए

श्री श्यामल महेंद्र जवारे
गेट नं. 46, परनोड-मंधोडड रोड, परनोड, तालुका-मुक्तैनगर, जिला जलगांव, महाराष्ट्र, भारत

shyamal625@gmail.com
+91 7057863622

उद्यम: मत्स्य हैचरी तथा प्रशिक्षण केंद्र

मूल गतिविधि: श्री श्यामल जावणे ने मछलियों के लिए 30000 लीटर जल भंडारण क्षमता वाला 2.6 मीटर ऊंचाई का बड़ा टैंक व अन्य संसाधनों के निर्माण के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार की। डीपीआर की कुल लागत 1.20/- करोड़ रु थी। उन्होंने स्वयं की पूंजी का निवेश किया और सरकार द्वारा प्रायोजित विभिन्न योजनाओं से ऋण भी लिया और महाराष्ट्र में जलगाँव जिले के पूर्णाद गाँव की बंजर भूमि पर टैंक का निर्माण किया। वह किसानों को आईएमसी फिंगरलिंग्स की आपूर्ति कर रहे हैं और मछली पालन को बढ़ावा दे रहा है। राष्ट्रीय मछली विकास बोर्ड (एनएफडीबी) ने उन्हें 50% अनुदान दिया है।

कृषिउद्यमी: जलगांव जिले के मत्स्य उत्पादकों को अक्सर पश्चिम बंगाल, ओडिशा और आंध्र प्रदेश राज्य से मछली के बीज लाने में कठिनाई आती थी। परिवहन के दौरान असहनीय तनाव के कारण मृत्यु दर अधिक होने के कारण मछली उत्पादकों को भारी नुकसान हुआ। इस समस्या से निजात पाने के लिए श्री श्यामल जावड़े (29), जो मत्स्य विज्ञान में एडवांस डिग्री के साथ कृषि में स्नातक हैं, ने मछली पालन से जुड़े सभी हितधारकों को न केवल जलगांव जिले में, बल्कि महाराष्ट्र राज्य में मछली के बच्चों की आपूर्ति के लिए मछली बीज फार्म शुरू करने का फैसला किया। श्री श्यामल को महाराष्ट्र राज्य के कृष्णा वैली एडवांस एग्रीकल्चर फाउंडेशन, जलटन से कृषि-क्लिनिक और कृषि-बिज़िनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत उद्यमिता प्रशिक्षण प्रमाण पत्र भी प्राप्त है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
सोलापुर जिले के तीन ब्लॉकों से **1000** किसान	**5** व्यक्ति	**40** लाख रुपए

श्री सुभाष नारायण काकडे
पोस्ट- तांडुलवाड़ी,तालुका-मलसीरस, जिला-सोलापुर
महाराष्ट्र, पिन-413310, भारत

kakadesn@gmail.com
+91 7709685151

उद्यम: उपयोगकर्ता हितैषी कम लागत वाली कृषि मशीनों का विनिर्माण

मूल गतिविधि: काकड़े एग्रो उपकरण कल्टीवेटर, हल, गन्ने की बुआई(सुगरकेन प्लांटर), सीड ड्रिल, स्प्रेयर, बिजली से जुताई (पावर टिलर) व महिला हितैषी मशीनों के विनिर्माण कार्य में लगी है। "बुआई किए गए समूहों से समान और उच्च अंकुरण प्रतिशत प्राप्त करने के लिए, मैंने गन्ना बोने की मशीन का विनिर्माण किया, जिसकी बहुत अधिक मांग है। बिजली से जुताई (पावर टिलर) मशीन की डिज़ाइन सूखी भूमि पर कम दबाव के साथ घास/खरपतवार को निकालने और मिट्टी को ढीला करने के लिए किया गया है, इसलिए महिला किसान भी इसे आसानी से संचालित कर सकती हैं," सुभाष ने बताया।

कृषिउद्यमी: महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के तंदुलवाड़ी गाँव के श्री सुभाष काकड़े (29) ने कृषि कार्य में जुताई से लेकर फसल उत्पादन के विपणन तक में कृषि मशीनों के उपयोग पर जोर दिया। लेकिन जब कृषि कार्य में पारंपरिक तरीकों के साथ मशीनों का उपयोग किया जाता है तो मशीनीकरण आंशिक और अत्यधिक स्वीकार्य होता है। "कृषि इंजीनियरिंग में पैरास्नातक होने के नाते, मैं पर्यावरण हितैषी कम लागत वाली कृषि मशीनों का डिजाइन करके कृषक समुदाय की सेवा करना चाहता था। यह अवसर मुझे एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के रूप में मिला। मैंने कृष्णा वैली एडवांस कृषि फाउंडेशन, पुणे में प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया और उद्यमिता कौशल सीखा। प्रशिक्षण कार्यक्रम के बाद मैंने अपनी स्वयं की कृषि मशीन विनिर्माण इकाई स्थापित की"।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
10 गांवों से **950** किसान	**6** व्यक्ति	**50** लाख रुपए

श्री मनोज भरत गोरे
पोस्ट- वहथन, तालुका: मंगलवेधा, जिला: सोलापुर-पिनकोड- 413305 महाराष्ट्र, भारत

manojgore999@gmail.com
+91 8805828658

उद्यम: पशु आहार प्रसंस्करण और बिक्री

मूल गतिविधि: "मैंने अपने परिवार से 15/- लाख रुपए लेकर निवेश करके अपना पशु चारा प्रसंस्करण इकाई स्थापित किया जिसकी क्षमता 500 किलोग्राम प्रति घंटा है। मैंने हरे और सूखे चारे की खरीद के लिए 150 किसानों का सहयोग लिया। मैंने बिक्री के लिए नौ खुदरा विक्रेताओं के साथ नेटवर्क बनाया। बाजार में थोक विक्रेताओं को भी चारा वितरण किया जाता है। खनिज मिश्रण और केटल केक प्रमुख उत्पाद हैं। मैंने अपनी इकाई के विस्तार हेतु बैंक ऋण के लिए आवेदन किया है", मनोज ने बताया।

कृषिउद्यमी: महाराष्ट्र में सोलापुर जिले के विहथान गाँव के श्री मनोज गोरे (29) कृषि में डिप्लोमा धारक हैं। श्री मनोज ने महाराष्ट्र में श्रीराम ग्रामीण संशोधन व विकास प्रतिष्ठान, (एसजीएसवीवीपी) वडाला से उद्यमिता प्रशिक्षण लिया। "दूध की उत्पादकता बढ़ाने के साथ-साथ पशु के विकास के लिए पौष्टिक आहार बहुत महत्वपूर्ण है। मैंने पाया कि मेरे संचालन क्षेत्र के किसान पारंपरिक तरीकों से आहार खिला रहे हैं। कुल राशन में कोई योगात्मक सेवन या पूरक भोजन नहीं जोड़ा गया था। इसलिए, दूध का उत्पादन दिन-प्रति-दिन घटता गया। इन सब को ध्यान में रखते हुए, मैं डेयरी मवेशियों के लिए आहार निर्माण कार्य करने लगा", मनोज ने बताया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
7 गांवों से **150** किसान	**7** व्यक्ति	**15** लाख रुपए

श्री मिलिंद सखाराम पवार
कालकावने, पोस्ट-दवहरे, तालुका-मन्दनगर जिला-रत्नागिरी, महाराष्ट्र, भारत

+91 7039176200,
+91 8692990877

उद्यम: काजू उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन

मूल गतिविधि: 'मिलिंद एग्रो प्रोडक्शन यूनिट' 15/- लाख रुपये की पूंजी से 500 वर्ग मीटर भूमि पर स्थापित की गई है, जो छोटे पैमाने पर काजू प्रसंस्करण इकाई के लिए पर्याप्त है। मिलिंद ने बताया कि, "कच्चे माल की उपलब्धता और बाजार की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए, प्रति वर्ष 200 दिनों के लिए 500 टन कच्चे काजू के प्रसंस्करण की क्षमता काफी है।" उन्होंने आगे बताया कि महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र में आजकल अनेक स्थानीय काजू प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित की जा रही हैं। "हम किसानों से उचित मूल्य पर काजू खरीदते हैं। हम उन्हें काजू की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए तकनीकी सलाह भी देते हैं तथा विशेषकर महिलाओं के लिए रोजगार सृजित कर रहे हैं"।

कृषिउद्यमी: श्री मिलिंद पवार (27) महाराष्ट्र में रत्नागिरी जिले के काल्कावने गाँव के प्रशिक्षित कृषि उद्यमी हैं। कृषि विज्ञान में स्नातक करने के बाद, उन्होंने श्रीराम ग्रामीण संशोधन व विकास प्रतिष्ठान, (एसजीएसवीवीपी), रत्नागिरी, महाराष्ट्र में उद्यमशीलता प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया और प्रशिक्षण प्राप्त किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
आशीर्वती जिले के **23** गांवों से **4000** किसान	**4** व्यक्ति	**5** लाख रुपए

श्री निखिल चावड़े
राम मंदिर के निकट,
मुर्तिजापुर, जिला-अकोला
महाराष्ट्र पिन: 444107, भारत

nikhilchaware@gmail.com
+91 8857027957,
+91 9921675274

उद्यम: मृदा और जल परीक्षण प्रयोगशाला एवं कृषि-परामर्श

मूल गतिविधि: "कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), दुर्गापुर (बाड़नेरा), अमरावती जिले का सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा केंद्र है। केवीके में एक मृदा परीक्षण प्रयोगशाला स्थापित है। कृषि-क्लिनिक और कृषि-बिज़िनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण के दौरान, विशेषज्ञ हमेशा प्रशिक्षुओं को मिट्टी परीक्षण कार्य में शामिल होने के लिए प्रेरित करते हैं। मुझे भी अपनी प्रयोगशाला शुरू करने की प्रेरणा मिली। वर्तमान में, मैं मिट्टी और जल परीक्षण प्रयोगशाला चला रहा हूं और महाराष्ट्र में अमरावती जिले के 4000 से अधिक किसानों की सेवा कर रहा हूं" निखिल ने बताया। उन्होने आगे कहा कि "रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग के कारण, मिट्टी में जैविक कार्बन और मैग्नीशियम का स्तर कम हो जाता है इसलिए मैंने किसानों को मिट्टी की उर्वता में सुधार के लिए प्रसंस्कृत कंपोस्ट, खाद और सूक्ष्म पोषक तत्वों के उपयोग की सलाह दी है"।

कृषिउद्यमी: श्री निखिल चावड़े (34), महाराष्ट्र में अकोला के मुर्तिज़ापुर गाँव से कृषि में स्नातक हैं। स्नातक स्तर की पढ़ाई के उपरांत वह एसी व एबीसी योजना के तहत उद्यमशीलता प्रशिक्षण में शामिल हो गए। प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन केवीके, दुर्गापुर में किया गया था।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
3 गांवों से 150 किसान	3 व्यक्ति	5 लाख रुपए

श्री जाकिर करीम मुलानी
जाभुल, तालुका: मलसिरास, जिला: सोलापुर, पिनकोड-413112, महाराष्ट्र, भारत

acabcwadala@gmail.com
+91 9730737935

उद्यम: डेयरी फार्मिंग और दुग्ध संग्रह केंद्र

मूल गतिविधि: "प्रतिदिन 40 लीटर दूध देने वाली पांच मुर्रा भैंसों को पालने के साथ-साथ, मैंने तीन गाँवों के 150 किसानों से दूध संग्रह करने वाला एक दुग्ध संग्रह केंद्र भी खोला है। दैनिक दूध संग्रह 200 लीटर है। प्रत्येक किसान के दूध का गुणवत्ता के लिए परीक्षण किया जाता है और उसमें वसा(फैट) और एसएनएफ के प्रतिशत के आधार पर उन्हे भुगतान किया जाता है। मेरे केंद्र से जुड़े प्रत्येक किसान को एक पखवाड़े पर भुगतान किया जाता है", श्री जाकिर करीम मुलानी ने बताया।

कृषिउद्यमी: महाराष्ट्र में सोलापुर जिले के जाभुल गाँव के कृषि में डिप्लोमाधारी श्री जाकिर करीम मुलानी (29) का कहना है कि "श्रीराम ग्रामीण संशोधन व विकास प्रतिष्ठान, वडाला में आयोजित एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेना मेरे लिए बहुत अच्छा अवसर था"। "प्रशिक्षण के दौरान मैंने व्यावसायिक कौशल सीखा। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रभाव ने मुझे डेयरी अर्थात दुग्ध संग्रह केंद्र, फीड इकाई, वर्मीकम्पोस्टिंग इकाई, आदि के विभिन्न व्यापारिक रणनीतियों पर विचार करने के लिए प्रेरित किया। मैं भविष्य में डेयरी के आधार पर अपने व्यवसाय में विविधता लाऊंगा" जाकिर ने बताया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
7 गांवों से **150** प्रशिक्षित महिलाएं	**3** व्यक्ति	**25** लाख रुपए

श्री रोहन शंकर अवघांड़े
पुत्र शंकर के. अवघांड़े,
अमवती गांव व पोस्ट- आशीर्वती
महाराष्ट्र पिन: 444606, भारत

rohan.awghane@yahoo.com
+91 9422958341

उद्यम: बैग(थैलों) का निर्माण (कपास के बैग, गैर-बुने कार्ट्रिज, स्कर्टिंग बैग)

मूल गतिविधि: रीगल पैकेजिंग '{सूती कपड़े (कॉटन) के बैग, गैर-बुने कार्ट्रिज, स्कर्टिंग बैग)} बैग का निर्माण करता है तथा महाराष्ट्र राज्य में इनके व्यापार का नेटवर्क 50 से अधिक थोक विक्रेताओं और लगभग 80 खुदरा विक्रेताओं के साथ श्रृंखलाबद्ध है। एक मध्यमवर्गीय परिवार से आने वाले रोहन ने अपने माता-पिता से मात्र 1.5/- लाख रूपए उधार लेकर इस व्यवसाय को शुरू किया था। उन्होंने अपने उद्यम की शुरूआत एक पुरानी सिलाई मशीन खरीद कर व एक अंशकालिक दर्जी को काम पर रखते हुए किया। उन्हे एक चाय के थोक विक्रेता से 70,000 रुपये का पहला बड़ा आर्डर मिला। "ग्राहक ने मुझे 50 प्रतिशत राशि पेशगी के तौर पर दिया। मैंने और दो मशीनें व दो दर्जी रख लिए, "रोहन ने बताया।

कृषिउद्यमी: कृषि में डिग्री होने के बावजूद, मुझे इस उद्योग में शून्य अनुभव था। कृषि-विज्ञान केंद्र, अमरावती में आयोजित एग्री-क्लीनिक और एग्री-बिज़नेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत मैंने दो महीने के उद्यमशीलता प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया था। "इस अवधि के दौरान, मैंने पैकेजिंग उद्योग के बारे में छान-बीन किया और प्रशिक्षण समन्वयक पर जोर डाला कि वह पैकेजिंग उद्योग के दौरे की व्यवस्था करें। इस अनुभवी दौरे से मैंने इस उद्योग के बारे में सभी जानकारियां प्राप्त की" महाराष्ट्र के अमरावती शहर में रहने वाले श्री रोहन (30) ने बताया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
7 गांवों से 250 किसान	8 व्यक्ति	20 लाख रुपए

श्री सोहन वीर
पुत्र श्री. जबार सिंह,
ग्राम- चंदपुरी, पोस्ट-खतौली,
जिला- मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश
पिन- 251201, भारत

+91 9758040535

उद्यम: गुड़ प्रसंस्करण इकाई व गन्ना उत्पादन पर परामर्श

मूल गतिविधि: श्री सोहन वीर के पास 5 एकड़ पैतृक भूमि थी। वह गन्ना व अन्य फसलों की खेती कर रहे थे। एसी व एबीसी प्रशिक्षण के बाद, उन्हे मूल्य संवर्धन की अवधारणा पर विश्वास हो गया और उन्होने गुड़ प्रसंस्करण इकाई लगाने का फैसला किया। वह ताजा गन्ने की नियमित खरीद के लिए 150 किसानों के साथ जुड़ गए। 8 कुशल श्रमिको की मदद से उन्होंने गुड़ का उत्पादन शुरू किया। स्थानीय बाजार में प्रसंस्कृत गुड़ 5 किलो, 20 किलो और 50 किलो के पैकट बिक रही है। थोक बाजार के लिए, पैकटों का वजन 100 किलो से अधिक होता है।

कृषिउद्यमी: श्री सोहन वीर (26), एक कृषि स्नातक हैं। उन्होने 100 किलोग्राम/घंटा की क्षमता का गुड़ प्रसंस्करण इकाई स्थापित किया है। श्री सोहन एग्री-क्लीनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षित कृषि उद्‌यमी हैं। उन्होंने सेंटर फॉर एग्रीकल्चर एंड रूरल डेवलपमेंट (सीएआरडी) मुजफ्फरनगर, में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। “गुड़ मीठे (स्वीटनर) का एक शुद्ध, पारंपरिक, अपरिष्कृत रूप है तथा बाजार मूल्य अधिक होने पर यह किसानों को अच्छा लाभ देता है। इस प्रकार छोटे पैमाने पर व्यवसाय के रूप में गुड़ उत्पादन करना लाभदायक होगा ”सोहन ने बताया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
2 गांवों से **50** किसान	**6** व्यक्ति	**2** लाख रुपए

श्री मंदाड़ी वम्सी कृष्णा
4-13, के.के.बस्ती, पेद्दतूपरा (ग्राम), पलमकोले पोस्ट, रंगा रेड्डी, तेलंगना, पिनकोड-509325, भारत

vishvamshi@gmail.com
+91 9849522333
www.netrinsspirulife.com

उद्यम: स्पिरुलिना की खेती और परामर्श

मूल गतिविधि: नेट्रिन्स स्पिरुलिना उत्पादन इकाई एक प्रीमियम निर्माता और नेट्रिन्स स्पिरुलाइफ़ उत्पाद का आपूर्तिकर्ता है। यह घरेलू बाजार में व्यापक रूप से मिलता है। उत्पाद की श्रेणी में 50 ग्राम नेट्रिन्स स्पिरुलिना पाउडर, 100 ग्राम नेट्रिन्स स्पिरुलिना पाउडर, 200 ग्राम नेट्रिन्स स्पिरुलिना पाउडर, 500 ग्राम नेट्रिन्स स्पिरुलिना पाउडर, 5 किग्रा नेट्रिन्स स्पिरुलिना पाउडर, 10 किग्रा नेट्रिन्स स्पिरुलिना पाउडर, 25 किग्रा नेट्रिन्स स्पिरुलिना पाउडर, 50 किग्रा नेट्रिन्स स्पिरुलीना पाउडर इत्यादि शामिल हैं। "हमारी पूरी टीम में ऐसे पेशेवर शामिल हैं जो इस क्षेत्र में व्यापक रूप से अनुभवी हैं। वे बाजार में मांगों के बारे में जानते हैं। हमारे सभी उत्पाद सभी प्रकार की मिलावटों से मुक्त हों, यह सुनिश्चित करने के लिए हम विश्वसनीय उद्योग स्रोतों से सामग्री खरीदते हैं। हमारे उत्पादों की अद्भुत विविधता के कारण, हम देश भर से ग्राहकों को संतुष्ट करने में सक्षम हैं "वम्शी ने संतुष्टि के साथ बताया।

कृषिउद्यमी: फार्मेसी विज्ञान में पोस्ट ग्रेजुएशन करने वाले श्री एम. वम्शी कृष्णा (27) ने हैदराबाद के भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान {इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट रिसर्च (आईआईएमआर)} राजेंद्रनगर में आयोजित एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत कौशल प्रशिक्षण प्राप्त किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
अपने गांव से **50** किसान	**1** व्यक्ति	**3** लाख रुपए

श्री संतोष शेखर मंडावकर
पोस्ट- मलगुंद, राहतगर्वाड़ी,
म.नं. 1015 तालुका- रत्नगिरी,
जिला-रत्नगिरी, महाराष्ट्र-
415615, भारत

santoshmadavkar43@gmail.com
+91 9405709693

उद्यम: सौर सुरंग ड्रय्यर (सुखाने वाली मशीन) इकाई

मूल गतिविधि: भारत में कुल मछली उत्पादन का 20 प्रतिशत हिस्सा सूखी मछली सेगमेंट का है। मछली एक कम समय खराब होने वाला खाद्य उत्पाद है और इसे लंबे समय तक केवल प्रसंस्करण द्वारा ही स्टोर किया जा सकता है। परंतु समस्या यह है कि जिस आस्वास्थ्यकर तरीके से इसका प्रसंस्करण किया जाता है तथा इसे सुखाया जाता है, वह सूखे मछली की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। समुद्र तट पर खुले में सूखाने से कीड़े मछली के अंदर अंडे दे देते हैं, जो उत्पाद को गैर-उपभोग्य बनाता है। इस समस्या से निपटने का एक विकल्प सोलर ड्रायिंग है। "मैं 1.50/- लाख रुपये से सौर सुरंग का निर्माण कर हाईजीनिक सौर फिस ड्रायर इकाई चला रहा हूँ। यह इकाई ज्यादातर अक्टूबर से मई के महीने तक चलती है। मैं स्थानीय बाजार में मछली बेच रहा हूं। मैं झींगा, प्रॉन और समुद्री मछलियों को सुखाने के लिए अपने व्यवसाय का विस्तार करना चाहता हूं। "संतोष ने बताया।

कृषिउद्यमी: श्री संतोष शेखर मांडवकर (27) महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले से हैं। कृषि में स्नातक करने के बाद संतोष अपना स्वयं का मत्स्य व्यवसाय शुरू करना चाहते थे। रत्नागिरी जिला एक तटीय क्षेत्र है और मछली उत्पादन यहां पर एक प्रमुख उद्यम है। खुद को विपणन कौशल से लैस करने के लिए, संतोष ने महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में श्रीराम ग्रामीण संशोधन व विकास प्रतिष्ठान (एसजीएसवीवीपी) द्वारा आयोजित उद्यमशीलता प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
2 गांवों से **10** किसान	**4** व्यक्ति	**7** लाख रुपए

श्री आकाश बालासाहेब कटारे
पोस्ट-यरनदेस्कर, तालुका-पूमा,
जिला-परभानी,
महाराष्ट्र, भारत

akashkatare4u@gmail.com
+91 9657183428

उद्यम: सेरीकल्चर (रेशम उत्पादन) और परामर्श

मूल गतिविधि: श्री आकाश ने परभानी में सेरीकल्चर विभाग का दौरा किया और एक सेरीकल्चर इकाई प्रारंभ करने का प्रस्ताव रखा। परियोजना निदेशक ने उन्हें सेरीकल्चर में सभी प्रकार की सहायता का वादा किया। उन्हें एक एकड़ में मलबर के बागान उगाने की सलाह दी गई। उन्हें रियरिंग (पालने वाले) उपकरणों और सभी तकनीकी पर्यवेक्षण तथा आधारक पौधें और रेशम कीट पालन के लिए तकनीकी सहायता भी प्रदान की गई। आकाश ने शहतूत से रेशम कार्य के लिए 50 किलोग्राम हरे कोकून की फसल उपजाई, जिससे उन्हे एक वर्ष में 75,000/- रुपए की आय हुई है।

कृषिउद्यमी: महाराष्ट्र में परभानी जिले के येरांदेश्कर गाँव के निवासी श्री आकाश बालासाहेब कटारे (26), एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत एक प्रशिक्षित कृषिउद्यमी हैं। उन्होंने सोलापुर के श्रीराम ग्रामीण संशोधन व विकास प्रतिष्ठान में आयोजित प्रशिक्षण में भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान, उन्होंने एक स्थापित सेरीकल्चर इकाई का दौरा किया और सेरीकल्चर गतिविधि से उल्लेखनीय लाभ के बारे में सीखा। इससे प्रभावित होकर उन्होने उसी उद्यम को प्रारंभ करने निर्णय किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
8 गांवों से 250 किसान	3 व्यक्ति	5 लाख रुपए

श्री केदार गणपत तांबे
पोस्ट-वेताल बमबार्डे, तालुका-कुदल, जिला-सिंधुदुर्ग-416520, महाराष्ट्र, भारत

kedar.tambe1988@gmail.com
+91 8805738067

उद्यम: फल प्रसंस्करण इकाई

मूल गतिविधि: 'न्यू प्राइम एग्री./मार्केटिंग कं. सोसायटी एक फल प्रसंस्करण इकाई है जिसकी दैनिक क्षमता 2.5 टन है लेकिन श्री केदार गणपत तांबे ने उत्पादन को प्रति दिन 400 किलोग्राम तक सीमित कर दिया है। इकाई छह सह-उत्पादों अर्थात जैम, स्क्वैश, पाउडर, ड्रिंक और अचार को पारंपरिक तरीके से उपयोग कर प्रसंस्करण कर रही है। केदार ने बताया, "मैंगो स्लाइस, पल्प, मिक्स्ड फ्रूट जैम, अनार के प्रोसेस्ड बीज आदि के उत्पादन के लिए नई रणनीतियों पर विचार जारी है।"

कृषिउद्यमी: महाराष्ट्र में सिंधुदुर्ग जिले के बम्बाड़े गाँव के कृषि स्नातक श्री केदार गणपत तांबे (26) बताते हैं कि कृषि-उद्यमी बनने के लिए दो चरणों की आवश्यकता होती है - पहला कृष्ण वैली एडवांस्ड एग्रिकल्चर फाउंडेशन, सिंधुदुर्ग से एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण तथा बाद में खाद्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, परभानी, महाराष्ट्र से उद्यमशीलता कौशल हासिल करना। इसने उन्हें फल में स्वदेशी तकनीक का उपयोग करके मूल्य-संवर्धन के महत्व को समझने के लिए प्रेरित किया।

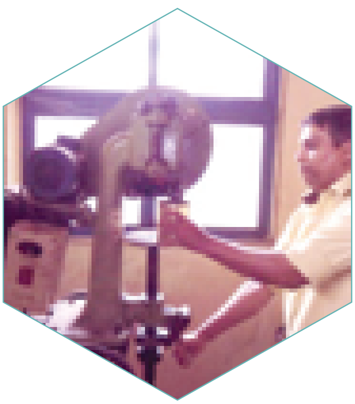

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 जिलों से **1000** किसान	**3** कुशल तथा **7** अकुशल व्यक्ति	**15** लाख रुपए

श्री महेश तुकाराम पाठक
नाजिकचिंचोली,पोस्ट:भेंडा, तालुका: नवासा जिला-अहमदनगर,
पिन:414105, महाराष्ट्र, भारत

maheshpathak9881@gmail.com
+91 9881227714

उद्यम: सूक्ष्म पोषक तत्वों और पौधों के विकास नियामकों (पीजीआर) का विनिर्माण

मूल गतिविधि: 'प्रज बॉयोटेक इकाई' की स्थापना सूक्ष्म पोषक तत्वों और पौधों के विकास नियामकों (पीजीआर) के विनिर्माण हेतु अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला के साथ स्वयं के 7/- लाख रुपये पूंजी के साथ की गई। श्री महेश, कृषि विज्ञान केंद्र, बाभलेश्वर की सलाह से सभी प्रकार की फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए 10 विभिन्न उत्पादों का निर्माण कर रहे हैं। उन्होंने महाराष्ट्र के पाँच ज़िलों में 50 खुदरा विक्रेताओं के साथ अपने व्यवसाय का नेटवर्क तैयार किया है।

कृषिउद्यमी: "सूक्ष्म पोषक तत्व पौधे के विकास के लिए आवश्यक एग्रोकेमिकल्स हैं। मिट्टी में किसी भी एक सूक्ष्म पोषक तत्व की कमी विकास को सीमित कर सकती है, यहां तक कि जब अन्य सभी पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में मौजूद हों। किसान सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी के के लक्षणों के बारे में भी अनभिज्ञ हैं तथा इन कमियों को पूरा करने के लिए आमतौर पर कीटनाशक का प्रयोग करते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए, मैंने सूक्ष्म पोषक तत्वों की विर्निर्माण इकाई शुरू करने का फैसला किया", महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले से कृषि स्नातक श्री महेश पाठक (23) ने बताया। उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र, बाभलेश्वर, महाराष्ट्र से प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
10 गांवों से 500 किसान	1 व्यक्ति	6 लाख रुपए

डॉ अंकुश अरोड़ा
194-195, शुशनगर,
गांधी नगर, जम्मू, भारत

goldenkord@gmail.com
+91 9796451900

उद्यम: डेयरी किसानों के लिए पशु चिकित्सालय और डोरस्टेप पशु चिकित्सक सेवाएं

मूल गतिविधि: डॉ. अरोड़ा ने 5/- लाख रु. की न्यूनतम पूंजी से अपने घर के पिछवाड़े एक छोटा पशु चिकित्सालय खोला। गोल्डन कोर्ड पशु चिकित्सालय एक पूर्ण सेवा, प्राथमिक देखभाल पशु चिकित्सालय है जो पालतू पशुओं को विभिन्न प्रकार की पशु चिकित्सा सेवाएं प्रदान करता है, जिसमें साधारण चेक-अप से लेकर एमोडर्न सर्जिकल सूट तक की सर्जिकल प्रक्रियाएं शामिल हैं। उनके पास पशुओं को प्राथमिक चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के लिए सभी उपकरण और दवा को तैयार रहता है। वह डेयरी किसान के मवेशियों के नियमित चेकअप के लिए उनके पास जाते हैं। उनकी सेवाओं से लगभग 500 डेयरी किसान लाभान्वित हैं। इसके अतिरिक्त, स्थानीय पशु चिकित्सकों के साथ मिलकर विभिन्न प्रकार की निवारक देखभाल सेवाएं, जिनमें टीकाकरण, पोषण परामर्श, स्वास्थ्य सेवाएं और ग्राहक को शिक्षा भी प्रदान किया जाता है। अधिक उम्र के पालतू पशुओं के लिए, कुशल जराचिकित्सा(बुढ़ापे में) देखभाल भी की जाती है ताकि वह लंबे समय तक सक्रिय जीवन का आनंद ले सकें।

कृषिउद्यमी: डॉ अंकुश अरोड़ा (32) ने जम्मू पशु चिकित्सा(वेटरनरी) विश्वविद्यालय से पशु चिकित्सा विज्ञान में मास्टर डिग्री प्राप्त की। डॉ. अंकुश इंडियन सोसायटी ऑफ एग्री-बिजिनेस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी), जम्मू से प्रशिक्षित कृषिउद्यमी हैं।

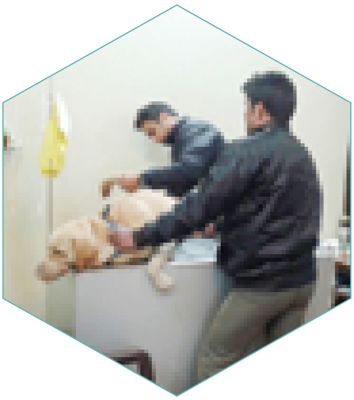

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
300 गांवों से **5000** किसान	**4** व्यक्ति	**50** लाख रुपए

डॉ फरहीन मुस्ताक
नई-कॉलोनी, कावूसा,नर्बल, बडगाम, जम्मू और कश्मीर, भारत

drnissar80@gmail.com
+91 9596154955,
+91 9906569767

उद्यम: पशु चिकित्सा की दवाइयों का वितरण और परामर्श सेवा केंद्र।

मूल गतिविधि: परिवार से 5/- लाख रुपये की वितीय सहायता से डॉ. फरहीन ने अपने क्षेत्र में डेयरी किसानों की सेवा के लिए अपना पशु चिकित्सालय स्थापित किया। डेयरी किसानों के निरंतर फॉलो-अप ने उन्हे उनके दरवाजे तक सेवा प्रदान करने के लिए लोकप्रिय बना दिया। गेटवेल पशु चिकित्सा की दवाइयों के वितरण और परामर्श सेवाओं के लिए प्रसिद्ध हो गया।

कृषिउद्यमी: स्वस्थ मवेशी स्वस्थ बछड़े के रूप में शुरुआत करते हैं। गेटवेल फार्मास्यूटिकल्स कोलोस्ट्रम शिक्षा सहित कोलोस्ट्रम निगरानी में गुणवत्ता प्रशिक्षण प्रदान करता है। बछड़ा प्रबंधन का संपूर्ण पैकेज, टीकाकरण अनुसूची, चारा राशन सूत्रीकरण के साथ पोषण की सिफारिश आदि प्रदान की जाने वाली सेवाओं का भाग हैं। गेटवेल फार्मास्युटिकल्स की मालिकिन डॉ. फरहीन मुस्ताक (38) हैं, जिन्होंने पशुचिकित्सा विज्ञान में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है और सफलतापूर्वक पशुचिकित्सालय चला रही हैं । डॉ. फ़रहीन एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षित कृषिउद्यमी हैं। डॉ. फरहीन ने उद्यमिता कौशल इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्री-बिजिनेस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी), श्रीनगर से सीखा है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 गांवों से 250 किसान	5 व्यक्ति	25 लाख रुपए

श्री भूपेंद्र पाटीदार
ग्राम-नंदरा, तहसील-महेश्वर, जिला-खरगोन, मध्य प्रदेश, भारत

bhupendrabudhi07@gmail.com
+91 9617041547

उद्यम: डेयरी फार्मिंग, वर्मीकॉपोस्टिंग इकाई तथा परामर्श।

मूल गतिविधि: मध्य प्रदेश के खरगोन जिले के नंदरा गाँव में पाटीदार डेयरी, डेयरी उत्पादकों के लिए एक मात्र समाधान है। डेयरी भूपेंद्र के परिवार का पारंपरिक व्यवसाय था। हालाँकि प्रशिक्षण के बाद उन्होंने बैंक ऑफ इंडिया, धारगाँव शाखा से 16/- लाख रु. का ऋण लिया और दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए मुर्रा भैंसें खरीदकर अपनी डेयरी का विस्तार किया। भूपेंद्र अपनी डेयरी से दूध, बछड़े, वर्मीकॉपोस्ट और खाद बेचते हैं। दूध दुहने के दौरान स्वच्छता बनाए रखने के लिए मशीनों का उपयोग किया जाता है।

कृषिउद्यमी: श्री भूपेंद्र पाटीदार (24) की शैक्षिक योग्यता इंटरमीडिएट है। उनकी 18 भैंसों से दैनिक दूध संग्रह 100 लिटर है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने दूध संग्रह केंद्र खोला है जहां प्रति दिन 1000 लीटर तक का दूध संग्रह होता है। श्री भूपेंद्र पाटीदार भोपाल के इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्री-बिजिनेस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी) में एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस संटर्स (एसी व एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षित हैं।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
मध्य प्रदेश के **5** जिलों से **1000** किसान	**10** व्यक्ति	**80** लाख रुपए

श्री भूपेंद्र आर्य
ग्राम-नंदरा, तहसील-महेश्वर, जिला-खरगोन, मध्य प्रदेश, भारत

bpatidar007@gmail.com
+91 9755821427

उद्यम: मसालों का प्रसंस्करण और विपणन

मूल गतिविधि: अपनी स्वंय की 5/- लाख रुपये पूंजी और मध्य प्रदेश वित्तीय निगम, इंदोर शाखा, मध्य प्रदेश से 20/- लाख रुपये बैंक ऋण के प्रारंभिक निवेश से श्री भूपेंद्र आर्य ने 100 टन की दैनिक क्षमता वाली खाद्य प्रसंस्करण इकाई स्थापित की। मिर्च, हल्दी और धनिया प्रमुख मसाले हैं जिनका प्रसंस्करण होता है तथा 'महेश्वर मसाला' ब्रांड के नाम से बेचे जाते हैं। भूपेंद्र कहते हैं' मेरा नेटवर्क मध्यप्रदेश के पांच जिलों में 500 खुदरा दुकानों के साथ है।

कृषिउद्यमी: श्री भूपेंद्र आर्य (25) ने कृषि में इंटरमीडिएट किया है। भूपेंद्र नंदरा गाँव के निवासी हैं और भोपाल के इंडियन सोसायटी ऑफ़ एग्री-बिज़नेस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी) से प्रशिक्षित कृषिउद्यमी हैं। "मसालों का प्रसंस्करण और व्यापार हमेशा से एक महत्वपूर्ण उद्योग रहा है। छोटे पैमाने पर मसालों का प्रसंस्करण, आर्थिक और सामाजिक रूप से सफल हो सकता है। मुख्य बाधा अपरिपक्व फसल की कटाई है। आमतौर पर किसान ऐसा चोरी के डर या तत्काल धन की आवश्यकता के कारण करते हैं। हालांकि, मसालों को पूरी तरह से परिपक्व होने तक इंतजार करने के लिए हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए क्योंकि कम गुणवत्ता वाली फसलों की सामग्री से अच्छे मसालों का उत्पादन करना संभव नहीं है। भूपेंद्र ने बताया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
भारत तथा विदेश से **10000** ग्रामीण युवा	**10** व्यक्ति	**80** लाख रुपए

श्री दीपक पाटीदार
एटी/पोस्ट- सुंदरेल निकट घमनोद, तहसील- धरमपुरी जिला: धार, मध्य प्रदेश- 454552, भारत

www.goatwala.com
goatwala@gmail.com +91 7869929786,
+91 9425046943

उद्यम: व्यावसायिक बकरी पालन और प्रशिक्षण केंद्र।

मूल गतिविधि: भारत में बकरी पालन एक नया बढ़ता उद्योग है। मध्य प्रदेश, भारत में गोटवाला फार्म एक मान्यता प्राप्त बकरी फार्म और बकरी प्रजनन इकाई है। मध्य प्रदेश में धार जिले के सुंदरेल गांव से बकरी वाला फार्म के मालिक श्री दीपक पाटीदार (41) कहते हैं, “हमारा फार्म एक व्यावसायिक इकाई है, जहाँ तीन भारतीय बकरियों की नस्लें जमुनापरी, बारबारी और सिरोही पाली जाती हैं”। एसी व एबीसी की सहायता के तहत, दीपक को बैंक ऑफ महाराष्ट्र, सुंदरेल शाखा से 20/- लाख रुपये का ऋण प्राप्त हुआ जिससे उन्होने बकरी पालन और प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना की। गोटवाला फार्म प्रशिक्षुओं की सभी श्रेणियों अर्थात किसानों, गैर सरकारी संगठनों, परियोजना समन्वयकों, खेत में काम करने वाले श्रमिकों और व्यावसायिक रूप से बकरी पालने वाले नए किसान के लिए प्रशिक्षण सुविधा प्रदान करता है। व्यावसायिक बकरी पालन पर तीन दीवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के साथ-साथ एक दिन के प्रशिक्षण और दौरा कार्यक्रम की रूप रेखा भी बनाई गई है। एक सामाजिक कल्याण के रूप में मान्यता प्राप्त होने के कारण नाबार्ड ने उन्हें 36 प्रतीशत की सब्सिडी पेशकश की है।

कृषिउद्यमी: सुंदरेल गांव के निवासी श्री दीपक पाटीदार कृषि स्नातक हैं। उन्होंने भोपाल के इंडियन सोसायटी ऑफ़ एग्री-बिज़नेस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी) द्वारा आयोजित, एग्री-क्लीनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत उद्यमशीलता कौशल प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
8 गांवों से **250** किसान	**5** व्यक्ति	**14** लाख रुपए

श्री ऋषु शेखर सिंह
म.सं.- 1101 एचबीसी, सेक्टर-15
हिसार दरियापुर जिला-फतेहाबाद,
जत्तू लोहारी भिवानी, हरियाणा,
भारत

rishu_13379@yahoo.com
+91 9541115953

उद्यम: संरक्षित सब्जियों की खेती और विपणन

मूल गतिविधि: जैसा कि पॉलीहाउस पूरे वर्ष फसलों को उगाने में सक्षम है, अत: आय अच्छी होती है। साथ ही उपज की गुणवत्ता खुले खेत में खेती से बेहतर है। इसके साथ ही पॉलीहाउस खेती में उपज खुले खेत में खेती की अपेक्षा 4 से 8 गुना अधिक है। मेरे फार्म में पहले पॉलीहाउस की स्थापना मेरे स्वयं के निवेश तथा एसी व एबीसी योजना के क्रेडिट सहायता के तहत यूनियन बैंक, करनाल शाखा से लिए गए रू. 5/- लाख से हुई थी। अब तक, बढ़े हुए मुनाफे से सब्जी की खेती के लिए सात छायेदार जालियां लगाई गई हैं। पॉलीहाउस में उगाई जाने वाली मुख्य सब्जियों की फसलें हैं - टमाटर, खीरा, शिमला मिर्च, करेला, खरबूजा, फूलगोभी और पत्तागोभी। ऋषु कहते हैं "मैं साल भर अपने फसल के उत्पाद की बिक्री कर सकता हूं"।

कृषिउद्यमी: श्री. ऋषु शेखर सिंह (37), कृषि मौसम विज्ञान में मास्टर हैं और एक प्रशिक्षित कृषिउद्यमी हैं तथा संरक्षित सब्जियों की खेती और बिक्री करते हैं। करनाल के इंडियन सोसायटी ऑफ़ एग्री-बिज़नेस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी) मे प्रशिक्षण के दौरान, उन्होंने फ़्लोरीकल्चर (फूलों की खेती) की एक पॉलीहाउस इकाई का दौरा किया और पाया कि कम से कम अतिरिक्त इनपुट (निवेश) के साथ, साल भर एक ही फसल काटी जा सकती है।

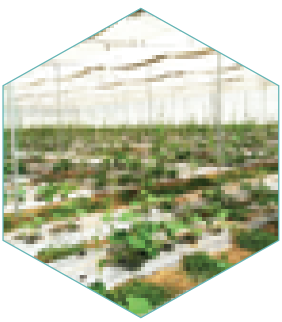

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
150 गांवों से **1000** किसान	**6** व्यक्ति	**1** करोड रुपए

श्री सरदार सिंह
म.सं.- 951 नई हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी, करनाल, हरियाणा, भारत

adf.knl01@gmail.com
+91 9416483198

उद्यम: फेरोमोन ट्रैप का विनिर्माण और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना

मूल गतिविधि: “मैंने एसी व एबीसी योजना के तहत पंजाब एंड सिंध बैंक, रंबा शाखा से फेरोमोन ट्रैप के विनिर्माण इकाई की स्थापना के लिए 15/- लाख रुपये का ऋण लिया। मैंने हरियाणा के राज्य कृषि विभाग से संपर्क किया। मुझे 10000 फेरोमोन ट्रैप के विनिर्माण का आर्डर मिला। इसके अतिरिक्त, मैं प्याज और लहसुन की फसल के लिए बीज उत्पादन भी करता हूं। नाबार्ड ने मुझे जैविक फार्मिंग में विस्तार कार्यों के लिए 36 प्रतीशत सब्सिडी की पेशकश की है” श्री सरदार सिंह ने बताया।

कृषिउद्यमी: श्री सरदार सिंह (57), कृषि विज्ञान में स्नातक, राज्य कृषि विभाग, हरियाणा से सेवानिवृत्त हैं। स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के बाद, करनाल के इंडियन सोसायटी ऑफ़ एग्री-बिज़नेस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी) में आयोजित उद्यमशीलता प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। 100 प्रतिशत उपस्थिति के बाद, सरदार ने इस कार्यक्रम के पूरा होने पर एक और प्रमाणपत्र प्राप्त किया। फेरोमोन ट्रैप का प्रयोग अक्सर कीट/कीड़ों को पकड़ने के लिए किया जाता है। इस ट्रैप में कीटों को लुभाने के लिए फेरोमोन अट्रैक्टेंट का उपयोग किया जाता है। “यह बहुत ही आसान, पर्यावरण हितैषी और कम लागत वाली तकनीक है परंतु किसान अक्सर कीट नियंत्रण के लिए रासायनिक कीटनाशक का उपयोग करते हैं। इसलिए मैंने कीट जाल का निर्माण करने और प्राकृतिक खेती के बारे में जागरूकता पैदा करने का फैसला किया”, श्री सरदार सिंह ने बताया।

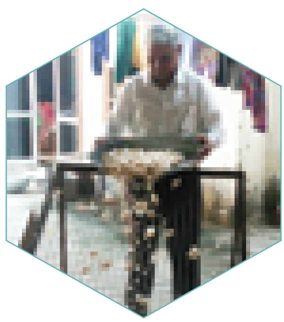

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
हरियाणा राज्य से **500** मधुमक्खी पालक	**8** व्यक्ति	**35** लाख रुपए

श्री रविंदर कुमार
वीपीओ/थाना-छापर,
जिला:यमुना नगर,
हरियाणा, भारत

bee12345@gmail.com
+91 9416195177

उद्यम: मधुमक्खी पालन और परामर्श

मूल गतिविधि: करनाल के पंजाब एंड सिंध बैंक, यमुनानगर शाखा से 20/- लाख रुपए की क्रेडिट सहायता से श्री रविंदर कुमार ने 50 बक्सों के साथ मधुमक्खी पालन इकाई प्रारंभ की, जिसे बहुत कम समय में बढ़ाकर 200 बक्सों तक कर दिया। अपने स्वयं के उद्यम की स्थापना के साथ ही उन्होंने क्षेत्र में अन्य किसानों को भी मधुमक्खी पालन व्यवसाय विकसित करने में मदद करना शुरू कर दिया। केवल मधुमक्खी पालन से उनकी आय लगभग रु. 35/- लाख प्रति वर्ष होती है। उन्होंने 500 मधुमक्खी पालक किसानों के समूह का गठन किया, जिनके माध्यम से पूरे राज्य में शहद का विपणन किया जा रहा है।

कृषिउद्यमी: हरियाणा के राज्य कृषि विभाग से सेवानिवृत्ति के बाद, श्री रविंदर कुमार (61) अपनी दूसरी पारी में कुछ करने के लिए बहुत उत्सुक थे। वह करनाल के इंडियन सोसायटी ऑफ़ एग्री-बिज़नेस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी) के नोडल अधिकारी के संपर्क में आए और उन्होंने एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिज़िनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत उपलब्ध 32 अनुदानित उपक्रमों के बारे में जाना। उन्होंने अपनी भूमि के सीमित क्षेत्र में फसल की खेती और पशुधन पालन के बाद सबसे उपयुक्त खेती के रूप में मधमक्खी पालन को चुना। वह प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हो गए और 100 प्रतीशत उपस्थिति के साथ उसे पूरा किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
8 गांवों से 100-120 किसान	3 व्यक्ति	25 लाख रुपए

श्री मोहनलाल
ग्राम- दीवाल, कैथाल,
हरियाणा, भारत

mohanrathi355@gmail.com
+91 9050251402

उद्यम: डेयरी उत्पादों में मूल्य संवर्धन

मूल गतिविधि: "मूल्य संवर्धित डेयरी उत्पादों के उत्पादन और विपणन पर विचार करते समय, पूंजी परिव्यय, समय प्रतिबद्धता तथा बाजार हिस्सेदारी पर ध्यान देना चाहिए। मैंने 120 डेयरी किसानों के साथ नेटवर्क बनाया है और प्रसंस्करण के लिए प्रतिदिन 400 लिटर दूध एकत्र करता हूं। आपको अपने उत्पाद को निरंतर और गुणवत्ता के साथ वितरित करना चाहिए। यदि आप गुणवत्ता मानकों और/या समय पर पर्याप्त वितरण की आपूर्ति नहीं बनाए रखते हैं तो उपभोक्ता नकारात्मक प्रतिक्रिया दे सकते हैं"। मोहन लाल ने महात्वकांक्षी डेयरी उद्यमियों के लिए अपने विचार साझा किए।

कृषिउद्यमी: श्री मोहन लाल (27), हरियाणा राज्य के कैथल से कृषि इंजीनियरी में डिप्लोमा धारक हैं। उन्होने करनाल के इंडियन सोसायटी ऑफ़ एग्री-बिज़नेस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी) में उद्यमी प्रशिक्षण में भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान, उन्होंने राष्ट्रीय विकास अनुसंधान संस्थान (एनडीआरआई) करनाल का दौरा किया और मूल्य संवर्धित डेयरी उत्पादों पर वैज्ञानिक तकनीक के बारे में सीखा। "यदि आप अपने डेयरी व्यवसाय को अधिक लाभदायक बनाने में रुचि रखते हैं, तो मूल्य संवर्धित उत्पादों का उत्पादन करें जो अनेक अवसर प्रदान करती हैं। मैंने अपने दूध का कारोबार दूध, दही, घी, पनीर और छेने की बिक्री के साथ प्रारंभ किया था" मोहन लाल ने बताया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
25 गांवों से 1000 किसान	7 व्यक्ति	30 लाख रुपए

श्री हरजीत सिंह ग्रेवाल
पुत्र श्री रिचपाल सिंह, ग्राम- नवादा कलां, ब्लॉक व तहसील - सिंभावली, जिला- हापुर, उत्तर प्रदेश, पिन- 245207, भारत

+91 9991001329

उद्यम: बीज उत्पादन और प्रसंस्करण इकाई

मूल गतिविधि: प्रारंभ में हरजीत ने अपनी 10 बीघा जमीन में बीज उत्पादन शुरू किया। निरंतर बढ़ती मांग को देखते हुए, उन्होंने 100 किसानों को सब्जी के बीज उत्पादन के लिए वापस खरीदी के आधार पर अनुबंधित किया। लगभग 1500 किलोग्राम शुद्ध बीज का उत्पादन किया गया और बेच दिया गया। अब, वह किसानों के बीच एक ईमानदार बीज उत्पादक के रूप में लोकप्रिय हैं। नाबार्ड, हापुर ने भी एसी व एबीसी योजना पर आयोजित एक संवेदीकरण कार्यशाला में एक सफल कृषिउदयमी के रूप में उनकी पहचाना की और सम्मानित किया। अतिरिक्त आय के लिए उन्होंने किसानों को गुणवत्ता वाले बीजों का उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहित किया। "बीज उत्पादन के दौरान, आनुवंशिक शुद्धता के रखरखाव पर सख्त ध्यान दिया जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, बीज उत्पादन मानकीकृत और सुव्यवस्थित वातावरण में किया जाना चाहिए" हरजीत ने बताया।

कृषिउद्यमी: हरजीत सिंह ग्रेवाल (38) को बीज प्रौद्योगिकी में मास्टर डिग्री प्राप्त है और वह धान, सरसों, गेहूं, दाल और सब्जियों के गुणवत्ता वाले बीजों का उत्पादन करते हैं। हरजीत सिंह, कृषि तथा ग्रामीण विकास केंद्र (सीएआरडी), मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश से कृषि विज्ञान में प्रशिक्षित कृषिउद्यमी हैं।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
2 गांवों से **150** किसान	**12** जूनियर डॉक्टर	**5** लाख रुपए

डॉ देबासीस दास
प्लॉट सं. 184, सौभाग्य नगर,
एसबीआाई कॉलोनी, सिरपुर
भुबनेश्वर, पिनकोड-751003
ओड़ीसा,भारत

support@tarzoo.in
+91 9439750710
www.tarzoo.in

उद्यम: पालतू पशुओं के लिए पशु चिकित्सा परामर्श, दरवाजे तक(डोरस्टेप) चिकित्सा सहायता तथा डे-केयर(दैनिक देखभाल) प्रशिक्षण केंद्र।

मूल गतिविधि: डॉ. देबासीस दास ने पशुओं के लिए पशु चिकित्सालय खोला और उसे 'टार्ज़ू पेट केयर' नाम दिया, जिसमें तीन प्रमुख सेवाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है: पालतू पशुओं के लिए चिकित्सा परामर्श, दरवाजे तक(डोरस्टेप) चिकित्सा सहायता और डे-केयर(दैनिक देखभाल) प्रशिक्षण केंद्र। उनकी ऑनलाइन हेल्प डेस्क - www.tarzoo.in - पालतू पशुओं के मालिकों को फोरम से सवाल पूछने और उनके समाधान पाने के लिए प्रोत्साहित करती है। इसके अलावा, ऑनलाइन सेवा पालतू पशुओं के मालिकों को अपने दरवाजे पर (डोरस्टेप) इलाज के लिए अनुरोध करने में मदद करती है। देबासीस अपने समय का कुछ हिस्सा डेयरी किसानों को उनकी गायों के लिए आवश्यक टीकाकरण और नियमित जांच के लिए भी देते हैं।

कृषिउद्यमी: पशु चिकित्सा कॉलेज से स्नातक डॉ. देबासीस दास (24) कहते हैं "पशु चिकित्सा विज्ञान में स्नातक करने के पीछे मेरा लक्ष्य पशु समुदाय की सेवा करना और पालतू जानवरों के लिए 'देखभाल और ममता' का एक केंद्र विकसित करना था" । जानवरों के प्रति उनके जुनून ने उन्हें पशु चिकित्सा विज्ञान का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। वह पशुओं के देखभाल में एक उद्यमी के रूप में अपना कैरियर बना रहे हैं। उन्हे अपना सपना सच होते प्रतीती हुआ जब उन्हे नोडल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट-सेंटर फॉर यूथ एंड सोशल डेवलपमेंट (सीवाईएसडी) द्वारा ओडिशा में मैनेज के एसी व एबीसी योजना के तहत प्रशिक्षण आयोजित करने के बारे में पता चला। तुरंत ही उन्होंने 60 दिनों के प्रशिक्षण कार्यक्रम के पहले बैच में पंजीकरण करा लिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 गांवों से **350** किसान	**7** व्यक्ति	**15** लाख रुपए

श्री घुले यतीन बापूराव
ए/पी-काटेवाड़ी, तालुका-बारामती,
जिला-पूणे, महाराष्ट्र,
भारत

+91 9860606667

उद्यम: जैविक केले की खेती और निर्यात

मूल गतिविधि: "लंबे समय से, केले की खेती के लिए कोई भी भारतीय कंपनी अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों को पूरा करने में सक्षम नहीं थी। परिणामस्वरूप, भारत का केले का निर्यात नगण्य रहा है। मैं केले की जैविक खेती करने लगा, बेदाग केले की फसल को देख कर बारामती के कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) के प्रधान वैज्ञानिक ने मुझे निर्यात करने की सलाह दी। मैंने जाँच की और पाया कि मेरे केले की फसल की गुणवत्ता निर्यात के लिए मानकों को पूरा करती है। मैंने अपनी 10 एकड़ भूमि पर फल संग्रह केंद्र स्थापित किया। इस फल संग्रह केंद्र पर, बेदाग केले को गद्देदार स्ट्रेचरों पर लाने से पहले धोया, छांटा, जांच किया जाता है और उसके बाद रियल फ्रेश के रूप में ब्रांड किया जाता है। भूरे रंग के बक्से घरेलू बाजार के लिए होते हैं तथा सफेद बक्से निर्यात के लिए। "श्री घुले यतीन बापूराव ने बताया।

कृषिउद्यमी: महाराष्ट्र में पूणे के कटेवाड़ी गाँव के निवासी श्री यतीन बापूराव घुले (46), कृषि में स्नातक हैं। उन्होंने बारामती के कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) से एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिज़नेस सेंटर योजना के तहत दो माह के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। "प्रशिक्षण के दौरान मैंने पूणे में निर्यात विभाग का दौरा किया और निर्यात के सभी प्रक्रियात्मक गतिविधियों को देखा। अब मैं पूरी तरह से घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों के लिए केले के व्यापार में शामिल हूं" घुले ने बताया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
3 गांवों से **150** किसान	**7** व्यक्ति	**5** लाख रुपए

श्री स्वप्निल कुंभार
ए/पी-चिताली, तालुका: खाटव, जिला: सतारा, पिन- 415538, महाराष्ट्र, भारत

swapnilkumbhar479@gmail.com
+91 8484882125, 9561516656

उद्यम: पंचगाव्य आधारित उत्पादों की डेयरी फार्मिंग और विनिर्माण

मूल गतिविधि: “मैं 2 एकड़ भूमि पट्टे पर लेकर 55 खिल्लारी देसी गायों को पाल रहा हूं। दूध, गाय के गोबर और गोमूत्र का उपयोग करके मूल्य संवर्धित उत्पादों जैसे साबुन, टूथपाउडर, धूप, अगरबती, गोमूत्र अर्क, गोलियां, शैम्पू, बाल के लिए तेल, नत्स्य घी, मलहम (ऑइंटमेंट) और खाद बिक्री के लिए तैयार किए जाते हैं। मैं गाय के गोबर और गो-मूत्र की खरीद के लिए 3 गांवों के 150 किसानों के साथ जुड़ा हूं। शॉपिंग मॉल और प्रदर्शनियां पंचगाव्य सह-उत्पादों के लिए प्रमुख बिक्री केंद्र हैं।” स्वप्निल ने बताया।

कृषिउद्यमी: श्री स्वप्निल कुंभार (23) कृषि से स्नातक और पंचगाव्य विज्ञान में पैरास्नातक हैं। पैरास्नातक के बाद उन्होंने पंचगाव्य पर आधारित विभिन्न उत्पादों का उत्पादन शुरू किया। वे उद्यमशीलता कौशल में पिछड़ गए और जब उन्हें एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिज़नेस सेंटर योजना के बारे में बताया गया तो वह कृष्णा वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चर फाउंडेशन, पुणे में प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हुए। तकनीकी और उद्यमशीलता कौशल से लैस, वह पंचगाव्य के सह-उत्पादों के उत्पादन में लग गए। पंचगाव्य, गाय से प्राप्त पाँच तत्वों अर्थात गोमूत्र, गोबर, दूध, दही और घी के व्युत्पन्न का समिश्रण है। “ऐसा माना जाता है कि पंचगाव्य के सेवन से शारीर के साथ-साथ मानसिक विकार भी दूर होते हैं तथा जीवन में बल, ऊर्जा, शारीरिक शक्ति और जीवन काल में वृद्धि होती है” स्वप्निल ने बताया।.

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
4 गांवों 100 किसान	2 व्यक्ति	5 लाख रुपए

श्री प्रशांत राजबंशी
गुनशंकरुल गांव, पोस्ट-धुडमाडिघी थाना+जिला-मालदा, पश्चिम बंगाल, पिनकोड-732128, भारत

prasanta96@gmail.com
+91 09547269896

उद्यम: सब्जी की खेती, बीज उत्पादन और विपणन

मूल गतिविधि: श्री प्रशांत ने मक्का, अरहर दाल, काबुली चना जैसी पहले की फसलों के बजाय गोभी, टमाटर, मटर, मूली, बैंगन, मिर्च और पत्तेदार सब्जियां उगाना शुरू कर दिया। उत्पादन 45 -60 दिनों के भीतर शुरू हो गया। श्री प्रशांत सक्रिय रूप से पूरे दिन खेत और विपणन कार्य में लगे रहते हैं। सब्जी की फसलों की क्षमता को देखने के बाद, श्री प्रशांत ने चालू वर्ष में बीज उत्पादन भी प्रारंभ कर दिया और पड़ोसी किसान को उसकी आपूर्ति की। वह किसानों को नई तकनीकों को अपनाने की भी सलाह दे रहे हैं। अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए श्री प्रशांत भुबनेश्वर के कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों से मार्गदर्शन भी ले रहे हैं।

कृषिउद्यमी: श्री प्रशांत राजबंशी (24), पश्चिम बंगाल के मालदा जिले के गुनशंकरुल गांव के निवासी हैं। श्री प्रशांत ने कृषि विज्ञान में इंटरमीडिएट तक की पढ़ाई की और खेती से जुड़ गए। उसके पास 6 बीघा जमीन थी। पारंपरिक फसलें धान, मक्का, गेहूं, अरहर दाल आदि थीं। इस बीच उन्होंने एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिज़नेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के बारे में जाना और दो माह के उद्यमिता कौशल प्रशिक्षण के लिए इंडियन सोसायटी ऑफ एग्रीबिजनेस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी), आसनसोल में शामिल हो गए। निकटतम कृषि विज्ञान केंद्र के दौरे के दौरान उन्होने खेत में प्रदर्शित सब्जियों की खेती देखी और फसलों के विविधीकरण के महत्व को सीखा। उन्होंने व्यावसायिक रूप से आधी जमीन पर सब्जी उगाने का फैसला किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
3 गांवों से 300 किसान	1 परिचर (अटेंडर)	6.50 लाख रुपए

डॉ घाना कांत डोले
2 नं. जुनकी नगर, वार्ड सं.-3,
पोस्ट-सिलपत्थर, जिला-धेमजी,
पिनकोड-787059, असम, भारत

+91 07896521677

उद्यम: पशु चिकित्सालय और परामर्श

मूल गतिविधि: डॉ डोले ने अपने चिकित्सालय को नंदिनी पशु चिकित्सालय के रूप में पंजीकृत किया है। उन्हें असम ग्रामीण विकास बैंक, सीलपत्थर शाखा, असम से 5/- लाख रुपये का ऋण मिला। उन्होंने मवेशियों और पोल्ट्री प्रबंधन में मदद के लिए नैदानिक (डॉयगनोस्टिक) और शल्य चिकित्सा उपकरण खरीदे। उन्होंने दवाइयां खरीदी और किफायती मूल्य पर टीकाकरण शिविर का आयोजन किया। प्रशिक्षण के दौरान सीखे गए नए आयामों वाले व्यावसायिक कौशल ने उन्हें अतिरिक्त आय अर्जन करने में सहायता की। सेवाओं के विस्तार को देखते हुए, नाबार्ड ने उन्हें 44 प्रतिशत की सब्सिडी दी है।

कृषिउद्यमी: डॉ घन कांत डोले पशु चिकित्सा विज्ञान (बी. वीएससी व एएच) में स्नातक हैं। स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद, उन्होंने धेमजी जिले में अपने पैतृक स्थान सिलपत्थर में अपना एक छोटा पशु चिकित्सालय शुरू किया जो बिना किसी मुनाफे के चल रहा था। उन्होंने महसूस किया कि उनकी उद्यमिता कौशल अच्छी नही है, जबकि वह अपने चिकित्सालय को व्यायसायिक रूप से चलाना चाहते थे। वर्ष 2009 में, उन्होंने असम के इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्री-बिजिनेस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी), गुवाहाटी, में दो माह के प्रशिक्षण के लिए प्रवेश लिया। प्रशिक्षण ने उनमें पशु चिकित्सा क्षेत्र में विस्तार गतिविधियों में व्यावसायिकता और आय सृजन का दृष्टिकोण पैदा किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
करनाल जिले से **21000** किसान	**7** व्यक्ति	**25** लाख रुपए

श्री चितपाल सिंह
एटी-ओखलैंया क्षेत्र-2, प्लॉट सं. 12, हरकेशनगर नई दिल्ली-20, भारत

chanchalagriclinic@gmail.com
+919911711893

उद्यम: खाद्य फसलों में मूल्य संवर्धन

मूल गतिविधि: "एसी व एबीसी प्रशिक्षण के बाद, मैंने फसल परामर्श प्रारंभ की और महसूस किया कि भंडारण क्षमता में कमी के कारण, किसान मूल्य संवर्धन नहीं कर पाते। इसे ध्यान में रखते हुए, मैंने किसानों से फसल की खरीदी और उसे संसाधित करने का निर्णय लिया। मैंने आंवला, सोयाबीन, दूध, मशरूम और शहद खरीदना शुरू किया। मैंने नई दिल्ली के समीप ओखला औद्योगिक क्षेत्र में एक प्रसंस्करण इकाई की स्थापना की और मूल्य संवर्धित उत्पादों के प्रसंस्करण और उत्पादन के लिए 7 कुशल व्यक्तियों की भर्ती की। मेरे सभी उत्पादों को जैविक रूप से संसाधित किया जाता है" चितपाल ने बताया।

कृषिउद्यमी: "सेवानिवृत्ति के बाद विभिन्न प्राकर की अलग-अलग रणनीतियाँ हैं जिन पर कृषि पेशेवरों को विचार करना चाहिए, जिनमें खेत की संपत्ति को बेचना या खेती में पूंजी निवेश कर उससे नकदी कमाना शामिल है। संपत्तियों की बिक्री करके शहर में पुनर्स्थापन की अपेक्षा, मैंने ग्रामीण क्षेत्र में फसल परामर्श शुरू करने का निर्णय लिया"। हरियाणा के करनाल जिले से चितपाल सिंह ने बताया। उन्होने आगे बताया "अपने निवास स्थान की ओर वापस लौटते समय, मुझे एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना की जानकारी मिली। मैंने हरियाणा के करनाल में इस योजना को चलाने वाले प्रतिष्ठित प्रशिक्षण संस्थान इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीबिजनेस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी) के नोडल अधिकारी से संपर्क किया। मैं दो माह के आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हो गया और 100 प्रतिशत उपस्थिति के साथ प्रशिक्षण को पूरा किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
8 जिलों से 1000 किसान	25 व्यक्ति	2.5 करोड़ रुपए

श्री संतोष कुमार सिंह
पुत्र- श्री मोती सिंह ग्राम- तारम, पोस्ट- लालमनपुर, जिला- अंबेडकर नगर, उत्तर प्रदेश, भारत

agriclinc609@gmail.com
+91 9415721654,
+91 9838592932

उद्यम: कृषि-परामर्श और किसान प्रशिक्षण केंद्र

मूल गतिविधि: बैंक ऑफ बड़ौदा,राजे सुल्तानपुर शाखा से 5 लाख रुपये की वित्तीय सहायता से श्री संतोष कुमार सिंह ने किसान प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना की, जिसे उन्होंने "किसान विद्यालय" नाम दिया। संतोष ने देखा कि रखरखाव की कमी के कारण कई एकड़ ज़मीन बंजर हो रही हैं और पुराने बाग ढह रहे हैं, अत: उन्होंने बाग के कायाकल्प के लिए जागरूकता अभियान शुरू किया। उन्होंने किसानों को फलदार वृक्षों जैसे आम, बेल, करौंदा, नींबू, सागौन और बेर उगाने के लिए प्रेरित किया। पानी के संरक्षण के लिए उन्होंने किसानों को खेत में तालाब बनाने और मत्स्य तथा मोती संवर्धन(पर्ल कल्चर) पर उद्यम शुरू करने के लिए भी प्रेरित किया। संतोष के पास एक हेक्टेयर खेत में तालाब है जहाँ वह मोती संवर्धन(पर्ल कल्चर) करते हैं। उत्तर प्रदेश में सुल्तानपुर के किसान कॉल सेंटर (केसीसी) ने संतोष के सवाल को मोती संवर्धन(पर्ल कल्चर) पर आधारित कृषि में बदल दिया।

कृषिउद्यमी: 2 लाख से अधिक बागवानी पौधे लगाने और पुराने बागों का कायाकल्प करने के कारण श्री संतोष कुमार सिंह (46), उत्तर प्रदेश के 8 जिले में "पौधेवाले बाबा" के रूप में लोकप्रिय हो गए हैं। श्री संतोष कुमार को एग्री-क्लीनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षत कृषिउद्यमी हैं। उन्होंने श्री माँ गुरु ग्रामोद्योग संस्थान वाराणसी में उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
3 राज्यों से **5000** किसान	**18** महिलाएं, **30** पुरुष	**1.50** करोड़ रुपए

श्री बंस गोपाल सिंह
पुत्र स्वर्गीय श्री- शिव नाथ सिंह ग्राम- कोथा, पोस्ट- छापरा सुल्तानपुर, जिला- आजमगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत
jaibharatnursery@gmail.com
www.jaibharatnursery.com
+91 9415276605,
+91 9161600002

उद्यम: पौधशाला और लैंडस्केपिंग सेवाएं

मूल गतिविधि: जय भारत पौधशाला आज़मगढ़-गोरखपुर राजमार्ग पर आज़मगढ़ शहर से 4 किमी की दूरी पर हाफिज़पुर में स्थित है। यह 4 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है। पौधशाला की एक हेक्टेयर भूमि आजमगढ़ के कोटा गाँव में है। इसमें अनेक प्रकार की वानिकी, औषधीय, सजावटी और फूलों की खेती की खेती की जाती है; विभिन्न मौसमी फूलों के बाजों की आपूर्ति होती है तथा मधुमक्खी पालन और वर्मीकल्चर भी की जाती है। 30 पेशेवर मालियों के एक दल के साथ यह पौधशाला कृषि, बागवानी आदि से संबंधित विभिन्न सेवाएं प्रदान करती है। पौधशाला की अपनी एक शाखा देहरादून (उत्तरांचल) में है और दिल्ली में है तथा यह बैंगलोर में भी विस्तार की योजना बना रही है। पौधशाला जैविक खेती कर रही है। वर्तमान में सब्जियां उगा रही है तथा बाजार में जैविक उत्पादों की आपूर्ति कर रही है। आगे उनके पास विदेशी सब्जियों को उगाने की भी योजना है।

कृषिउद्यमी: श्री बंस गोपाल सिंह (39) आजमगढ़ के निवासी हैं तथा कृषि विज्ञान में पैरास्नातक हैं। श्री माँ गुरु ग्रामोद्योग संस्थान, वाराणसी से एग्री-क्लीनिक और एग्री-बिज़नेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत वह प्रशिक्षित कृषिउद्यमी हैं। प्रशिक्षण के बाद, उन्होंने स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया, आज़मगढ़ शाखा से 8/ -लाख रु, का बैंक ऋण लिया और पौधशाला से जुड़ गए। अपने कार्य और सफलता के पैमाने के आधार पर नाबार्ड ने उन्हें 36 प्रतिशत सब्सिडी दी है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
25 गांवों से 625 डेयरी किसान	1 व्यक्ति	5 लाख रुपए

डॉ कमलेश बहादुर सिंह
पोस्ट: इलाहाबाद, म.सं. सी-107, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

+91 9793695583

उद्यम: दरवाजे तक (डोरस्टेप) कृत्रिम गर्भाधान और पशुचिकित्सा सेवाएं

मूल गतिविधि: स्वयं की पूंजी निवेश करके डॉ कमलेश बहादुर सिंह ने कृत्रिम गर्भाधान व अन्य डेयरी सेवाओं सहित पशुचिकित्सालय खोला। उन्होंने 25 गांवों से डेयरी किसानों को पंजीकृत किया। किसान को संवेदनशील बनाने और उन्हें कृत्रिम गर्भाधान सेवा के लाभों पर व्यवस्थित रूप से शिक्षित करने के लिए, योजनाबद्ध तरीके से नियमित रूप से प्रसार- प्रचार अभियान किया जाता है जिनमें किसानों के साथ बैठकों के साथ-साथ श्रव्य-दृश्य सहायक सामग्री, उच्च दृश्यता वाले क्षेत्रों में दीवारों पर चित्रकारी, किसानों को लक्षित करते हुए मुद्रित सामग्री का वितरण, बछड़ा-रैली के माध्यम से परिणाम का प्रदर्शन आदि शामिल हैं।

कृषिउद्यमी: इलाहाबाद के निवासी डॉ कमलेश बहादुर सिंह (42), एक योग्य पैरा पशुचिकित्सक के साथ वानिकी में पैरास्नातक हैं, जो दुधारू पशुओं की उत्पादकता में सुधार, दूध की लागत कम करने और किसान की आय में बढोत्तरी के लिए दरवाजे तक कृत्रिम गर्भाधान सेवाएं प्रदान करते हैं। एग्री-क्लीनिक और एग्री-बिज़नेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल होने से पहले, वह एक निजी एनजीओ में मात्र थोड़े से वेतन पर पैरा पशुचिकित्सक के रूप में काम करते थे। बाद में, श्री माँ गुरु ग्रामोद्योग संस्थान, (एसएमजीजीएस) वाराणसी द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम से प्रशिक्षण पूरा करने के बाद, उन्होंने डेयरी किसानों को परामर्श देने के लिए स्वतंत्र रूप से अपना स्वयं का उपक्रम शुरू किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
गुवाहाटी जिले से **4000** किसान	**110** व्यक्ति	**20** करोड़ रुपए

डॉ बितुल बरुआ व
डॉ क्षिरूद सैकिया
अल्पाइन हैचरीज़ प्राइवेट लिमिटेड, गुवाहाटी, असम, भारत

alpinehatcheries@gmail.com
+91 9435190699,
+91 9435195843

उद्यम: मुर्गीपालन हैचरी (पोल्ट्री हैचरी) और परामर्श

मूल गतिविधि: अल्पाइन हैचरीज़ प्राइवेट लिमिटेड लेयर फार्मिंग (चूज़ा क्षिरुद उत्पादन) का एक संयुक्त उद्यम है, जो गुवाहाटी में स्थापित है। डॉ बितुल बरूआ तथा डॉ ख्सिरूद सैकिया ने अपने ठोस परियोजना प्रस्तावों से सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, गुवाहाटी, असम से क्रमशः 26/- लाख रुपये तथा 27/- लाख रुपये का व्यकितिगत ऋण लिया और अपने हैचरी का व्यवसायीकरण किया। ब्रायलर चिक उत्पादन, ब्रायलर चिकन के लिए अनुबंधित खेती, तैयार पक्षियों की बिक्री तथा हैचरी प्रबंधन पर परामर्श, अल्पाइन हैचरी की मुख्य गतिविधियाँ हैं।

कृषिउद्यमी: असम के खानपुरा में असम कृषि विश्वविद्यालय में पढ़ते वक्त डॉ बितुल बरूआ तथा डॉ ख्सिरूद सैकिया एक ही कमरे में रहते थे। वर्ष 1995 में, स्नातक के बाद दोनों अलग हो गए। डॉ सैकिया ने अपना स्वयं का मुर्गीपालन व्यवसाय शुरू कर लिया और डॉ बरुआ उसी विश्वविद्यालय में उच्च अध्ययन करने लगे। बाद में, उन्हे स्थानीय समाचार पत्र से एसी व एबीसी योजना की जानकारी मिली। वे योजना के कई लाभों से प्रेरित हुए और इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीबिजनेस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी), गुवाहाटी में दो माह के मुफ्त आवासीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम शामिल हो गए।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
2 गांवों से **50** किसान	**1** व्यक्ति	**5** लाख रुपए

श्री नीतेश कुमार मौर्या
ग्राम- पिलोरी, पोस्ट- मिर्जामुराद,
जिला- वाराणसी,
उत्तर प्रदेश, भारत

kumarniteshmaurya@gmail.com
+91 7071620870

उद्यम: सब्जियों के बीज का उत्पादन, प्रसंस्करण तथा विपणन

मूल गतिविधि: समृद्धि सीड्स कई प्रकार के परागण और संकर सब्जियों के बीजों का उत्पादन कर रही है। “हम अपने घरेलू ग्राहकों को सुविधाजनक और समय पर आपूर्ति के साथ गुणवत्ता वाले, विश्वसनीय बीज प्रदान करते हैं। मैंने 50 किसानों से संपर्क किया है और प्रत्येक से सब्जी के बीजों के उत्पादन के लिए एक एकड़ खेत आरक्षित करने को कहा है। सीजन शुरू होने पर, मैं सब्जी के फसल के उत्पादन पर अनुकूलित तकनीकी जानकारी देता हूं। पहले वर्ष में मैंने तीन फसलों - ओकरा, अमरंथस और लोबिया का चयन किया और किसानों को आवश्यक कृषि-इनपुट वितरित किए और उन्हे फसल खरीदने का आश्वासन दिया। मैंने एक टन ओकरा बीज खरीदा। मेरे आत्मविश्वास में वृद्धि हुई तथा मैने बीज उत्पादन का कार्य और अधिक सब्जी किसान को सौंपा” नितेश ने बताया।

कृषिउद्यमी: उत्तर प्रदेश में वाराणसी जिले के पिलोरी ग्राम के निवासी श्री नीतेश (23), कृषि विज्ञान से पैरास्नातक हैं। वह सब्जी के बीज का उत्पादन करते है। उन्होने श्री माँ गुरु ग्रामोद्योग संस्थान (एसएमजीजीएस), वाराणसी में आयोजित एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। सब्जियों की फसलों को आमतौर पर उच्च मूल्य वाली फसलें माना जाता है जो बड़े पैमाने पर उगाई जाती हैं परंतु उनका प्रबंधन कम पैमाने पर होता है। अत: सब्जी के बीज के उत्पादन को बढ़ाना अनिवार्य है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
7 गांवों से **500** किसान	**3** कुशल श्रमिक	**1** करोड़ रुपए

श्री प्रभुराज सिंह
पुत्र श्री जुदावन सिंह
ग्राम-बैरिया, कसया, जिला-कुशीनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

+91 9648163564

उद्यम: मुर्गीपालन (लेयर फार्मिंग) और परामर्श

मूल गतिविधि: “सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, कुशीनगर शाखा से 15/- लाख रुपये ऋण के वित्तीय सहायाता और मेरी स्वयं की पूंजी से मैंने 6,500 पक्षियों के साथ अपने लेयर फार्मिंग इकाई की स्थापना की। यह इकाई अब प्रतिदिन 5000 अंडे उत्पादन करती है, जिससे मैं 18 महीने तक बिना किसी रुकावट के लाभ प्राप्त करता हूं” प्रभुराज ने बताया। यह इकाई संसाधन केंद्र के रूप में लोकप्रिय है क्योंकि आसपास के किसानों को ब्रायलर और लेयर फार्मिंग पर भी सलाह दी जाती है। राज्य पशुपालन विभाग के पदाधिकारी भी इकाई का दौरा करते हैं और मुर्गीपालन करने वाले किसानों को सलाह देते जाते हैं। अनुकरणीय सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए, नाबार्ड ने प्रभुराज को 36 प्रतिशत की सब्सिडी दी है।

कृषिउद्यमी: “लेयर मुर्गियां, जब केवल एक दिन की होती हैं, तभी से उनको पालने की आवश्यकता होती है। व्यावसायिक रूप से वे 18-19 सप्ताह की आयु से अंडे देना शुरू करते हैं और 72-78 सप्ताह की आयु तक जारी रखते हैं। वे अंडे देने की अवधि के दौरान लगभग 2.25 किलोग्राम भोजन का उपभोग करके लगभग एक किलो अंडे दे सकते हैं। यह ज्ञान मैंने श्री गुरु ग्रामोद्योग संस्थान, वाराणसी में आयोजित एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर्स (एसी व एबीसी) योजना के तहत अपने उद्यमशीलता प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त किया। इस स्थाई सांख्यिकी ने मुझे लेयर फार्मिंग शुरू करने के लिए प्रेरित किया” उत्तर प्रदेश में कुशीनगर जिले के बैरिया कसया ग्राम के निवासी श्री प्रभुराज सिंह (48) ने बताया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
50 गांवों से **1000** से अधिक किसान	**4** व्यक्ति	**5** लाख रुपए

श्री प्रवीण श्रीवास्तव
एटी-पोस्ट- तिलारी, ब्लॉक- बड़गांव, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

pravin_srivastava41@rediffmail.com
+91 9415390988

उद्यम: वर्मी-कम्पोस्टिंग इकाई और जैविक खेती पर परामर्श

मूल गतिविधि: एसी व एबीसी योजना के तहत विजया बैंक, बडागांव शाखा से 5/- लाख रुपये की वित्तीय सहायता से प्रवीण ने अपने उपरी खेत के एक कोने पर गड्ढे में अच्छी गुणवत्ता वाले तिरपाल का उपयोग करते हुए वर्मीकॉम्पोस्ट बनाना शुरू किया। प्रारंभ में, उन्होंने 500 रुपये की लागत से 2000 वर्मिन वर्म (कृमि) खरीदे और वर्षा और धूप से कॉपोस्ट की रक्षा के लिए गड्ढे के ऊपर एक छत का निर्माण किया। उन्होंने वर्मी-कॉम्पोस्ट प्रशिक्षण केंद्र भी खोला और अब तक 1000 से अधिक किसानों को प्रशिक्षित किया गया है। इस नेक काम को देखते हुए, नाबार्ड ने उन्हें 36 प्रतिशत की सब्सिडी दी है। प्रवीण प्रति वर्ष 150 टन वर्मी-कॉम्पोस्ट का उत्पादन करते हैं।

कृषिउद्यमी: श्री प्रवीण श्रीवास्तव (47), उत्तर प्रदेश राज्य में वाराणसी जिले के तिलारी ग्राम के निवासी हैं। राज्य कृषि विभाग में संविदा की नौकरी पर कई वर्षों तक संघर्षरत रहे। अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने वर्मीकम्पोस्टिंग पर कई क्षमता निर्माण कार्यक्रमों में भाग लिया और उसके लाभों, उपयोगिता, संरचना और निर्माण प्रक्रियाओं के बारे में सीखा। उन्होंने उपलब्ध जैविक कचरे अर्थात गाय के गोबर, हरी पत्तियों, सब्जियों के छिल्के, केले के तनों, जलकुंभी आदि से कॉपोस्ट खाद बनाने की योजना बनाई। अपनी योजना को आगे बढ़ाने के लिए, उन्होंने वाराणसी में श्री माँ गुरु ग्रामोद्योग संस्थान (एसएमजीजीएस) में आयोजित एग्री-क्लिनिक और कृषि-बिज़नेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम में एक बार फिर से दाखिला लिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
15 गांवों से **500** किसान	**2** व्यक्ति	**5** लाख रुपए

श्री नितिन बारकर
एटी/पोस्ट- मुइरोबाद, जिला- इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

nagendra1122@gmail.com
+91 7388137725

उद्यम: सूअर पालन और परामर्श

मूल गतिविधि: न्यूनतम 50,000 रु निवेश से नितिन बारकर ने यॉर्कशायर नस्ल की 10 छोटे सूअरों को 2:8 (नर: मादा) की अनुपात में खरीदा। “मैंने उन्हें अपने घर के खुली छत पर पाला।” उन्होंने याद करते हुए बताया, “पड़ोसियों को असुविधा न हो इसलिए मैंने छत पर सभी प्रकार के स्वच्छता प्रबंधन व्यवस्थाओं को बनाए रखा। उनका वजन बढ़ने के बाद, मैंने उन्हें थोक विक्रेताओं को बेच दिया और खुदरा व्यापारी उनसे 75,000 रुपये कमाने में कामयाब रहे। फिर से, मैंने 10 सूअर के बच्चों का एक और बेच खरीदा और मादा सूअर को प्रजनन के लिए रखा”। वर्तमान में श्री बारकर 30 सूअर के बच्चों के साथ एक सूअर फार्म चला रहे हैं। सूअर फार्म बेरोजगार ग्रामीण युवाओं के लिए प्रशिक्षण केंद्र भी बन गया है।

कृषिउद्यमी: श्री नितिन बारकर (38) कृषि विज्ञान से स्नातक हैं तथा उत्तर प्रदेश के कृषि विज्ञान केंद्र, कौशाम्बी, द्वारा आयोजित एग्री-क्लिनिक और कृषि-बिज़नेस संटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत उद्यमिता कौशल प्रशिक्षण प्राप्त किया है। प्रशिक्षण के दौरान, उन्होंने एक स्थापित सूअर फार्म का दौरा किया और पाया कि दो श्रमिकों की मदद से उसका मालिक प्रति वर्ष लगभग 15/- लाख रु. कमाता हैं। उन्होंने देखा कि अन्य पशुओं के मुकाबले, सूअर पालन अधिक लाभदायक है और अब वह अपना सूअर पालन फार्म सफलता पूर्वक चला रहे हैं।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
30 गांवों से **1250** किसान	**1** परिचर (एटेंडर)	**10** लाख रुपए

डॉ जे. टीना मोनीषा
2/501, 6वी मुख्य सड़क,
गोमतीपुरम पोस्ट मदुरै
तमिलनाडु, पिनकोड-625020,
भारत

jteena@gmail.com
+9109629099499

उद्यम: पशु चिकित्सालय और सेवाएं

मूल गतिविधि: "मैंने स्थानीय स्तर पर पशु चिकित्सा अभ्यास शुरू किया - 'स्थानीय पशु चिकित्सक' यह पद, समय का उपयोग करने हेतु अंशकालिक कवरेज़ देने वाले पशु चिकित्सकों के लिए किया जाता है। समय के साथ, मुझे लगा कि पशुओं की देखभाल के लिए मेरी उदार सेवाओं की आवश्यकता है। मेरी प्रमुख गतिविधियाँ कृत्रिम गर्भाधारण, टीकाकरण, महामारी संबंधी बीमारियों का नियंत्रण, गुणवत्ता प्रमाणन, दवाइंयों और टीकों की लेबलिंग तथा दरवाजे तक (डोरस्टेप) पशु चिकित्सा सेवाएं प्रदान करना आदि हैं। मैं किसानों को स्वच्छता से दूध दुहने, चारा और पशुओं के भोजन प्रबंधन पर भी सलाह देती हूं। पशुपालन के साथ एकीकृत कृषि किसान के लिए दोगुने आय का स्रोत है", टीना ने बताय।

कृषिउद्यमी: "जब मैंने पशु चिकित्सक स्कूल (वेट स्कूल) से स्नातक करने के बाद मैंने अनिर्धारित समय के लिए छोटे पशुओं के साथ सामान्य अभ्यास करने की योजना बनाई। तमिलनाडु राज्य के मदुरै जिले की निवासी डॉ टीना मोनिशा (24),पशु चिकित्सा में स्नातक का कहना है कि वालेन्टरी एसोसियेन फर पीपुल सर्वीस (वैप्स) मदुरै में कृषि-क्लिनिक और कृषि-बिज़नेस सेंटर योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के बाद मेरा यह सपना पूरा हो सका। "प्रशिक्षण कार्यक्रम एक शानदार अनुभव था, जिसने मुझे अपने कारोबार को आगे बढ़ाने के लिए 10/- लाख के रुपये के ऋण के प्रकरण के लिए पशु चिकित्सालय पर अपनी परियोजना रिपोर्ट तैयार करके बैंक में जमा करने में मदद किया," डॉ टीना ने बताया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
30 गांवों से **1900** किसान	**5** महिलाए और **2** पुरूष श्रमिक	**5** लाख रुपए

श्री जी. कृष्णकुमार
नारियल किसान संघ
156 बी, रामासामी गौंडर स्ट्रीट,
अन्नामलाई (पोस्ट)-पोल्लाची - 642 104, तमिलनाडु, भारत

+91 9750922444

उद्यम: नारियल सह-उपोत्पादों की बिक्री के लिए नारियल उत्पादक संगठन

मूल गतिविधि: नाबार्ड के साथ वित्तीय लेनदेन में नारियल उत्पादकों के कौशल में सुधार हेतु क्षमता निर्माण। नाबार्ड, नारियल का चिप्स में प्रकरण से लेकर और उसके विपणन तक के लिए कोयम्बटूर कोकोनट प्रोड्यूसर एसोसिएशन (सीसीपीए) को वानवरियर कृषि संस्थान, पोल्लम के साथ गठबंधन करने में मदद करता है। वानवरियर कृषि संस्थान, पोलाम को प्रसंस्करण के लिए दैनिक आपूर्ति लगभग 1200 नारियल हैं।

कृषिउद्यमी: श्री कृष्णकुमार (56), वीएपीएस से प्रशिक्षित कृषिउद्यमी हैं जिन्होने कोयम्बटूर कोकोनट प्रोड्यूसर एसोसिएशन का गठन किया, जिसका उद्देश्य सफलता पूर्वक नारियल उत्पादकों, विशेषकर छोटे उत्पादकों के सामने आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए पथप्रदर्शन करना है। श्री कृष्णकुमार ने कृषि विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की और खेती करने लगे। उन्होंने देखा कि छोटे नारियल उत्पादकों को वृक्षारोपण में उनके निवेश के अनुरूप आय नहीं होती। श्री कृष्णकुमार स्वयं का कृषि-परामर्श फर्म प्रारंभ करना तथा नारियल उत्पादकों को लाभ दिलाना चाहते थे। प्रशिक्षण के दौरान, कृष्णकुमार को किसान उत्पादक संघ के अवधारणा की जानकारी मिली। उन्होंने सभी जानकारियां एकत्रित की और नारियल उत्पादकों की बेहतरी के लिए अपन फर्म खोलने का फैसला किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
10 गांवों से **100** किसान	**4** व्यक्ति	**10** लाख रुपए

श्री बालसुब्रमणियन यू
सुबालायम, 5/1458, साउथ स्ट्रीट, कोत्तूर तिरुवरूर जिला, पिन-614708, तमिल नाडु, भारत

subamkottur@gmail.com
+91 09943516051

उद्यम: फिश हैचरी, मछली के बच्चों की बिक्री और परामर्श

मूल गतिविधि: शुभम फिश हैचरी और रियरिंग फार्म सभी प्रकार के भारतीय कार्प मछली के प्रजनन और बिक्री से संबंधित है। यह हैचरी समुद्री कार्प मछली पालन में माहिर है।

कृषिउद्यमी: कोत्तूर के श्री बालासुब्रमणियन (51), कृषि में डिप्लोमा धारक हैं और खेती उनकी पृष्ठभूमि है। श्री बालासुब्रमणियन खेती के साथ-साथ व्यवसाय भी शुरू करना चाहते थे। एक स्थानीय अखबार में उन्होंने एग्री-क्लीनिक और एग्री-बिज़नेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना का विज्ञापन देखा। उन्होंने नेशनल एग्रो फाउंडेशन के नोडल अधिकारी से संपर्क किया। चयन के बाद, वह दो माह के आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हो गए। श्री बालासुब्रमणियन ने प्रारंभ में 0.5 हेक्टेयर क्षेत्र पर मछलीपालन के लिए तालाब का निर्माण किया। "धान के खेत को चावल की खेती के बजाय मछली के तालाब में बदलने के विचार के लिए मोहल्ले के लोगों ने मेरी खिल्ली उड़ाई। लेकिन मैंने कभी उन पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि लोगों के अलग-अलग विचार और कार्य होते हैं। आज मैं मत्स्य पालन के लिए संसाधन वाला व्यक्ति हूं, अक्सर लोग मेरे पास आते हैं और परामर्श लेते हैं", सुब्रमणियन ने बताया। "भविष्य में मेरी योजना डेयरी, मुर्गीपालन, बत्तख पालन, मधुमक्खी पालन, कॉपोस्ट उत्पादन, सूअर पालन और वन रोपण के साथ एकीकृत खेती प्रारंभ करने की है"।

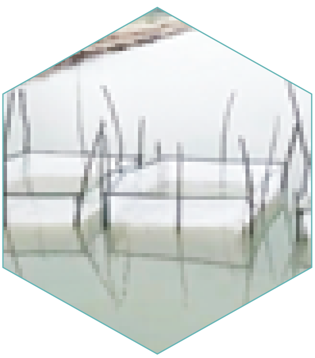

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
अदीलाबाद जिले से **200** किसान	**30** व्यक्ति	**90** लाख रुपए

श्री. रवि तेजा लेबूरी
फ्लैट सं. 404, अमश्री शर्वाणी,
प्लॉट सं. 8-9, गौतमी एंक्लेव,
कोंडापुर, हैदराबाद, तेलंगाना-84,
भारत

leburi_ravi17@yahoo.com
+91 9618205533

उद्यम: अनिवार्य तेलों का उत्पादन और विपणन

मूल गतिविधि: "तेल निष्कर्षण इकाई की स्थापना लागत काफी अधिक है। मैने करूरु वैश्या बैंक, कोंडापुर शाखा से 60/-लाख रुपए ऋण लिया। मेरा खेत आदिलाबाद में है तथा पूरे 60 एकड़ में फैला हुआ है। मुख्य रूप से, मैं पलमरोसा, लेमन ग्रास आंशिक रूप से सिट्रोनेला, वेटिवर, डावाना और तुलसी(बेसिल) की खेती करता हूं। 200 से अधिक किसान अनुबंध खेती पर इकाई के साथ जुडें हैं। मैं तकनीकी जानकारी के साथ-साथ किसानों को इनपुट भी दे रहा हूं। उपज संपूर्ण भारत में डिपार्टमेंटल स्टोर और थोक विक्रेताओं को बेचा जाता है" रवि ने बताया।

कृषिउद्यमी: श्री रवि तेजा लेबूरी (32), जो एक कृषि स्नातक हैं, तेलंगाना राज्य के हैदराबाद शहर के निवासी हैं। वह सुगंधित पौधे की खेती और अनिवार्य तेलों के निष्कर्षण का कार्य करते है। शुरुआती दिनों में बहुत कम लोग सुगंधित और आवश्यक तेल निष्कर्षण व्यवसाय में शामिल थे। अत: सही जानकारी प्राप्त करना काफी कठिन था। इसके अलावा, हैदराबाद शहर के आसपास कोई भी व्यापारी तिलहन नहीं बेच रहा था। मैंने पूरे देश में यात्रा की और व्यापारियों की पहचान की। अंत में, कई बाधाओं, विभिन्न प्रकार के लोगों और किसानों के साथ बातचीत के बाद, मैं अब इस क्षेत्र में बहुत अच्छी स्थिति में हूं "रवि ने बताया। रवि, पार्टीसिपेटरी रूरल डेवलेपमेंट इनीसिएटिव सोसायटी (पीआरडीआईएस), हैदराबाद से एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी एंड एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षित कृषिउद्यमी हैं।"

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
2 राज्यों से **200** किसान	**4** कुशल श्रमिक	**5** लाख रुपए

श्री वाई. वेंकटेश गौड़
कारवान, हैदराबाद, तेलंगाना, भारत

yugoud999@gmail.com
+91 9052114383,
+91 9030513212

उद्यम: ट्री क्लाइंबर का निर्माण और विपणन

मूल गतिविधि: ट्री क्लाइंबर में बैठने की व्यवस्था है और दो फ्रेम हैं। ऊपरी फ्रेम हाथ से संचालित होता है, जबकि निचला पैर द्वारा संचालित होता है। उपयोगकर्ता सीट पर आराम से बैठता है तथा ऊपरी और निचले फ्रेम के ऊपर और नीचे संचलन द्वारा पेड़ पर चढ़ सकता है। लॉकिंग व्यवस्था भी प्रदान की गई है, जो श्रमिक को किसी भी ऊंचाई पर बिना डरे काम करने में सक्षम बनाता है। गिरने की संभावना से बचने के लिए, किसी भी ऊंचाई पर चार लॉक पिनों को खोंसा (फिक्स) किया जा सकता है। कोई भी व्यक्ति 5 मिनट में 40 फीट तक चढ़ सकता है (इसमें खोंसने (फिक्सिंग) में लगे समय, ऊपर-नीचे चढ़ने और पेड़ से उपकरण निकालने का समय शामिल है)। इस मशीन के प्रमुख लाभों में से एक है कि यह विभिन्न परिधि वाले पेड़ों के लिए उपयोगी है। दक्षिण भारत में मुख्य रूप से अधिक मांग के कारण, वेंकटेश इसे 7000/- रुपये में बेच रहा है। अब तक वह तेलंगना और आंध्र प्रदेश में लगभग 200 मशीनें बेच चुका है। वेंकटेश अपने आविष्कार से युवाओं के सशक्तीकरण के लिए कार्यशाला और प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करता है।

कृषिउद्यमी: 23 वर्ष के कृषिउद्यमी श्री वेंकटेश गौड़ ने रूस के सोची में आयोजित “विश्व युवा महोत्सव -2017” में भारत का प्रतिनिधित्व किया। क्रमशः तेलंगना और आंध्र प्रदेश राज्य की ओर से भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले वे एकमात्र भारतीय युवा थे। श्री वेंकटेश, हैदराबाद के निवासी हैं और पाम ट्री क्लाइंबर के आविष्कारक हैं। वेंकटेश ने 12-16 जनवरी, 2018 के दौरान गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय युवा महोत्सव में भी भाग लिया। वेंकटेश गौड़, भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान-हैदराबाद से प्रशिक्षण प्राप्त हैं।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
50 गांवों से **3000** किसान	**30** व्यक्ति	**3** करोड़

श्री ओमवीर सिंह
पुत्र जय सिंह, ग्राम भगवानपुर बंगर, पोस्ट- महलवाला,
जिला-मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

omvirenterprises@gmail.com
+91 08410926601

उद्यम: तेरह देशों को जैविक दूध, अंडा और मशरूम निर्यात करना

मूल गतिविधि: भारतीय स्टेट बैंक, भगवानपुर बांगर शाखा से 5/- लाख रुपये के रियायती बैंक ऋण से श्री ओमवीर सिंह ने डेयरी इकाई की स्थापना की। एसएनओ उद्यम का प्रमुख विषय जैविक उत्पादों का बिक्री करना था। उद्यम, दूध की बिक्री के साथ शुरू हुआ, लेकिन अंडे और सब्जियों के लिए ग्राहकों की मांग में वृद्धि को देखते हुए, ओमवीर ने लेयर फार्मिंग और सब्जी उत्पादन इकाई भी स्थापित कर ली। उनका निजी कंपनी के साथ गठबंधन है और वह तेरह देशों को दूध, अंडा और मशरूम का निर्यात कर रहे हैं।

कृषिउद्यमी: "अगर गायों के लिए जैविक चारा उपलब्ध नहीं है, तो इसे जैविक दूध नहीं कहा जा सकता है। अधिक से अधिक, इसे बिना छेड़छाड़ वाला दूध कहा जा सकता है क्योंकि इसमें ऑक्सीटोसिन का प्रयोग नहीं किया जाता है", 34 वर्षीय कृषिउद्यमी श्री ओमवीर सिंह का कहना है। वह गीर और साहीवाल नस्ल की 15 गायों को पाल रहे हैं। उनकी गायें रासायन मुक्त दूध देती हैं जो वह नोएडा, उत्तर प्रदेश में ग्राहकों को 85 रु. प्रति लीटर की दर से बिक्री करते हैं। श्री ओमवीर उत्तर प्रदेश में मेरठ जिले के भगवानपुर बांगर ग्राम के निवासी हैं। पशु पालन में पैरास्नातक होते हुए भी उन्होंने सीएआरडी (CARD), मुज़फ्फरनगर में आयोजित कृषि-क्लिनिक और कृषि-बिज़नेस सेंटर के तहत उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
22 गांवों से 300 किसान	1 कुशल और 5 अ-कुशल श्रमिक	25 लाख रुपए

श्री गजेंद्र सिंह
ग्राम-घासा का पुर्वा, पोस्ट-कनचौसी, ब्लॉक-सहर, तहसील-बिधुना, जिला-औरैया,पिनकोड-206246,
उत्तर प्रदेश, भारत
gajendrasingh8415@gmail.com
+917599446067/
+917037222022

उद्यम: मधुमक्खीपालन और कच्चे शहद की बिक्री

मूल गतिविधि: "अपने स्वयं के 50000/- रुपए के निवेश से मैंने 25 मधुमक्खियों के छत्ते के बक्से खरीदे और अपने सरसों के खेत में रख दिए। कुछ ही दिनों के भीतर, मुझे प्रति छत्ता लगभग 13 किलोग्राम शहद प्राप्त हुआ। उसके बाद, प्रत्येक बैच में मैंने बक्सों की संख्या बढ़ाना शुरू किया" श्री गजेंद्र सिंह ने बताया। गजेंद्र प्रसंस्करण-व-निर्यात केंद्रों को लगभग 95 प्रतिशत शहद की आपूर्ति अपने छत्तों से करते हैं। शेष 5 प्रतिशत वह कच्चे शहद के रूप में ग्रामीणों को बेचते हैं।

कृषिउद्यमी: घास का पुरवा ग्राम के निवासी श्री गजेंद्र सिंह (25) ने कृषि से आय को दोगुना करने के लिए अस्सी मधुमक्खियों के घोंसले के बक्से खरीदकर मधुमक्खीपालन इकाई की स्थापना की, जिससे 2000 किलोग्राम शहद का उत्पादन होता है। कृषि विज्ञान में स्नातक करने के बाद, गजेंद्र ने उत्तर प्रदेश के औरैया ब्लॉक में कृषि और ग्रामीण विकास केंद्र, देबियापुर से कृषि-क्लिनिक और कृषि-बिज़नेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत उद्यमशीलता प्रशिक्षण प्राप्त किया। "प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान, मैंने एक स्थापित मधुमक्खी-पालनगृह (अपैयरी) का दौरा किया और सभी प्रकार की वैज्ञानिक जानकारियां प्राप्त की। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि सात दिनों के भीतर मधुमक्खी के छत्ते से शहद का उत्पादन किया जा सकता है। मैंने मधुमक्खी-पालनगृह (अपैयरी) शुरू करने का फैसला किया" गजेंद्र ने बताया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
8 गांवों से 300 किसान	1 व्यक्ति	7 लाख रुपए

श्री रवीश राव सिंह
ग्राम म.सं. 655 मोहल्ला-बनारसी दास, ब्लॉक-औरैया, जिला-औरैया, पिन-206122, उत्तर प्रदेश, भारत

ravishent003@gmail.com
+91 9044302264

उद्यम: जैविक उर्वरक और सूक्ष्म पोषक तत्वों का विनिर्माण

मूल गतिविधि: "न्यूनतम रु. 2/- लाख निवेश के साथ, मैंने जैव-उर्वरकों के उत्पादन के लिए अपनी मिनी प्रयोगशाला विकसित की। मैंने सुगमता से बिक्री के लिए थोक विक्रेताओं और खुदरा विक्रेताओं के साथ अपने व्यवसाय का नेटवर्क तैयार किया। मैं जैव-उर्वरकों और सूक्ष्म पोषक तत्वों के लगभग 18 उत्पादों का निर्माण कर रहा हूं और किसानों के साथ बैठको, फील्ड दौरों, खेतों में प्रदर्शनी और कृषि-प्रदर्शनी में भागीदारी के दौरान उत्पादों को बढ़ावा दे रहा हूं। किसानों की मांग पर, तीन श्रमिकों की मदद से दरवाजे तक (डोरस्टेप) आपूर्ति शुरू की गई है "रवीश ने बताया।

कृषिउद्यमी: "जैव-उर्वरकों में कृत्रिम रूप से मिट्टी के कुछ जीवों की संख्या बढ़ाने की प्रवृत्ति हैं जो मिट्टी की उर्वरता और फसल उत्पादकता में सुधार कर सकते हैं। जैव-उर्वरकों को तीन प्रमुख वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है-नाइट्रोजेन-फिक्सिंग, फॉस्फोरस - घुलनशील (सोलुबिलाइजिंग), पोटेसियम-घुलनशील" उत्तर प्रदेश के औरैया ब्लॉक से श्री रवीश राव सिंह (31) ने बताया। वह देबियापुर के कृषि और ग्रामीण विकास केंद्र (सीएआरडी) से एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिज़नेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण प्राप्त हैं। रवीश ने आगे बताया "एनटीआई ने सभी सुविधाएं और एक्सपोज़र दिया, जिससे मुझे एक सफल कृषि-उद्यम स्थापित करने में मदद मिली।"

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
7 गांवों से **500** किसान	**7** व्यक्ति	**16** लाख रुपए

श्री नागेंद्र प्रताप सिंह
शांतीपुरम एडीए कॉलेनी फाफामऊ
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

nagendra1122@gmail.com
+91 9452697246

उद्यम: सूअर पालन और प्रशिक्षण केंद्र

मूल गतिविधि: श्री नागेंद्र ने अपनी बचत से 30,000/- रुपये का निवेश कर यॉर्कशायर नस्ल के 10 छोटे सूअर 2:8 (नर:मादा) के अनुपात में खरीदे। "मैंने उन्हें एक वर्ष तक अपने घर के पीछे मेरी 700 वर्ग फीट पैतृक भूमि में पाला" उन्होले याद करते हुए बताया। सबसे बड़ी समस्या भोजन की थी। उन्होंने शहर के बड़े और छोटे भोजनालयों से संपर्क किया तथा उनसे खराब और बचे हुए भोजन को देने के लिए अनुरोध किया। उन्होंने सुवरों को एक वर्ष बाद थोक विक्रेताओं और खुदरा विक्रेताओं को बेच दिया और 50,000 रुपये कमाने में कामयाब रहे। ''मुझे अपनी आय पर विश्वास नहीं हो रहा था'' वह बताते हैं। यह निर्णय करते हुए कि वह सही मार्ग पर हैं, उन्होंने अपने लाभ से और अधिक सूअर पाले। वर्तमान में वह एक सुअर फार्म चला रहे है जिसमें 60 सुअर के बच्चे हैं। सुअर फार्म बेरोजगार ग्रामीण युवाओं के लिए प्रशिक्षण का केंद्र बन गया है।

कृषिउद्यमी: उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद जिले के शांतिपुरम के निवासी श्री नागेंद्र प्रताप सिंह (37), कृषि प्रौद्योगिकी में स्नातक हैं। उन्होंने उत्तर प्रदेश के कौशाम्बी में कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा आयोजित एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिज़नेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत सुअर पालन पर 6 दिन का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
2 गांवों से **100** किसान	**3** ग्रामीण युवा	**7** लाख रुपए

श्री सचिन कमलाकर कारेकर
एटी/पोस्ट-अबलोली, तालुका, गहगर, जिला- रत्नागिरी महाराष्ट्र, पिनकोड-415724, भारत

sachin.garva@gmail.com
+91 9422439794

उद्यम: कृषि पर्यटन (एग्रो-टूरिज्म)

मूल गतिविधि: "भारती-पर्यटन उद्योग में कृषि पर्यटन चर्चा का विषय है। यात्रा के दौरान यह आपको ग्रामीण जीवन के वास्तविक आकर्षण और विशुद्ध मिलन के अनुभव, स्थानीय व्यंजनों के स्वाद और विभिन्न कृषि गतिविधियों से परिचित होने का अवसर देता है। इसके महत्व को देखते हुए, मैंने अपनी चार एकड़ भूमि पर 5/- लाख रु. के निवेश से कृषि पर्यटन प्रारंभ किया" श्री सचिन कारेकर ने बताया। उन्होंने पर्यटकों के लिए भोज्य जंगली पौधों की प्रजातियों के साथ झोपड़ियां, नेट ट्रैकिंग, स्विमिंग पूल, विश्राम के लिए बेंच और बगीचे स्थापित किए। उन्होंने कृषि फार्म में खेल, पशु सवारी, गाय दुहना, ट्रैक्टर की सवारी, पंछी देखना, नेट के माध्यम से ट्रैकिंग आदि शामिल किया हैं, "ग्रामीण भी पर्यटकों को उपज बेचकर आय अर्जन कर सकते हैं" सचिन ने बताया।

कृषिउद्यमी: श्री सचिन कारेकर (41), महाराष्ट्र में रत्नागिरी जिले के अबलोली ग्राम से हॉर्टीकल्चर (बागवानी) में स्नातक हैं और श्रीराम ग्राम संसोधन वा विकास प्रतिष्ठान रत्नागिरी द्वारा आयोजित एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिज़नेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षित कृषिउद्यमी हैं। सचिन ने बताया "इस अवधि के दौरान प्रशिक्षण संस्था ने स्थापित कृषि-पर्यटन फार्म के दौरे का आयोजन किया। मेरे मन में इस उद्यम को स्थापित करने का विचार यहीं से आया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
3 ब्लॉकों से **300** किसान	**3** कुशल और **10** अ-कुशल व्यक्ति	**10** लाख रुपए

श्री समीर पिंगले
एटी-तालुका-पोस्ट- खालापुर फाटा,
मुंबई-पूणे पुराना हाईवे,
जिला- रायगढ, महाराष्ट्र, भारत
samirpingle1600@gmail.com
+91 9209217747/
+919764561127

उद्यम: फल, वन, सजावटी, औषधीय और लॉन पौधों की पौधशाला

मूल गतिविधि: ग्रीन वर्ल्ड नर्सरी रायगढ़ जिले में तीन ब्लॉकों में फलों, वानिकी, सजावटी पौधों और लॉन(दूर्वा-क्षेत्र) रोपण सामग्रियों के बिक्री के लिए थोक और खुदरा आपूर्ति का प्रमुख केंद्र है। ग्रीन वर्ल्ड नर्सरी एक एकड़ भूमि में स्थापित है और इसमें 30 आम के जननी पौधे तथा विभिन्न सजावटी और लॉन के पौधों की प्रजातियां लगाई गई हैं। बारिश के मौसम में फलों और वानिकी पौधों के लिए मांग अधिक होती है, जबकि वर्ष के बाकी समय में अधिकांश मांग सजावटी और लॉन के पौधों की होती है। समीर बताते हैं, “15 से अधिक कॉर्पोरेट कंपनियां मेरे भूनिर्माण (लैंडस्केपिंग) सेवाओं के ग्राहक हैं।”

कृषिउद्यमी: खलापुर फाटा ग्राम के निवासी श्री समीर पिंगले (32), कृषि में डिप्लोमा धारक हैं। डिप्लोमा पूरा होने के बाद, समीर ने एक कॉर्पोरेट कंपनी में उद्यान पर्यवेक्षक के रूप में कार्य किया। इस अवधि के दौरान, वह पौधों और उनके वंशवृद्धि तकनीकों का ज्ञान प्राप्त करते रहे। वह मिलने वाले मामूली वेतन से खुश नहीं थे और अपनी पौधशाला शुरू करना चाहते थे। उन्होने नौकरी छोड़ने और गांव वापस जाने का फैसला किया, जहां उनके एक मित्र ने उन्हे एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना तथा इसके द्वारा स्वरोजगार को बढ़वा देने के बारे में जानकारी दी। उन्होंने श्रीराम ग्रामीण संसोधन व विकास प्रतिष्ठान, रत्नागिरी के नोडल अधिकारी से संपर्क किया और प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए पंजीकरण कराया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
1 गांव से 150 किसान	2 व्यक्ति	10 लाख रुपए

श्रीमती वैभवी रामचंद्र एड्गे
ग्राम/पोस्ट-पिंपलीधुरव, कोथरुड, पूणे,
महाराष्ट्र, भारत

sejal20re@gmail.com
+91 7507259258

उपक्रम: डेयरी फार्मिंग, दूध संग्रह केंद्र, और डेयरी उत्पाद में मूल्य वर्धन

मूल गतिविधि: "एक लाख रुपये के निवेश के साथ, झोर दूध डेयरी की स्थापना की गई। मैंने गाँव वालों से दूध इकट्ठा करना भी शुरू किया था । इस डेयरी द्वारा प्रति दिन लगभग 300 लीटर का दूध एकत्रित किया जाता है । पचास प्रतिशत दूध को संसाधित किया जाता है ताकि दही, पनीर, घी, खोआ और चेन्ना जैसे उत्पादों को बेचा जा सके । श्रीमती वैभवी रामचंद्र येग्डे ने बताया कि लगभग 150 लीटर दूध पूणे शहर के आस-पास घर-घर में बेचा जाता है"।

कृषिउद्यमी: डेरी व्यवसाय, भारत के अधिकांश दुग्ध उत्पादन प्रणाली में लिप्त छोटे-छोटे दूध उत्पादकों की आय और आजीविका को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है. वैभवी आगे कहती है - "मैं एक किसान परिवार से जुडी हूं और हमारे घर में 5 मवेशी हैं। प्रतिदिन लगभग 15 लीटर दूध एकत्रित कर न्यूनतम लाभ पर डेयरी को बेचा जाता है। जल्द ही श्रीराम ग्रामीण संसोधन व विकास प्रतिष्ठान, रत्नागिरि में आयोजित एग्री-क्लिनिक एंड एग्री-बिजिनेस सेंटर योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा होने के बाद, मैंने आय को बढ़ाने के लिए मवेशियों को पालने के साथ-साथ दुग्ध संग्रह केंद्र खोलने का भी फैसला किया"।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
3 गांवों से **50** किसान	**1** व्यक्ति	**5** लाख रुपए

श्री विनोद बाबूराव सावंत
पोस्ट-पाले, तालुका-जिला-रत्नागिरी, महाराष्ट्र, भारत

vinodsawant889@gmail.com
+91 9503995599

उपक्रम: सजावटी मछली पालन

मूल गतिविधि: विनोद ने 50,000/- रुपये के कम निवेश के साथ मछली के अण्डों को सेने के स्थान की स्थापना की। विनोद का कहना है कि “मुझे एक्वेरियम में रंग-बिरंगी मछलियाँ पसंद थीं और मेरा शौक मुझे इस व्यवसाय में ले आया। मैंने गुरामी और लड़ाकू प्रजातियों का प्रजनन शुरू किया। स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से बचने के लिए, बायो-फिल्टर स्थापित करके एक उचित पानी की गुणवत्ता सुनिश्चित की जानी चाहिए। सजावटी मछलियों को वर्ष की विभिन्न अवधियों में बताया जा सकता है और लाभ कमाया जा सकता है। हैचरी शुरू करने का यह मेरा पहला वर्ष है, मैं आने वाले दिनों में इसे विस्तार करना चाहूंगा”

कृषिउद्यमी: श्री विनोद सावंत (25) ने बताया “जीव विज्ञान का अच्छा ज्ञान, भोजन का व्यवहार और मछलियों की परिवेशगत स्थिति सजावटी मछलियों के प्रजनन के लिए पहली आवश्यकता है । अंड समूह और लार्वा चरणों के लिए जीवंत भोजन जैसे ट्यूबीफेक्स कीड़े, मोइना, केंचुआ आदि पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। ज्यादातर मामलों में प्रजनन आसान है, लेकिन लार्वा पालन में विशेष देखभाल की आवश्यकता हो सकती है”। उन्होंने कृषि में डिप्लोमा और श्रीराम ग्रामीण संसाधन व विकास प्रतिष्ठान, रत्नागिरि से एग्री-क्लिनिक और कृषि-व्यवसाय केंद्र योजना के तहत एक प्रशिक्षित एग्रीप्रेन्योर हैं।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
100 गांवों से **700** किसान	**5** कुशल और **10** अकुशल श्रमिक	**75** लाख रुपए

श्री कोणार्क भीमराव ठाकुर
प्लॉट-18, 95/1, (एबीसीडी)
एन.एन. क्रिस्टल बिल्डिंग,
कल्याणी नगर, दादावाडी परिसर,
जलगांव-425501, महाराष्ट्र, भारत

konarkthakur@rediffmail.com
+91 7038257172

उद्यम: संरक्षित खेती और प्लास्टिकल्चर के संवर्धन पर परामर्श।

मूल गतिविधि: श्री कोणार्क भीमराव ठाकुर ने बताया "मैंने 5/- लाख रु. स्वयं निवेश कर सिंचाई और सौर कंपनियों की डीलरशिप ली। मेरी दुकान में कृषि जुडे सभी प्रकार के प्लास्टिककल्चर कार्यों से संबंधित वस्तुएं मिलती हैं । इसके अलावा, मैं डेयरी उपकरण का भी व्यापार कर रहा हूं।"

कृषिउद्यमी: जलगांव जिले के श्री कोणार्क ठाकुर ने कहा, "प्लास्टिकल्चर और सटीक कृषि जैसी नवीन कृषि पद्धतियों को भारतीय कृषि के परिवर्तन की दिशा में अपनाया जाना चाहिए, जिसके परिणाम स्वरूप कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए कई गुना कृषि गुणवत्ता और मात्रा दोनों में वृद्धि होगी।" वे प्लास्टिकल्चर से जुडे हैं और सिंचाई सेट, ग्रीन हाउस, शेड नेट, पीवीसी पाइप और फिटिंग, मिट्टी और पानी परीक्षण किट, सौर उत्पाद, भपरिदृश्य, कृषि और डेयरी मशीनरी आदि के व्यापार में सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। कार्तिक, एग्री-क्लिनिक और कृषि व्यापार केंद्रों (एसी एंड एबीसी) योजना के तहत एक प्रशिक्षित एग्रीप्रेन्योर है। और कृषि व्यवसाय केंद्र (एसी और एबीसी) योजना। कार्तिक ने यह भी बताया कि “मैंने कृष्णा वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चर फ़ाउंडेशन, जलगाँव में आयोजित दो महीने के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया और वहाँ प्लास्टिक के व्यवसाय में सभी व्यावसायिक कौशल सीखा।”

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
300 गांवों से 5000 से अधिक किसान	19 स्थाई और 100 अकुशल	10 करोड़ रुपए

श्री डी. इन्बसेकरन
1646 ए, महात्मा नगर, तोंडी रोड, शिवगंगा तमिलनाडु, पिनकोड- 630561, भारत

inbasekaran.d@producemax.co.in
+91 09843340420
www. producemax.co.in

उद्यम: खीरा उत्पादन और निर्यात

मूल गतिविधि: मैक्स एग्रीटेक प्राइवेट लिमिटेड खीरा उत्पादन और निर्यात में शामिल है। कंपनी ने स्थानीय किसानों के साथ एक मजबूत और सौहार्दपूर्ण संबंध विकसित किया है। यह किसानों के लिए नियोजक भी बन गया है। अपने विश्वसनीय संबंधों और सिद्ध उत्पादन रणनीतियों की मदद से, कंपनी चालू वर्ष के लिए खीरा के 10000 मीट्रिक टन (मीट्रिक टन) के उत्पादन के लक्ष्य तक पहुंचने की ओर अग्रसर है। तमिलनाडु में गिंगी एवं कल्लकुरिच्ची क्षेत्र से अनुबंध के आधार पर 1000 एकड़ से अधिक खेती योग्य भूमि को कंपनी के साथ जोडा गया है। मैक्स एग्रीटेक प्राइवेट लिमिटेड अब 1500 से अधिक छोटे भूमि मालिकों के साथ जुड़ा है और यह संख्या लगातार बढ़ रही है।

कृषिउद्यमी: श्री डी. इन्बसेकरन (37) मैक्स एग्रीटेक प्राइवेट लिमिटेड के मालिक हैं, जो खीरा की अनुबंध खेती और निर्यात से संबंधित है। वर्ष 2011 में, उन्होंने रिटेल मैनेजमेंट में एमबीए पूरा किया और कृषि क्षेत्र में अपना व्यवसाय शुरू करना चाहते थे। हालांकि, वित्तीय सहायता की कमी ने उनके सपने को साकार होने न दिया । वर्ष 2011 में, श्री इन्बसेकरन तमिलनाडु के वालेन्टरी एसोसिएशन फॉर पीपुल सर्विस (VAPS) में एग्री-क्लिनिक और कृषि-व्यवसाय केंद्र योजना में शामिल हुए और 20/- लाख रु. ऋण की मंजूरी प्राप्त की तुरंत. कंपनी ने तुरंत पंजीकृत करवाया और अब किसानों और निर्यात कंपनियों के बीच संपर्क का काम कर रही है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
20 गांवों से **1200** किसान	**10** व्यक्ति	**1** करोड़ रुपए

श्री प्रवीण बिभीषण चवान
पोस्ट तोंडला, तालुका-मालशिरूस, जिला-सोलापुर, पिनकोड-413113, महाराष्ट्र, भारत

pravinbchavan2406@gmail.com
+91 918378897455

उद्यम: सिंचाई उपकरण विनिर्माण, आपूर्ति, थोक और रीमोल्डिंग ड्रिप सिंचाई सेट

मूल गतिविधि: एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस केंद्र (एसी एंड एबीसी) योजना के तहत श्री प्रवीण बिभीषण चवान ने विदर्भ कोकन ग्रामीण बैंक, तोंडले शाखा से 24 लाख रुपये का बैंक ऋण लिया। उनका उपक्रम यूनीटेक इरिगेशन सिस्टम 15 एकड़ के लिए सभी सहायक उपकरणों के साथ-साथ ड्रिप सिंचाई सेटों को सप्लई करने हेतु दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सभी मशीनरी उपलब्ध है। मौजूदा ड्रिप सिंचाई सेटों की मरम्मत की मांग को ध्यान में रखते हुए, आधी कीमत पर सेवाएं भी प्रदान की जा रही हैं। इस व्यापार में 40 डीलर और 60 फुटकर विक्रेताओं के साथ नेटवर्क फैली हुई है।

कृषिउद्यमी: सूक्ष्म सिंचाई को प्रति एकड़ 20,000 रु. से 30,000 रु. की कीमत से बनाया गया है ताकि यह सुनिश्चित की जा सके कि पानी की हर बूंद से अधिक फसल, शीघ्र परिपक्वता, बेहतर गुणवत्ता के अलावा मिट्टी एवं पानी की समस्या के लिए भी यह भू-भाग आदर्श हैं। यह श्रम लागत भी बचाता है। श्री प्रवीण चवान (26) महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के तोंडला गाँव के कृषि प्रौद्योगिकी और इंजीनियर हैं। वे कृषि उद्यमी हैं और सिंचाई सेटों के उत्पादक इकाई के मालिक है। प्रवीण ने कृष्णा वैली एडवान्सड एग्रीकल्चर फाउंडेशन, सुतारवाड़ी, पूणे के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 गांवों से **350** किसान	**3** व्यक्ति	**30** लाख रुपए

श्री पुरुषोत्तम जामाजी भुड़े
पोस्ट. 38, अमर नगर, मेणेवाडा रिंग रोड, नागपुर, पिनकोड-440034, महाराष्ट्र, भारत

pzbhude@gmail.com
+91 9423629232/
+91 9763146714

उपक्रम: प्राकृतिक मसाले प्रसंस्करण और विपणन

मूल गतिविधि: "मेरे मसाला उत्पादों में मिर्च, हल्दी, लहसुन, लौंग, मेथी, धनिया, जीरा और बाजरा के स्वाद वाले पाउडर शामिल हैं। मैं 150 किसानों से पुनः क्रय के आधार पर कच्चे मसाले खरीदता हूं। श्री पुरुषोत्तम जमाज़ी भुढे ने बताया "मैं किसानों को मसालों की खेती, विशेषकर मिर्च, धनिया, और हल्दी के लिए एकड़ भूमि को बनाये रखने की सलाह देता हूं। मैंने वर्तमान मांगों को पूरा करने के लिए विभिन्न राज्यों से भी मसालों की खरीद की है।

कृषिउद्यमी: श्री पुरुषोत्तम भुढे, (42) ने अपने घर के पिछवाड़े में अपनी मसाला निर्माण इकाई स्थापित की है। एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसीएबीसी) योजना के तहत एक प्रशिक्षित एग्रीप्रेन्योर है। पुरुषोत्तम ने बताया "कृष्णा वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चर फाउंडेशन, नागपुर में प्रशिक्षण के दौरान, मसाला प्रसंस्करण इकाई स्थापित करने के लिए शिक्षण दौरे का आयोजन किया गया। मैंने पाया कि स्वदेशी तकनीकों का उपयोग करके, मसालों को प्राकृतिक रूप से उनके प्राकृतिक तेल को निकाला और कम उपकरणों के साथ प्रसंस्करण किया जा सकता है। मैंने उपभोक्ताओं को प्राकृतिक मसाले बेचने का निर्णय लिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
9 गांवों से **350** किसान	**8** कर्मचारी	**25** लाख रुपए

श्री नीलेश दत्तात्रेय नंद्रे
मकान. नं. धंडई 15, नगारे नगर, सक़री, नासिक, अहमदनगर
भारत
yash167@gmail.com
+91 9423523838,
+91 8788155139

उपक्रम: बांस की खेती पर वैज्ञानिक परामर्श

मूल गतिविधि: नीलेश ने बताया "एसी और एबीसी प्रशिक्षण पूरा होने के बाद, मैं बांस की खेती को बढ़ावा देने में जुट गया। मैंने बैक मोड पर बांस की खेती के लिए 350 किसानों के साथ अनुबंध किया। मैं बांस की खेती पर पूर्ण परामर्श प्रदान कर रहा हूं। रियल एस्टेट, पेपर उद्योग और हस्तशिल्प उद्योग से बांस के लिए बड़ी मांगें आठ रही हैं"

कृषिउद्यमी: अहमदनगर, महाराष्ट्र राज्य के श्री नीलेश नंद्रे (29) ने बताया "बांस गरीब आदमी की लकड़ी है। आर्थिक स्तर पर बाँस की खेती बहुत लाभदायक है। आरंभिक वर्षों में, बांस के रोपण पर प्रति एकड़ के लिए अधिकतम 35,000/- रु. की लागत होगी। पहले पांच वर्षों में आय अंतर सफलता से होती है, जो बांस के रोपण के लिए पोषण और आवश्यक सिंचाई भी प्रदान करता है। छठे वर्ष के बाद, 2" से 3" इंच व्यास और 8 फुट लंबे प्रत्येक बांस की लकडी पर लगभग 1500 रुपये कमाए जा सकते हैं। 15 वर्षों में 15,000 से अधिक बांस की लकडियों का उत्पादन किया जा सकता है, जो 90 वर्षों तक जारी रहता है। बांस की खेती के लिए उर्वरक की आवश्यकता नहीं होती है या कीटनाशक और बांस के पत्ते जानवरों के लिए एक अच्छा चारा भी है। उन्होंने कृषि में स्नातक किया है और फिलहाल एक एग्रीप्रेन्योर और बांस प्रमोटर है। नीलेश ने एग्री-क्लिनिक तथा एग्री-बिजिनेस केंद्र योजना के तहत मिटकॉन, पूणे, महाराष्ट्र में आयोजित उद्यमिता कौशल प्रशिक्षण में भाग लिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
50 गांवों से **250** किसान	**3** व्यक्ति	**25** लाख रुपए

श्री कृषिकेश सुनील पाटिल
शॉप नं. 3, नारायणवाडी कांप्लेक्स,
कॉलेज रोड, चोपाडा,
जिला-जलगांव, महाराष्ट्र, भारत
krushikesh.patil14@gmail.com
+91 9730630255,
+91 7219690600

उपक्रम: जैव-उर्वरकों का निर्माण और परामर्श

मूल गतिविधि: कृषिकेश ने आत्मविश्स से बताया कि “निजी कृषि-कंपनी से नौकरी छोड़ने के बाद, मैं व्यावसायिक कौशल सीखने के लिए एग्री-क्लिनिक और कृषि-व्यवसाय केंद्र (एसी एंड एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हुआ। मैं शुरू से ही जैविक खेती को बढ़ावा देना चाहता था। मैंने अपनी आर एंड डी प्रयोगशाला में तीन कौशलपूर्ण व्यक्ति को लगाया, जो जैव-उर्वरकों के निर्माण में जुडे हैं। विपणन में, मैंने अपना व्यवसाय थोक विक्रेताओं और खुदरा विक्रेताओं के साथ किया। मैं किसानों के खेत पर भी जाता हूं और सीधा सौदा करता हूं। मेरे क्रियाशील क्षेत्रों में केला, अंगूर कपास, गन्ना, और सब्जियाँ प्रमुख फसलें हैं। मेरे उत्पाद सभी प्रकार की फसलों के लिए मिट्टी के सभी मुद्दों को हल कर सकते हैं।

कृषिउद्यमी: श्री कृषिकेश सुनील पाटिल (31) ने बताया “मैं 18 जैव-उर्वरक उत्पादों का निर्माता हूं। मेरा मुख्य उद्देश्य सिंथेटिक उर्वरकों के उपयोग को कम करना और हमारी भूमि को बचाना है। जैव उर्वरकों में पौधों के जीवन के स्वास्थ्य और उत्पादकता को बढ़ाने की क्षमता है”। उन्होंने वानिकी विज्ञान में स्नातक किया और वे जलगाँव जिले के हैं। कृषिकेश, कृष्णा वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चर फाउंडेशन, जलगाँव से प्रशिक्षित एग्रीप्रेन्योर हैं।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
2 जिलों से 750 किसान	4 व्यक्ति	25 लाख रुपए

श्री राजु मारुति लांबे
ग्राम/पोस्ट - शिरोली,
तालुक - हटकनगले,
जिला - कोल्हापुर,
महाराष्ट्र, भारत

biocrop.neem@gmail.com
+91 9922631818

उपक्रम: भूमि और जल परीक्षण प्रयोगशाला और परामर्श

मूल गतिविधि: राजू ने बताया "बैंक ऑफ महाराष्ट्र, शिरोली शाखा से 7 लाख रुपये की आर्थिक सहायता और 3/- लाख रु. की स्वयं पूंजी से मैंने अपनी भूमि परीक्षण प्रयोगशाला स्थापित की। पहले साल मुझे किसानों से आश्चर्यजनक प्रतिक्रिया मिली। विश्लेषणात्मक रिपोर्ट के आधार पर मैंने उन्हें फसल चयन और उर्वरकों के विवेकपूर्ण उपयोग पर सलाह दी। मैंने सभी किसानों को पंजीकृत किया और खेती की जानकारी दी। सिंथेटिक उर्वरकों को बदलने के लिए, मैंने जैव उर्वरकों और सूक्ष्म पोषक तत्वों की निर्माण इकाई शुरू करने का फैसला किया। मैंने नौ जैव-उर्वरक उत्पाद विकसित किए और दो जिलों में 5 थोक व्यापारियों और 15 खुदरा विक्रेताओं के माध्यम से बिक्री शुरू की।"

कृषिउद्यमी: श्री राजू मारुति लाम्बे (32) ने बताया कृष्ण वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चर फाउंडेशन, उत्तूर में नोडल प्रशिक्षण संस्थान ने स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए एग्री-क्लिनिक और कृषि-व्यवसाय केंद्र (एसी एंड एबीसी) योजना के तहत उद्यमशीलता प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान कर रहा है। मैंने इस कार्यक्रम में भाग लिया और अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने को सोंचा। वे महाराष्ट्र में कोल्हापुर जिले के शिरोली गाँव के हैं और उन्होंने कृषि में डिप्लोमा की.

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
9 गांवों से **350** किसान	**6** व्यक्ति	**20** लाख रुपए

श्री रवींद्र पुरुषोत्तम भोगे
पोस्ट- मुस्कावट सिम, तालुका-रावेर, जिला-जलागांव, पिनकोड-425502 महाराष्ट्र, भारत

ravibhoge83@gmail.com
+91 9326178462/
+91 8600366492

उपक्रम: 150 लीटर प्रति दिन दूध उत्पादन के साथ डेयरी उद्योग

मूल गतिविधि: रवींद्र ने बताया “मैंने 22 मुर्राह भैंसों से युक्त अपनी डेयरी इकाई की स्थापना की। दैनिक दूध उत्पादन 150 लीटर है और विक्रय लागत 40-45/- रु. प्रति लीटर के बीच है। किसान, डेयरी फार्मिंग की जानकारी लेने के लिए डेयरी यूनिट भी जाते हैं”

कृषिउद्यमी: भारत में ग्रामीण परिवारों के लिए पशुधन एक प्रमुख संपत्ति है और इसे तेजी से गरीबी को कम करने का साधन माना जाता है। हालांकि, कई ग्रामीण क्षेत्रों में समय पर पशु चिकित्सा सेवाएं पहुंचना सीमित हैं। श्री रवींद्र भोगे (34) ने बताया "एक योग्य पैरा-वेट होने के नाते, मैं प्राथमिक स्तर की सेवाएं अर्थात् कृत्रिम गर्भाधान, कृमिहरण, टीकाकरण, घाव और चोटों के लिए चिकित्सा सहायता आदि प्रदान करता हूं।" महाराष्ट्र के जलगांव जिले के मुस्कावत सिम गांव के रवींद्र ने पैरा-वेट से उद्यमी बने. श्री रवींद्र ने बताया “कृषि-क्लिनिक और कृषि-व्यवसाय केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा होने के बाद, मैंने मुर्राह नस्ल की 10 भैंसों को जोड़कर अपनी डेयरी इकाई का विस्तार किया। कृष्णा वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चर फाउंडेशन, जलगाँव के प्रशिक्षण समन्वयक ने मुझे सभी प्रकार की डेयरी सेवाएं प्रदान करने के लिए जलगाँव दुग्ध संघ के साथ सहयोग करने हेतु समर्थन दिया।”

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
9 गांवों से 450 किसान	6 महिलाएं व 2 पुरुष	50 लाख रुपए

सुश्री अमृता राजाराम नेरूरकर
पोस्ट-विरनवाडी मसाडे,
तालुका: मालवान, जिला:
सिंधुदुर्ग-416608, महाराष्ट्र,
भारत

+91 09403832615

उद्यम: काजू प्रसंस्करण व विपणन

मूल गतिविधि: अमृता ने बताया "चयनित क्षेत्रों में कच्चे माल की संभावित आपूर्ति के आधार पर, 50 किलो से 120 किलोग्राम तक प्रसंस्करण क्षमता तक बढ़ाने के लिए रणनीति तैयार की जाती है। प्रसंस्करण के लिए कच्चे काजू आसपास के नौ गांवों के काजू किसानों से लाया जाता है। आकार के आधार पर काजू की खरीद की जाती है। बड़े काजू (62%) को साबूत काजू की गुठली में परिवर्तित किया जाता है, जबकि छोटे काजू (38%) को गुठली में से अलग किया जाता है। अमृता ने कहा कि "व्यवसाय को बढ़ाने के लिए किसी एक को परिवार के सदस्यों को शामिल करने में हाथ बढ़ाना होगा, क्योंकि वे ही सफलता की कुंजी होते हैं।"

कृषिउद्यमी: सुश्री अमृता राजाराम नेरुरकर (23) ने बताया "पश्चिमी महाराष्ट्र में काजू प्रमुख फसल है और इसे उच्च मूल्य वाली फसल भी माना जाता है। यह कृषि क्षेत्र में राज्य के सभी हितधारकों की मुख्य फसलों में से एक है, जिसके विकास के लिए प्राथमिकता दी गई है। इसलिए, काजू के प्रसंस्करण के लिए लघु उद्योग की स्थापना की गई। मेरे पिता वीरनवाड़ी मसडे गांव में काजू प्रसंस्करण एक लघु इकाई भी चला रहे हैं। कृषि में स्नातक होने के नाते, मैं इसी व्यवसाय से जुडा रहा"। कृषि वैली एड्वांस्ड एग्रीकल्चर फाउंडेशन, ओरोस, सिंधुदुर्ग में एग्री-क्लीनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी एंड एबीसी) योजना के तहत दो महीने के कृषि-उद्यमी प्रशिक्षण में इन्होंने व्यवसाय प्रबंधन, प्रौद्योगिकी अर्जन, अनुदान संचयन, विपणन, खातों को बनाए रखने आदि के बारे में सीखा।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
20 गांवों से **200** किसान	**2** व्यक्ति	**30** लाख रुपए

श्री इनामदार शेख मोहम्मद सलीम सरदार
पोस्ट-संगमनेर तालुका-संगमनेर
जिला-अहमदनगर, महाराष्ट्र, भारत

saliminamdar63@gmail.com
+91 09922761793

उद्यम: सूक्ष्म पोषक तत्वों और प्लांट ग्रोथ रेगुलेटर की तैयारी

मूल गतिविधि: 5/- लाख रुपये की अपनी पूंजी निवेश करके मोहम्मद सरदार ने आरएंडडी सामग्री खरीदी और माइक्रो-पोषक तत्व और प्लांट ग्रोथ रेगुलेटर (पीजीआर) के लिए निर्माण इकाई को स्थापित करने हेतु पट्टे पर कंक्रीट भवन को किराए पर लिया। थोड़े समय के भीतर, सरबोजिवन उद्योग से 10 उत्पादों को निर्माण किया जाने लगा। "प्लांट ग्रोथ रेगुलेटर और सूक्ष्म पोषक तत्व के उपयोग पर किसानों के बीच जागरूकता पैदा करना समय लेने वाला कार्य है। लेकिन परिणामों को देखकर किसान आगे आए और पीजीआर की मांग बढ़ रही है।

कृषिउद्यमी: विभिन्न कृषि कंपनियों में तकनीकी अधिकारी के रूप में 2 दशकों से अधिक समय तक काम करने के बाद श्री मोहम्मद सरदार (63) ने सेवानिवृत्ति ली और खुद अपना व्यापार शुरू किया। पूंजी और तकनीकी कौशल कोई समस्या नहीं थी, लेकिन उद्यमशीलता कौशल की कमी बढ़ने में रोड़ा बना। सौभाग्य से जब वे एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी एंड एबीसी) योजना के संपर्क में आने के बाद ये जानकर बहुत खुश थे कि प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए कोई उम्र की सीमा नहीं है। उन्होंने कृषी सेवा केंद्र, बाबालेश्वर से संपर्क किया और दो महीने के आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यक्रम के अंत में, श्री मो.सरदार, व्यापार शुरू करने के लिए बहुत आत्मविश्वास से थे।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 गांवों से **200** किसान	**1** व्यक्ति	**10** लाख रुपए

डॉ रघुनाथ रेवननाथ पगिरे
पोस्ट-माका तालुका-नेवसा,
जिला-अहमदनगर,
महाराष्ट्र, भारत

saigoatfarm@gmail.com
+91 9823268354

उद्यम: बकरी पालन और परामर्श

मूल गतिविधि: 5/- लाख रु. की खुद की पूंजी के साथ डॉ. पगिरे ने प्रबंधन की अर्ध गहन प्रणाली के तहत उस्मानाबादी और ब्लैक बंगाल नस्लों के 100 मादा और 5 नर बकरियों के साथ बकरी प्रजनन इकाई की स्थापना की गई । 6 महीने के शरीर के वजन के आधार पर छोटे नस्लों (काले बंगाल) और 9 महीने के शरीर के वजन के आधार पर मध्यम और बड़ी नस्लों (उस्मानाबादी) के नर और मादाओं का चयन किया जाता है। बकरियों के बच्चों में से मादाओं का चयन भी उम्र और वजन के आधार पर किया जाता है। डॉ. पगिरे, किसानों को बकरी पालन की सलाह देते हैं ।

कृषिउद्यमी: डॉ.रघुनाथ पगिरे ने बताया "राज्य पशुपालन विभाग, अहमदनगर द्वारा संचालित बकरी विकास मिशन के दौरान प्राप्त 10 वर्षों के अनुभव और जानकारी के साथ, मैंने विदेशी नस्लों के साथ क्रासिंग करके देशी बकरी की नस्लों में सुधार करने का फैसला किया, जो कि उनके प्राकृतिक आवास में अच्छी तरह से अनुकूल हैं और मेरा मूल गांव महाराष्ट्र राज्य के अहमदनगर जिले के माका गांव में बकरी प्रजनन इकाई शुरू की". डॉ। रघुनाथ पगिरे, एक पशुचिकित्सा डिप्लोमा धारक है। उन्होंने आगे बताया कि कृषि विज्ञान केंद्र, बाबलेश्वर में आयोजित एग्री-क्लीनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी एंड एबीसी) योजना के तहत उद्यमशीलता प्रशिक्षण कार्यक्रम से उन्हें आत्मविश्वास भरने और व्यापार शुरू करने में मदद मिली है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
10 गांवों से **200** किसान	**2** महिला श्रमिक	**10** लाख रुपए

सुश्री ममता शिराके
पोस्ट-धमानी, जिला-रत्नगिरी
महाराष्ट्र, भारत

ulhasghanekar19193@gmail.
+91 7758977104

उपक्रम: फलों की फसलों के लिए नर्सरी बनाना

मूल गतिविधि: 25,000/- रु. की छोटी पूंजी के साथ सुश्री ममता शिराके ने धमानी गांव में अपने घर के पिछवाड़े में नर्सरी शुरू की। वह आम, काजू, कोकम, एरेका नट, नारियल, सागौन और गुलाब जैसे फलों के व्यापार में शामिल थी। उन्होंने बताया “नर्सरी चलाने के लिए किसी तकनीक की आवश्यकता नहीं है। किसानों की मांग पर मैं शहर से मौजूदा नर्सरी खरीदती हूं और कुछ मार्जिन रखकर किसानों को बेचती हूं। न्यूनतम निवेश के साथ, मैं प्रति वर्ष लगभग 2 लाख रुपये कमा सकती हूं। पार्ट टाइम नौकरी के उद्देश्य से मैंने यह प्रोजेक्ट शुरू किया, लेकिन यह किसी भी अन्य कृषि गतिविधि की तुलना में अधिक लाभदायक बनी। मैंने काजू और गुलाब रोपण सामग्री बनाना शुरू किया।"

कृषिउद्यमी: सुश्री ममता शिराके (23) रत्नागिरी के धमानी गाँव के एक योग्य कृषि स्नातक हैं। उन्होंने बताया “इसमें कोई शक नहीं कि मैंने फलों के पौधों की बिक्री करने का सबसे अच्छा निर्णय लिया। यह मेरे परिचालन क्षेत्र के लगभग 15 गांवों में फलों के पौधों की बिक्री के माध्यम से मुझे अच्छा लाभ हुआ है। ”ममता एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी एंड एबीसी) योजना के तहत श्रीराम ग्रामीण संशोधन व विकास प्रतिष्ठान, उस्मानाबाद से प्रशिक्षित कृषि उद्यमी है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
10 गांवों से **500** किसान	**1** व्यक्ति	**5** लाख रुपए

श्री दयानंद गोविंदराव हंपाले
पोस्ट - कटकलंब, तालुका-कंधहार, जिला-नांदेड.
महाराष्ट्र, भारत

dayanandhampale@gmail.com
+91 9970147005

उपक्रम: दालों की प्रसंस्करण इकाई और विपणन

मूल गतिविधि: बैंक ऑफ बड़ौदा, नांदेड़ जिले की मुखेड़ शाखा से 10/- लाख रुपये की आर्थिक सहायता से श्री दयानंद गोविंदराव हंपाले द्वारा दालों की प्रसंस्करण इकाई की स्थापना की गई थी। दयानंद ने बताया "आधुनिक दाल मिलिंग इकाई की स्थापना के लिए भूमि की आवश्यकता इस बात पर निर्भर करेगी कि इकाई का उपयोग, भूसा अलग करने और स्प्लिटिंग ऑपरेशन से पहले दालों को कंडीशनिंग के लिए गीला मिलिंग या ड्राई मिलिंग ऑपरेशन और भीगे हुए दालों को सुखाने की विधि के लिए किया जाएगा। मैंने अपनी एक एकड़ जमीन पर 480 मेट्रिक टन/प्रति वर्ष की प्रोसेसिंग क्षमता वाले दालों की प्रसंस्करण यूनिट स्थापित की।"

कृषिउद्यमी: दयानंद ने बताया "दाल को आमतौर पर डी-हॉकिंग / डीकुलेटिंग और स्प्लिटिंग द्वारा दाल में परिवर्तित किया जाता है। दाल मिलिंग उद्योग भारत में प्रमुख कृषि प्रसंस्करण उद्योगों में से एक है। मेरे परिचालन क्षेत्र में मैंने पाया कि कोई भी दाल प्रसंस्करण इकाई नहीं चला रहा था और किसान पारंपरिक तरीके से डी-हॉकिंग दालों का उपयोग कर रहे थे। इसलिए, मैंने पल्स प्रोसेसिंग यूनिट शुरू करने का फैसला किया". "एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी एंड एबीसी) योजना ने तिलहन प्रसंस्करण इकाई के मालिक बनने में मदद की"। श्री दयानंद हम्पले (35) कृषि में डिप्लोमा की और श्रीराम ग्रामीण संसोधन व विकास प्रतिष्ठान, उस्मानाबाद से प्रशिक्षित कृषि उद्यमी है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
15 गांवों से **1000** किसान	**7** व्यक्ति	**2** करोड़ रुपए

श्री राजेंद्र रामचंद्र जगताप
पता: पोस्ट-पंढरे,
तालुका-बारामती, जिला-पूणे,
महाराष्ट्र, भारत

rajendrajagtap100@gmail.com
+91-9850508825

उपक्रम: लेयर फार्मिंग और परामर्श

मूल गतिविधि: राजेंद्र कृषि उद्यमियों की आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए सुझाव देते है कि “एसी एंड एबीसी स्कीम के क्रेडिट कांपोनेंट ने मुझे भारतीय औद्योगिक विकास बैंक आईडीबीआई), बारामती शाखा से 20/- लाख रुपये का ऋण लेने और लेयर फार्मिंग यूनिट स्थापित करने में सहायता की। इस इकाई में 10,000 लेयर मुर्गियों को पाला जा रहा है। मुर्गी पालन के लिए लेयर मुर्गों को चुनने से पहले कुछ आवश्यक जानकारी को ध्यान में रखना होगा। केवल उन नस्लों का चयन किया जाना चाहिए जो क्षेत्र के लिए उपयुक्त हैं और अच्छी तरह से उत्पादन कर सकते हैं”

कृषिउद्यमी: “श्री राजेंद्र जगताप ने अपनी खेती के बारे में जानकारी देते हुए बताया “मुर्गियों की विशेष प्रजाति लेयर मुर्गियों को एक दिन के होने की आवश्यकता है। वे अपने अंडे देने की अवधि के दौरान लगभग 2.25 किलोग्राम भोजन का उपभोग करके लगभग एक किलो अंडे का उत्पादन कर सकते हैं। संकर अंडे के उत्पादन के उद्देश्य से, प्रजनन से पहले मुर्गा और मुर्गी की विभिन्न विशेषताओं पर विचार किया जाता है। मेरी आधा एकड़ की भूमि ’में 20,000 पक्षियों की एक इकाई मौजूद है” । उन्हें एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी एंड एबीसी) योजना के तहत कृषि उद्यमी के रूप में प्रशिक्षित किया गया है। कृषि विज्ञान केंद्र, बारामती में आयोजित प्रशिक्षण के दौरान, उन्होंने विशेषज्ञ सत्र से लेयर फार्मिंग, अनुभव और पोल्ट्री यूनिट के बारे में जानकारी ली । अब श्री राजेंद्र, कृषि उद्यमी बनने हेतु लेयर फार्मिंग सिखाने वाले एक संसाधक व्यक्ति बन गए हैं।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
60 गांवों से 1700 किसान	6 व्यक्ति	25 लाख रुपए

श्रीमती सारिका दौलत पाटिल
स्थान- परो गांव रोड पोस्ट - योला फ्लैट नं. 1, तीसरी मंज़िल, तालुका - योला जिला - नासिक, पिनकोड- 423401, महाराष्ट्र, भारत
sahyadribiolab@gmail.com
+91 9096970678

उपक्रम: मिट्टी, पानी, खाद परीक्षण प्रयोगशाला और परामर्श

मूल गतिविधि: सारिका ने बताया कि "कृषि-क्लिनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी एंड एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षित महिला कृषि उद्यमी होने के नाते, मैंने राज्य कृषि विभाग का दौरा किया और नासिक जिले में मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के प्रमोशन के लिए अपनी मिट्टी और जल परीक्षण प्रयोगशाला पंजीकृत की"। मेरी प्रयोगशाला पूरी तरह से सभी आवश्यक उपकरणों से सुसज्जित है। मैंने सटीक विश्लेषण के लिए छह कुशल व्यक्तयों को भर्ती किया। मिट्टी, पौधे के पत्ते, पानी और खाद का विश्लेषण भी नियमित रूप से किया जाता है। मैं नियमित रूप से मिट्टी, पानी और खाद के नमूने और जैविक खेती को बढ़ावे देने के लिए किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा हूं। किसान, विश्लेषण के लिए मिट्टी के नमूने में लाते हैं, जिसके आधार पर उर्वरक खुराक की सिफारिश की जाती है।

कृषिउद्यमी: श्रीमती सारिका दौलत पाटिल (33) नासिक जिले के योला गाँव की निवासी हैं और मिट्टी विज्ञान में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की और 60 गाँवों में महाराष्ट्र राज्य की मिट्टी परीक्षण योजना का प्रचार कर रही है। महाराष्ट्र सरकार कृषि उत्पादन को दोगुना करने और 12 वीं पंचवर्षीय योजना में किसानों की निवल आय को तीन गुना करने की परिकल्पना कर रही है। सारिका ने योजना के तहत अपनी प्रयोगशाला पंजीकृत की। वे कृष्णा वैली एडवान्स्ड एग्रिकल्चर फाउंडेशन, पूणे से कृषि-क्लिनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी एंड एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षित है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
15 गांवों से 1500 किसान	1 व्यक्ति	4 करोड़ रुपए

श्री निरंजन मधुकर तयाडे
स्थान - मातरगांव, पोस्ट-नलवाडा,
तालुका-दर्यापुर,
जिला:अमरावती, पिनकोड- 444601
महाराष्ट्र, भारत

niranjan_tayade2yahoo.com
+91 9922390223

उपक्रम: पशु चिकित्सा सेवाएं और पशु चारा और दवा का व्यापार।

मूल गतिविधि: निरंजन ने बताया कि "एसी और एबीसी प्रशिक्षण के सफल समापन के बाद, मैंने अपनी एग्रो-वेट सर्विसेज शॉप को फिर से खोला और इसके अलावा पोल्ट्री/पशु आहार और दवा के व्यापार में शामिल हुआ। मैं किसानों को सीधे थोक मूल्य पर चारा और दवा बेचता हूं। घर-घर का दौरा करते हुए मैं मवेशियों की जांच करता हूं और सलाह देता हूं जो किसानों के साथ एक मजबूत तालमेल बनाने में मदद करता है। किसान डेयरी, पोल्ट्री, बकरी फार्म स्थापना आदि के बारे में भी सलाह ले रहे हैं। हाल ही में, मैंने एक दिन की एंटीबायोटिक मुफ्त कड़कनाथ नस्ल के मुर्गों की आपूर्ति के लिए स्फुटनशाला शुरू की है, जो महाराष्ट्र और अन्य राज्यों में लोकप्रिय हो रहा है। किसी भी निवेश के बिना, केवल सही तकनीकी जानकारी के साथ मजबूत योजना पर मेरा व्यवसाय अच्छी तरह से बढ़ रहा है और 4 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ है" निरंजन ने कहा।

कृषिउद्यमी: श्री निरंजन तयाडे (39) ने पशुपालन में डिप्लोमा किया है और वे पशुपालन पर पूर्ण सलाह देने में जुडे है। निरंजन ने शुरू में पेट क्लिनिक खोला और केवल कुत्तों की देखभाल पर ध्यान केंद्रित किया । हालांकि, पेट क्लिनिक के लिए प्रतिक्रिया बहुत खराब थी, इसलिए छह महीने के भीतर उन्होंने क्लिनिक बंद कर दिया। इस अवधि के दौरान उन्होंने कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यवसाय केंद्र (एसी एंड एबीसी) योजना और इसके क्रेडिट सपोर्ट कांपोनेंट के बारे में जाना। उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र में नोडल प्रशिक्षण संस्थान से संपर्क किया और प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हुए।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 गांवों से **100** किसान	**3** कुशल और **15** अकुशल श्रमिक	**7.5** लाख रुपए

श्री हेमंत नंदकिशोर वाल्वालकर
पोस्ट-तेली आली,
तालुका-कनकवल्ली,
जिला-सिंधुदुर्ग
महाराष्ट्र, भारत

hemantnw27@gmail.com
Mobile: +91 9420730764

उपक्रम: जावा बेर, आंवला, कोकम, मिर्च और आम के लिए फल प्रसंस्करण इकाई

मूल गतिविधि: हेमंत ने बताया "परिवार और दोस्तों से उधार पर लिए गए 10/- लाख रुपये की अर्थिक सहायता से मैंने सिंधुदुर्ग में औद्योगिक क्षेत्र में फल प्रसंस्करण इकाई की स्थापना की। प्रासेस किये गये उत्पादों में जामुन चिप्स, जामुन पाउडर, जामुन मिर्च, भरवां मिर्च, दही मिर्च, कोकम स्क्वैश, कोकम पाउडर, आंवला जाम, आंवला कैंडी, मिश्रित फल जाम आदि हैं।"

कृषिउद्यमी: श्री हेमंत नंदकिशोर वाल्वालकर (27) ने बताया "जामुन" या जावा बेर एक महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है जिसका उपयोग चिकित्सा की विभिन्न पारंपरिक प्रणालियों में किया जाता है। यह डायबिटीज मेलिटस, सूजन, अल्सर, डायरिया आदि के उपचार में प्रभावी है। बीजों में अल्कलॉइड, जाम्बोसिन और ग्लाइकोसाइड जंबोलिन या एंटीमेलिन होने का दावा किया जाता है, जो स्टार्च के आहार रूपांतरण को चीनी में बदल देता है। इसकी उपयोगिताओं के कारण, मैंने प्रसंस्करण के लिए जामुन का चयन किया। मैंने ग्रामीणों से फल लेने के लिए पाँच गाँवों में 5 संग्रह केंद्र स्थापित किए हैं। श्री हेमंद नंदकिशर पोस्ट-हार्वेस्ट टेक्नोलॉजी में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की और वे सिंधुदुर्ग जिले से आए हैं। हेमंत कृष्ण वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चर फाउंडेशन, ओरस, सिंधुदुर्ग से एग्री-क्लीनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर (एसी एंड एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षित कृषि उद्यमी हैं।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
7 गांवों से 450 किसान	7 व्यक्ति	25 लाख रुपए

श्री अब्दुलवाहब जहांगिर देवर्षी
पोस्ट - धुलगांव, तालुका. तसगांव, जिला. सांगली
महाराष्ट्र, भारत

avdevarshi786@gmail.com
+91 7768003801

उपक्रम: किशमिश प्रसंस्करण इकाई और परामर्श

मूल गतिविधि: अब्दुलवाहब ने बताया - "स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, सांगली से 5.00/- लाख रु/- की आर्थिक सहायत के साथ मैंने किशमिश प्रसंस्करण इकाई की स्थापना की। किशमिश मूल रूप से सूखे अंगूर होते हैं, जिन्हें किशमिश, मनुका, बेदाना या सूखे फल के रूप में भी जाना जाता है। पहले के दिनों में, अंगूर को केवल पौधों पर ही सुखाया जाता था, जो कि बहुत कच्चे माल के रूप में होता था, जिसके परिणामस्वरूप बहुत अधिक अपव्यय होता था। अंगूर को किशमिश में बदलने की परियोजना लगभग 40 से 45 साल पहले शुरू हुई थी। लेकिन पिछले 3 से 5 वर्षों में उत्पादन लगभग मजबूत हुआ है। किशमिश दो प्रकार की होती है यानी गोल्डन येलो और डार्कर स्वीटेन्ड (काला)"।

कृषिउद्यमी: महराष्ट्र में सांगली जिले के श्री अब्दुलवाहब देवर्शी (31), कृषि विज्ञान में स्नातक उपाधि प्राप्त की और उनके पास 10 एकड़ जमीन है और वे किशमिश प्रसंस्करण उद्योग में शामिल हुए। कृष्णा वैली एडवान्स्ड एग्रिकल्चर फाउंडेशन, सांगली में उद्यमिता कौशल सीखा । अब्दुलवाहब ने बताया "कृषि-क्लिनिक और कृषि-व्यवसाय केंद्र योजना, जो भारत में बेरोजगार कृषि-स्नातकों के लिए एक वरदान है"

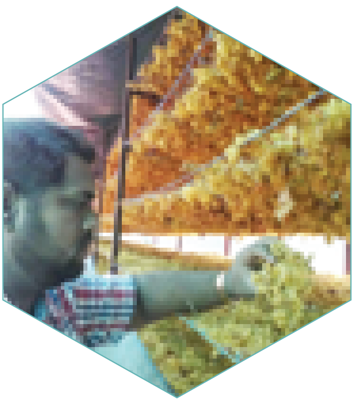

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
30 गांवों से 700 किसान	3 व्यक्ति	30 लाख रुपए

श्री महेश मोहन कुलकर्णी
पोस्ट - “त्रिमूर्ति पद्मा” एस1
पद्मावती नगर, दत्तनगर,
विश्रामबाग, सांगली, महाराष्ट्र,
भारत
maheshmohankulkarni1977@gmail.com
+91 09881431105

उपक्रम: बीज उत्पादन, प्रसंस्करण, विपणन और कृषि-परामर्श

मूल गतिविधि: श्री महेश मोहन कुलकर्णी ने एसी एंड एबीसी प्रशिक्षण प्राप्त करने के तुरंत बाद, 5 लाख रुपये की पूंजी से "कुलकर्णी सीड्स" ट्रेडिंग की दुकान की स्थापना की। 15 से अधिक प्रमुख बीज कंपनियों के साथ भागीदारी की गई और अनाज, तिलहन, दाल और सब्जियों के लिए 150 से अधिक किस्मों का व्यापार किया गया। उन्होंने घर-घर जाकर सेवाएं प्रदान की और विभिन्न प्रकार की बीजों की किस्मों का प्रदर्शन करते हुए किसानों को प्रत्साहित। मुकेश ने बताया “किसान बहुत खुश थे क्योंकि उन्हें अच्छी गुणवत्ता वाले बीज प्राप्त करने के लिए मीलों की यात्रा नहीं करनी पड़ती थी, इसके अलावा, उन्हें एक वितरक से दूसरे वितरक तक नहीं जाना है। अच्छी फसल की पैदावार देखकर, अगली फसल के लिए बीज की मांग सीजन से पहले ही आ रही है।”

कृषिउद्यमी: श्री महेश कुलकर्णी (37) ने बताया “अच्छी गुणवत्ता वाले बीजों को बोने से कम बीज दर, बेहतर उद्भव, अधिक एकरूपता, कम पुनर्रोपण के साथ-साथ आरंभिक वृद्धि के कारण कीड़ों और बीमारियों के प्रतिरोध को बढ़ाने और जंगली घास को कम करने में मदद करता है, जिसके फलस्वरूप उपज भी बढ़ेगी” उन्होंने कृषि का अध्ययन किया । वे महाराष्ट्र में सांगली जिले के निवासी हैं । महेश पैतृक व्यवसाय खेती में शामिल थे और उन्होंने गुणन के लिए गुणवत्ता वाले बीजों की कटाई शुरू की। वे अपने काम को अगले स्तर पर ले जाना चाहते थे और इसलिए कृषि वैली एग्रीकल्चर फाउंडेशन, कुपवाड़ा, सांगली जिले में कृषि-क्लिनिक और कृषि-व्यवसाय केंद्र (एसी एंड एबीसी) योजना के तहत दो महीने के आवासीय उद्यमिता कौशल में शामिल हुए।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
7 गांवों से **90** किसान	**11** व्यक्ति	**25** लाख रुपए

श्री स्वप्निल शिवराज माली
पोस्ट - हाटिड, तालुका -संगोला,
जिला-सोलापुर
पिन - 413307, महाराष्ट्र, भारत

swapanilmali378@gmail.com
+91 9890055378

उपक्रम: अनार के बीज (अनारदाना) प्रसंस्करण इकाई

मूल गतिविधि: बैंक ऑफ इंडिया, हटिड, शाखा से 11.25/- लाख रुपये की वित्तीय सहायता के साथ, स्वप्निल ने अनार के बीज (अनारदाना) प्रसंस्करण इकाई की स्थापना की, जिसका नाम 'सिद्धनाथ अनारदाना प्रोसेसिंग यूनिट' है, जिसकी क्षमता 2 टन प्रतिदिन है। वे अनार फल की खरीद सीधे किसानों के बाग से कर रहे है और अपने प्रसंस्कृत और पैक्ड अनारदाना को गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु में विपणन कर रहे हैं। वे अनारदाना को दूसरे राज्य के थोक खरीदारों को भी बेच रहे हैं।

कृषिउद्यमी: स्वप्निल ने बताया “मैंने कृषि विज्ञान में अपनी पढ़ाई बंद करने के बाद खेती को गंभीरता से लिया और डेढ़ एकड़ में भगवा अनार के 450 पौधे रोपे और उसके बाद एक और डेढ़ एकड़ में टिशू कल्चर लैब से 385 पौधे जोडा।” मुझे स्थानीय बाजार में 70-80 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से उपज प्राप्त होती है। मुझे लगा कि कड़ी मेहनत के बाद भी यह सबसे कम दर है। मैंने अनारदाना, जूस, सिरप और जेली जैसे प्रसंस्कृत उत्पादों का निर्माण शुरू करने का फैसला किया, जो अपने पौष्टिक और मिठाई के गुणों और स्वादिष्टता के कारण उच्च मांग थी। इसलिए, मैं महाराष्ट्र राज्य में कृष्णा वैली एडवान्ड एग्रिकल्चर फाउंडेशन, कुपवाड़, सांगली जिले में कृषि-क्लिनिक और कृषि-व्यवसाय केंद्र (एसी एंड एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हुआ।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
100 गांवों से **500** किसान	**2** कुशल और **10** अकुशल श्रमिक	**40** लाख रुपए

श्री बालकृष्ण सदाशिव हसुरे
विराज ऑर्गनिक, 144, आगर, शाहू को-ऑप इंडस्ट्रियल एस्टेट के पास, जयसिंगपुर पिनकोड-416101 महाराष्ट्र, भारत

virajorganic@gmail.com
+910992225100

उपक्रम: भूमि सुधार के लिए पूर्ण समाधान देने हेतु विनिर्मित मिट्टी संशोधन

मूल गतिविधि: श्री बालकृष्ण भूमि स्वास्थ्य संशोधनों के लिए जैविक उर्वरकों के निर्माण में शामिल हैं। श्री बालकृष्ण ने बताया "उच्च फसल प्रबंधन के तरीके और जैविक और खनिज उर्वरकों का एकीकरण न केवल कृषि प्रणाली को जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को बेहतर ढंग से समायोजित करने में सक्षम बनाता है, बल्कि निरंतर आधार पर मिट्टी की उर्वरता को बहाल करने का मौका भी देता है। इसके अलावा, मैं भी नाजुक मिट्टी की सतह की रक्षा के लिए फसल की परिक्रमा में फलियां शामिल करने की सलाह देता हूं। नाबार्ड द्वारा प्रस्तावित 36% सब्सिडी समाप्त वापसी के साथ 20/- लाख रु. की आर्थिक सहायता से मिट्टी संशोधन की निर्माण इकाई का कार्य चल रहा है, जो मिट्टी के उत्थान के लिए पूर्ण समाधान करेगा"

कृषिउद्यमी: बालकृष्ण हसुरे (47) एक कृषि स्नातक हैं और जयसिंहपुर, कोल्हापुर जिले, महाराष्ट्र राज्य के हैं। उन्होंने महाराष्ट्र में कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रिकल्चर फाउंडेशन, कुपवाड़, सांगली में कृषि-क्लिनिक और कृषि-व्यवसाय केंद्र (एसी एंड एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
8 गांवों से 150 किसान	7 व्यक्ति	40 लाख रुपए

श्री सहदेव आत्माराम तवाडे
पोस्ट-अकेरी, हमरास, तालुका-कूडल, जिला- सिंधु दुर्ग, पिनकोड-416820, महाराष्ट्र, भारत

+91 09975947281

उपक्रम: लिली खेती और विपणन

मूल गतिविधि: श्री सहदेव तावड़े ने बताया “फूल प्रसंस्करण इकाई की स्थापना के लिए इस परियोजना की कुल लागत 10/- लाख रु. है। इस राशि को बैंक ऑफ इंडिया, धरा शाखा, सिंधुदुर्गा से मंजूरी मिली। इस वित्तीय मदद से, मैंने “तावडे लिली फार्म” नाम से लिली वृक्षारोपण और विपणन इकाई की स्थापना की। मैंने 2 एकड़ भूमि में लिली के बागान की खेती के लिए खेत विकसित किया। प्रतिदिन 10-15 किलो फूलों को काटा जाता है और स्थानीय बाजार में इसे बेचा जाता है। भले ही यह दर सीजन से सीजन तक कम हो, औसतन मुझे प्रति किलो 80-140 रु. मिलता है। मैं फूलों की खेती और पुष्पोत्पादन पर 150 से अधिक किसानों को परामर्श करने में भी शामिल होता हूं। विस्तारित सेवाओं की मान्यता के रूप में नाबार्ड द्वारा मुझे 36 प्रतिशत आर्थिक सहायता प्रदान करने की पेशकश भी की गई।”

कृषिउद्यमी: लिली के फूल लंबे, बहुत सजावटी, बहुत सुगंधित फूलों के रूप में मूल्यवान हैं। छह सादे या चिह्नित बाह्यदल ("पंखुड़ियों") बहुत तुरही के आकार के होते हैं, जो लंबे, सीधे खड़े होते हैं। लिली को सजावटी, औषधीय और खाद्य पौधों के रूप में माना गया है। श्री तवाडे (25) ने बताया "मैं दो साल से स्पाईडर लिली मकड़ी के सफेद रंग की किस्म की खेती में शामिल हूं और प्रति वर्ष 4-5/- रु. का कुल लाभ प्राप्त कर रहा हूं।" वह कृषि में डिप्लोमा धारक और महाराष्ट्र में सिंधुदुर्ग जिले के अकेरी गाँव से प्रशिक्षित कृषि उद्यमी हैं। सहदेव ने बताया कृष्णा वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चर फाउंडेशन (केवीएएएफ), ओरस, सिंधुदुरग में एसी और एबीसी योजना के तहत प्रशिक्षण के दौरान, मैंने एक खुले क्षेत्र में की गई सजावटी फूलों की खेती की इकाई का दौरा किया था। मैंने पाया कि लिली के फूल पूरे साल खिल सकते हैं, इसलिए मैंने उसी में व्यापार शुरू करने का विकल्प चुना ।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
10 गांवों से **200** किसान	**2** व्यक्ति	**7** लाख रुपए

श्री नीलेश सदाशिव पाटिल
पोस्ट- तहाकली, दोनगांव, तालुका व जिला जलगांव 425103, महाराष्ट्र, भारत

nsp.4454@gmail.com
+91 9730710103

उपक्रम: डेयरी फार्मिंग, दूध संग्रह केंद्र और परामर्श

मूल गतिविधि: श्री नीलेश का कहना है कि एसी और एबीसी प्रशिक्षण पूरा होने के बाद 5/- लाख रु. की अपनी पूंजी औक बैंक आफ महाराष्ट्र, बम्होरी शाखा से 6/- लाख रुपए के ऋण समर्थन से 'नीलकंठेश्वर डेयरी फार्म' का विकास किया गया. श्री नीलेश ने जाफराबादी, मुर्रा और मेहसाणा दुधारू नस्ल की 10 भैंस खरीदी और डेयरी में लगाया। प्रतिदिन लगभग 80-100 लीटर दूध एकत्रित किया जाता है। नीलेश ने अपनी ग्राहकों की संख्या बढ़ाई और 50-60 रुपये प्रति लीटर की दर से दूध घर-घर तक पहुंचाता है। प्रतिदिन 5-10 किसान डेयरी के वैज्ञानिक प्रबंधन पर सलाह के लिए डेयरी शेड का दौरा कर रहे हैं।

कृषिउद्यमी: महाराष्ट्र में जलगाँव जिले के एक कृषि उद्‌यमी श्री नीलेश सदाशिव पाटिल (28) द्‌वारा 10 भैंसों (30 फीट x 30 फीट) के लिए एक मॉडल डेयरी की स्थापना की गई। श्री नीलेश कहते हैं, डेयरी शेड का लेआउट, जानवरों को जंगली जानवरों और चोरी से बचाने में मदद करता है, इसकी मदद जानवरों की बेहतर देखभाल और देखरेख, जानवरों की बेहतर उत्पादक और प्रजनन क्षमता, पशुओं की उचित और नियंत्रित फीडिंग, उचित रोग नियंत्रण, और सस्ती कीमत पर बेहतर आवास उपलब्ध कराता है। यह अन्य डेयरी किसानों को प्रोत्साहन के स्रोत के रूप में भी कार्य कर रहा है। श्री नीलेश ने महाराष्ट्र के कृष्णा वैली एडवांस एग्रीकल्चर फाउंडेशन जलगाँव में कृषि-क्लिनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी एंड एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
12-15 गांवों से **1000** किसान	**1** ड्राइवर, **2** लोग	**15** लाख रुपए

श्री रमेश आनंदा पाटिल
पोस्ट-कोपर्डे, तालुका : करवीर
जिला : कोल्हापुर, पिनकोड-416205, महाराष्ट्र, भारत

patilramesh1919@gmail.com
+91 07776931919

उपक्रम: कस्टम हायरिंग केंद्र और परामर्श

मूल गतिविधि: रमेश मिनी मशीन, एक कस्टम हायरिंग केंद्र है, जिसे 18/- लाख रुपए के निवेश के साथ स्थापित किया गया। केंद्र के मालिक रमेश का कहना है कि शुरुआत में उन्होंने एक रिवर्सिबुल एमबी प्लाऊ (2 बॉटम) सहित 60 एचपी ट्रैक्टर, फ्रंट डोजर, रोटावेटर (2.1 मीटर), कल्टीवेटर (9 टायन्स), गन्ना कटर प्लांटर (2 पंक्तियों) और हाइड्रोलिक ट्राली (4 पहिया) खरीदा था। अपने उद्यमशीलता कौशल और नई तकनीक को अपनाने की उत्सुकता से उन्होंने अपने क्षेत्र में गन्ना किसानों को सेवा प्रदान करने के लिए गन्ना कटर प्लानर की खरीद की और खरीफ फसलों के लिए उगाए गए खेती को भी बढ़ावा दिया। उन्होंने इन मशीनों को अपने गाँव के कई किसानों और आसपास के गाँवों में सोयाबीन, गेहूँ, मक्का, छोले, गन्ने आदि की खेती के लिए किराए पर दिया। वे लगभग 3.0 लाख रुपये का लाभ अर्जित करने में सक्षम रहे और रोजगार भी प्राप्त कर रहे हैं और स्थानीय बेरोजगार युवाओं को रोजगार दिलाया. उन्होंने मशीनरी रखरखाव पर अतिरिक्त प्रशिक्षण लिया क्योंकि उनके मूल स्थान पर कोई मरम्मत सेवाएं उपलब्ध नहीं हैं।

कृषिउद्यमी: कोल्हापुर निवासी श्री रमेश आनंद पाटिल (24) लगभग 15 एकड़ जमीन के मालिक हैं। कृषि में स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद, वे महाराष्ट्र में सिंधुदुर्ग जिले के कृष्णा वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चर फाउंडेशन में उद्यमिता कौशल प्रशिक्षण में शामिल हुए।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
300 से अधिक किसान	10 लोग	20 लाख रुपए

श्री महेश के. पाटिल
एन.वी. ईको एग्रो टूरिज़म प्राइवेट लिमिटेड. एस-5, बृंदावन, वी वी डेंपो मार्ग, ग्रीन एक्रेस के सामने, तोनका मरिमार, गोवा पिनकोड-403002, भारत
mkpatil64@gmail.com
+91 09765565504

उपक्रम: कृषि-पर्यटन और परामर्श

मूल गतिविधि: कृषि और रोमांच के संयोजन की अवधारणा श्री महेश पाटिल द्वारा विकसित की गई है और उनके पेशेवर परिवार के सदस्यों द्वारा सक्रिय रूप से समर्थन प्राप्त है। एनवी इको-फार्म पारंपरिक ज्ञान के साथ संयुक्त आधुनिक और वैज्ञानिक प्रथाओं के साथ एक संपूर्ण कृषि क्षेत्र है। आज कोई भी उनकी दृष्टिकोण को देख सकता है क्योंकि 200 साल से अधिक पुराने बरगद का पेड़ गेट पर अतिथि का स्वागत करता है और खेत के भीतर लगभग 125 वन प्रजातियों (परिवार, प्रजाति, वनस्पति और सामान्य नाम, आदि) का विवरण दिया गया है। उपलब्ध साहसिक गतिविधियां एडवेंचर, जिप-लाइनिंग, बर्मा ब्रिज, मॉकिंग ब्रिज, ट्रेकिंग, कमांडो ब्रिज वॉक, रैपेलिंग, जंपिंग जैक और वॉल क्लाइंबिंग दर्शकों का प्रमुख आकर्षण बनती हैं। इसके अलावा, खेत का प्रमुख आकर्षण स्पाइस फार्म, नक्षत्र वन, बांस हाउस, कॉटेज, टेंट हाउस और फार्म आकर्षित करती हैं।

कृषिउद्यमी: श्री महेश पाटिल (41), 15 वर्ष से अधिक कॉर्पोरेट अनुभव के साथ कृषि और प्रबंधन में स्नातकोत्तर हैं, जो गोवा के टोनका के निवासी हैं। गोवा के श्री महेश पर्यटन क्षेत्र में अपनी शुरुआत करना चाहते थे। अपनी पैतृक भूमि और संसाधनों के साथ उन्होंने इको-टूरिज्म के विचारों को विकसित किया। सिंधुदुर्ग में कृष्णा वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चर फाउंडेशन में दो महीने के उद्यमशीलता कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम ने उनके सपने को आकार दिया। स्थापित इकाइयों और विशेषज्ञ व्याख्यान के संपर्क में आने के बाद उनकी आत्मविश्वास बढ़ा और पर्यटन क्षेत्र में आगे बढ़ने में मदद मिली।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
3 राज्यों से पंजीकृत **62000** किसान	**150** कुशल तथा अकुशल लोग	**20** करोड़ रुपए

श्री प्रकाश रघुनाथ अताडे
पता: आयडियल एग्री सर्च प्राइवेट लिमिटेड प्लाट नं. 23 एमआईडीसी, कुपवाड़ा तालुका- मिराज, जिला - सांगली, पिनकोड-416436, महाराष्ट्र, भारत
prakash.autade@idealagri.com
+91 9850501855

उपक्रम: जैविक खाद, प्लांट ग्रोथ रेगुलेटर, स्टिमुलेटर, जैविक फॉस्फेट, मिट्टी कंडीशनर की तैयारी तथा विपणन

मूल गतिविधि: बैंक ऑफ इंडिया, सांगली शाखा से 20 लाख रुपये के वित्तीय समर्थन और श्री प्रकाश रघुनाथ औताडे द्वारा 10.00 लाख रुपये के स्वयं निवेश को साथ आदर्श कृषि-खोज की स्थापना की गई। भूमि परीक्षण सलाहकार के रूप में किसानों के क्षेत्र तक पहुँचने का यह पहला कदम था। आज कंपनी जैविक खाद, पीजीआर, स्टिमुलेटर, जैविक फॉस्फेट और मिट्टी कंडीशनर सहित परामर्श के साथ महाराष्ट्र, कर्नाटक, और आंध्र प्रदेश के 62000 पंजीकृत किसानों को सेवा प्रदान करती है। औताडे बताया कि मिट्टी के परीक्षण के साथ-साथ घर-घर पर जाकर परामर्श करना और फसल प्रबंधन पर सलाह देना एक महत्वपूर्ण कार्य था। कृषक समुदाय के वर्गीकरण के लिए, प्रकाश ने कॉरपोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (CSR) गतिविधि के तहत आइडियल फाउंडेशन का नेतृत्व किया। कृषि-प्रदर्शनी का संगठन, मौसम-विज्ञान पर एसएमएस सेवा, कीट और बीमारी के हमले पर अग्रिम प्रसारण, बाजार में घुसपैठ, नवाचारी किसान को पुरस्कार, किसानों के बच्चों के लिए छात्रवृत्ति आदि आदर्श फाउंडेशन की प्रमुख गतिविधियां हैं।

कृषि उद्यमी: श्री प्रकाश औताडे (41) एक कृषि स्नातक हैं और महाराष्ट्र राज्य के सांगली जिले के निवासी हैं। अपने अध्ययन के दौरान उन्होंने पाया कि रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अधिक उपयोग के कारण किसानों को ज्ञान की कमी, मिट्टी की उर्वरता की कमी और नुकसान या लाभ को जाने बिना खेती करने की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। उन्होंने खेती में परामर्श सेवा शुरू करने का फैसला किया। ग्रेजुएशन के तुरंत बाद उन्होंने इंस्टीट्यूट कृष्णा वैली एडवांस एग्रीकल्चर फाउंडेशन सांगली में एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजिनेस सेंटर्स स्कीम (एसी एंड एबीसी) के तहत उद्यमी कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हुए।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
4 गांवों से 150 से अधिक किसान	2 लोग	10 लाख रुपए

श्री अनिल अशोक माने
पोस्ट - नेरले, तालुका - वालवा,
जिला-सांगली, महाराष्ट्र, भारत

anil.amane955@gmail.com
+91 7083989955,
+91 9130077637

उपक्रम: ब्रायलर मुर्गी पालन और परामर्श

मूल गतिविधि: श्री अनिल अशोक माने द्वारा 3000 पक्षी के साथ इकाई पोल्ट्री फार्मिंग इकाई शुरू करने का पहला कदम था क्योंकि इन्हें पोल्ट्री फार्मिंग की पर्याप्त विशेषज्ञता, जानकारी है और यह पूरी तरह से जोखिम मुक्त है। अनिल ने कृषि उद्यमी बनने हेतु यह संदेश देते हैं कि ”पक्षियों को खिलाने में लागू विधि पर सावधानीपूर्वक परामर्श दिया जाता है। ड्रापिंग को हटाने से आमतौर पर कोई समस्या नहीं होती है। आप या तो ड्रापिंग के साथ पूरी चूरा को पैक कर सकते हैं या ताजे चूरे के धूल सहित ड्रापिंग को कवर कर सकते हैं। मुर्गा पालन आय का एक निरंतर स्रोत है। यह मौसमी नहीं है और पूरे वर्ष के लिए आय का स्रोत बनता है। पोल्ट्री ड्रॉपिंग, नाइट्रोजन और जैविक पदार्थों में समृद्ध है और इसलिए, उर्वरक के रूप में मूल्यवान माने जाते हैं। मैंने मुर्गी शेड से निकलने वाले प्रत्येक बैच को बेचा। मुर्गी पालन ग्रामीण आर्थिक स्थिरता के लिए एक मॉडल बन सकता है, जिसमें शामिल होकर आप इसमें विजय पा सकते हैं।

कृषिउद्यमी: कृष्णा वैली एडवांस एग्रीकल्चर फाउंडेशन, कुपवाड़, महाराष्ट्र के सांगली द्वारा कौशल-उन्मुख उद्यमिता विकास-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सांगली जिले के नेरले गाँव के श्री अनिल अशोक माने (25) को कृषि-क्लिनिक और कृषि-व्यवसाय केंद्र (एसी एंड एबीसी) योजना के तहत मुफ्त आवासीय प्रशिक्षण के बारे में बताया गया। कृषि विज्ञान में योग्य स्नातक होने के कारण, वे प्रशिक्षण के लिए पात्र थे और प्रशिक्षण में शामिल हो गए। अनिल ने बताया “स्थापित उपक्रमों की यह आकर्षक दौरा वास्तव में प्रेरक बनी और इस व्यापार में शामिल होने में और आत्मविश्वास बढ़ने में मदद मिली। मैंने इस आकर्षक दौरे से पोल्ट्री फार्म शुरू करने का फैसला किया”।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 गांवों से **350** से अधिक किसान	**1** लोग	**10** लाख रुपए

डॉ दिलीप आर. भोले
शाप नं.11, शांतिबन सोसाइटी, 100 फीट रोड, धमनी कार्नर, सांगली, महाराष्ट्र, भारत

bholepetclinic@gmail.com
+91 09422041138

उपक्रम: पशु स्वास्थ्य सेवाओं के लिए पशुचिकित्सा देखभाल अस्पताल

मूल गतिविधि: डॉ. भोले ने पशु स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए सांगली में पालतू पशुओं की देखभाल क्लिनिक खोला। जैसे पशुओं की बीमारियों और बीमारियों के लिए ऑन-लाइन परामर्श और रेफरल, विभिन्न बाजारों में पशुधन और पशुधन उत्पादों की कीमतों की जानकारी, समय पर टीकाकरण और डी-वर्मिंग, बकरी और पोल्ट्री फार्म स्थापना पर परामर्श आदि सेवाएं प्रदान करते हैं। डॉ. भोले के मार्गदर्शन में 150 से अधिक किसान बकरी और मुर्गा पालन कर रहे हैं । किसानों को क्लिनिक के साथ पंजीकृत किया जाता है और उन्हें मामूली शुल्क पर सेवाएं प्रदान की जाती हैं। डॉ.भोले ग्रामीण युवाओं को पैरा-वेट प्रशिक्षण भी दे रहे हैं, जो मवेशियों को समय पर कृत्रिम गर्भाधान सेवाएं जैसी गतिविधियाँ करते हैं। शाम के दौरान, डॉ. भोले आम तौर पर पालतू जानवरों के साथ काम करते हैं। डॉ. भोले ने हंसते हुए कहा "आपका पालतू कुत्ता आपको अपनी बिल्ली से पांच गुना अधिक प्यार कर सकता है"

कृषिउद्यमी: "गंभीर अवसरों पर मनुष्य को अस्पताल ले जाना एक मुश्किल काम है। उसी प्रकार बीमार मवेशियों को अस्पताल ले जाना भी उतना ही मुश्किल भरा कार्य है, चूंकि आकार में वे बड़े होते हैं। इसलिए मैं किसानों की सेवा करने और कई मवेशियों की जान बचाने के लिए डोर स्टेप एनिमल केयर सेवाओं में जुड़ा। महाराष्ट्र के सांगली के एक पशु चिकित्सक" डॉ. दिलीप भोले (48) कहते हैं "कृषि-क्लिनिक और कृषि-व्यवसाय केंद्र (एसी और एबीसी) योजना बेरोजगार युवाओं का अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए आत्मविश्वास बढ़ा रही है। मैंने कृष्णा वैली एडवांस एग्रीकल्चर फाउंडेशन, सांगली, महाराष्ट्र में (एसी एंड एबीसी) दो महीने के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
10 गांवों से **800** किसान	**6** व्यक्ति	**1** करोड़ रुपये

श्री अरविंद बाबासाहेब गडाडे
ए / पी - प्लॉट संख्या 12,
जयश्रीराम निवास, एसबीआई
कॉलोनी, सयाद्री नगर सांगली,
पिनकोड-416416 महाराष्ट्र, भारत

arvindgadade979@gmail.com
+91 9403584944,

उद्यम: मवेशी चारा प्रसंस्करण इकाई

मूल गतिविधि: "एसी और एबीसी प्रशिक्षण पूरा होने के तुरंत बाद, मुझे रु. 19/- लाख कार्पोरेशन बैंक, विश्रामबाग शाखा, सांगली से वित्त प्राप्त हुआ। बैंक वित्त और अपनी पूंजी के साथ, मैंने फ़ीड प्रसंस्करण इकाई की स्थापना की। कारखाने को प्रति वर्ष 36,000 मेट्रिक टन पशु फ़ीड की उत्पादन क्षमता के साथ इसके वाणिज्यिक उत्पादन शुरू किया मक्का आसपास के क्षेत्र में उगाई जाने वाली प्रमुख फसल है, और उपलब्धता भी आसान है। तकनीकी विशेषज्ञता और शुरुआती इनपुट और 800 पंजीकृत मक्का उत्पादकों के लिए वापस खरीदने के प्रावधान के साथ, आनंदराज एग्रो प्रसंस्करण आज महाराष्ट्र, कर्नाटक और तेलंगाना राज्यों में मवेशी खाद्य व्यवसाय में एक प्रमुख प्राप्त किए है। संतुलित आहार जानवरों के कल्याण और समग्र प्रदर्शन को सुनिश्चित करता है और लाभ के साथ जानवरों को खिलाने में मदद करता है "श्री अरविंद ने कहा।

कृषिउद्यमी: "पशुधन की खेती की सफलता प्रतिस्पर्धी मूल्य पर अच्छी गुणवत्ता वाले पौष्टिक फ़ीड की निरंतर आपूर्ति पर निर्भर है। अकेले फ़ीड पशुपालन के उत्पादन की कूल लागत का लगभग 60-70 प्रतिशत है। इसलिए, मैंने खाद्य प्रसंस्करण इकाई की स्थापना की" श्री अरविंद बाबासाहेब गाडाडे (39), सांगली से कृषि में डिप्लोमा धारक ने कहा। "मेरे एक मित्र ने कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के बारे में जानकारी दी और विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के बाद, मैंने कृष्णा वैली उन्नत कृषि फाउंडेशन, (केवीएएफ) सांगली में 2 महीने के प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए आवेदन किया।" प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान उन्होंने उद्यमशीलता विकास, विपणन पहलुओं, उद्यमों के वित्तीय प्रबंधन और एसीएबीसी योजना के तहत सब्सिडी लाभों पर जानकारी प्रदान की।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
11 गांवों से **500** किसान	**2** व्यक्ति	**10** लाख रुपये

श्री सुरेश पाताळू कोडुलकर
ए / पी - करंदवाड़ी,
तालु - वाल्वा, जिला-सांगली,
महाराष्ट्र, भारत

sureshpk777@gmail.com
+91 09545928665

उद्यम: हाइरिंग केंद्र और परामर्श

मूल गतिविधि: रुपये 10/- लाख की वित्तीय सहायता के साथ स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, वालवा शाखा से सुरेश ने कृषि मशीनरी ट्रैक्टर, रोटावाटर, सब-सोइलर और लेवलर खरीदा जो कि जुताई में महत्वपूर्ण है। पहली ऋतु में, मांग छोटे और मंझोले भूमि धारकों से की गई थी। किफायती दर पर फार्म मशीनरी किराए पर ली गईं। उन्होंने कृषि संचालन में मदद के लिए दो ड्राइवरों को भर्ती भी की है।

कृषिउद्यमी: "वालवा तालुका की 80% से अधिक आबादी गन्ना और केले की खेती में शामिल है, और लगभग सभी परिवार पूरी तरह से गन्ने की फसल पर निर्भर करते हैं। गन्ना उत्पादन समयानुसार कृषि संचालन पर अत्यधिक निर्भर है जिसके लिए श्रमिकों की निरंतर आवश्यकता होती है। हालांकि, श्रमिकों की कमी दिन ब दिन बढ़ रही है। इन सभी को ध्यान में रखते हुए, मैंने श्रम की समस्या को हल करने के लिए कृषि मशीनरी किराए पर देने का फैसला किया। हालांकि, वित्तीय समस्या ने मुझे आगे बढ़ने नहीं दिया" श्री सुरेश कोडुल्कर (2 9) ने कहा। वह कृषि-डिप्लोमा धारक है और महाराष्ट्र के सांगली जिले के वालावा गांव से है। कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना और बेरोजगार कृषि पेशेवरों के लिए इसके लाभों के बारे में जानने के बाद, उन्होंने कृष्णा वैली एड्वान्स्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन (केवीएएएफ), सांगली के नोडल अधिकारी से संपर्क किया और दो महीने के आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रवेश लिया ।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
7 गांवों से **590** किसान	**7** व्यक्ति	**1** करोड़ रुपये

श्री कुणाल आनंद माली
पोस्ट- के. संगव तालुक- कागल
जिला - कोल्हापुर, महाराष्ट्र, भारत

kunalmali4903@gmail.com
+91 09766400903

उद्यम: गन्ना और सब्जी फसलों के लिए नर्सरी बढ़ाना।

मूल गतिविधि: "शुरू में मैंने आधे एकड़ जमीन में नर्सरी विकसित की और गन्ने अंकुरण बेचना शुरू किया। खरीफ में 10 लाख से अधिक अंकुर बेचे गए थे। मेरा आत्मविश्वास बढ़ गया, मैंने नर्सरी को एक एकड़ तक बढ़ाया और साथ ही सब्जी अंकुर बढ़ाने लगा। मैंने अच्छे बाजार मूल्य लाने के लिए किसानों को ऑफ-सीजन सब्जी उत्पादन के लिए सलाह देना शुरू किया। किसान सहमत हुए और गर्मियों के मौसम में सब्जी का उत्पादन शुरू किया। गर्मियों के मौसम में, मेरी बिक्री 25 लाख से अधिक अंकुर पार करती है। एक साल में, बिक्री के आंकड़े 50 लाख रोपण पार किए हैं और वार्षिक टर्नोवर 1 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है। श्री कुणाल ने कहा, "सुनियोजन और फसल विविधीकरण के माध्यम से कृषि लाभदायक हो सकती है।"

कृषिउद्यमी: श्री कुणाल आनंद माली (24) कृषि विज्ञान में डिप्लोमा प्राप्त एक ग्रामीण युवा हैं। वह नर्सरी व्यवसाय में एक सफल उद्यमी है और महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले के संगव गांव के अन्य ग्रामीण युवाओं के लिए आदर्श बन गया है। वर्ष 2016 में, वह कृष्णा वैली एडवान्स्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, उत्तूर में कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत उद्यमशीलता प्रशिक्षण में शामिल हो गए। एक स्थापित नर्सरी के संपर्क में आने से, कुणाल ने मालिक से सभी तकनीकी जानकारियाँ और विपणन कौशल प्राप्त करने में रुचि दिखाई।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
45 गांवों से **125** किसान	**5** व्यक्ति	**10** लाख रुपये

श्री विद्यानंद सुखराम अहिर
ग्राम - ढलसिंगी, पो. - जामथी, वाया - फरदापुर, जिला-जलगांव, महाराष्ट्र, भारत

+919403330862,
+919168927958

उद्यम: मधुमक्खी पालन और परामर्श

मूल गतिविधि: 25 मधुमक्खी के छत्तो से प्रारंभ हुआ, 'विद्यासागर मधुमक्खी पालन और कृषि-परामर्श' की स्थापना 4 एकड़ भूमि में हुई थी। आज श्री विद्यानंद सुखराम अहिर 100 मधुमक्खी कॉलनियों का रखरखाव कर रहे है और डाबर व पंतंजली जैसे निगमों द्वारा मधुमक्खी पालन के रूप में पहचाने गये है। इस इकाई की उत्पादन क्षमता 2000 से 2500 किलो शहद है। वे मधुमक्खि पाालन पर सलाह दे रहे है और किसानों को मधुमक्खी पालन शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करते है। विद्यानंद ने कहा, "बैबेक विकल्प इस व्यवसाय में अधिक युवाओं को आकर्षित करने के लिए लाभप्रद है"। वे जलगांव और अन्य जिलों के 45 गांवों में 125 मधुमक्खी पालन करने वालों की भी मदद करते है।

कृषिउद्यमी: महाराष्ट्र के ढलसिंगी गांव के रहने वाले श्री विद्यानंद अहिर (33) ने मधुमक्खियों में दिलचस्पी ली। कृषि में स्नातक होने के बाद, वे खेती करने लगे । लगातार सूखा और कृषि में कम लाभ से निराश होकर श्री विद्यानंद ने अतिरिक्त आय के स्रोत के रास्तों की खोज की है। इस अवधि के दौरान उन्होंने केंद्र प्रायोजित कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के बारे में जाना। उन्होंने सांगली में कृष्णा वैली एड्वान्स्ड एग्रिकल्चर फाउंडेशन (केवीएएएफ) के नोडल अधिकारी से संपर्क किया, और साक्षात्कार के लिए उपस्थित हुए। व्यवसाय शुरू करने के अपने जुनून के कारण, उन्हें प्रशिक्षण के लिए चुना गया था। एक्सपोजर विजिट के दौरान एक स्थापित मधुमक्खी पालन यूनिट को देखा और उनकी रूचि इस ओर स्थापित एग्रिप्रेन्यूर द्वारा बढ़ाई गई जो कि सफलतापूर्वक मधुमक्खी उद्योग चला रहे है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
3 गांवों से **50** किसान	कोई नहीं	**5** लाख रुपये

श्री स्वप्निल राजेश जाधव
ग्राम/ पो.-सगुनामाता नगर,
मल्तान, तालुकः पलटान,
जिलाः सतारा, पिनकोड-415523
महाराष्ट्र, भारत

swapniljadhav1597@gmail.com
+91 08796277478

उद्यम: बकरी पालन और विपणन

मूल गतिविधि: "स्टाल फीडिंग सिस्टम को शून्य चराई गहन प्रणाली के रूप में माना जाता है। स्टाल फीड प्रणाली में, संरक्षित क्षेत्र में बकरियों का अच्छी तरह से रखरखाव, फसल, फोरेज और साइलेज सहित मुख्य चारे से किया जाता है। वजन बढ़ाने के लिए यह बकरियों की मदद करता है और मांस की गुणवत्ता भी अच्छी होती है। मैंने अपने 30 बकरियों के लिए स्टाल फीडिंग सिस्टम का इस्तेमाल किया, प्रत्येक की वजन 40-45 किलोग्राम तक बढ़ाया गया है। सीजन और त्यौहारों के आधार पर बाजार मूल्य 300-450 रुपये प्रति किलो होता है। मैं दो महीने के अंतर को रखकर बकरियों के स्लॉट तैयार करता हूं। हर दो महीने में मैं कम से कम 5-7 बकरियां बेच रहा हूं जिसमें मुझे लगभग रु. 50,000 /- का मुनाफा हो रहा है, स्वप्निल ने कहा कि उस्मानाबाद और जमुनापरी बकरियों की क्रास नस्लें बहुत लाभदायक हैं।

कृषिउद्यमी: श्री स्वप्निल राजेश जाधव (22) महाराष्ट्र के सतारा जिले के सगुनामाता नगर के रहने वाले एक कृषि उद्यमी हैं। कृषि विज्ञान में अपनी डिग्री के तुरंत बाद, राजेश कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र योजना (एसी और एबीसी) के तहत कृष्णा वैली एड्वास्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, ओरोस, सिंधुदुर्ग में प्रशिक्षण प्राप्त किया है। स्वप्निल ने कहा, "इस संस्थान ने बहुत अच्छे संसाधक व्यक्तियों और व्याख्याताओं के साथ प्रशिक्षुओं को उत्तम कृषि स्थानों की यात्रा कराया है, जिससे प्रशिक्षुओं को उनके भविष्य के उद्यमों के लिए योजना बनाने की पूरी जागरूकता प्राप्त करने में मदद मिली।"

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
7 गांवों से **450** कसािन	**2** कुशल और **5** अकुशल	**5** लाख रुपये

श्री सुंदर जनार्दन ज़ोर
ए/पी - रेवतवाड़ी नवेली, आरोस,
ताल: सावंतवाडी
जिला: सिंधुदुर्ग, पिनकोड-416514,
महाराष्ट्र, भारत

+91 07588953451

उद्यम: पुराने बगीचे कायाकल्प पर फल नर्सरी और परामर्श।

मूल गतिविधि: सुंदर ज़ोर ने कहा, एसी और एबीसी योजना के तहत 5/- लाख रूपये मंज़ूर किए गए, जिसमे मेरे गाँव रेवतवाड़ी में आम, काजू और कोकम फलों की फसलों के लिए फल नर्सरी स्थापित करने में मदद मिली। प्रारंभ में, उन्होंने अपने 2 एकड़ जमीन पर 100 मातृ पौधों को लगाया साथ ही साथ सिंचाई व्यवस्था रू.50,000 की लागत से स्थापित किया। लगभग सभी किसान फलदार पेड़ जो कम सामय में परिपक्व हो जाते है ऐसे किस्मों को चाहते थे। एक साल में लगभग 50,000 अंकुर बेचे गए है। सुन्दर किसानों के लिए नर्सरी प्रबंधन पर प्रशिक्षण माड्यूल चला रहे है। उनकी सेवाओं को देखते हुए, नाबार्ड ने उन्हें अपने ऋण पर 36 प्रतिशत सब्सिडी दी। "टिकाऊ कृषि के लिए अपनी खुद की रोपण सामग्री बढ़ाएं: सुंदर ने सलाह दी"।

कृषिउद्यमी: श्री सुंदर जनार्दन ज़ोर (25) रेवतवाड़ी गांव से हैं और छोटे किसान परिवार से हैं। कृषि व्यवसाय में शामिल होने की आकांक्षा के साथ, उन्होंने अपनी माध्यमिक स्कूली शिक्षा में कृषि विज्ञान को पढ़ा। अध्ययन के तुरंत बाद, वह कृष्णा वैली एड्वान्सड कृषि फाउंडेशन, ओरोस, सिंधुदुर्ग में कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हो गए। प्रशिक्षण समन्वयक ने विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने और बैंक को जमा करने में मदद की।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
6 गांवों से **150** किसान	**2** व्यक्ति	**5** लाख रुपये

श्री तुषार तानाजी गायकवाड़
ग्राम/पो.- भोसालेवाड़ी
तालुक: खंडाला, जिला: सतारा,
पिनकोड-412802
महाराष्ट्र, भारत

gaikawadtt1992@gmail.com
+91 08999949697

उद्यम: डेयरी, वर्मी-कंपोस्टिंग और परामर्श सेंवा

मूल गतिविधि: प्रशिक्षण के बाद, उन्होंने छः क्रॉसब्रीड गायों के साथ अपना उद्यम शुरू की और अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने के लिए उनका प्रबंधन वैज्ञानिक रूप से कर रहे है। उन्होंने गोकुला डेयरी (निजी डेयरी) को दूध बेचना शुरू किया। दैनिक दूध उत्पादन 50-60 लीटर था जो वसा प्रतिशत के आधार पर प्रति लीटर रू. 22-25 पर बेचते हैं। उन्होंने अपनी चार एकड़ भूमि में वर्मीकंपोस्टिंग और जैवी सब्जी की खेती शुरू की जिसके माध्यम से वे रुपये 2.5 लाख की अतिरिक्त आय कमा रहे है। आस-पास के किसानों ने उनके डेयरी का दौरा किया और वर्मी-कंपोस्टिंग और डेयरी प्रबंधन पर जानकारी ली।

कृषिउद्यमी: श्री तुषार तानाजी गायकवाड़ (26), महाराष्ट्र राज्य के सतारा जिले से कृषि में स्नातकोत्तर है, सरकारी क्षेत्र में उपयुक्त नौकरी पाने के लिए संघर्ष कर रहे थे। सभी प्रयास विफल रहे और इस अवधि के दौरान, वह प्रशिक्षण संस्थान कृष्णा वैली एड्वान्स्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, (केवीएएएफ), उत्तूरा के नोडल अधिकारी के संपर्क में आए, जिसमें कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र योजना पर प्रशिक्षण कार्यक्रम ग्रामीण युवाओं के लिए चला रहे थे। चर्चा के बाद, उन्होंने एक डेयरी इकाई शुरू करने और प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल होने की योजना बनाई। उन्होंने डेयरी पर तकनीकी पहलुओं पर प्रशिक्षण प्राप्त किया। हैण्ड्सऑन के दौरान तीन दिन वह उपस्थित रहे और डेयरी पर सभी लाभ व हानियों को सीखा। वे डेयरी पर उद्यम शुरू करने के लिए काफी आश्वस्त थे।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
3 गांवों से **50** किसान	**2** व्यक्ति	**10** लाख रुपये

श्री रंजीत मनोहर पोमाने
पो.- दत्तनगर कोल्हले तालु- बारामती
जिला- पूणे, महाराष्ट्र, भारत

+91 7745042366

उद्यम: कुक्कुट पालन और परामर्श

मूल गतिविधि: "मैंने रु. 5/- लाख मेरे माता-पिता से ऋण लिया शुरुआत में उन्होंने मना कर दिया लेकिन मेरी योजना को देखते हुए वे सहमत हुए। मैंने पौल्ट्री के लिए आवश्यक सभी सुविधाओं की व्यवस्था करके अपनी पौल्ट्री इकाई स्थापित की। मैंने एक मौजूदा पौल्ट्री के साथ सहयोग स्थापित किया और अनुबंध पर सौंपा। एक दिन पौल्ट्री दवा और दूसरे दिन पशु चिकित्सा सेवाएं नियमित रूप से प्रदान की जाती है। उनके पास 6000 पक्षी हैं। रंजीत ने कहा कि वजन के साथ पहली बैच में, पक्षियों का मृत्यु दर बहुत खराब था, बैच के अंत में 5960 पक्षी अच्छे वजन के साथ जीवित थे।

कृषिउद्यमी: दत्तनगर कोल्हाले से कृषि में माध्यमिक शिक्षा प्राप्त केवल 22 वर्षीय लड़के 6000 पौल्ट्री पक्षियों की इकाई सफलतापूर्वक चला रहा है और रुपया 65000/- का शुद्ध लाभ कमा रहा है। श्री रंजीत पोमाने अपने गांव का आदर्श बन गया। श्री रंजीत ने कहा कि यह चमत्कार केवल कृष्णा वैली एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, ओरोस में आयोजित कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण के बाद हुआ था। प्रशिक्षण के दौरान, मुझे एक स्थापित पौल्ट्री में अनुभव मिला, मालिक ने मुझे बारामती पौल्ट्री की जानकारी दी, जिसमें वह अनुबंध के आधार पर अपनी पौल्ट्री चला रहा था। मैंने सभी आवश्यक जानकारी ली और कुक्कुट पालन में शामिल होने का फैसला किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
7 गांवों से 30 किसान	2 व्यक्ति	40 लाख रुपये

श्री राहुलकुमार अशोक प्रकाशकर
पोस्ट -18, पटेल वाडी, कोरिट रोड, नंदुरबार - 425412, महाराष्ट्र, भारत

rahulkumarprakashkar@gmail.com
+91 7620001774

उद्यम: कुक्कुट पालन और परामर्श

मूल गतिविधि: स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, नंदुरबार शाखा से रू.15/- लाख वित्त प्राप्त कर उन्होंने 10000 ब्रोइलर पक्षियों के साथ एक पौल्ट्री इकाई की स्थापना की। “मैंने पौल्ट्री आवास की गहरी कूड़े प्रणाली का इस्तेमाल किया। इस प्रणाली में, पक्षियों को लगभग 3” से 5” गहराई के उपयुक्त कूड़े की सामग्री पर रखा जाता है। शब्द कूड़े का उपयोग फर्श पर फैली ताजा कूड़े की सामग्री के लिए किया जाता है। आम तौर पर धान की भूसी, धूल, भूरे रंग के अखरोट, कटे हुए धान की भूसे या लकड़ी के छिद्रों को कूड़े की सामग्री के रूप में उपयोग किया जाता है। इस प्रणाली में पक्षियों को पूरी तरह से घर तक ही सीमित रखा जाता है और जमीन के उपयोग के लिए रखा जाता है, आमतौर पर इसे जहां जमीन सीमित और महंगी होती है वहां अपनाया जाता है। पहले साल में उनकी बिक्री रु.10/- लाख से भी अधिक थी इस प्रेरणा से, उन्होंने इकाई का विस्तार किया और वर्तमान में 14000 ब्रॉइलर पक्षियों का पालन किया जा रहा है" राहुल कुमार ने कहा।

कृषिउद्यमी: श्री राहुलकुमार अशोक प्रकाशकर (28) महाराष्ट्र के नंदुरबार जिले के पटेलवाडी से मुर्गी पालन में सफल कृषि उद्यमी हैं। पहले वे खेती से जुड़े थे और धान, गेहूं, मक्का और मूंग की खेती में शामिल थे और उनका सकल वार्षिक आय रूपए 25000/- वर्ष 2016 में, वे कृष्णा वैली एड्वान्स्ड एग्रिकल्चर फाउंडेशन, जलगांव में आयोजित कृषि-क्लिनिक्स और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हुए। तकनीकी और प्रबंधकीय कौशल प्राप्त कर वे पौल्ट्री बढ़ाना चाहते थे।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
20 गांवों से **150** किसान	**6** व्यक्ति	**30** लाख रुपये

श्री रोहित सुधाकर पाटिल
पोस्ट 140, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हाउसिंग सोसाइटी, देवपुर, धूले, पिन- 424 002, महाराष्ट्र, भारत

rohitpatil4334@gmail.com
+91 08275590959

उद्यम: नीम का सीड केक और नीम के तेल की तैयारी

मूल गतिविधि: प्रगतिशील किसान के परिवार आए, श्री रोहित सुधाकर पाटिल के लिए वित्त समस्या नहीं थी। पारिवारिक समर्थन के साथ उन्होंने 'विजिलेंट एग्रो' नाम से तेल प्रसंस्करण इकाई की स्थापना की। “नीम तेल निष्कर्षण प्रक्रिया सरल प्रक्रिया नहीं है जितना लगता है, बीजों कारनेल दबाकर उच्च तकनीक से नीम तेल निष्कर्षण प्रौद्योगिकी से कुचल और निचोड़ कर तेल निकाला जाता है। यह तेल को निकालता है और अलग करता है। नीम के तेल में कुछ तत्व के लिए अतिसंवेदनशील होते हैं, इसलिए ठंडा दबाया हुआ तेल सबसे अच्छा होता है।” उभरते कृषि उद्यमियो के लिए श्री रोहित ने कुछ युक्तियाँ दी हैं।

कृषिउद्यमी: नीम बीज केक सीड मिट्टी के संशोधन के लिए इस्तेमाल किया जाता है या मिट्टी में जोड़ा जाता है, तब वह न केवल जैविक पदार्थ के साथ मिट्टी को समृद्ध करता है बल्कि नाइट्रोजन को अवरुद्ध करके नाइट्रोजन नुकसान को भी कम करता है। यह एक निमाटि साईड के रूप में भी काम करता है। नीम के बीज के फायदे और उपलब्धता को देखकर मैंने नीम के बीज के तेल और केक के निर्माण का फैसला किया - श्री रोहित सुधाकर पाटिल (30) महाराष्ट्र राज्य के धूले शहर से हैं। कृषि विज्ञान में डिप्लोमा धारक होकर भी उन्होंने कभी नौकरी करने का विचार नहीं किया। इसके विपरीत हमेशा व्यवसाय शुरू करना चाहा। नतीजे के रूप में, वे कृष्णा वैली एड्वास्ड एग्रिकल्चर फाउंडेशन, जलगांव में आयोजित कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण प्राप्त किए।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
60 गांवों से **15000** किसान	**6** व्यक्ति	**20** लाख रुपये

श्री विवेक राजाराम पाटिल
चोपडा प्लॉट नं 20 एमआईडीसी
यावल रोड - तालु - चोपडा
जिला - नासिक-425107,
महाराष्ट्र

Vivek.patil1231@gmail.com
+91 9403097678

उद्यम: मृदा और जल परीक्षण प्रयोगशाला और परामर्श सेवा

मूल गतिविधि: “राज्य सरकार ने प्रत्येक किसान को मिट्टी के स्वास्थ्य कार्ड प्रदान करने के लिए एक अभिनव कार्यक्रम शुरू किया ताकि उर्वरकों की सिफारिश के लिए मिट्टी की प्रजनन क्षमता और आगामी वर्ष में फसल योजना के लिए जानकारी दी जा सके। यह योजना मिनी-किट और परीक्षण उपकरण प्रदान करने का समर्थन करती है। मैंने पहले वर्ष में 1500 से अधिक किसानों को कवर किया और मिट्टी के स्वास्थ्य कार्ड जारी किए "विवेक ने कहा।

कृषिउद्यमी: नासिक में मौजूद एग्रिकोस बायोटेक मृदा परीक्षण प्रयोगशाला 60 गांवों में 15000 कृषि भूमियों की जरूरतों को पूरा कर रही है। मिट्टी विश्लेषण रिपोर्ट के आधार पर, हम फसल चयन, कृषि इनपुट, सर्वोत्तम कृषि प्रथाओं और कृषि उत्पादन के विपणन पर सलाहकार सेवा प्रदान करने में मदद कर रहे हैं। श्री विवेक पाटिल (39), कृषि विज्ञान में मास्टर डिग्री प्राप्त है और इस प्रयोगशाला के मालिक हैं। “चूंकि मैंने कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया था, इसलिए मुझे मिट्टी परीक्षण के आधार पर फसल सलाह देने के लिए प्रेरित किया गया। कृष्ण वैली एडवांस्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, जलगांव में प्रशिक्षण पूरा करने के तुरंत बाद में स्वयं आश्वस्त होकर नासिक वापस लौटा।

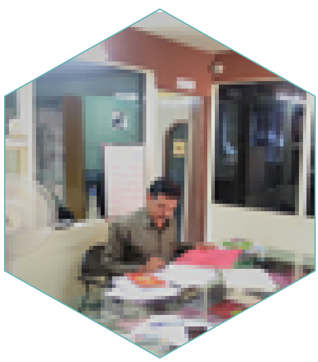

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
15 गांवों से **600** किसान	**2** व्यक्ति	**20** लाख रुपये

श्री योगेश विजय पाटिल
एपी गेट संख्या 481/1, होटल मोहिनी नेरी बीके के सामने, जलगांव, महाराष्ट्र, भारत

yogeshpatil001@hotmail.com
+91 8657181810

उद्यम: संरक्षित सब्जी फसलों की नर्सरी और विपणन

मूल गतिविधि: "एसी और एबीसी प्रशिक्षण के दौरान, मैंने अनुभव पर आधारित तीन दिन के सत्र में भाग लिया और मिट्टी के सौरकरण, ग्राफ्टिंग, सीडिंग, निशेचन, रेइजड बेड्स, कीट और रोग प्रबंधन गतिविधियों आदि पर प्रशीक्षण किया। मैंने अपने जमीन के 30 गुटों में नर्सरी की स्थापना की और टमाटर, बैंगन, मिर्च, गार्ड, ककड़ी और कुछ फूल प्रजातियों के अंकुरों को बेचने लगा। किसान नर्सरी से विभिन्न सब्जी फसलों की खेती की प्रथाओं के बारे में भी सलाह प्राप्त करेते है "योगेश ने कहा।

कृषिउद्यमी: "किसान आम तौर पर अपने पिछवाड़े में छोटी नर्सरी तैयार करते हैं। हालांकि, शुरुआती चरणों में कीट और रोग की घटनाओं, प्राकृतिक आपदा या पौधों की क्षेत्र में ही मृत्यु होने की स्थिति में, किसान के पास नई नर्सरी बढ़ाने के लिए पर्याप्त समय नहीं रहता। इस मुद्दे को हल करने के लिए, मैंने रेडीमेड सीडंलिंग बनाने का फैसला किया और इसे किसानों के दरवाजे पर उपलब्ध कराया "श्री योगेश विजय पाटिल (28) ने जलगांव से कृषि विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। वह कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, (केवीएएएफ) जलगांव से प्रशिक्षित एग्रिपेन्यूर हैं, संस्थान ने कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत लंबी अवधि के कौशल उन्मुख उद्यमशीलता विकास कार्य का आयोजन किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
11 गांवों से **250** किसान	**4** व्यक्ति	**15** लाख रुपये

श्रीमती दीपाली हरिभाऊ बेलोट
पो.- देवीभोयर तालु - पार्नर
जिला - अहमदनगर,
पिनकोड- 413208 महाराष्ट्र, भारत

100dipali@gmail.com
+91 9860253271

उद्यम: कुक्कुट पालन और विपणन

मूल गतिविधि: "एसी और एबीसी प्रशिक्षण के सफल समापन के बाद, मैंने कुक्कुट पालन को अपनाने का फैसला किया, मैंने अपने पति के साथ चर्चा की। लाभ और हानि पर चर्चा करने के बाद मे सहमत हुए और मुझे कुक्कुट इकाई शुरू करने के लिए प्रेरित किये। उन्होंने मुझे 18000 वर्ग फुटजमीन लीज पर दिया था जिसमें 10000 पक्षियों के साथ पौल्ट्री इकाई के शुरू की। पहली बार मृत्यु दर 8% थी। मैं खुश थी की मैं 9200 पक्षियों को सफलतापूर्वक बढ़ा सकी। मैंने उन्हें बेच दिया और रुपये 87000/- का शुद्ध लाभ अर्जित किया। "दीपाली ने कहा, केवीएएएफ, पूणे द्वारा प्रदान किए गए प्रयासों से बहुत खुश थी, जिन्होने पौल्ट्री शुरू करने के लिए प्रेरित किया।

कृषिउद्यमी: श्रीमती दीपाली बेलोट (29), देवीभोयर गांव से कृषि में स्नातक 10000 ब्राइलर पक्षियों की पौल्ट्री (इकाई) में शामिल है। "शादी के बाद, मैं घर में निष्क्रिय बैठी थी। मेरे पति ने मुझे एक बार कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के बारे में जानकारी दी और प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रवेश लेने का सुझाव दिया। मैंने कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन (केवीएएएफ), पूणे में स्थित प्रशिक्षण संस्थान से संपर्क किया और प्रशिक्षण कार्यक्रम में दाखिल हो गई। प्रशिक्षण के दौरान मैंने एक स्थापित कुक्कुट फार्म इकाई का दौरा किया, और उद्यम शुरू करने का फैसला किया "दीपाली ने कहा।"

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
150 गांवों से **1000** किसान	**4** व्यक्ति	**16** लाख रुपये

श्री मोहित विजय गिरि
At. गोस्वामी कृषि फार्म, वार्ड नं. 3, जिप्ली, पोस्ट - लोहगाड, तालु - कलमेश्वर, जिला नागपुर, पिन - 441302, महाराष्ट्र, भारत

mohit25goswami@gmail.com
+91 09405141984

उद्यम: भारी मशीनरी के लिए कस्टम हाइरिंग केंद्र

मूल गतिविधि: सफलतापूर्वक एसी और एबीसी प्रशिक्षण पूरा करने के बाद, श्री मोहित विजय गिरि ने अपने कस्टम हाइरिंग व्यवसाय केंद्र की स्थापना की। गोस्वामी जेसीबी सेवाएं के नाम पर 20.00 लाख रुपये के बैंक ऑफ इंडिया, कलमेश्वर शाखा से स्वीकृत ऋण के साथ उन्होंने जेसीबी मशीन और किराये की सेवाओं पर पोकलैंड मशीन की सेवा प्रदान किया। जिला में जेसीबी सेवाओं की अत्यधिक मांग थी और सफलता को देखते हुए मोहित ने फिर से ट्रैक्टर ट्रॉली, रोटावाटर, हैरो, किसान, लेवलर आदि खरीदे। उन्होंने इन मशीनों को अपने गांव के लगभग 1000 किसानों को किराए पर दिया साथ ही लगभग 150 गांव के सोयाबीन, धान, गेहूं, दालों के साथ-साथ बागवानी फसलों आदि जैसे क्षेत्र फसलों की खेती के लिए किराए पर मशीन दिया। एक वर्ष में लगभग 16/- लाख की आय प्राप्त करता है जिसमें शुद्ध लाभ 6.5 लाख होता है। उन्होंने धान प्लेंटर जोड़ा और कस्टम हाइरिंग केंद्र से बने अतिरिक्त लाभ के साथ अपनी सूची में कुछ और मशीनें जोड़ने की योजना बनाई।

कृषिउद्यमी: नागपुर जिले के कलेमेश्वर से आए, श्री मोहित गिरि (24) कृषि में एक डिप्लोमा धारक है उन्होने अपने पैतृक व्यवसाय खेती को अपनाया है। अपनी शुद्ध आय बढ़ाने के लिए, वह अपने गांव में कृषि मशीनरी के कस्टम हाइरिंग व्यवसाय में दिलचस्पी ले रहे है और केवीएएफ, नागपुर से कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत उद्यमशीलता प्रशिक्षण प्राप्त किये है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
15 गांवों से **500** से अधिक किसान	**4** व्यक्ति	**2** करोड़ रुपये

श्री प्रशांत एन. वाघमोडे
दत्ता नगर, संगोला-ज्वाला रोड,
कडलास, जिला: सोलापुर, 413309,
महाराष्ट्र, भारत

kom1111@rediffmail.com
+91 09822918568

उद्यम: नीम बीज तेल, फल तेल, कर्नेल केक और नीम उर्वरक केक आदि का निर्माण

मूल गतिविधि: कड्लास तेल मिल निर्माण पर्यावरण के अनुकूल नीम आधारित उत्पादों और जैविक उर्वरक की तैयारी। कड्लास नीम आधारित जैविक खाद और मिट्टी कंडीशनर के निर्माण में अग्रणी है जैसे नीम-अमृत बीज तेल, फल तेल, कर्नेल केक और नीम उर्वरक केक इत्यादि। ये जैव-अपघटन योग्य, गैर विषैले उत्पाद महाराष्ट्र में और भारत के अन्य राज्यों में भी सबसे लोकप्रिय हैं। नीम खाद नेमाटोड आबादी को भी नियंत्रित करता है और मिट्टी माइक्रोफ्लोरा को अनुकूलित करता है "प्रशांत ने कहा। “हम पोंगामिया और कपास के बीज निष्कर्षण और खाद की तैयारी के निष्कर्षण में भी शामिल हैं”।

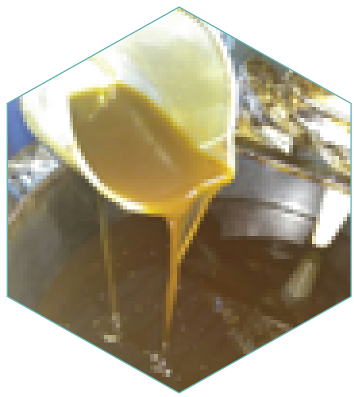

कृषिउद्यमी: “अजाडिरक्ता इंडिका बीज तेल एक प्राकृतिक कीटनाशक, कवकनाश और जीवाणुनाशक है, लोग हजारों सालों से नीम का उपयोग कर रहे हैं। नीम पारंपरिक रूप से मिट्टी कंडीशनर और पौधों के कीट और बीमारियों की संख्या के प्राकृतिक नियंत्रक के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। महाराष्ट्र राज्य के सोलापुर जिले के सांगोला गांव के निवासी, कृषि व्यवसाय प्रबंधन में डिप्लोमा रखने वाले श्री प्रशांत वाघमोड (24) ने कहा, हम नीम, पोंगामिया और सूती बीज कपास तेल को व्यवस्थित रूप से निकालने के लिए कडलास ऑयल मिल चला रहे हैं। श्री प्रशांत कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र योजना के तहत कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, सांगली से प्रशिक्षित एग्रिपेन्यूर हैं।”

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
40 गांवों से 120 किसान	10 व्यक्ति	9 लाख रुपये

श्री तापुभाई जी परमार
At. - टैंकरिया,
ब्लॉक- जमकल्याणपुर, जिला-देवभूमी द्वारका, गुजरात, भारत

tapu.parmar@gmail.com,
+91 09228246575

उद्यम: सभी प्रकार के पौधे के लिए नर्सरी बढ़ाना और उनका विपणन

मूल गतिविधि: महाकाली नर्सरी सभी प्रकार के पौधों के लिए वन स्टॉप है। किसानों के लिए फल और सब्जी की पोधों को बेचते है। सजावटी के अलावा लैंडस्केपिंग, प्रकृतिक पार्क, एवेन्यू हेज, लॉन बनाना शहरी कृषि विकास इनकी प्रमुख गतिविधियां हैं। श्री तापुभाई शहरी कृषि पर गृहिणियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित कर रहे हैं। जैविक खेती, नर्सरी सब्जियों की नर्सरी, वर्टिकल बागवानी, पानी और खाद प्रबंधन आदि विषय सम्मिलित है। श्री जैन और नेटफिम सिंचाई कंपनी के लिए भी तापुभाई प्रामाणिक डीलर है। तापुभाई कहते हैं, "अपने स्वयं के भोजन को जैवी रूप से खुद बढ़ाएं"।

कृषिउद्यमी: श्री तापुभाई परमार (34) गुजरात देवभूमि, द्वारका नगर के निवासी हैं। कृषि विज्ञान में डिप्लोमा धारक, कम वेतन के साथ एक निजी कंपनी में कृषि सहायक के रूप में नौकरी करते थे। दूर-दूर तक किए दौरों ने उन्हें नौकरी छोड़ने के लिए प्रेरित किया। इस अवधि के दौरान वह कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना और उनकी न्यूनतम योग्यता से प्रशिक्षण पाप्त के लिए पात्र बनने से प्रस्नन हुए। उन्होंने इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीबिजिनेस प्रोफेशनल (आईएसएपी) वडोदरा से संपर्क किया, स्क्रीनिंग में भाग लिया। उन्होंने उद्यमशीलता कौशल प्राप्त किया। तीन दिन के बाजार सर्वेक्षण और प्राप्त अनुभव ने उन्हें व्यवसाय प्रारंभ करने के लिए आत्मविश्वास दिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
12 गांवों से **150** किसान	**5** व्यक्ति	**5** लाख रुपये

श्री किरन कुमार रामजी व़ंड्रे
At. कानहान, तालु. पार्सियोनि,
जिला. नागपुर, पिनकोड-441401,
महाराष्ट्र, भारत

kiranabraham19@gmail.com
Mobile- 9970304878

उद्यम: ब्रॉइलर पौल्ट्री पालन, कुक्कुट खाद और विपणन

मूल गतिविधि: "शुरुआत में रु. 3.00 लाख के अपने निवेश के साथ मैंने पौल्ट्री शेड का निर्माण किया और 3000 पक्षियों को खरीदा। चूंकि एक दिन का बच्चा बीमारियों से ग्रस्त हो सकता है, इसलिए उन्हें नियंत्रित स्थिति के तहत पालन करने की आवश्यकता है। मुर्गी के बच्चों के मृत्यु दर से बचाने के लिए परिवेश के तापमान को बनाए रखने के लिए देखभाल की जानी चाहिए। पहले वर्ष में मैंने पांच बैचों का पालन किया और अच्छा लाभ मिला। पशुचिकित्सा विशेषज्ञ होने के नाते, मैं मुर्गा के बच्चों को समय पर चिकित्सा सहायता प्रदान करने में कामयाब रहा, इसलिए मृत्यु दर बहुत कम थी। अब इकाई 5000 पक्षियों के साथ चल रही है और कारोबार 5.00 लाख तक पहुंच गया है। मैं निजी पौल्ट्रीयों के साथ समझौता कर रखा हूं जो कि बच्चों के चुग्गा, दवा, टीका की समय पर आपूर्ति सुनिश्चित करता है और पक्षियों का विपणन भी करता हैं" किरणकुमार ने कहा।

कृषिउद्यमी: श्री किरन कुमार वंडे (29), केवीएएएफ, कानहान, महाराष्ट्र में कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षित एक एग्रिपेन्यूर है जो 5000 ब्रॉइलर पक्षियों की क्षमता के साथ सफलतापूर्वक पौल्ट्री इकाई चला रहें है। पशु विज्ञान में अपने डिप्लोमा पूरा करने के बाद श्री किरन कुमार अपने खुद का उद्यम शुरू करना चाहते थे। श्री किरन कुमार ने कहा कि एसी और एबीसी प्रशीक्षण उनके सपने साकार हाने में सहायक रहा।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 गांवों से **50** किसान	**1** व्यक्ति	**2** लाख रुपये

श्री बाबासाहेब भाऊसाहेब ताम्बे
सर्वेक्षण संख्या 253/2, अश्वी रोड, चिंचपुर, तालु. संगमनेर, जिला अहमदनगर, पिन-413736, महाराष्ट्र, भारत

bababtambe01@gmail.com
+91 9890515867

उद्यम: वर्मी-कंपोस्ट उत्पादन, परामर्श और विपणन

मूल गतिविधि: एसी और एबीसी प्रशिक्षण के सफल समापन के बाद, श्री बाबा साहेब ताम्बे ने अपनी कंपनी "कृषि चैतन्य गंडुलखत" नाम से पंजीकृत की। उन्होंने वर्मी-कंपोस्ट इकाई का निर्माण किया जिसमें 10 एमटी / बैच की उत्पादन क्षमता थी। श्री तम्बे कहते हैं, "केंचुओ की विभिन्न प्रजातियां हैं जैसे एसिनिया फोहिडा (लाल केंचुआ), यूड्रिलस यूजेनिया (नाईट क्रॉलर), पेरीओनिक्स एक्वावाटस इत्यादि। मैंने इसकी उच्च गुणवर्धन दर के कारण लाल केंचुआ को चुना और इस प्रकार जैविक पदार्थ को 45-50 दिनों के भीतर वर्मी-कंपोस्ट में परिवर्तित कर दिया। चूंकि यह एक सतह फीडर है, यह जैवी पदार्थों को ऊपरी परत से वर्मी-कंपोस्ट में परिवर्तित करता है"। वह प्रति वर्ष कम से कम 5 बैच ले रहा है। वह कृषि चैतन्य के ब्रांड नाम के तहत वर्मी-कंपोस्ट का विपणन कर रहे हैं। उन्होंने अनार के उत्पादकों के लिए इस सामग्री को सप्लाई किया।

कृषिउद्यमी: श्री बाबासाहेब तम्बे (37) पशु विज्ञान में एक डिप्लोमा धारक है जिन्होंने कभी सोचा नहीं कि फसल के अवशेष, पेड़ के पत्ते और पशु गोबर, गन्ना कचरा, खरपतवार, कॉयर अपशिष्ट, धान भूसी, मवेशी गोबर, प्रदूषित जैव-गैस संयंत्र से निकला कचरा, भेड़, घोड़े, सूअर, कुक्कुट का उत्सर्जन (छोटी मात्रा में) और सब्जी कचरे केचुओं के लिए आदर्श भोजन हैं। कचरा धन में बदल सकता है। कृषि विज्ञान केंद्र, बाबलेश्वर में कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत उद्यमशीलता कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान, उन्होंने वर्मी-कंपोस्टिंग और इसके निरंतर लाभों को सीखा। उन्होंने काले सोने की बिक्री से पैसा कमाने का फैसला किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
4 गांवों से **5000** किसान	**16** कुशल और **20** अकुशल व्यक्ति	**13** लाख रुपये

श्री अश्विनकुमार गंगाधर कल्लावे
पो. - चिनचोलिसंगम,
ताल.- उमरखेड, जिला- यवतमाल,
पिन- 445206, महाराष्ट्र, भारत

corporationbhadra@gmail.com
Mobile- 08888345527

उद्यम: जैव उर्वरक, जैव कीटनाशकों, सूक्ष्म पोषक तत्वों और पौध विकास नियामक का निर्माण, परामर्श और विपणन

मूलगतिविधि: भद्रा एग्रो कॉर्पोरेशन अपने निजी निवेश के साथ स्थापित किया गया है। 16 कुशल व्यक्तियों को भर्ती करके एक अलग आर एंड डी प्रयोगशाला स्थापित की गई है। इस यूनिट से लगभग 150 टन बायो-उर्वरक का निर्माण किया गया है। जैवी खेती पर कृषि परामर्श इस की प्रमुख गतिविधि है। इस संस्थान के मुख्य कार्य में प्रशिक्षण, प्रदर्शन के माध्यम से बायो-उर्वरक को बढ़ावा देना शामिल है। “जैवी खेती पर्यावरणीय स्थिरता के लिए वरदान है। जैविक बेचते है और जैवी खरीदते हैं।” अश्विन कुमार ने कहा।

कृषिउद्यमी: “बायो-उर्वरक, जैव कीटनाशकों, सूक्ष्म पोषक तत्वों और पीजीआर के 16 उत्पादों की बिक्री के लिए 57 डीलरों का एक नेटवर्क के साथ बिक्रि 13 करोड़ रुपये पार करता है। यह उपलब्धि कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम को पूरा करने के तीन साल बाद की गई है।”, अश्विन कुमार कल्लावे (33) ने कहा जो महाराष्ट्र के यावतमाल जिले से एग्रिप्रेन्यूर है। “कृषि-व्यवसाय प्रबंधन में स्नातक होने और विपणन में 7 साल का पूर्ण अनुभव होने के कारण, मैने अपना व्यवसाय शुरू करने का सपना देखा। कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, नागपुर में प्रशिक्षण के दौरान, मेरा आत्मविश्वास बढ़ गया और व्यापार में जोखिम लेने का फैसला किया। हालांकि, उद्यमिता के माध्यम से विस्तार की अवधारणा और व्यापक योजना सफलता प्राप्त करने के लिए साथ-साथ काम करती है”।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
400 गांवों से **3000** किसान	**10** व्यक्ति	**15** करोड़ रुपये

श्री अतुल कछरूजी लोखंडे
ए / पी. - प्लॉट संख्या 160,
आदर्श नगर, कटोल बाईपास,
वाडी, तालु.-जिला- नागपुर,
महाराष्ट्र, भारत

atullokhande358@gmail.com
+91 9405985092

उद्यम: पीजीआर तैयारी कंपनी

मूल गतिविधि: जेन एग्रोटेक पौध विकास नियामक (पीजीआर) बीज उपचार हेतु उपयोग करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। जेन एग्रोटेक पीजीआर अंकुरितता, उभराव, रूट मास, पौधे शक्ति और तनाव सहनशीलता में सुधार करता है, और पोषक तत्वों में वृद्धि होती है। 60 से अधिक डिस्ट्रिब्यूटरों का नेटवर्क ज़ेन एग्रोटेक से जुड़ा हुआ है। कंपनी किसानों के क्षेत्र पर डेमॉन्स्ट्रेशन आयोजन कर रहा है और जैविक खेती को बढ़ावा दे रहा है। व्यवसाय की कुल मात्रा 1500 टन है। जेन एग्रोटेक 18 कृषि उत्पादों का उत्पादन कर रहा है। मैं हमेशा किसानों को उत्पाद लेबल को ध्यान से पढ़ने की सलाह देता हूं क्योंकि यह उपयोग करने की विधि, मात्रा, गाढ़ता और किसी विशेष फसल और विशेषता के लिए उपयोग करने पर जानकारी प्रदान करता है अतुल ने कहा।

कृषिउद्यमी: नागपुर जिला महाराष्ट्र से जेन एग्रोटेक पीजीआर विनिर्माण कंपनी के मालिक अतुल लोखंडे (32) के मालिक ने कहा, "पीजीआर में घटक सेल विभाजन, लम्बाई और पौधों की परिपक्वता के माध्यम से शुरुआती पौधों के विकास को बढ़ाते हैं और बेहतर पोषक तत्वों के लिए पौधे के मेटाबालिसम में वृद्धि करते हैं।" श्री अतुल कृष्णा वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चरल फाउंडेशन, नागपुर में आयोजित कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत एक प्रशिक्षित एग्रिपेन्यूर है।

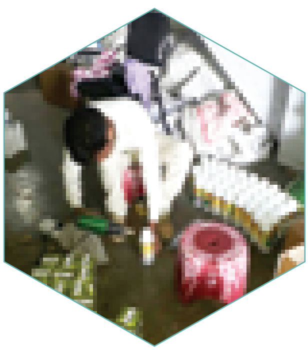

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
6 गांवों से 150 किसान	2 व्यक्ति	30 लाख रुपये

श्री अभय प्रभाकर देसाले
ग्राम-पो. (सुत्रपड़ा) धूले,
पिनकोड- 424001,
महाराष्ट्र, भारत

abhaydesale.11@gmail.com
+91 09049214311

उद्यम: बकरी पालन और परामर्श

मूल गतिविधि: "बकरी बहुउद्देशीय पशु हैं जो दूध, मांस, फाइबर, त्वचा को एक साथ दे सकता हैं। मैंने 8 सप्ताह की सिरोही और सुरती बकलिंग के 10 जोड़े खरीदे और पालन शुरू किया। मैंने अपने क्षेत्र के समीप एक स्थायी बकरी आवास स्थापित किया जिसमें ताजा चारा मिलता है। पूरक चारे की लागत को कम करने के लिए मैं उपयुक्त घास, फसल और अन्य हरे पौधों को बढ़ाने लगा जिसे बकरी फ़ीड के रूप में उपयोग करता हूं। एक दिन भाड़े में दूसरे दिन खुले मैदान मे चराई प्रणाली का अनुपालन किया जाता है जिसके परिणामस्वरूप वजन तेजी से बढ़ गया है। वर्तमान में 70 बकरियां इस इकाई में हैं। बकरियों को खरीदने के लिए शहर से मांस दुकान वाले आ रहे हैं। @ रु. 325 प्रति किग्रा वजन निर्णीत है। किसान गर्भवती डोई को 9000/- दर पर खरीद रहे हैं। बकरी पालन कम पूँजी पर लाभदायक ग्रामीण उद्यम है, इसमें स्वाद सफलता का है।" अभय द्वारा ग्रामीण युवाओं को एक संदेश है।

कृषिउद्यमी: श्री अभय प्रभाकर देसाले (30) धूले जिले महाराष्ट्र के एक बहुत मेहनती कृषि स्नातक हैं। वित्तीय सहायता की कमी के कारण अभय शिक्षा छोड़कर खेती करने लगे। यहां तक कि केवल खेती सपना नहीं था, वह अपना व्यवसाय शुरू करना चाहता था। एक बार उन्हें कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत उद्यमशीलता प्रशिक्षण के बारे में जानकारी दी गई। बिना देर किए उन्होंने कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, जलगांव में प्रशिक्षण समन्वयक से संपर्क किया और प्रशिक्षण के लिए पंजीकरण किया। निर्धारित तारीख पर उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हो गए।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
27 गांवों से 275 किसान	3 व्यक्ति	15 लाख रुपये

महेश बाबन वाजे
ए / पी-मालवाड़ी, तालु, वाल्वा, जिला- सांगली, पिन-415411, महाराष्ट्र, भारत

+91 9421906308

उद्यम: डेयरी, परामर्श और दूध संग्रह केंद्र

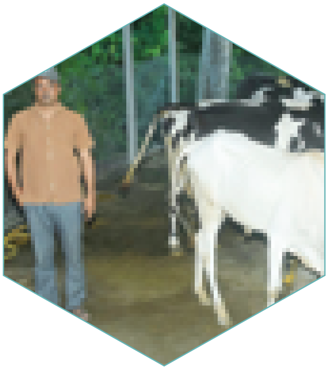

मूल गतिविधि: अपने निवेश के साथ, महेश ने मालवाडी में एक छोटी दूध संग्रह इकाई की स्थापना की और उसे वाजे डेयरी फार्म का नाम दिया। डेयरी किसान गुणवत्ता युक्त सेवा और समय पर भुगतान करते हैं। वाजे डेयरी फार्म बहुत कम समय में एक ब्रांड बन गया और सभी पशुचिकित्स मुद्दों के लिए एक स्टॉप समाधान के रूप में जाना जाने लगा। दैनिक दूध संग्रह 250 लीटर है। गुणवत्ता और वसा प्रतिशत के आधार पर पूरा दूध महाराष्ट्र राज्य के मीठाई तैयारी क्षेत्र में प्रसिद्ध ब्रांड में से एक 'चित्त मिठाई' द्वारा खरीदा जा रहा है। श्री महेश 4 होलस्टीन फ्रीगेस गायों के साथ एक छोटी डेयरी इकाई और वर्मी-कंपोस्ट इकाई चला रहे है। आज, वह केचुआ खाद रू. 1000 प्रति किलो @ दर बेच रहा है, इसके अलावा 100 क्विंटल वर्मीकंपोस्ट 25,000 रुपये प्रदान कर रहा है। यह प्रति वर्ष लगभग प्राप्त 1 लाख लाभ के अतिरिक्त है।

कृषिउद्यमी: श्री महेश बाबन वाजे (42) सांगली जिले के मालवाडी गांव के निवासी हैं। पशुचिकित्सा विज्ञान में डिप्लोमा धारक होने के नाते, महेश डेयरी पालन में टुट गए इस के दौरान, वे कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के बारे में जानकारी प्राप्त की। केवीएएएफ-नोडल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, सांगली में उद्यमिता कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हो गए। प्रशिक्षण के दौरान उन्हें विषय वस्तु विशेषज्ञों और सफल उद्यमियों के साथ बातचीत करने के कई अवसर प्रप्त हुए। उन्होंने दूध संग्रह और चिलिंग सेंटर्स का दौरा किया और उसी व्यवसाय में शामिल होने का फैसला किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 गांवों से 150 किसान	6 व्यक्ति	6 लाख रुपये

विद्यानंद सूर्यकांत खांडरे
ए / पी- रणबंबुली तालु-कुदल
जिला-सिंधुदुर्ग, महाराष्ट्र, भारत

vidyanand33342@gmail.com
Mob No.9421013324

उद्यम: कुक्कुट पालन

मुख्य गतिविधि: श्री विद्यानंद ने रुपये 10.00 लाख की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार की और यूनियन बैंक, ओरोस से मंजूरी प्राप्त की। नाबार्ड ने 36 प्रतिशत सब्सिडी भी प्रदान की। श्री विद्यानंद ने 'अंबिका पौल्ट्री' के नाम से पंजीकृत किया और पौल्ट्री शेड का निर्माण किया। उन्होंने रॉयल पौल्ट्री के साथ अनुबंध किए और 5000 ब्रोइलर पक्षियों को खरीदा। रॉयल पौल्ट्री द्वारा चूजों, फ़ीड, दवा और बाई बैंक सुविधाओं की नियमित आपूर्ति की जाती है। श्री खांडेर वर्ष में कुक्कुट के 5 बैचों को लेते हैं। उन्होंने आसपास के बेरोजगार ग्रामीण युवाओं को कुक्कुट पालन करने पर सलाह दी।

कृषिउद्यमी: श्री विद्यानंद खंडारे (26) मूल रूप से कृषि परिवार से हैं। शिक्षा के बाद उन्होंने अपने 6 एकड़ की भूमि में खेती शुरू की। कृषि स्नातक होने के नाते उन्होंने हमेशा अपने कौशल में सुधार करने और विभिन्न स्रोतों यानी प्रशिक्षण, विशेषज्ञों की बात, विभागीय कर्मियों इत्यादि से खेती के हर पहलू को जानने के लिए उत्सुक रहे। इस अवधि के दौरान, वह कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के बारे में जाना है। उन्होंने केवीएएफ-ओरोस, सिंधुदुर्ग के नोडल अधिकारी से संपर्क किया और प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हो गए। प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में बोलते हुए, विद्यानंद ने कहा, "मैंने सीखा है कि कैसे उत्पादों का विपणन करना है, लोगों के साथ कैसे बातचीत करना है, व्यापार की योजना बनाना और विस्तार करना और किसानों को परामर्श सेवाएं कैसे देना है"।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
8 गांवों से **250** किसान	**4** व्यक्ति	**10** लाख रुपये

श्री राघो आत्माराम गावड़े
ए/पी - पैट, तालु - कुडल,
जिला - सिंधुदुर्ग, पिन-416521,
महाराष्ट्र, भारत

gwadenursery22@gmail.com
+91 09673644585

उद्यम: फल और सब्जी नर्सरी

मूल गतिविधि: 'गावेड़ नर्सरी' की स्थापना एसी और एबीसी योजना के तहत बैंक की ऋण के रूप में 5 लाख रुपये वित्त और अपनी पूंजी लगाकर की गई है पहले वर्ष में उन्होंने अपनी नर्सरी मे 18000 नंबर रोपण सामग्री तैयार किए। कुल रोपण सामग्री (आम, काजू जैसे फल पौधों की, अखरोट, पपीता, नींबू इत्यादि, फूलों की जैसे गुलाब और सजावटी आदि और वनस्पति रोपण जैसे बैंगन, चली, फूलगोभी, गोभी, टमाटर इत्यादि), बेचने के बाद उन्होंने रु. 21000 प्राप्त किए। शुद्ध लाभ के रूप में उस से प्रेरणा प्राप्त कर, फिर उन्होंने 25000 नंबर का उत्पादन किया। बाद के वर्षों में अपनी नर्सरी में पौधों और रोपण सामग्री को रुपये 34000 के शुद्ध लाभ के साथ बेच दिया। वह सजावटी फूल नर्सरी में भी शामिल था। इनके अलावा, उन्होंने चार लोगों को प्रशिक्षित किया जिन्होंने उनके साथ अपनी नर्सरी में काम किया। उन चार लोगों में से दो महिलाएं थीं। राघो ग्रामीण युवाओं के प्रशिक्षण में भी शामिल है। अपनी विस्तार सेवाओं को देखते हुए नाबार्ड ने उन्हें अपने बैंक ऋण पर 36 प्रतिशत सब्सिडी दी।

कृषिउद्यमी: कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, ओरोस, सिंधुदुर्ग ने कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत कौशल उन्मुख उद्यमशीलता विकास-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। राघो आत्माराम गावड़े (25) सिंधुदुर्ग के पट गांव से कृषि में स्नातक एसी और एबीसी के तहत प्रशिक्षण में शामिल हुए और सफलतापूर्वक नर्सरी चला रहे हैं।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
13 गांवों से 300 किसान	2 व्यक्ति	25 लाख रुपये

श्री पीतांबर पन्ना लाल लोधी
गॉव. - कलेवा जिला + तह-
राजनंदगांव, पीओ-
नांगल्डाका-491444,
छत्तीसगढ़, भारत

+91 9685497072

उद्यम: कुक्कुट पालन और परामर्श

मूल गतिविधि: श्री पीतांबर ने शुरुआती चरण में याद किया, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, कालेवा शाखा ने 5/- लाख की मंजूरी दी। उन मे जो पौल्ट्री शेड बनाने में मदद किया। 3000 पक्षियों के लिए सभी सुविधाओं के साथ सुसज्जित शेड में उन्होंने पक्षियों का पालन करना शुरू कर दिया। उन्होंने सुगुना पौल्ट्री के साथ सहयोग किया। "मैंने अपने पहले बैच के पूरा होने के दौरान उत्सुकता से देखभाल की और बेचते समय पाया 2950 पक्षीयाँ जीवित थी। मैं अच्छा मुनाफा पाया था। मैंने सीखा, स्वच्छता से रखरखाव ही पौल्ट्री फार्म में सफलता का मुख्य मंत्र है। कृषि विभाग के कई अधिकारी, किसान ग्रामीण उद्यमों के बारे में जानकारी लेने के लिए लोधी पौल्ट्री जाते हैं। अपने सेवाकालीन प्रशिक्षण के हिस्से के रूप में कृषि अधिकारी और बैंक अधिकारी सहित कई अधिकारी इनके फार्म जाते है।" श्रीमान पीतांबर ने कहा।

कृषिउद्यमी: श्री पीताबंर लोधी (27) छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले के कलेवा गांव से मध्यमिक शिक्षा प्राप्त व्यक्ति हैं। पिछले एक साल में, वे कुक्कुट और मत्स्य पालन के क्षेत्र में के लिए सबसे लोकप्रिय संसाधन व्यक्ति बन गये है। वह कहते है, उसकी कुक्कुट इकाई जिसमें 6000 पक्षियां है और प्रत्येक बैच से वे रुपये 1.00/- लाख कमाते है। एक सफल कृषि उद्यमी के रूप में उन्होंने अपनी कहानी साझा किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
20 गांवों से **500** किसान	**4** व्यक्ति	**10** लाख रुपये

श्री तोशन कुमार सिन्हा
एच.-270, विले.-कुर्रा,
पो.-तारसिनवा, जिला-धमतरी,
पिनकोड-493773, छत्तीसगढ़,
भारत

toshan.sinh@gmail.com
+91 9179545621

उद्यम: मशरूम प्रजनन इकाई, मशरूम खेती, विपणन, और परामर्श

मूल गतिविधि: रू. 2500/- के न्यूनतम निवेश के साथ, तोशन ने मशरूम इकाई स्थापित की थी। उन्होंने 15 दिनों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार किया। वे कृषि विभाग के कर्मचारियों के लिए सेवा कालीन प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं। तोशन कहते हैं, "मैं ग्रामीण युवाओं को निशुल्क प्रशिक्षण दे रहा हूं और अपनी स्थापना के बाद बैई बैक मोड पर खरीदने का अनुबंध कर रहा हूं। मैंने छह गांवों में 80 जनजातीय महिलाओं के लिए छह सेल्फ-हेल्प ग्रूप (एसएचजी) विकसित किए"।

कृषिउद्यमी: स्नातक की उपाधि प्राप्त श्री तोशन कुमार सिन्हा (30) ने स्थानीय बेरोजगार ग्रामीण युवाओं को मशरूम के उत्पादन और विपणन मे मार्गदर्शन करते और कमाई के मामले में उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्पॉन की आपूर्ति भी करते है। वह अपने जिले के अन्य उद्यमियों के लिए एक आदर्श मॉडल है। श्री तोशन कुमार सिन्हा कुर्रा गांव से हैं और कृषि-क्लिनिक्स और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षित कृषि उद्यमी हैं। मशरूम उत्पादन में अनुभव हासिल करने के कारण, वह इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्री-बिजनेस प्रोफेशनल (आईएसएपी), छत्तीसगढ़ की महत्वाकांक्षी एग्रिप्रेन्यूरों के लिए संसाधक व्यक्ति बन गये जहां से उन्होंने उद्यमिता पर प्रशिक्षण प्राप्त किया।

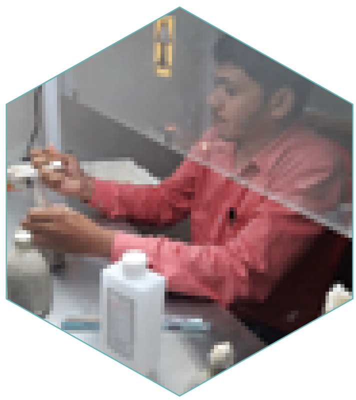

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 गांवों से **515** किसान	**5** व्यक्ति	**60** लाख रुपये

डॉ जे. जयबलान
33 ई, एम.एस. हॉस्पिटल,
कांचीपुरम - 631 502
तमिलनाडु, भारत

+91 9677515753,
+91 9655191017

उद्यम: 1.00 लाख ब्रोइलर पक्षियों का पालन और दहलीज पर पशु चिकित्सक सेवाएं

मूल गतिविधि: जे आर पौल्ट्री 1.00 लाख ब्रोइलर पक्षियों के पालन से प्रति वर्ष रू. 10.00/- लाख लाभ पा रहे है। डॉ. जयबलन पौल्ट्री के मालिक हैं। वह पास के 15 गांवों में किसानों के दहलीज पर पशु विस्तार सेवाएं भी प्रदान कर रहे हैं। जैविक खाद, पौल्ट्री के प्रबंधन, पिछवाड़े में कुक्कुट पालन, परत खेती, आदि की तैयारी पर जोर दिया जा रहा है। जेआर पौल्ट्री ने अपने पौल्ट्री फार्म में 5 श्रमिकों की भर्ती की है।

कृषिउद्यमी: डॉ. जे. जयबालन (32) एक पशु चिकित्सक हैं। अपनी डिग्री पूरा होने के बाद वह नमक्कल जिले में कम्यूनिटी एवनरेस रूरल शिक्षा (केयर) में आयोजित कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रवेश लिए। शुरुआत से, वे ब्रोइलर पौल्ट्री चलाना चाहते थे। प्रशिक्षण के बाद, रुपये 20/- लाख, की अपनी पूंजी निवेश करके उन्होंने जे आर पौल्ट्री यूनिट और जे आर वेट सेंटर की स्थापना की। वर्तमान में वह अपने परिवार के समर्थन के साथ 1.00 लाख पक्षियों का पालन कर रहे है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
25 गांवों से 450 किसान	8 व्यक्ति	80 लाख रुपये

श्री राजकुमार मुरलीधर पुराद
ग्राम.-पो.- हूपारी तालुक- हटकनंगले जिला- कोल्हापुर, महाराष्ट्र, भारत

pgagroindia376@gmail.com
+91 922065445

उद्यम: जैव उर्वरकों और सूक्ष्म पोषक तत्वों की तैयारी

मूल गतिविधि: बैंक ऋण की प्रतीक्षा किए बिना, पी एंड जी एग्रो इंडिया आर एंड डी प्रयोगशाला की स्थापना रु.10/- लाख के साथ बायो-उर्वरकों के निर्माण के लिए की गई इस में सभी प्रकार की मिट्टी और फसलों की जरूरतों के लिए कुल 15 उत्पादों का निर्माण किया गया है। कोल्हापुर जिले में जैविक उत्पादों की बिक्री के लिए इस फर्म ने को 45 खुदरा विक्रेताओं के साथ सहयोग स्थापित किया गया है। इस फर्म के मालिक श्री राजकुमार पुराद हैं।

कृषिउद्यमी: कृषि विज्ञान में डिप्लोमा धारक श्री राजकुमार पुराद (38) जैव उर्वरकों, सूक्ष्म पोषक तत्वों और पौधों के विकास नियामकों का उत्पादन कर रहे हैं। श्री राजकुमार ने कृषि-इनपुटों के विपणन में 15 वर्षों का अनुभव प्राप्त है। जैविक खेती की अवधारणा से प्रेरित होने के कारण, वे जैव-उर्वरकों की तैयारी करने की इच्छा रखते थे। इस बीच वे कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र योजना के बारे में जाना। उन्होंने कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, उत्तूर में प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए अपना नाम ऑनलाइन पंजीकृत किये। निर्धारित तिथि पर, उन्हें साक्षात्कार के लिए बुलाया गया था। उन्होंने भाग लिया और प्रशिक्षण के लिए जांच की गई। उन्होंने अपने व्यापार का विस्तार करने के लिए 20.00/- लाख रुपये की लागत के लिए अपनी विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार की।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
20 गांवों से **620** किसान	**1** व्यक्ति	**5** लाख रुपये

श्री शिवराज पोपटराव कटकर
ग्राम.-पो.- शिवराजंस बिल्डिंग, तालीम रोड, बुवासाहेबनगर, कोल्की, टक-फल्टन, जिला-सतारा, 415523, महाराष्ट्र, भारत
shivrajkatkar0550@gmail.com
+91 9665009058
+91 9604800096

उद्यम: मृदा परीक्षण प्रयोगशाला और परामर्श

मूल गतिविधि: "एसी और एबीसी प्रशिक्षण ने मुझे विश्वास दिलाया और मेरे संचार कौशल में सुधार किया। प्रशिक्षण के दौरान मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला स्थापना करना चयनित परियोजना थी। मैंने कृषि विभाग, मृदा परीक्षण अनुभाग से संपर्क किया और प्रकार की जानकारी प्राप्त की। चर्चा के दौरान, कृषि अधिकारी ने मुझे मिट्टी आधारित योजना पर जानकारी प्रदान करने का वादा किया। उन्होंने मेरी प्रयोगशाला का दौरा किया और मिट्टी प्रमाणन के लिए फर्म को मंजूरी दे दी। मैं किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड और ड्रिप इरिगेशन स्थापित करने की सुविधा प्रदान कर रहा हूं "शिवराज ने कहा।

कृषिउद्यमी: "एक साधारण मिट्टी परीक्षण रिपोर्ट मिट्टी के पोषक तत्वों या मिट्टी के रासायनिक कारकों की पहचान करने में मदद करता है जो पौधों की वृद्धि को सीमित कर रहे हैं, विभिन्न मिट्टी और फसलों के लिए उचित दरों को इंगित करके उर्वरक उपयोग दक्षता की सलाह देते है, यह पर्यावरण को अधिक उर्वरक डालने से पर्यावरण की रक्षा करता है। प्रदूषित मिट्टी की पहचान करता है हालांकि, महाराष्ट्र के सतारा जिले के फलटन के श्री शिवराज पोपटराव कटकर (22) वर्षीय कृषि स्नातक है, जिन्होंने मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला स्थापित करने और कृषक समुदाय की सेवा करने के लिए कहा कि किसान मिट्टी परीक्षण करने में बहुत आलसी हैं। शशवत शेटी विकास प्रतिष्ठान (एसएसवीपी), पूणे कृषि-पेशेवरों के बीच उद्यमशीलता कौशल को बढ़ावा देने के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षण संस्थान में से एक है, शिवराज का कहना हैं।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
15 गांवों से **250** किसान	**1** व्यक्ति	**3** लाख रुपये

श्री प्रशांत गोविंद जम्भुलकर
ग्राम.-पो.- भीवापुर, तालुक- भीवापुर, जिला- नागपुर, महाराष्ट्र, भारत

prashantjambhulkar29@gmail.com
+91 7304376999

उद्यम: ऑयस्टर मशरूम की खेती और विपणन

मूल गतिविधि: प्रशांत मशरूम महाराष्ट्र के नागपुर जिले के भिवापुर ब्लॉक में ऑयस्टर मशरूम का वन स्टॉप सोल्यूशन है। "शुरुआत में, मैंने अपने पिछवाड़े में केवल चार बैग के साथ ऑयस्टर मशरूम उत्पादन शुरू किया। यह आश्चर्यजनक था कि उपयुक्त बढ़ते माध्यम में लगाए जाने पर थोड़ी मात्रा में स्पॉन के लगभग छह सप्ताह के भीतर अत्यधिक लाभदायक फसलों में बढ़ जाता है। बाद में, मैंने व्यावसायिक तरीकों से मशरूम की खेती शुरू की। मशरूम की खेती बहुत ही सरल खेती प्रणाली के साथ किसी भी कमरे में इनडोर, बेसमेंट, पिछवाड़े और गेराज में अच्छी वेंटिलेशन और न्यूनतम तापमान के साथ बढ़या जा सकता है।" प्रशांत ने कहा।

कृषिउद्यमी: "मेरे पिता जी ने मुझे वर्ष 2016 में व्यवसाय शुरू करने के लिए 25,000 रुपये की प्रारंभिक पूंजी दी। मैंने अपने पिछवाड़े में एक मशरूम खेत शुरू किया," प्रशांत कहते हैं। महाराष्ट्र के नागपुर जिले के भिवापुर गांव से कृषि में एक डिप्लोमा धारक श्री प्रशांत (29) से उसके बाद पीछे देखा नहीं गया है। उनका कहना है कि "अध्ययन के बाद मेरे पास बहुत समय था। मैं अपने पैतृक व्यवसाय खेती में शामिल था। यह केवल जीवित रहने के लिए मेरे जीवन का मुख्य उद्देश्य यह नहीं था, मैं स्वयं का मालिक बनना चाहता था। मैं अवसर की तलाश में था। इस अवधि के दौरान मुझे कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र योजना के बारे में जानकारी दी गई थी। मैंने कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, नागपुर में नोडल प्रशिक्षण संस्थान से संपर्क किया। मैंने दो महीने के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया"।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 गांवों से **150** किसान	**5** व्यक्ति	**3** लाख रुपये

श्री ऋषभ पांडे
ग्राम.-पो.- सलेमपुर, तालुक- मुनतालपुर, सीतापुर जिला, उत्तर प्रदेश, भारत

pandeyrishabh953@gmail.com
+91 7007192585

उद्यम: बटन मशरूम की खेती, स्पॉन ब्रीडिंग इकाई और परामर्श

मूल गतिविधि: "मैंने मशरूम स्पॉन प्रजनन इकाई शुरू कर किसानों की आपूर्ति की। यहां तक कि कुछ साल पहले तक, किसान यहां पूरी तरह से टमाटर बढ़ाने और अन्य सब्ज़ियों पर निर्भर थे और उन्हें प्रकृति की अनियमितताओं के कारण फसल विफल होने पर कठिन समय का सामना करना पड़ा। मशरूम ने गांव की आजीविका के जोखिम को कम कर दिया है। ऋषभ कहते हैं, आज, ग्रामीण मशरूम से आश्वासित आय पर निर्भर कर सकते हैं, जो कि घर के अंदर उगाया जा सकता है। "मैं साल भर मशरूम की इंडोर खेती करना चाहता हूं। इसलिए मैंने बैंक ऋण के लिए आवेदन किया "ऋषभ कहते हैं।

कृषिउद्यमी: 21 वर्षीय श्री ऋषभ पांडे ने मशरूम की खेती के लिए 400 वर्ग फीट क्षेत्र में कच्चा शेड बनाने के लिए ₹ 15,000 से अधिक निवेश किया। शुरू में कटाई से, उन्होंने ₹ 33,000 अर्जित किया और कभी वापस पीछे मुड़कर नहीं देखे। श्री ऋषभ कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र योजना के तहत प्रशिक्षित एग्रिप्रेन्यूर हैं। उन्होंने जुबिलेंट कृषि ग्रामीण विकास सोसाइटी (जेएआरडीएस), आगरा में आयोजित प्रशिक्षण में भाग लिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
15 गांवों से 95 किसान	1 व्यक्ति	5 लाख रुपये

श्री योगेश कुमार
विल-यांगपुर, पो- दुरमरादुर, जिला-लखीमपुर खेरी, उत्तर प्रदेश, भारत

yuvrajdutta949@gmail.com
+91 9557855915

उद्यम: सूअर पालन

मूल गतिविधि: 5000/- की न्यूनतम पूंजी के साथ एक सूअर खाने को स्थापित कर लाभ कमाया जा सकता है यह श्री योगेश कुमार ने कर दिखाया है। उन्होंने सफेद यॉर्कशायर नस्ल के 10 छोटे पिगलेट खरीदे। उन्होंने उन्हें अपने घर के पीछे 700 वर्ग फुट की जगह में रखा। सूअर के लिए चारे की व्यवस्था करने के लिए, उन्होंने शहर में बड़े और छोटे सब्जी बाजार, रेस्तरां, फुड कार्नरों से संपर्क किया और उन सभी को अपने पास बचे हुए खाद्य सामग्री को भेजने के लिए अनुरोध किया। उन्होंने जानवरों को स्थानीय बाजार में बेच दिया और रुपये 15,000 का लाभ अर्जित किया। इस अवधि के दौरान मेरा ऋण बैंक ऑफ बड़ौदा, सरसव कलान शाखा से 5.00/- लाख रुपये के लिए स्वीकृति हो गया। "मैंने अपना कारोबार बढ़ाया और 25 व्हाइट यॉर्कशायर खरीद लिया। सूअर का मांस हमारे राज्य में और साथ ही बिहार और असम के पड़ोसी राज्यों में भी अधिक मांग पर है। श्री योगेश द्वारा अपनी उद्यमिता की यात्रा साझा की गई। मैं बेरोजगार ग्रामीण युवाओं को प्रोत्साहित कर रहा हूं और छोटे पैमाने पर सूअर इकाई की स्थापना के लिए उन्हें पिगलेट की आपूर्ति कर रहा हूं" योगेश का कहना हैं।

कृषिउद्यमी: श्री योगेश कुमार (24), उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खेरी जिले के यांगपुर गांव से कृषि में माध्यमिक शिक्षा प्राप्त है जो सूअर पालन में जुटे है। योगेश कृषि-क्लिनिक्स और कृषि-व्यापार केंद्र योजना के तहत प्रशिक्षित एग्रिप्रेन्यूर है। उन्होंने जुबिलेंट एग्रीकल्चर रूरल डेवलपमेंट सोसाइटी (जेएआरडीएस), आगरा में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
कोयंबतूर से **1000** किसान	**50** से अधिक कुशल और अकुशल मजदूर	**14** करोड़ रुपये

श्री आर. गणेश
10, शिवा काज़िल चरण-II,
वेल्लाकिनारपीरिवु, जी.एन. मिन्स (पीओ), कोयंबतूर - 641 029, तमिलनाडु, भारत

kotagirigold999@gmail.com
+91 9842164688

उद्यम: चाय नर्सरी, वृक्षारोपण और प्रसंस्करण इकाई

मूल गतिविधि: विष्णु गणेशन इन्डस्ट्री उद्योग प्रति वर्ष 6 लाख किलो डस्ट टी का उत्पादन कर रहा है। 50 से अधिक कुशल और अकुशल श्रमिक उनके साथ काम कर रहे हैं। श्री आर गणेश फर्म के मालिक हैं। प्रसस्कृत चाय ब्रांड "कोटगिरी गोल्ड टी" के नाम पर विपणन किया जा रहा है एशियाई देशों में निर्यात की जा रही है। गणेशन की चाय की पत्ती के व्यापार के लिए एक खुदरा दुकान और कार्यालय है। जैवी चाय नर्सरी पर पूर्ण परामर्श, वृक्षारोपण और प्रसंस्करण सेवा अपने फर्म द्वारा दिया जाता है।

कृषिउद्यमी: श्री आर गणेशन बीएससी वानिकी गो योग्यता प्राप्त है। वह कम्यूनिटी एवेरनेस रूरल शैक्षिक (सीएआरई) संस्थान में आयोजित कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र योजना (एसी और एबीसी) में शामिल हुए हैं। उन्होंने बड़े पैमाने पर एक चाय की नर्सरी शुरू की है। वह चाय के गुणवत्ता वाले पौधों का बढ़ा रहे है और मूल्य जो चाय इस्ट तैयार कर के सोसाईटीस और चाय बागानों के किसानों को आपूर्ति कर रहे है। उन्हें 3.00 करोड़ रुपये का ऋण मिला। प्रति वर्ष उनका टर्नओवर रु.14.00 करोड़ है। उन्होंने चाय उत्पादन और प्रसंस्करण इकाई की स्थापना की है।

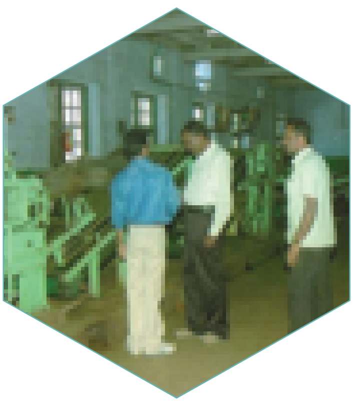
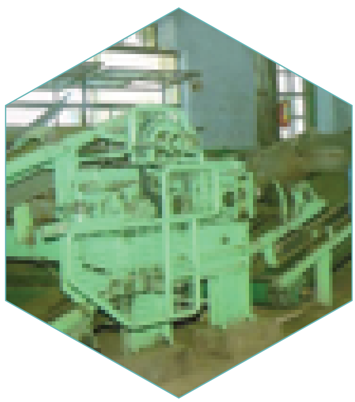

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
कोयंबतूर से **5000** किसान	**25** व्यक्ति	**80** करोड़ रुपये

डॉ पी. जयावेल
6/126, अन्ना नगर,
परमथी रोड, नमक्कल जिला,
तमिलनाडु, भारत

+91 9943975173

उद्यम: पशु और कुक्कुट चारे की तैयारी के लिए फ़ीड मिल

मूल गतिविधि: डॉ. पी. जावावेल ने रू. 5.00 करोड़ की अपनी पूंजी निवेश करके पशु और कुक्कुट फ़ीड की तैयारी के लिए फ़ीड मिल की स्थापना की। उनका वार्षिक कारोबार रुपये 80.00 करोड़ से अधिक है। वे डेयरी किसानों को पशु फ़ीड की आपूर्ति कर रहे है। वे डेयरी किसानों को संतुलित फ़ीड और प्रबंधन और मवेशियों के लिए समय पर दवाइयों के सेवन पर सलाह दे रहे हैं। उन्होंने अपने पास में 40 से अधिक श्रमिकों को नियुक्त किया है। वे इस व्यवसाय को अपने दो दोस्तों के साथ साझेदारी में कर रहे है।

कृषिउद्यमी: डॉ पी जयवेल एक पशु चिकित्सक हैं। उन्होंने 10 वर्षों तक निजी कंपनियों में काम किया। उन्होंने पशु और कुक्कुट फ़ीड की तैयारी के लिए फ़ीड मिल शुरू कर दिया है। "पशु फ़ीड बनाने की प्रक्रिया एक माध्यम है जिससे व्यापक रूप से भौतिक, रासायनिक और पौष्टिक संरचना की कच्ची सामग्री को एक होमोजेनस मिश्रण में परिवर्तित किया जा सकता है जो कि पशु में वांछित पोषण संबंधी प्रतिक्रिया उत्पन्न करने के लिए उपयुक्त होता है जिससे कि मिश्रण खिलाया जाता है। पूरी प्रक्रिया के लिए जागरूकता से अवलोकन करने की आवश्यकता थी। डॉ. जयावेल ने कहा, 40 कुशल श्रमिकों की मदद से, मेरा दैनिक उत्पादन करीब 1000 मैट्रिक टन है। डॉ. जयावेल एक प्रशिक्षित एग्रिप्रिन्यूर है जिन्होंने कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत कम्यूनिटी एवेरनेस ग्रामीण शैक्षणिक संस्थान, नमक्कल में प्रशिक्षण में भाग लिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
12 गांवों से **50** किसान	**2** व्यक्ति	**4** लाख रुपये

श्री रवि शंकरराव उकान्डे
गाँव - डोलम्बवाडी
पो.- चिखली (एजारा) तालुक - डिग्रस जिला: यवतमाल, महाराष्ट्र, भारत
+91 9130603811,
+91 8698887793

उद्यम: डेयरी और बकरी पालन

मुख्य गतिविधि: रवि के पास 7 एकड़ पुरखों की जमीन थी। उन्होंने गायों और बकरियों के लिए अलग शेड का निर्माण किया। चारा और पानी की व्यवस्था अलग से कर दी गई है। शेड से सभी अपशिष्ट कर के इकट्ठा कम्पोस्टपिट में डाला जाता है। रवि 15 साहिवाल और 10 स्थानीय नस्लों की गायों का पालन कर रहे हैं। बकरी वर्ग में, वे उस्मानबादी नस्ल की बकरी पालन कर रहा है और रवि का उद्देश्य उसी क्षेत्र भूभाग में अधिक उद्यमों तक विस्तार करना है।

कृषिउद्यमी: श्री रवि शंकरराव उकान्डे (30), कृषि में डिप्लोमा धारक हैं और महाराष्ट्र के यावतमल जिले के दोलाम्बावाडी गांव के निवासी हैं, जो दो उद्यमों में जुटे हुए हैं। डेयरी और बकरी का पालन। रवि ने कहा, "दो व्यवसायों में काम करना कृषि-क्लिनिक्स और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के बाद ही हो सकता है।" "कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, नागपुर में प्रशिक्षण के दौरान, मैंने एक स्थापित फार्म हाउस का दौरा किया। रवि ने कहा कि मालिक 7 से अधिक उद्यम चला रहा था, एस फ़ार्म से प्रेरित होकर मैने एकीकृत कृषि प्रणालियों पर एक मॉडल फार्म स्थापित करने का भी फैसला किया था।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
12 गांवों से **1500** किसान	**1** व्यक्ति	**14** करोड़ रुपये

श्री एम. दमोदरन,
1432, कंदिपालयम,
वडागरायैत्तर पो, परामथी वेलूर तालुक, नमक्कल, पिन-637 213, तमिलनाडु, भारत
leeladamu@gmail
+91 9443255443

उद्यम: लेयर फार्मिंग और विपणन

मूल गतिविधि: प्रशिक्षण के सफल समापन के बाद श्री एम दामोदरन ने 1.80 लाख के पक्षियों के साथ लेयर पौल्ट्री यूनिट शुरू किया और सफल तरीके से चल रहा है। वे करीब 12 गांवों में विस्तार कार्य भी कर रहे हैं। प्रमुख विषय है खेती में पौल्ट्री खादों का उपयोग रोग प्रबंधन, फ़ीड और फीडिंग तकनीक। वे सब प्रकार के पौल्ट्री पालन करते है। उन्होंने अपने पौल्ट्री फार्म में 6 श्रमिक लगाए हैं।

कृषिउद्यमी: श्री एम दामोदरन (30) तमिलनाडु के नमक्कल जिले तमिलनाडु के कंदिपलयम गांव के पशु चिकित्सक हैं। शिक्षा के बाद उन्होंने अपना वेट-क्लिनिक शुरू कर दिया था, लेकिन किसानों की कम प्रतिक्रिया के कारण क्लिनिक बंद हो जाने की नौबत आई। इस अवधि में, वे कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के बारे में जाना। वह इस योजना के लाभ से आश्वस्त हुए थे। उन्होंने नमक्कल में एक प्रशिक्षण संस्थान, कम्यूनिटी एवेरनेस ग्रामीण शैक्षणिक ट्रस्ट (केयर) से संपर्क किया और आगामी प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए अपना नाम पंजीकृत किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
100 गांवों से **1200** किसान	**5** व्यक्ति	**30** लाख रुपये

सुश्री सोनाली चंद्रकांत जाधव
एस.टी. सतंड के पीछे, एट-ताल-कडगाँव, जिला- सांगली-415304, महाराष्ट्र, भारत

sonajadhav1727@gmail.com
+91 9970588220

उद्यम: जैव उर्वरक और सूक्ष्म पोषक तत्वों का उत्पादन

मूल गतिविधि: "रुपये 7.00/- लाख प्रारंभिक निवेश को फिर से भुगतान के आश्वासन के साथ मेरे पिता से उधार लिया गया था और मेरी आर एंड डी प्रयोगशाला स्थापित की गई "सोनाली ने हंसी के साथ समझाया, "मैंने मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार और तदनुसार उत्पादों का निर्माण करने पर ध्यान केंद्रित किया। मैंने अपने व्यापार को सीधे किसानों से संपर्क किया। प्रारंभ में मैंने प्रगतिशील किसानों के संपर्क में किया और प्रदर्शनों की व्यवस्था की, 10-15 दिनों के भीतर इसका परिणाम स्वस्थ पौधों में दिखाई देने लग जाता हैं। किसान स्वयं मेरे उत्पादों को आस-पास के किसानों तक प्रचार कर रहे हैं" सोनाली ने कहा।

कृषिउद्यमी: "पौधे को खिलाने के लिए मिट्टी को खिलाना है 'जैवी खेती का एक बुनियादी सिद्धांत है। मैंने 12 उत्पादों को प्रारंभ किया जो मिट्टी के स्वास्थ्य, प्रजनन क्षमता और उत्पादकता में वृद्धि को बनाए रखते हैं। गन्ने की खेती के पूरे क्षेत्र में पूरी मिट्टी की लवणता की समस्या को हल करने के लिए, 'गन्ना किट' का उत्पादन विशेष रूप से किया गया जो बहुत अधिक पैदावार से परिणामित होने के लिए बढ़ोत्तरी के चरण में सहायक होगा। सुश्री सोनाली जाधव (24) कृषि विज्ञान में स्नातक ने कहा। सोनाली कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत कृषि उद्यमिता में प्रशिक्षित हुई। उन्होंने शशवत शेट्टी विकास प्रतिष्ठान (एसएसवीपी), पूणे में प्रशिक्षण प्राप्त किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
6 गांवों से 500 किसान	1 व्यक्ति	5 लाख रुपये

श्री संजय मारुति भोंग
ग्राम.-पो.- नीमगाँव केतकी,
तालुक- इंदुपुर, जिला- पूणे
पिनकोड-413120, महाराष्ट्र,
भारत

sanjaybhong966@gmail.com
+91 9766472012

उद्यम: हाइरिंग सेंटर और परामर्श

मूल गतिविधि: "मेरे पास लगभग 10 एकड़ भूमि थी। गन्ना प्रमुख फसल थी। मेरे पास मेरे खुद का ट्रैक्टर था, मैंने उसी ट्रैक्टर को किराए पर देना शुरू कर दिया और पाया कि किराए पर लेने वाला ट्रैक्टर अच्छी आमदनी दे रहा है। प्राप्त लाभ से मैंने अन्य टिलेज मशीनों को खरीदा। चार महीने कृषि मशीनरी किराए पर देने की महत्वपूर्ण अवधि है "संजय ने कहा।

कृषिउद्यमी: छोटे / सीमांत किसान महंगा कृषि मशीनरी में निवेश नहीं कर सकते हैं और अपने क्षेत्रों में कृषि को किराये पर लेने पर निर्भर करते है। दूसरी तरफ अत्यंत आवश्यक समय पर श्रमिकों की कमी किसानों द्वारा सामना की जाने वाली गंभीर समस्या है। मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार के लिए, संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियों को उचित लागत पर उचित कृषि मशीनरी की समय पर प्राप्त करने से जोड़ा जाता है। कृषि में स्नातक और महाराष्ट्र के पूणे जिले के नीमगांव केतकी के निवासी श्री संजय मारुति भोंग (29) ने कहा, “इसे ध्यान में रखते हुए, मैंने अपना कस्टम हायरिंग केंद्र स्थापित किया और उचित लागत पर खेत की मशीनरी उपलब्ध कराना प्रारंभ किया।” “शाश्वत शेट्टी विकास प्रतिष्ठान (एसएसवीपी), पूणे में अपने उद्यमिता प्रशिक्षण के दौरान, मैंने एक स्थापित कस्टम हाईरिंग केंद्र का दौरा किया और उसी इकाई को शुरू करने का फैसला किया।” संजय ने कहा।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
15 गांवों से **250** किसान	**2** व्यक्ति	**10** लाख रुपये

सुश्री अरविंदर कुमार
ग्राम-पोस्ट रहावति तहसिल-मवाना,
जिला-मीरुट
उत्तर प्रदेश-250 401, भारत

+91 9639536767,
+91 9675905505

उद्यम: जैविक गेहूं की खेती और विपणन

मूल गतिविधि: "चावल के बाद गेहूं बोया जाएगा। हर एक पंक्ति के बीच एक फुट की दूरी से बीज ड्रिल का उपयोग किया जाएगा। यदि आवश्यक हो, तो लगभग 30 दिनों में एक बार श्रमिक द्वारा निराई की सिफारिश की जाती है। 30 से 40 दिनों के बाद, यदि खरपतवार अधिक होते हैं, तो जैव-हर्बीसाइड का उपयोग करें। मवेशी गोबर और एफवाईएम में सूक्ष्मजीवों के सभी छह प्रकार के कार्यात्मक समूह शामिल हैं। कीट और बीमारियों के प्रभावी नियंत्रण के लिए नीम का तेल / नीम केक कीटनाशकों के रूप में उपयोग किया जाता है", सरल तकनीकों को अरविंदर द्वारा साझा किया गया है।

कृषिउद्यमी: "जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए, किसानों को राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम (एनपीओपी) द्वारा निर्धारित मानकों के अनुसार प्रशिक्षण और कृषि स्तर की सलाहकार सेवाओं सहित तकनीकी इनपुट प्रदान किए जा रहे हैं। जैवी फसल के उत्पादन के लिए बाजार भी उपलब्ध है। कृषि और ग्रामीण विकास केंद्र (सीएआरडी), मुजफ्फरनगर में आयोजित कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के बाद उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के कृषि में स्नातक श्री अरविंदर कुमार (27) ने कहा, "मैं अपने 10 एकड़ भूमि में जैविक गेहूं उत्पादन में शामिल हुआ।"

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
9 गांवों से **450** किसान	**4** व्यक्ति	**12** लाख रुपये

श्री गिरीश वामनराव दलवी
ग्राम.-पो.- मोहदी (दलवी)
ता नरखेड़, जिला नागपुर,
महाराष्ट्र, भारत

girishdal@rediffmail.com
+91 9921586746,
+91 7972683301

उद्यम: कुक्कुट पालन और परामर्श

मूल गतिविधि: “रुपये 20/- लाख का एक विस्तृत परियोजना रिपोट बैंक ऑफ इंडिया, नारखेड, शाखा को प्रस्तुत किया गया था। तीन महीने की अवधि के भीतर, मेरा ऋण स्वीकृत कर दिया गया। मैं अपनी इकाई में 10000 ब्रॉइलर पक्षियों का पालन कर रहा हूं। मेरी इकाई कुक्कुट प्रशिक्षण केंद्र बन गई है, मैंने ग्रामीण युवाओं के लिए सभी प्रकार के पौल्ट्री पक्षियों पर प्रशिक्षण आयोजित कर रहा हू। मैं ग्रामीण युवाओं को डीपीआर तैयारी में मदद करता हूं गिरीश ने कहा।

कृषिउद्यमी: श्री गिरीश वामनराव दलवी (40) ने पशु विज्ञान में मास्टर डिग्री हासिल की है और वे महाराष्ट्र राज्य के नागपुर जिले के एक छोटे से गांव मोहादी से हैं। शिक्षा प्राप्त करने के बाद, वे एक निजी कॉलेज में व्याख्याता के रूप में नौकरी कर रहे थे। इस अवधि के दौरान, वे केंद्र प्रायोजित कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र योजना से परिचित हुए और नागपुर में प्रशिक्षण संस्थान कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन से संपर्क किया। आश्वस्त चर्चा के बाद, नौकरी छोड़कर और प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हो गए। गिरीश ने कहा, "पशुचिकित्सक होने के नाते, तकनीकी रूप से मुझे सही क्षेत्र मिला, परंतु उद्यमिता कौशल मैनें प्रशिक्षण के दौरान सीखा” गिरीश ने कहा।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
सलेम जिला के **2000** किसान	**7** व्यक्ति	**1** करोड़ रुपये

श्री ए. गोविंदराजन
51 डी 9 रोट्टू स्ट्रीट वेल्लांडविलासै पो-एडप्पेडी (तालुक) सेलम (जिला) तमिलनाडु, भारत

+91 9443262457,
+91 9965711193

उद्यम: जैव-उर्वरकों का उत्पादन और कृषि-इनपुट की बिक्री

मूल गतिविधि: एसीएबीसी प्रशिक्षण पूरा होने के बाद श्री ए गोविंदराजन एक उत्पादन इकाई शुरू करना चाहते थे और करूर वैश्य बैंक, सेलम शाखा में जमा करने के लिए एक विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार किए हैं। वे 40 से अधिक जैव उत्पादों का निर्माण कर रहे है। उन्होंने 15 खुदरा विक्रेताओं के साथ जैव उत्पादों की बिक्री के लिए अपने व्यापार का नेटवर्क बनाया है।

कृषिउद्यमी: विभिन्न कृषि कंपनियों में 10 वर्षों की सेवा करने के बाद, वर्ष 2000 में श्री ए गोविंदराजन ने सेलम में श्री शक्ती एग्रो ट्रेडर्स नाम पर इनपुट और कीटनाशकों की बिक्री के लिए कृषि इनपुट केंद्र शुरू किया है। श्री गोविंदराजन (49) किसानों को कृषि परामर्श सेवा प्रदान करते हैं। उनके द्वारा कवर किए जाने वाले प्रमुख विषय जैविक खेती, एकीकृत कीट प्रबंधन, एकीकृत उर्वरक प्रबंधन और कृषि मशीनरी का उपयोग हैं। वर्ष 2016 में उन्हें कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के बारे में पता चला। वह नमक्कल के कम्यूनिटी एवेरनेस रूरल एडुकेशन ट्रस्ट (केअआरई) संस्थान में प्रशिक्षण हेतु प्रवेश लिया है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
25 गांवों से **1500** किसान	**10** व्यक्ति	**2** करोड़ रुपये

श्री वी. उदयकुमार
41-1, नाडु स्ट्रीट, कोंडालमपट्टी,
सेलम-636 010, तमिलनाडु,
भारत

sunagrochemicals@gmail.com
+919443129054

उद्यम: जैविक जैव-उर्वरकों की तैयारी और विपणन

मूल गतिविधि: "नमक्कल के कम्यूनिटी एवेरनेस रूरल एडुकेशन ट्रस्ट (केअआरई) संस्थान में प्रशिक्षण के दौरान, श्री वी उथयकुमार ने जैविक जैव-उर्वरकों के निर्माण शुरू करने का फैसला किया। वह नीम जैविक खाद और जैव उर्वरक का निर्माण कर रहे है। वह जैविक कीटनाशकों और बीजों से भी निपट रहे है। कुल मिलाकर वह 100 जैव-उत्पादों की तैयारी कर रहे है।

कृषिउद्यमी: श्री वी उदय कुमार ने सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय पुधुचत्रम, नमक्कल जिला से कृषि में अपने स्कूली शिक्षा को दसवीं तक पूरा किया। उसने कभी अपने मालिक होने का सपना देखा नहीं था। श्री उदय ने कहा, "यह सपना कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के कारण साकार हुआ।" उन्होंने उर्वरक उत्पादन इकाई में 12 साल काम किया और उर्वरक उत्पादन के बारे में पूरा ज्ञान संकलित किया। उनके पास 500 से अधिक किसानों के साथ बहुत अच्छा नेटवर्क है। किसानों के क्षेत्रों में डेमॉन्स्ट्रेशन आयोजित किए जाते है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
12 गांवों से 350 किसान	1 व्यक्ति	20 लाख रुपये

श्री युवराज दगडू चवाण
ग्राम-निवाले, पोस्ट-घोटावडे,
ताल- पन्हाला, जिला-कोल्हापुर,
पिनकोड-416230, महाराष्ट्र,
भारत

yuvraj4246@gmail.com
+91 9637733842

उद्यम: सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली, ड्रिप और स्प्रिंकलर सेट का व्यापार

मूल गतिविधि: "रुपये 3/- लाख की अपनी पूंजी निवेश के साथ मैंने सिंचाई सेट का व्यापार शुरू किया। मैंने महाराष्ट्र में तीन प्रमुख सूक्ष्म सिंचाई कंपनियों के साथ करार किया। चाहे किसी भी प्रकार की सिंचाई प्रणाली स्थापित हो, उपकरण के नियमित रखरखाव की आवश्यकता होती है। मैं मुफ्त रखरखाव के लिए एक वर्ष की गारंटी दे रहा हूं जो मुझे किसानों के बीच विश्वास जताने में मदद करता है "युवराज ने कहा।

कृषिउद्यमी: "ड्रिप सिंचाई के साथ एक क्षेत्र में छिड़काव करने के बजाय पानी को सीधे क्षेत्र की सतह पर पहुंचाया जाता है। पानी को इस प्रकार से उपयोग करने से पानी की बचत होती है। मेरा परिचालन क्षेत्र पूरी तरह से गन्ना खेती का है। बाढ़ के पानी से सिंचाई करना एक परंपरा है। पानी की बचत अब आवश्यक है। इसलिए, मैंने माइक्रो सिंचाई सेट के व्यापार के लिए डीलरशिप ली और सूक्ष्म सिंचाई के उपयोग पर किसानों को सलाह दी" इस प्रकार उद्यमिता की यात्रा श्री युवराज चवाण (26), कृषि विज्ञान में स्नातक और महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले के निवासी द्वारा साझा की गयी है। श्री युवराज एक एग्रिप्रेन्यूर हैं, उन्होंने कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, उत्तूर, महाराष्ट्र में उद्यमिता प्रशिक्षण में भाग लिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 गांवों से 50 किसान	25 व्यक्ति	20 लाख रुपये

श्री प्रतीक भीमराव गोनुगडे
ग्राम/पो.- राशिवडे बीके
तालुक-राधानगरी, जिला- कोल्हापुर, महाराष्ट्र, भारत

pratikgonugade@gmail.com
+91 8007813231

उद्यम: गुड़ प्रसंस्करण इकाई और विपणन

मूल गतिविधि: "व्यवसाय के विस्तार के लिए, मैंने 1.00/- लाख रुपये की लागत (सीसी) का लाभ बैंक ऑफ इंडिया, राशिवडे शाखा, कोल्हापुर से उठाया। मौसम में दैनिक गुड़ उत्पादन प्रति दिन लगभग 1000 किग्रा है। मैं थोक और खुदरा विक्रेताओं के माध्यम से गुड़ बेच रहा हूं" प्रतीक ने कहा।

कृषिउद्यमी: "गन्ने को निचोड़ लेने के बाद निकाले गए गन्ने का रस और बैगेज कच्चे माल के रूप में गुड़ तैयार करने के लिए उपयोग किया जाता है। गुड़ का प्रसंस्करण गन्ने की कटाई के मौसम में शुरू होता है और यह हर जगह भिन्न होता है। गुड़ के लिए ताजा गन्ने का रस जरूरी है। मैं परंपरागत खुली धरती पैन फर्नेस प्रक्रिया का उपयोग कर रहा हूं। मैं लगभग 800 टन गन्ना कटाई कर रहा हूं और गुड़ का प्रसंस्करण कर रहा हूं। 4 गांवों से 50 किसानों से गन्ना खरीदने से बाकी गन्ने की आवश्यकता पूरी हुई। महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले से कृषि में स्नातक श्री प्रतीक भीमराव गोनुगड़े (22) ने कृष्णा वैली एड्वांसड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, उत्तूर में प्रशिक्षित एक कृषि उद्यमी है।

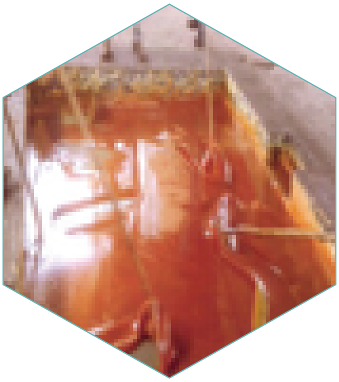
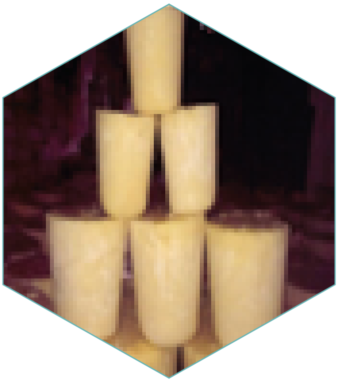

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
7 गांवों से **40** किसान	**2** व्यक्ति	**2** लाख रुपये

श्री राकेश सिंदगी
ग्राम- रामनगर, 5 वीं क्रॉस
गणेश कृपा, दारवाड़-480001,
कर्नाटक, भारत

agrikart99@gmail.com
+91 8867268185

उद्यम: agrikart.Co एक ई-कॉमर्स कंपनी है, जो ऑनलाइन जैविक खाद्यपदार्था बेच रहे है

मूल गतिविधि: "विभिन्न फसलों के लिए 40 जैविक उत्पादकों के साथ अनुबंध कृषि समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे। मैं किसानों को कृषि-इनपुट के साथ सभी तकनीकी जानकारी प्रदान कर रहा हूं। उत्पादित और कटाई की गई फसल जैविक उत्पादन के लिए राष्ट्रीय मानक से (एनपीओपी) से प्रमाणित की जाती है। उत्पादित फसल विभिन्न आकारों में खरीद और पैक की जाती है और बिक्री के लिए तैयार की जाती है। राकेश ने कहा।

कृषिउद्यमी: agrikart.co एक ई-कॉमर्स कंपनी है, जो ऑनलाइन जैविक खाद्यान्न जैसे अनाज, बाजरा, दालें, मसालों और अजैविक उत्पादों जैसे संसाधित और पैक किए गए सूखे फल आदि बेच रहे है। "बाजार की कीमत की तुलना में ऑनलाइन दरें सबसे अच्छी हैं। उत्पादों को सीधे किसान के क्षेत्र के दवार से खरीदा जाता है। बाजरा और अन्य अनाज की ऑनलाइन खरीदारी के लिए कंपनी अच्छा सौदा कर रही है। एक बार www.agrikart.co पर जाएं" श्री राकेश सिंदगी (25) ने कहा, जो कृषि स्नातक के साथ एक युवा कृषि उद्यमी है। राकेश ने श्रीराम ग्रामीण संशोधन एवं विकास प्रतिष्ठान, बेलगाम में आयोजित उद्यमशीलता प्रशिक्षण में भाग लिया। "कृषि में आईसीटी" विषय पर सत्र के दौरान कृषि की मशीनों की ऑनलाइन बिक्री पर कुछ सफलता की कहानियों पर चर्चा की गई, उस समय राकेश ने साझा किया कि अनाज ऑनलाइन बेचने के लिए मेरे दिमाग में एक विचार आया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
7 गांवों से 150 किसान	2 व्यक्ति	7 लाख रुपये

श्रीमती शुभांगी भास्कर पाटिल
ग्राम/पो. - हलेवाडी, ताल - अजारा, जिला - कोल्हापुर, पिन-416 220, महाराष्ट्र, भारत

+91 7303664721

उद्यम: डेयरी खेती और परामर्श

मूल गतिविधि: "एसी और एबीसी प्रशिक्षण पूरा करने के बाद, मैंने चार और एचएफ गायों को खरीदा। दूध उत्पादन प्रतिदिन 90 लीटर तक बढ़ाया गया है। दूध डेयरी में भेज दिया जाता है। इसके अतिरिक्त, मैंने दूध संग्रह केंद्र शुरू किया और किसानों को खाद्य और चारा प्रबंधन, साफ दूध, गाय शेड में स्वच्छता, समय पर डी-वर्मिंग और टीकाकरण आदि पर सलाह देना आरंभ किया। अब मेरा दैनिक दूध संग्रह 200 लीटर तक पहुंच गया है। मुझे डेयरी से अच्छी आमदनी मिल रहा है।" शुभांगी ने कहा।

कृषिउद्यमी: "कृषि में डिप्लोमा की योग्यता प्राप्त करने के बाद, मैंने शादी कर ली और मेरे ससुराल वालों के साथ रहने लगी। हमारे पास लगभग 10 एकड़ भूमि और 5 घर में जर्सी गायें थीं और मैं सभी कामों में शामिल थी यानी गायों को चारा देना दूध दुहना सफाई आदि। मेरी शैक्षिक योग्यता अनुकूल होने के करण मेरे पति ने मुझे कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र के तहत उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल होने का सुझाव दिया। कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, कुपवाड़, सांगली में आयोजित प्रशिक्षण में नियमित रूप से भाग लिया। संस्थान द्वारा आयोजित एक्सपोजर विज़िट के दौरान, मैंने चारा, दूध दुहना, संतुलित आहार इत्यादि के वैज्ञानिक तरीकों को सीखा।"

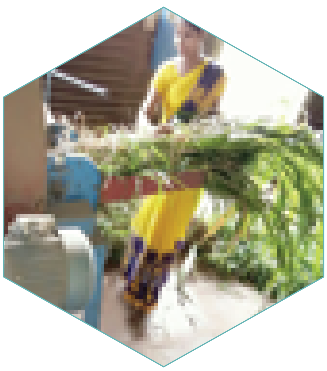

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
3000 किसान सोलापुर जिला	6 व्यक्ति	20 लाख रुपये

श्री सिद्धेश्वर भालचंद्र बारबाड़े
ग्राम/पो. 446, पश्चिम मंगलवर पेठ, सोलापुर, पिन-413007, महाराष्ट्र, भारत

siddeshwarbarbade54@gmail.com
+91 9890979854

उद्यम: नर्सरी और लैंडस्केपिंग

मूल गतिविधि: "रुपये 70000/- की अपनी पूंजी निवेश कर मैंने अपनी नर्सरी स्थापित की थी। शुरुआत में मैं सजावटी पौधों के छोटे पौधे बेचने पर ध्यान केंद्रित कर रहा था। मेरी नर्सरी सोलापुर राजमार्गों पर स्थापित है, किसान फलदार पेड़ो के पौधों की मांग कर रहे थे। बाद में मैंने अपना व्यवसाय बढ़ाया और सभी प्रकार की पौधों को नर्सरी में शामिल किया। हम लैंडस्केपिंग डिजाइन और स्थापना में विशेष सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। सिद्धेश्वर ने कहा कि हम पेड़ों, झाड़ियों, बारहमासी, सालाना, सब्जियां, और बगीचे की आपूर्ति की एक बड़ी सूची का प्रबंध भी करते हैं।

कृषिउद्यमी: श्री सिद्धेश्वर बारबाडे (31), संपन्न परिवार के कृषि में स्नातक, नर्सरी चलाने वाले अपने परिवार की पहली पीढ़ी है। उनका कहना है कि, "उनका 55 प्रतिशत व्यवसाय खुदरा बिक्री से आता है और बाकी का अधिकांश हमारे लैंडस्केप विभाग से आता है। हम परियोजनाओं की विस्तृत श्रृंखला अर्थात बागवानी, फूलों की सांस्कृतिक, सजावटी पौधे पर परामर्श, लैंडस्केपिंग रसोई उद्यान, छत पर बाग, पार्किंग लॉन इत्यादि पर ध्यान केंद्रित करते हैं। "श्री सिद्धेश्वर ने कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत श्रीराम ग्रामीण संशोधन विकास प्रतिष्ठान, वाडाला में आयोजित प्रशिक्षण में भाग लिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
8 गांवों से 115 किसान	3 व्यक्ति	8 लाख रुपये

श्री शांतिपाल आनंद सोनावने
पो. सखेद तीजन,
तालुक-सिंधखेड राजा,
जिला-बुलढाणा, महाराष्ट्र, भारत

shantipalsonune111@gmail.com
Mobile- 9545347832

उद्यम: ओपन फील्ड बकरी खेती और परामर्श

मूल गतिविधि: "मैं आधा एकड़ भूमि में एक बकरी फार्म का मालिक हूँ जिसमें 150 बकरियाँ है। भूमि चयन में रहने के लिए कोई स्पष्ट नियम नहीं है। आपके पास जो भी भूमि है उसमें चराया जा सकता है, बेहतर होगा यदि आपके पास हरियाली वाला और चरागाह क्षेत्र के साथ अधिक भूमि ये" शांतिपाल ने कहा।

कृषिउद्यमी: महाराष्ट्र में बुलधाना जिले के सिंदखेड राजा गांव में कृषि स्नातक, शांतिपाल सोनावने (26) 150 से अधिक बकरियों का पालन कर रहे हैं और रोज लाभ प्राप्त रहे हैं। "भारत में बकरी खेती का कारोबार एक अच्छा विकल्प होगा यदि इसे सटीक और योजनाबद्ध तरीके से किया जाता है। लेकिन लाभप्रद बकरी पालन व्यवसाय में ज्ञान और अनुभव में कमी के कारण वे बेहतर परिणाम नहीं दे पा रहे है" शांतिपाल ने कहा। शांतिपाल, कृषि-क्लिनिक्स और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षित एग्रीप्रेन्यूर है। कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, नागपुर में प्रशिक्षण के दौरान, उन्होंने एक स्थापित बकरी पालन इकाई का दौरा किया। उन्होंने तकनीकी और विपणन कौशल पाया और देखा कि यदि बकरियों का पालन उम्रबद्ध अंतर के साथ करते है, तो कोई भी अच्छी आमदनी पा सकता है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
50 गांवों से **550** किसान	**5** व्यक्ति	**50** लाख रुपये

श्री जय कुंवर शियोरान
HNo. 666, सेक्टर-6, करनाल, हरियाणा, भारत

sheoranjk2@gmail.com
+91 9467343001

उद्यम: मधुमक्खी पालन और प्रशिक्षण केंद्र

मूल गतिविधि: "मैंने 20.00/- लाख रुपये का ऋण पंजाब नेशनल बैंक, प्रेमनगर शाखा से मेरी मधुमक्खी पालन और प्रशिक्षण संस्थान स्थापित करने के लिए लिया है। मैं मधुमक्खी पालन सलाहकार के रूप में काम कर रहा हूं और रामनगर जिले- कुरुक्षेत्र हरियाणा में एकीकृत मधुमक्खी पालन विकास केंद्र योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कर रहा हूं। यह भारत-इज़राइल परियोजना के तहत प्रायोजित है। मैं हरियाणा, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश में प्रवास योग्य मधुमक्खी पालन कर रहा हूं और संबंधित राज्यों के किसानों में मधुमक्खी पालन की अवधारणा को बढ़ावा दे रहा हूं।" शियोरान कहते हैं।

कृषिउद्यमी: "हरियाणा में मधुमक्खी पालन के विकास के लिए कृषि विभाग के अधिकारी के रूप में सेवानिवृत्ति हाने के बाद, मुझे हरियाणा में मधुमक्खियों के पालन में अपनी दूसरी कमाई शुरू करने की इच्छा जागी। मेरे कार्यकाल के दौरान मुझे कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के बारे में पता चला। मैंने इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्री-बिजनेस प्रोफेशनल (आईएसएपी), करनाल से संपर्क किया और 100% उपस्थिति के साथ प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया "श्री जय कुंवर शियोरान (61) मधुमक्खी पालन में उद्यमिता की अपनी यात्रा याद करते हैं।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
70 गांवों से **1200** किसान	**5** स्थायी, **10-15** अस्थायी व्यक्ति	**25** लाख रुपये

श्री सुनील कुमार
एट-विलेज- रसूलपुर कलां,
जिला- करनाल, हरियाणा, भारत

tejash4060@gmail.com
+91 9518290001

उद्यम: नर्सरी और प्रशिक्षण केंद्र

मूल गतिविधि: पंजाब नेशनल बैंक, फुषगढ़, करनाल से प्राप्त 16.20 लाख रुपये के क्रेडिट समर्थन के साथ, सुनील कुमार ने 2 एकड़ भूमि में अपनी नर्सरी की स्थापना की और फल, सजावटी पौधे, सब्जी, कैक्टस और सब्जी की बिक्री शुरू कर दी। बहुत जल्द नर्सरी ग्रामीण युवाओं के लिए प्रशिक्षण केंद्र बन गया। उन्होंने नर्सरी गतिविधियों का दौरा किया और प्रशिक्षित किया। सुनील ने इन प्रशिक्षित युवाओं के माध्यम से और बैंक मोड पर आवश्यक सामग्री की आपूर्ति करके अपने कारोबार का विस्तार किया। विस्तार सेवाओं को देखकर, नाबार्ड ने उन्हें 36 प्रतिशत सब्सिडी जारी की।

कृषिउद्यमी: हरियाणा के करनाल के रासलपुर गांव के एक प्रिश्रमी और अभिनव किसान श्री सुनील कुमार, बागवानी में प्रमाणपत्र के पाठ्यक्रम आयोजित करते हुए, अपनी आजीविका के लिए नर्सरी में शामिल हुए है। उन्होंने नर्सरी में सभी तकनीकी कौशल प्राप्त किया। वह अपनी नर्सरी शुरू करना चाहता था। खुद का मालिक बनने का अवसर उन्हे स्व-रोजगार के अवसरर प्रदान करने के लिए चल रही कृषि-क्लिनिक्स और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के माध्यम से आया। उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी और इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्री-बिजनेस प्रोफेशनल (आईएसएपी), करनाल से संपर्क किया और प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए रजस्ट्रीकृत किए।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
14 गांवों से **170** किसान	**7** व्यक्ति	**15** लाख रुपये

श्री सरवन कुमार
बख्तावरपुर,
पोस्ट- जैनपुर, जिला- सोनीपत,
हरियाणा, भारत

sarwanms farm@gmail.com
+91 8930137709

उद्यम: बटन मशरूम खेती और परामर्श

मूल गतिविधि: "50000/- रुपये की अपनी पूंजी के साथ श्री सरवन कुमार ने रैकिंग सिस्टम का उपयोग करके मशरूम उत्पादन इकाई की स्थापना की। उन्होंने 10 किलो बटन मशरूम स्पॉन के साथ अपनी उद्यमिता शुरू की। यह छत से लटकते 100 बैग में लगाया गया था। चार महीने के भीतर उन्होंने 27 क्विंटल मशरूम की कटाई की। उनका आत्मविश्वास बढ़ गया, और उन्होंने मशरूम की अधिक विविधता विकसित करने का फैसला किया। वर्तमान में वह हरियाणा के सोनीपत जिले में बटन, ऑयस्टर और मिल्क वाईट मशरूम का लोकप्रिय निर्माता है। उन्होंने बैंक ऋण के लिए आवेदन किया और संरक्षित स्थिति के तहत उत्पादन करना चाहता है ताकि बिक्री वर्ष भर में हो।" सरवन ने कहा।

कृषिउद्यमी: कृषि में स्नातक उपाधि प्राप्त करने के बाद, श्री सरवान कुमार अपने परिवार को व्यवस्थित रखने के लिए कड़ी मेहनत की। इस अवधि के दौरान कृषि में रोजगार के अवसरों की तलाश में वह इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्री-बिजनेस प्रोफेशनल (आईएसएपी) के नोडल अधिकारी के संपर्क में आए, करनाल, कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना पर कई चर्चाओं और तकनीकी मार्गदर्शन के बाद, उन्हें कृषि व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रेरित किया गया। स्क्रीनिंग के बाद, वह चुना गया और प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हो गए। हैण्डस ऑन अनुभव के दौरान उन्होंने मशरूम की खेती पर सभी तकनीकी जानकारी ली और मशरूम खेती को प्रारंभ करने का फैसला किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
25 गांवों से **1000** किसान	**3** व्यक्ति, **15** अकुशल श्रमिक	**15** लाख रुपये

श्री अमोल गंगाराम शिरकर
ग्राम/पो.- कोतावडे, रत्नागिरी, महाराष्ट्र, भारत

amol.shirkar.as@gmail.com
+91 9673377943

उद्यम: बकरी व्यापार और परामर्श

मूल गतिविधि: "एसी और एबीसी योजना के क्रेडिट घटक के तहत, रुपये 5/- लाख का ऋण समर्थन बैंक ऑफ इंडिया - कोथावाडे शाखा से बकरी इकाई स्थापित करने के लिए प्राप्त हुई । शुरुआत में, मैं उस्मानाबाद नस्ल के बकरी के प्रजनन और बिक्री कर रहा था। विभिन्न बकरियों के लिए किसानों की बढ़ती मांग को दृष्टि में रखकर मैंने बकरियों के व्यापार के लिए विभिन्न बाजारों की खोज की और उनसे संपर्क किया। अब, मैं आवश्यकताओं के अनुसार जमुनापरी, सिरोही, कोटा और पश्चिम बंगाल जैसी नस्लों का व्यापार कर रहा हूं। मैं सभी प्रकार के बकरी परामर्श सेवा प्रदान करता हूं, लगभग 1000 किसानों को सलाह दी जाती है। नाबार्ड ने इन विस्तार सेवाओं के लिए 36 प्रतिशत सब्सिडी जारी की "श्री अमोल गंगाराम शिरकर ने कहा।

कृषिउद्यमी: "शिरकर एग्रो टेक उद्योग बकरी पालान करता है बकरियों के नस्लों के व्यापार में और भारतीय बकरी उद्योग के विकास को बढ़ावा देने में जुटे है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि अगर हम व्यापारिक दृष्टिकोण से देखते हैं तो भारतीय बकरी उद्योग अब भी अपनी प्रारंभ दशा में है। मालिक और कृषिउद्यमी श्री अमोल शिरकर (31) ने कहा, लेकिन अब यह उद्योग व्यवस्थित हो रहा है"। वे पूर्व से ही कृषि से जुड़े थे। अमोल ने श्रीराम ग्रामीण संशोधन व विकास प्रतिष्ठान, उस्मानाबाद में आयोजित कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत उद्यमशीलता कौशल में प्रशिक्षण पाया है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
हरियाणा और उत्तर प्रदेश में **600** डेयरी उत्पादक हैं	**6** व्यक्ति	**45** लाख रुपये

श्री ब्रह्मपाल सिंह
एच.एन.ओ.- 291 सेक्टर - 8
करनाल, हरियाणा, भारत

bpsinghchhikara@gmail.com
+91 9991322878

उद्यम: डेयरी परामर्श और पशु चारा और दवाइयों की तैयारी

मूल गतिविधि: "प्रशिक्षण के बाद, मैंने अपने उद्यम और दुकान को शुभम हेल्थ केयर के नाम पर पंजीकृत किया। मुख्य सेवाएं ग्रामीण डेयरी किसानों, मवेशी चारे की खुराक के आपूर्तिकर्ता, चेलेटेड खनिज मिश्रण पाउडर के साथ चेलेटेंड कालिरियम जेल को सीधे ग्रामीण डेयरी किसानों को बेच रहे हैं, ग्रामीण डेयरी किसानों को पशु स्वास्थ्य प्रबंधन और पशु चिकित्सा सेवाएं प्रदान करते हैं। ये सेवाएं दो राज्यों में प्रदान की जाती है - उत्तर प्रदेश और पंजाब" सिंह ने कहा।

कृषिउद्यमी: "50 साल की उम्र में, मैंने करनाल में अग्रणी पशु फ़ीड कंपनी से पौल्ट्री मेडिसिन एरिया सेल्स मैनेजर के रूप में अपना काम छोड़ दिया और पशु फ़ीड की अपनी तैयारी शुरू करने के लिए सोचा। वित्तीय बाधाओं की वजह से मैं पीछे रह गाया। हालांकि, कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना ने मुझे प्रोत्साहित किया और मेरा सपना सच हो गया", श्री ब्रम्हापाल सिंह (55) ने कहा। वे करनाल से डेयरी एक्सटेंशन में परास्नातक की उपाधि प्राप्त किए हैं। ब्रम्हपाल को इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीबिजनेस प्रोफेशनल (आईएसएपी)-कर्नाल में उद्यमिता प्रशिक्षण दिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 गांवों से 500 किसान	1 व्यक्ति	15 लाख रुपये

डॉ मुदासिर रशीद
जरोका पार्क, सफपोरा,
जिला - गांदरबल,
जम्मू और कश्मीर, भारत

mudasir.rather0@gmail.com
+91 9906838739
+91 8715843753

उद्यम: पशु फ़ीड सेवन और बिक्री पर परामर्श

मूल गतिविधि: "पर्ल एग्रीफीड स्पॉट" मवेशी, मुर्गी और मत्स्य पालन के लिए सभी प्रकार की फीड और चारे का भंडारण है। 150 से अधिक उत्पाद आज सामान्य दरों अजेय कीमतों पर उपलब्ध हैं। कंपनी के प्रमुख उत्पादों को दुकान में रखा जाता है। इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्री-बिजनेस प्रोफेशनल (आईएसएपी), श्रीनगर के नोडल अधिकारी ने रुपये 5/- लाख के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने में मदद की। मैंने जम्मू-कश्मीर बैंक, सफापोरा शाखा को आवेदन किया और ऋण मंजूर हुई । मैंने पांच से अधिक पशु फ़ीड कंपनियों के साथ साझेदारी की। डेयरी फार्म के दौरे के साथ मेरा दिन शुरू होता है। दौरे के बाद मैं आवश्यक मांगों की गणना करता हूं और किसानों के दरवाजे पर जाकर सेवा करता हूं। मैं जम्मू के पशुपालन राज्य विभाग के कर्मचारियों के साथ टीकाकरण शिविरों के आयोजन में शामिल होता हूं, "मुदासिर ने कहा।

कृषिउद्यमी: डॉ मुदासिर राशीद (32) जम्मू-कश्मीर से मत्स्य विज्ञान में डॉक्टरेट हैं। वे कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत एक प्रशिक्षित एग्रिप्रेन्यूर हैं। एक जानवर की बढ़ने की प्रजनन एवं अन्य उतपादन जैसे दूध, ऊन, मसौदा शक्ति और परिवहन जैसे लेने के लिए प्रोटीन, खनिज, विटामिन और पानी के रूप में आवश्यक पोषक तत्व प्रदान किए जाने चाहिए। इसलिए मैंने पशु फ़ीड की दुकान खोलने का फैसला किया "डॉ मुदासिर ने समझाया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
भारत के **8** राज्य	**13** व्यक्ति	**15** करोड़ रुपये

डॉ अजय कुमार तोमर
प्लॉट नंबर.28, फोर्ड शोरूम के पीछे, रामदेव राइस मिल के पास, जीटी रोड, करनाल, हरियाणा-1302001, भारत
skylinenutritions@gmail.com
info@skylinenutrition.net
+91860 777 7086

उद्यम: पशु चिकित्सा उत्पादों की तैयारी और विपणन, पशु चिकित्सा दवाएं, पशु चिकित्सा पोषक तत्व पूरक, पशु चिकित्सा फ़ीड पूरक।

मूल गतिविधि: "स्काईलाइन न्यूट्रिशन (प्र.) लिमिटेड भारत का एक प्रसिद्ध निर्माता, आपूर्तिकर्ता और निर्यातक के रूप में विश्व स्तरीय पशु चिकित्सा उत्पादों को उपलब्ध करा रहा है। पशु चिकित्सा उत्पादों में पशु चिकित्सा दवाओं, पशु आवश्यक पोषक तत्व पूरक और पशु चिकित्सा फ़ीड पूरक शामिल है। कंपनी ने सर्वोत्तम गुणवत्ता वाले पशु चिकित्सा उत्पादों की तैयारी के लिए विश्वव्यापी प्रशंसा प्राप्त की है। हमारे सभी पशु चिकित्सा उत्पाद, हमारी उत्पादन इकाई में नवीनतम तकनीक और उपकरणों का उपयोग करके तैयार की जाती है। इसके अलावा, हमारे विदेशी वितरण नेटवर्क ने हमें दुनिया भर में पशु चिकित्सा उत्पादों के आर्डर को त्वरित और समय पर वितरण में समर्थन दे रहा है" अजय कुमार तोमर ने बताया।

कृषिउद्यमी: "कंपनी प्रारंभ करने से पहले, मैं इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्री-बिजनेस प्रोफेशनल (आईएसएपी), करनाल" में आयोजित दो महीने के प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित हुआ था, डॉ. तोमर ने कहा। डॉ तोमर हरियाणा के करनाल में पशु पोषण में डॉक्टरेट प्राप्त एक नामी कृषि उद्यमी है। वर्ष 2010 में स्काईलाइन पोषण (प्र.) की स्थापना की गई है, डॉ. तोमर के दिशानिर्देश पर चलते हुए यह कंपनी सफलता के मार्ग पर आगे बढ़ रही है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
25 गांवों से 300 किसान	3 व्यक्ति	20 लाख रुपये

श्री इंद्र राज जाट
ग्राम- तिगरिया, वाया- इटवा भोपजी, तहसील- चोमू जिला- जयपुर, पिनकोड -303804, राजस्थान, भारत

indrarajjat41@gmail.com
+91 9667090201

उद्यम: खुले मैदान सब्जी अंकुरों की वृद्धि करना और परामर्श

मूल गतिविधि: "खेती मेरे परिवार का पैतृक व्यवसाय है। किसी वित्तीय सहायता के बिना अतिरिक्त आय के लिए मैंने खुले मैदान में नर्सरी बढ़ाना शुरू किया। मैं टमाटर, बैंगन, मिर्च, कद्दू, करेला और तुराई के अंकुरों को बेचता था। हाल ही में, मैंने वायरल रोग के नियंत्रण पर खेती की लागत से बचने के लिए किसानों को रेडीमेड ककड़ी के अंकुरों की आपूर्ति करना शुरू किया। इंद्र ने कहा कि मैं सब्जियों की खेती के लिए आवश्यक कृषि-इनपुट की बिक्री के लिए कृषि कंपनियों के साथ सहयोग करके अपना कारोबार बढ़ा रहा हूं।

कृषिउद्यमी: "सब्जी नर्सरी एक ऐसी जगह है जहाँ छोटे सब्जियों के पौधों को संभाला जाता है जब तक वे स्थायी रूप से रोपण के लिए तैयार नहीं हो जाते । राजस्थान के जयपुर जिले के तिगारीया गांव से श्री इंद्र राज जाट (29) ने कहा, "मैंने पौधे को बढ़ाने के लिए खुली मैदान नर्सरी का इस्तेमाल किया।" "बागवानी होने के नाते, मैंने हमेशा फल और सब्जियों की गुणवत्ता के उत्पादन की आपूर्ति करने का सपना देखा। मैंने अपने 5 एकड़ क्षेत्र में सब्जी नर्सरी स्थापित करके अपना उद्यम शुरू किया। वे प्रशिक्षित एग्रिप्रेन्यूर हैं और उन्होंने इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्री-बिजनेस प्रोफेशनल (आईएसएपी), चोमू, जयपुर में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
100 गांवों से **5000** किसान	**2** व्यक्ति	**1** करोड़ रुपये

श्री मीर गोहवार
कुरसो राजबाग, श्रीनगर,
जम्मू और कश्मीर, भारत

gowharonline2@yahoo.co.in
+91 9797203954

उद्यम: सेब फसल की खेती के लिए इनपुटों का विपणन

मूल गतिविधि: "रुपये 35 लाख की कुल लागत इनपुटों का दुकान शुरू करने के लिए निवेश किया गया था। श्रीनगर सेब उत्पादन का मुख्य केंद्र है। अधिकांश किसान सेब की खेती कर रहे हैं, इसलिए मैंने सेब उत्पादकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए दुकान में सभी इनपुट उपलब्ध कराने का फैसला किया। "इसके अतिरिक्त, मैं कीटों और बीमारियों, उनकी पहचान और नियंत्रण के बारे में जानकारी देने के अलावा सांस्कृतिक प्रथाओं से सेब की खेती के लिए वैज्ञानिक पैकेज भी देता हूं।

कृषिउद्यमी: श्री मीर गोहर (40) श्रीनगर से कृषि विज्ञान में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त मास्टर हैं। अपनी पढ़ाई पूरा करने के बाद उन्होंने निजी कृषि कंपनियों में 5 साल तक काम किया। स्वयं का मालिक होने का सपना देखने के कारण, उन्होंने नौकरी छोड़ दी और वैकल्पिक कमाई स्रोतों की खोज शुरू कर दी। इस अवधि के दौरान, उन्हें कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के बारे में सूचना मिली। उन्होंने इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्री-बिजनेस प्रोफेशनल (आईएसएपी), श्रीनगर में नोडल अधिकारी से संपर्क किया और इस योजना के बारे में सारी जानकारी प्राप्त की। तुरंत वे इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हो गए।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
महाराष्ट्र के **5000** किसान	**2** व्यक्ति	**5** लाख रुपये

श्री सचिन मालकर
वेंकटेश लॉन के सामने, नवाथे
प्लॉट स्क्वायर के पास,
जिला- अमरावती, महाराष्ट्र, भारत

malkarsagro03@gmail.com
+91 9823360831

उद्योग: मृदा परीक्षण प्रयोगशाला और मसालों के फसल की खेती पर परामर्श

मूल गतिविधि: एसी और एबीसी योजना के क्रेडिट संघटक के तहत श्री माल्कर ने स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, उमार्खेड शाखा से 5 लाख रुपये बैंक ऋण का लाभ उठाया। इस वित्त ने उन्हें नई मृदा परीक्षण किट खरीदने और व्यापार का विस्तार करने में मदद की। प्रशिक्षण के दौरान उन्होंने जाना कि विस्तार सेवाएं किसानों के क्षेत्र तक पहुंचने का प्रवेश द्वार का काम करती है। उन्होंने साथ-साथ कृषि परामर्श देना भी शुरू किया। वह विशेष रूप से हल्दी फसल और फल फसलों पर परामर्श दे रहे है। उनके मार्गदर्शन में महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में 1000 हेक्टेयर भूमि में हल्दी की खेती की जा रही है।

कृषिउद्यमी: डॉ. पंजाबराव कृषि विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र से कृषि विज्ञान में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त अमरावती में जन्मे, श्री सचिन मालकर (41) ने शुरुआत में मृदा परीक्षण प्रयोगशाला की स्थापना कर के अपना कैरियर शुरू किया। व्यवसाय में उद्यमिता कौशल की कमी के कारण, उनकी प्रयोगशाला लगभग जब्ती की स्थिति पर आ गयी थी। सौभाग्य से वे कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के बारे में जानकारी प्राप्त किए । वे योजना के भारी लाभ से आश्वस्त थे। उन्हें सूचित किया गया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम पूणे के मिटकॉन कंसल्टेंसी में आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने नोडल अधिकारी से संपर्क किया और प्रशिक्षण के लिए पंजीकरण किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
9 गांवों से 400 किसान	2 व्यक्ति	6 लाख रुपये

श्री महेंद्र मारुति मोहिते
सुपुत्र - मारुति, बेलावाडे
पोस्ट एवं बीके - सातारा,
पिनकोड-415539 महाराष्ट्र,
भारत

mahindramohite51@gmail.com
+91 9011121384

उद्यम: कस्टम हाइरिंग सेंटर

मूल गतिविधि: एसी और एबीसी प्रशिक्षण के बाद श्री महेंद्र मारुति मोहित ने कस्टम हायरिंग केंद्र स्थापित करने के लिए रूपए 20 लाख बैंक ऋण के लिए आवेदन किया। बैंक ऑफ इंडिया, मलकपुर शाखा ने ऋण मंजूर कर दी। जेसीबी कार्यों की मांग को देखकर अपने क्षेत्र में, उन्होंने जेसीबी मशीन को ट्रैक्टर के साथ खरीदा और मशीनों को किराए पर दे रहे हैं। वह मशीनरी खेतों में तालाब खोदने, भूमि को समतल बनाने , पाइप लाइन डालने, क्षेत्र सीमा को निधारित करने, छतों को उपयुक्त बनाने, नहरों पर ब्रिज डालने आदि के लिए किराए पर लिया जाता है। "बहुसंख्यक किसान मानसून की शुरुआत से पहले जल संरक्षण कार्यों पर जेसीबी की मांग करते हैं। 9 गांवों से 500 से अधिक किसानों को प्रदान किए गए वाटरशेड संरक्षण कार्यों को देखने के बाद नाबार्ड ने मुझे 36 प्रतिशत सब्सिडी दी है।" महेंद्र ने कहा।

कृषिउद्यमी: कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, सांगली ने ग्रामीण युवाओं के लिए लंबी अवधि के कौशल उन्मुख उद्यमशीलता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। श्री महेंद्र मोहित (24) को प्रशिक्षण कार्यक्रम और इसके भारी लाभों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। उन्हें लाभ से आश्वस्त किया गया और कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए नोडल अधिकारी से संपर्क किया गया। श्री महेंद्र कृषि स्नातक हैं और महाराष्ट्र के सतारा से हैं।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
12 गांवों से 600 किसान	3 व्यक्ति और 3 अकुशल व्यक्ति	1 करोड़ रुपये

श्री मंगेश घनश्याम रोडगे
घनश्याम बी. रोडगे,
ग्राम-मोर्शी, अमरावती,
महाराष्ट्र, पिन-444905, भारत

mgrodge@rediffmail.com
+91 9112020700

उद्यम: फलों के बागों पर परामर्श और कृषि इनपुट का व्यापार

मूल गतिविधि: "एसी और एबीसी योजना के क्रेडिट घटक के तहत, मुझे रु. 12 लाख सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, मोर्शि शाखा से प्राप्त हुआ। अपनी पूंजी और बैंक ऋण के साथ, मैंने अपनी दुकान की स्थापना की और बीज, उर्वरक और कीटनाशकों के व्यापार में जुट गया। इसके अतिरिक्त, मैं नारंगी, कपास और सब्जी फसलों पर फसल परामर्श भी देता हूं। हर फसल के मौसम के शुरू होने से पहले मिट्टी के नमूने के संग्रह के साथ सलाहकारी शुरू होती है। मैं नियमित रूप से किसानों का सम्मेलन, क्षेत्र प्रदर्शन, हाई-टेक कृषि पर क्षेत्र दिवस का आयोजन करता हूँ" मंगेश ने कहा।

कृषिउद्यमी: संतोषजनक फसल उपज प्राप्त करने के लिए अच्छी गुणवत्ता और कृषि इनपुटों का औचित्यपूर्ण उपयोग आवश्यक है और किसान अक्सर व्यापारियों द्वारा धोखा खाते है और नकली बीज अधिक कीमतों पर खरीदते हैं। इस संदर्भ में, कृषि विज्ञान केंद्र, दुर्गापुर (बदनेरा), अमरावती ने कृषि-पेशेवरों को स्व-रोजगार और विस्तार सेवाएं प्रदान करने के लिए कृषि-पेशेवरों को प्रशिक्षित करने के लिए कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रमों की व्यवस्था की। श्री मंगेश रोडगे (37) ने कहा, "मेरे उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रम के बाद से मैं केवीके-अमरावती से जुड़ा हुआ हूँ"। वे महाराष्ट्र राज्य के अमरावती जिले के एक कृषि उद्यमी है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
11 गांवों से **350** किसान	**6** व्यक्ति	**30** लाख रुपये

श्री सुनील कुमार राठी
ग्राम-मुदलाना, तहसील-गोहाना,
जिला सोनीपत, करनाल,
हरियाणा, भारत

sejalfoods@gmail.com
+91 9996520096

उद्यम: फल प्रसंस्करण इकाई और परामर्श

मूल गतिविधि: "प्रशिक्षण के बाद, तीन महीने के भीतर, रुपये 20 लाख का ऋण पंजाब नेशनल बैंक, गोहाना शाखा से मंजूर किया गया। प्रारंभ में, उन्होंने अपनी पूरी 7 एकड़ भूमि में टमाटर की खेती शुरू कर दी थी और इसके उपरांत शहर में टमाटर सॉस और बिक्री प्रसंस्करण शुरू कर दिया उसके तुरंत बाद 1000 टन टमाटर सॉस के लिए ऑर्डर मिला। फिर उसने आसपास के किसानों के साथ टमाटर की खरीद के लिए एग्रीमेंट किया। उन्होंने टमाटर सॉस, स्क्वैश, जाम, शीतल पेय इत्यादि का उत्पादन आरंभ किया।

कृषिउद्यमी: सुनील कुमार (28) ने कृषि विज्ञान में स्नातक की डिग्री अर्जित की। वे हरियाणा के सोनीपत जिले के मुदलाना गांव के निवासी हैं। उन्होंने 1 टन / दिन की उत्पादन क्षमता के साथ खाद्य प्रसंस्करण इकाई शुरू की। स्नातक होने के बाद, उन्होंने कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र योजना के तहत उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। प्रशिक्षण के बाद वे सभी उद्यमिता कौशलों से लैस हो गए और व्यापार शुरू करने के लिए आत्मविश्वास भी बढ़ गया। इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीबिजनेस प्रोफेशनल (आईएसएपी) के नोडल अधिकारी, करनाल ने उन्हें विस्तृत 15/- लाख परियोजना रिपोर्ट तैयार करने में मदद की।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
7 गांवों से 480 किसान	1 व्यक्ति	5 लाख रुपये

श्री प्रद्युम्न उगर
ग्राम/पो. संकोनट्टी, तालुक - अथानी, जिला: बेलगाम
कर्नाटक पिन: 591304, कर्नाटक, भारत

pradyumnaugar@gmail.com
+91 9481104037

उद्यम: डेयरी खेती, परामर्श और दूध संग्रह केंद्र

मूल गतिविधि: सिंडिकेट बैंक अथानी शाखा बेलगाम, द्वारा वित्त प्रद्युम्न उगर को डेयरी स्थापित करने के लिए 5/- लाख की वित्तीय सहायता की वे डेयरी सलाहकारिता में शामिल थे और इसके अतिरिक्त उन्होंने दूध संग्रह केंद्र खोला था और प्रति दिन 150 लीटर दूध इकट्ठा करने लगे। प्रद्युम्न के मार्गदर्शन में 7 गांवों में बीस वर्मी-कंपोस्ट इकाइयाँ विकसित की गई है।

कृषिउद्यमी: "उचित व्यापार योजना और अच्छी देखभाल और प्रबंधन किसी भी प्रकार के व्यापार में अधिकतम मुनाफा सुनिश्चित कर सकते हैं। श्री प्रद्युम्न उगर (33) ने कहा दो गायों वाली डेयरी भी पूरे साल परिवार का भरण-पोषण कर सकती है। वे डेयरी में डिप्लोमा कर चुके है है और कर्नाटक के बेलगाम जिले के संकोनट्टी गांव में स्थित है, एक छोटी सी डायरी चला रहें है और वैज्ञानिक डेयरी सलाहकारिता में भी शामिल है। वह 1000/- रुपया प्रतिव्यक्ति 7 दिनों के लिए चार्ज करते हैं । श्रीराम ग्रामीण संसद भवन विकास प्रतिष्ठान, बेलगाम में आयोजित कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्रों (एसी और एबीसी) योजना के तहत उद्यमशीलता प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद, उन्होंने डेयरी में शामिल होने का फैसला किया। शाकाहारी और मांसाहारी आबादी दोनों वर्गों द्वारा दूध का सेवन किया जा सकता और दूध के लिए बाजार उपलब्धता की कोई समस्या नहीं है। उन्होंने सीखा, मवेशियों के पालन के बिना भी हम डेयरी व्यापार शुरू कर सकते हैं और उन्होंने इसे साबित कर दिखाया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
20 गांवों से **400** किसान	**4** व्यक्ति	**25** लाख रुपये

श्री सुमित किशोर सांघवी
ग्राम/पो. - प्लॉट नंबर 117, विशनजी नगर, बाल गंधर्व नाट्य गृह के पास, जलगांव, महाराष्ट्र -425001, भारत

sks7058551111@gmail.com
+91 0705855111

उद्यम: सूक्ष्म पोषक तत्वों के उतपादन की इकाई

मूल गतिविधि: 15/- लाख रुपये की अपनी पूंजी निवेश के साथ जैन बायोसाइंस प्रा. लिमिटेड के नाम पर जलगांव जिले के पचौरा गांव में एक शोध और विकास (आर एंड डी) प्रयोगशाला स्थापित की गई है। चार कुशल व्यक्तियों की सहायता से इसकी स्थापना हुई। इसमें दस जैव-उर्वरक एवं सूक्ष्मपोषक तत्वों का उत्पादन किया गया और वे उपयोग के लिए तैयार है। विपणन के लिए, श्री सुमित किशोर सांघवी ने जलगांव जिले के केला फसल के क्षेत्र में से 50 खुदरा विक्रेताओं के साथ भागीदारी की। कंसल्टेंसी वाले किसानों के माध्यम से प्रत्यक्ष बिक्री को बढ़ावा देने का अभ्यास किया", सुमित सांघवी ने कहा।

कृषिउद्यमी: "महाराष्ट्र के जलगांव जिला केले की खेती के लिए मशहूर है। केले की फसल में जिंक की कमी तभी पता चलता है जब उसे जिंक की कमी वाली मिट्टी में बढ़ाया जाता है। इसका लक्षण सेकन्डरी वेईन्स में पीले से सफेद धारियों के साथ, पत्तियों को मुरझा जाने का कारण बनता है। गंभीर रूप से प्रभावित पौधों में फल विकास भी धीमी हो जाती है। गुच्छा एक अपेक्षाकृत लंबी अवधि के लिए गुच्छा पीला और सतही हो जाता है। महाराष्ट्र के जलगांव जिले से कृषि में स्नातक श्री सुमित किशोर सांघवी (24) ने कहा, जिंक की कमी और अन्य तत्वों की पूर्ती के लिए, मैं सूक्ष्म पोषक तत्वों के उत्पादन में शामिल हुआ हूं। उद्यमिता कौशल हासिल करने के लिए, सुमित ने कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, जलगांव में प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 गांवों से 400 किसान	1 व्यक्ति	30 लाख रुपये

श्री महेश वसंत रंदाले
ग्राम/पो. - कुरहे पंचे, जामनेर रोड, तालुक - भुसावल, जिला - जलगाँव-425311, महाराष्ट्र, भारत

maheshagrocenter@gmail.com
+91 9420270856

एंटरप्राइज़: खुले क्षेत्र में फ्लोरिकल्चर और परामर्श

मूल गतिविधि: प्रशिक्षण के बाद, महेश खुले मैदान में फूलों की खेती करना प्रारंभ किए थे और आसपास के किसानों को आवश्यक सलाह देते थे। फूलों के लिए साल भर बाजार में होती आवश्यकता को देखते हुए, किसान खुले मैदान में फूलों की खेती करने के लिए आगे आए। साथ ही महेश ने फूलों की खेती के लिए इनपुट की आपूर्ति करने के लिए कृषि-इनपुट दुकान भी खोला है

कृषिउद्यमी: "फ्लोरिकल्चर कृषि समुदाय के आर्थिक विकास के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करती है। एक एकड़ या उससे अधिक की भूमि प्राप्त कोई भी किसान पास के शहरों में उपलब्ध विपणन अवसरों के आधार पर फूलों की खेती शुरू कर सकता है। यदि छोटे और सीमांत किसान अन्य फसलों के अलावा जैस्मीन, क्रॉसेंड्रा, मैरीगोल्ड, ट्यूब-गुलाब, वार्षिक क्रिसान्थिमम और गुलाब की खेती करने जा रहे हैं, तो वे अपनी आजीविका कमा सकते हैं", श्री महेश वसंत रंडाले (46) ने महाराष्ट्र के जलगांव जिले के कुरे पनाचे गांव से कृषि स्नातक की उपाधि प्राप्त की । श्री महेश ने कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, जलगांव में आयोजित उद्यमशीलता कौशल प्रशिक्षण में भाग लिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 गांवों से **300** किसान	**1** व्यक्ति	**5** लाख रुपये

श्री महेश्वर गोराइन
ग्राम - मलदीन, पो- डोरोडिन,
Ps- केंडा, जिला- पुरुलिया,
पश्चिम बंगाल,
पिनकोड -723102, भारत

+91 09933993270

उद्यम: कम लागत मुर्गी पालन और परामर्श

मूल गतिविधि: "रुपये 2.00 लाख के अपने निवेश के साथ मैंने 2500 ब्रोइलर पक्षियों की एक पौल्ट्री इकाई की स्थापना की। इकाई को प्रकाश और हवा के लिए पर्याप्त स्रोत के साथ छप्पर बनाया है। श्री महेश्वर ने चिकन बेचने के लिए अपनी योजनाएं बनाईं। वह 100 से अधिक मुर्गियों को रखता है। हर बार जब ग्राहक अपने पौल्ट्री में आते हैं उन्हें दिखाता था। "लोग पक्षियों को देखते हैं और कीमत को कम करने की कोशिश करते हैं, लेकिन जब मैं उन्हें मुर्गियों की वजन महसूस करने देता हूं, तो वे अब सौदा नहीं करते हैं क्योंकि पक्षी भारी, ताजा और स्वस्थ रहती हैं।" श्री महेश्वर ने जारी रखा। "ये मुर्गियां धन का स्रोत हैं क्योंकि वे मुझे कम से कम एक महीने में रु.15000 देती है जो ज्यादातर, मुर्गियों से है और बाकी के खाद से। "श्री महेश्वर ने ग्रामीण युवाओं को पौल्ट्री रखने की सलाह देते है।

कृषिउद्यमी: "पौल्ट्री उद्योग को रोजगार सृजक और पोषण और खाद्य सुरक्षा में वृद्धि के माध्यम से पश्चिम बंगाल राज्य की अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख योगदानकर्ता के रूप में जाना जाता है। कृषि में एक योग्य स्नातक श्री महेश्वर गोराइन (25) ने कहा इन योगदानों के बावजूद, पौल्ट्री उद्योग को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिनके समाधान की आवश्यकता हैं। पैतृक खेती मेरे परिवार की एक मात्र आजीविका का साधन था। शिक्षा प्राप्त करने के बाद मैं कृषि-व्यवसाय पेशेवरों के लिए आसनसोल के इंडियान सोसाईटी ऑफ एग्रिबिजिनेस प्रोफेशनल्स में कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र योजना के तहत दो महीने के आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हो गया। यह मेरे जीवन का महत्वपूर्ण पड़ाव था।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
28 गांवों से 1500 किसान	3 व्यक्ति	50 लाख रुपये

श्री रामेश्वर सिंह
ज्ञानपुर जिला - भदोही,
उत्तर प्रदेश,
भारत

takatsingh2015@gmail.com
+91 8736098126

उद्यम: जैविक खेती का प्रचार और कृषि परामर्श

मूल गतिविधि: "रुपये 5/- लाख की अपनी बचत के साथ मैंने अपना कृषि क्लिनिक स्थापित किया। मैंने नौ कृषि-कंपनियों के साथ औपचारिक समझौते किया, इसके अलावा पांच गांवों में खुदरा व्यापार केंद्र स्थापित किया जहां से किसान कृषि-इनपुट खरीद सकते हैं। मैंने बेरोजगार ग्रामीण युवाओं को नियुक्त किया। मुझे इफको (आईएफएफसीओ) एजेंसी से सब्सिडी वाले उर्वरक बेचने का लाइसेंस मिला। मैंने किसानों को पंजीकृत किया और प्राप्त भूमि और फसल पैटर्न के अनुसार, उर्वरकों का वितरण कार्य शुरू किया । मिट्टी परीक्षण के महत्व को सिखाने के लिए किसान प्रशिक्षण केंद्र खोला है। भविष्य में मैं विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना चाहता हूँ।" रामेश्वर ने कहा।

कृषिउद्यमी: श्री रामेश्वर सिंह (42) ने कृषि में स्नातक की उपाधि प्राप्त की और वे अपने गांव ज्ञानपुर के प्रगतिशील किसानों में से एक है। वे अपने ग्राम पंचायत के सक्रिय सदस्य है। एक बार उन्होंने कृषि-क्लिनिक्स और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना पर कृषि विज्ञान केंद्र कौशम्बी (यूपी) द्वारा आयोजित एक अभिविन्यास कार्यक्रम में भाग लिया था। वह एसी और एबीसी योजना के तहत सूचित लाभ और विस्तार सेवाओं से आश्वस्त थे। उसके बाद, उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), कौशम्बी से संपर्क किया और दो महीने के आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

चौधरी डेयरी

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
24 गांवों से 150 किसान	7 व्यक्ति	25 लाख रुपये

श्री मनीष चौधरी
सुपुत्र: राजेंद्र सिंह, अलंकार भवन, हनुमान रोड, शामली, उत्तर प्रदेश, भारत

manish01282364@gmail.com
+91 9927203264

उद्यम: वाणिज्यिक डेयरी पालन और प्रशिक्षण केंद्र

मूल गतिविधि: "रुपये 40 लाख का वित्त मैने अपने सिमधाल्का गांव से मिनी कामधेनु योजना के तहत प्राप्त किया । उत्तर प्रदेश में उच्च गुणवत्ता वाले दूध उत्पादक पशुओं का जन्म और उपलब्धता की सुरक्षा के लिए, मैंने एचएफ, जर्सी, साहिवाल, गिर और राठी गायों को खरीदा। लगभग मेरे पास इन नस्लों की 55 गायें हैं। मेरे डेयरी में इनके अलावा 8 बैल भी हैं। किसान अपनी गायों को संभोग करवाने की सेवाएं ले रहे हैं। मैंने अपने डेयरी फार्म को एक बीघा जमीन में विकसित किया है। मैं साल भर पानी और हरे चारे की खेती की व्यवस्था करता हूं" मनीष ने कहा।

कृषिउद्यमी: "कामधेनु योजना वर्ष 2013 में उत्तर प्रदेश में उच्च उपज वाले रोगाणु प्लाज़्मा जानवरों की कम उपलब्धता को पार करने के लिए प्रारंभ की गई एक डेयरी योजना है। कृषि-क्लिनिक्स और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षित कृषि उद्यमी होने और डेयरी उद्यम की स्थापना के बाद, प्रशिक्षण संस्थान श्री माँ गुरु ग्रामोद्योग संस्थान, वाराणसी के मेरे नोडल अधिकारी द्वारा 40 लाख की मिनी कामधेनु योजना का लाभ उठाने के लिए मेरा नाम सुझाया गया" कृषि में स्नातक श्री मनीष चौधरी (45) ने कहा।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 गांवों से **150** किसान	**4** कुशल और **10** अकुशल श्रमिक	**30** लाख रुपये

श्री भानु भास्कर सिंह
ग्राम - धुरिया बगही,
पोस्ट- सांडी जिला- सोनभद्र
-231213, उत्तर प्रदेश, भारत

bhanu3935@gmail.com
+91 8960682646,
+91 9415288912

उद्यम: जैविक खेती व्यवसाय और जैविक खेती पर परामर्श

मूल गतिविधि: 20 लाख रुपये सिंडिकेट बैंक, सिद्धि कला नाई बाज़ार शाखा, सोनभद्र से कर्ज लिया गया। उन्होंने स्वदेशी नस्ल यानी साहिवाल, गिर और गंगातीरी खरीदी। कुल दूध संग्रह 40-50 लीटर है। "इसके अतिरिक्त, मैं वर्मी-कंपोस्ट की तैयारी कर रहा हूं और अपने 76 एकड़ भूमि में इस खाद का उपयोग करता हूं। उसमें से 20 एकड़ व्यवस्थित रूप से जैविक खेती की जाती है। धीरे-धीरे मैं सभी भूमि को जैविक खेती में बदल दूंगा। अधिकांश किसानों को जैविक खेती करने के लिए सलाह दी जाती है। विस्तार सेवाओं को देखकर नाबार्ड ने 36 प्रतिशत सब्सिडी प्रदान की है" भानु ने कहा।

कृषिउद्यमी: भारत में, लगभग सभी क्षेत्र डेयरी पालन व्यवसाय की स्थापना के लिए उपयुक्त हैं। भारत में अधिकांश डेयरी किसान जानवरों का पालन परंपरागत रूप से कर रहे हैं, वे डेयरी पालन के लिए बेहतर तकनीकों के बारे में नहीं जानते हैं। नतीजतन, कुछ किसान लाभान्वित होने के बजाय नष्ट प्राप्त कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले के धुरीया बगही गांव के कृषि स्नातक श्री भानु भास्कर सिंह (31) ने कहा कि मैं डेयरी पालन में चार साल से शामिल हूँ और लाभ प्राप्त कर रहा हूँ।" श्री भानु कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत एक प्रशिक्षित एग्रिप्रेन्यूर है।

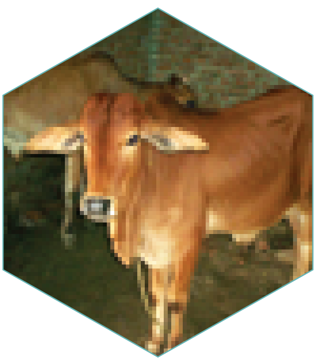

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
16 गांवों से **1600** किसान	**3** व्यक्ति	**69** लाख रुपये

श्री रंजीत कुमार शुक्ल
सुपुत्र - राज कुमार शुक्ला,
ग्राम - बाँसगंज, पोस्ट, परे भोजाई
तहसील- गोंडा,
पिन: 271126, उत्तर प्रदेश, भारत
ranjeetkumarshukla712@gmail.com
+91 09005057294

उद्यम: कृषि-इनपुट की बिक्री और जैविक खेती पर कृषि परामर्श

मूल गतिविधि: यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, खारखार शाखा से प्राप्त रू.5 लाख वित्त से श्री रणजीत कुमार शुक्ला ने कृषि-क्लिनिक की स्थापना की। उन्होंने 15 खुदरा विक्रेताओं के साथ अपने कारोबार का नेटवर्क स्थापित किया। उन्होंने गांव के अनुसार एग्रि शॉप की स्थापना की जिससे किसान अपने गांव में गुणवत्तापूर्ण कृषि इनपुट खरीद सके। उन्होंने 15 प्रमुख कृषि कंपनियों के डीलरशिप ली। प्रमुख जैविक कृषि उत्पाद इस दुकान में उपलब्ध हैं। रंजीत किसान मेले, कृषि तकनीक पर परिणाम उन्मुख प्रदर्शन आदि का आयोजन कर रहे हैं। उनकी विस्तार सेवाओं को देखकर, नाबार्ड ने उन्हें 36 प्रतिशत सब्सिडी प्रदान की है।

कृषिउद्यमी: "वर्मीकंपोस्ट एक नवीकरणीय और पर्यावरण अनुकूल संसाधन है। यह पूरी तरह से प्राकृतिक उत्पाद है वर्मी कंपोस्ट रासायनिक उर्वरक डालने की आवश्यकता को कम करने में मदद कर सकता है, जो पारिस्थितिकीय दृष्टिकोण से कम उपयोग करने वाला अभ्यास है। "श्री रंजीत कुमार शुक्ल (22) कृषि विज्ञान में डिग्री की उपाधि प्राप्त और जैविक खेती को बढ़ावा देने में पूरी तरह से शामिल है। श्री रंजीत कृषि-क्लिनिक्स और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत एक प्रशिक्षित एग्रिप्रेन्यूर है। वह श्री माँ गुरु ग्रामोद्योग संस्थान, (एसएमजीजीएस) वाराणसी, नोडल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, जहां उन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त किया था, में भविष्य के एग्रिप्रेन्यूरों को पढ़ाने के लिए वर्मी-कंपोस्ट के निर्माण के लिए एक संसाधक व्यक्ति है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
6 गांवों से 50 किसान	4 व्यक्ति	10 लाख रुपये

श्री संजय रामदासजी सोनकुसरे
गाम/पो. - इन्डियन ऑयल पेट्रोल पंप के बगल में, वडासा रोड, अरमोरी, तालुक - आर्मोरी, जिला - गढ़चिरोली, पिनकोड-441208, महाराष्ट्र, भारत
omservoagency@rediffmail.com
+91 9423565241

उद्यम: मछली पालन और परामर्श

मूल गतिविधि: "प्रगतिशील किसान के परिवार के हाने से, मेरे माता-पिता ने मुझे मत्स्य उद्यम स्थापित करने के लिए समर्थन दिया" संजय ने कहा। मछली पालन के अपने पहले वर्ष की शुरुआत में, उन्होंने 3000 नंबर फिंगर लिंग्स को उत्पादित किया । प्रमुख कार्प्स रोहू, कटला, मृगल और कैटफ़िश थे। उसके मत्स्य पालन तालाब के लिए किसी पूरक खाद्य पदार्थ की आवश्यकता नहीं थी क्यों कि पशुपालन से प्राप्त अपशिष्ट मछलियों के लिए खाद्यपदार्थों के साथ-साथ फसलों के खाद जैसे भी उपयोग करना है। मछलियों को एक साल तक रखने के बाद उन्होंने 500 किलोग्राम मछली पाया, जिससे उन्होंने रुपये 150-350 / प्रति किलोग्राम बेच दिया, जिससे 85,000/- की शुद्ध आय प्राप्त हुआ। अगामी वर्षों में उन्होंने फिंगरलिंग्स को दोगुना कर दिया है। छह महीने में विक्रय के आंकड़े रु. 4 लाख से अधिक हुए। संजय ने कहा, "तालाब के नीचे की ओर मछलियों को अभी पकड़ना है" वे आसपास के गांवों के ग्रामीणों के बीच मछली पालन को बढ़ावा दे रहे है।

कृषिउद्यमी: श्री संजय रामदासजी सोनकुसरे (46) ने कृषि विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की और 0.3 हेक्टेयर के एक छोटे तालाब में मछली पालन करना शुरू कर दिया। "एक समय था जब मेरे धान क्षेत्र को चावल की खेती के बजाय मत्स्यपालन तालाब में बदलने के विचार से उसे इलाके के लोग मुझ पर हँसे थे क्योंकि उनका मानना था कि तालाब निर्माण समय की बर्बादी है और यह वांछित परिणाम कभी नहीं देगा" संजय ने कहा कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, नागपुर में कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत आयोजित उद्यमशीलता प्रशिक्षण के दौरान मुझे मछली पालन करने का विचार आया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
8 गांवों से **250** किसान	**1** व्यक्ति	**30** लाख रुपये

श्री रमेश कुमार पटेल
ग्राम- बैरवन (बानापुरा),
पोस्ट- गंगापुर, जिला- वाराणसी,
उत्तर प्रदेश, भारत

rameshpatel5394@gmail.com
+91 8808521926

उद्यम : मैरीगोल्ड फसल के लिए फार्म-इनपुट शॉप और नर्सरी चलाना

मूल गतिविधि: केजीएसबीबी बैंक, गंगापुर, वाराणसी से बैंक ऋण के रूप में 5/- लाख रुपये का लाभ प्राप्त, श्री रमेश कुमार पटेल ने आर के पटेल कृषि क्लिनिक और कृषि व्यापार केंद्र के नाम से कृषि इनपुट दुकान की स्थापना की। प्रारंभ में, मैं बीज और कीटनाशकों की बिक्री में शामिल था, इसके अतिरिक्त मैरीगोल्ड अंकुरों की बिक्री भी करता था। मैं फूलों की खेती को बढ़ावा दे रहा था और किसानों को मैरीगोल्ड की वैज्ञानिक खेती पर सलाह दे रहा था और दुकान से सभी आवश्यक कृषि-इनपुट बेचने लगा। रमेश ने कहा कि किसानों में फूलों की खेती को बढ़ावा देने पर अधिक ध्यान दे रहा हूँ।

कृषिउद्यमी: मैरीगोल्ड बगीचे की सजावट के लिए सबसे अधिक उगाए जाने वाले फूलों में से एक है और धार्मिक और सामाजिक कार्यों के लिए माला बनाने के लिए बड़े पैमाने इन पर इन फूलों का उपयोग किया जाता है। दशहरा और दीवाली के दौरान मैरीगोल्ड के फूलों की मांग बहुत अधिक रहती है। कृषि में माध्यमिक शिक्षा प्राप्त और उत्तर प्रदेश के वाराणसी शहर के पास बैरवन गांव में रहने वाले श्री रमेश कुमार पटेल (23) ने कहा, "मैरीगोल्ड की मांग को ध्यान में रखते हुए, मैं ने मैरीगोल्ड अंकुरों की आपूर्ति प्रारंभ की"। शिक्षा प्राप्ति के बाद, रमेश, श्री मां गुरु ग्रामोद्योग संस्थान (एसएमजीजीएस), वाराणसी में आयोजित कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत दो महीने के उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हुए।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
25 गांवों से 1500 किसान	3 व्यक्ति	60 लाख रुपये

श्री शंकषर्न शाही
ग्राम/पो. - गारेर, जिला- देवरिया, उत्तर प्रदेश, भारत

bfrdssahi@rediffmail.com
+91 09839190068

उद्यम: अक्षय ऊर्जा का प्रोत्साहन और कृषि परामर्श

मूल गतिविधि: रुपये 5/- लाख की एक विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार कर पूर्वांचल ग्रामीण बैंक, गारेर, देवरिया शाखा में जमा कर दिया गया और उन्हें ऋण मंजूर कर दी गयी। श्री शंकषर्न शाही ने कृषि-इनपुट की दुकान खोली और सलाहकार सेवाओं में शामिल रहें। उन्होंने धान की खेती में कई तकनीकों को बताया और टिलेज ऑपरेशन, वेराइटल सेक्शन, रेड्जेज और फोरस की तैयारी, आईएनएम, आईपीएम, फार्म मैकेनाइजेशन और हरी ऊर्जा बनाने में अक्षय ऊर्जा का उपयोग किया। 1500 से अधिक किसानों को प्रदान की गई विस्तार सेवाओं को पहचानते हुए नाबार्ड ने उन्हें 36 प्रतिशत सब्सिडी प्रदान की।

कृषिउद्यमी: श्री शंकषर्न शाही (34) उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के गारेर गांव से कृषि में योग्य स्नातक हैं और कृषि सलाहकार सेवाओं में शामिल हैं। श्री शंकषर्न श्री मां गुरु ग्रामोद्योग संस्थान (एसएमजीजीएस), वाराणसी से कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण प्राप्त कृषि उद्यमी हैं। प्रशिक्षण के दौरान उन्होंने विस्तार सेवाओं के महत्व को जाना, उन्होंने पाया कि स्थापित एग्रिप्रेन्यूर विस्तार सेवाएं प्रदान करते हैं और स्व-रोजगार सृजित करते हैं। उन्होंने विस्तार सेवा प्रदान करने में रूचि बढाली है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 गांवों से 350 किसान	1 व्यक्ति	10 लाख रुपये

श्री अवधेश कुमार
गाँव / पोस्ट-पारहिल, तहसील-इगलास, जिला - अलीगढ़, पिन कोड -204216, उत्तर प्रदेश, भारत

avdeshkumar245@gmail.com
+91 9410069541

उद्यम: हाइरिंग सेंटर और परामर्श

मूल गतिविधि: अवधेश के पास पहले से ही ट्रैक्टर और कुछ कृषि उपकरण थे, इसके अलावा उन्होंने रोटावेटर बुवाई एवं जुताई के लिए कल्टिवेटर और रोपाई के लिए सीड ड्रिल खरीदा । उन्होंने 5 स्प्रेयर भी जोड़ा इसके साथ किराए पर उपकरण देना आरंभ किया। उन्होंने हार्वेस्टर भी जोड़ा और उत्पादित फसल की कटाई के बाद भंडारण हेतु ले जाने के लिए एक ट्राली भी खरीदा। "मुझे मशीनों के लिए पहले से माँग प्राप्त हो रही है और यह समय पर सेवाएं प्रदान करने में मदद करता है। खेत में मशीनों की सेवा के लिए, मैंने शहर से एक मैकेनिक को भी किराए पर बुलाया है" अवधेश ने कहा।

कृषिउद्यमी: श्री अवधेश कुमार (24) के पास लगभग 12 एकड़ की कृषि भूमि है और उनका मुख्य व्यवसाय कृषि है। न्यूनतम योग्यता रखने वाले अवधेश खेती में शामिल थे। सालभर में वे मुख्य रूप से चावल, गेहूं, सरसों, दालें और सब्जियां बढाते थे। गांव में श्रमिकों की कमी ने उन्हें ट्रैक्टर और कुछ कृषि उपकरणों को खरीदने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कभी सोचा नहीं कि उपकरण उनके परिवार के लिए अतिरिक्त आय का स्रोत बन सकते हैं। अवधेश को कृषि और ग्रामीण विकास केंद्र (सीएआरडी) देबियापुर के प्रशिक्षण समन्वयक द्वारा कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के बारे में सूचित किया गया था और प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया था। अवधेश प्रशिक्षण में शामिल हो गए और पहली बार कस्टम हाईरिंग केंद्र की अवधारणा सीखी। उन्होंने कस्टम हाईरिंग केंद्र शुरू करने और किराए के आधार पर खेत के उपकरण उपलब्ध कराने का फैसला किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 गांवों से 150 किसान	2 व्यक्ति	20 लाख रुपये

श्री दीपक कैचेश्वर लुटे
ग्राम/पो. - एकरुफे, तालुक - राहता,
जिला- अहमदनगर,
महाराष्ट्र- 413719, भारत

deepaklute10@yahoo.co.in
+91 09766960555

उद्यम: बहु-आयामी डेयरी व्यवसाय और परामर्श

मूल गतिविधि: एसी और एबीसी प्रशिक्षण के बाद रुपये 5.00/- लाख की अपनी पूंजी निवेश करके श्री दीपक कचेश्वर लुटे ने 10 होल्स्टीन फ्राइज़ियन (एचएफ) गायों को खरीदा। उन्होंने गोशाला का निर्माण किया और पर्याप्त चारा, पानी, और पशुचिकित्सा सेवाएं आदि उपलब्ध कराई। दैनिक दूध उत्पादन 100 लीटर से अधिक था। वह अपने डेयरी फार्म से 'पंच कृष्ण डेयरी फार्म' राहता को दूध का विपणन कर रहा है। दूध का दर 28 रुपये / लीट थी। एक साल के भीतर उसका शुद्ध लाभ 25 लाख रुपये से अधिक हो गया। उनका नया विचार उन्हें डेयरी इकाई से निरंतर कमाई करने में मदद करता हैं। उन्होंने अपनी इकाई को सैलेज, वर्मी-कंपोस्टिंग, वर्मी-कल्चर इत्यादि की तैयारी के साथ जोड़ दिया है। वर्तमान में उनके पास 31 एचएफ गाये हैं और उनका उत्पादन प्रति दिन 375 लीटर दूध है। उनके पास 80 एम टी प्रति बैच क्षमता के साथ 2 सैलेज पिट भी है। उनके पास वर्मीकंपोस्टिंग यूनिट भी है जिसकी क्षमता 10 मीट्रिक टन प्रति बैच है। चारा संकट से बचने के लिए वह किसान से हरा चारा खरीद रहा है। उनके पास अपनी जमीन भी है और वह अपनी खुद की 5 एकड़ भूमि पर चारा उत्पादन कर रहा है। वह हरे चारे को काटता है और वर्ष भर जानवरों को हरी चारा खिलाने के लिए प्रदान करने के लिए सैलेज तैयार करता है।

कृषिउद्यमी: श्री दीपक लुटे (31) महाराष्ट्र राज्य के एखरुफे गांव के निवासी हैं और कृषि जैव प्रौद्योगिकी में स्नातक हैं। श्री दीपक ने मिल्क चिलिंग प्लैंट में तकनीकी सहायक के रूप में काम किया था। अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने अपनी डेयरी इकाई शुरू करने का विचार किया। उन्होंने नौकरी छोड़ दी और कृषि विज्ञान केंद्र, बाबलेश्वर में कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत उद्यमशीलता कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हो गए।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
6 गांवों से 150 किसान	1 व्यक्ति	15 लाख रुपये

श्री पवन शंकरराव गजबे
ग्राम - नरखेड़ तालुक - नरखेड़
जिला- नागपुर, पिनकोड- 441304, महाराष्ट्र, भारत

pawangajbe42@gmail.com
+91 9766018901

उद्यम: कुक्कुट पालन और परामर्श

मूल गतिविधि: एसी और एबीसी के क्रेडिट घटक ने उनका आत्मविश्वास बढ़ाया, श्री पवन शंकरराव गजबे ने बैंक ऑफ इंडिया, नारखेड शाखा से 14.90/- लाख रुपये का ऋण लिया। बैंक ऋण और अपनी पूंजी से 5000 पक्षियों के साथ पौल्ट्री इकाई स्थापित करने में सहायता प्राप्त हुई। माध्यम और बड़े आकार की कुक्कुट इकाई को फार्म के परिसर में बनाने के लिए विशेष विचारों की आवश्यकता होती है। पौल्ट्री शेड पक्षियों को प्रतिकूल जलवायु स्थितियों से बचाने और आर्थिक रूप से किफायती भी होना चाहिए। "मैंने वैज्ञानिक तरीके से नियंत्रित परिस्थिति में फीड देने पर विशेष ध्यान दिया। पवन ने कहा किसानों को पक्षी के चयन से लेकर विपणन तक पूर्ण परामर्श नियमित रूप से प्रदान किया जाता है। कुछ किसानों ने बै-बैंक मोड़ पर अनुबंध किए हैं। यदि पक्षियों के अनुकूल तरीकों और शर्तों के तहत उचित रूप से रख रखाव किया जाए तो पौल्ट्री व्यवसाय अत्यंत लाभदायक होगा।" पवन ने कहा।

कृषिउद्यमी: श्री पवन शंकरराव गजबे (29) नारखेड ब्लॉक से हैं और उन्होंने समर्पित और अभिनव उद्यमी के रूप में एक उदाहरण स्थापित किया है। श्री पवन एक शिक्षित व्यक्ति हैं और कृषि विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की है। कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के लाभों को देखकर कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, नागपुर में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हुए। प्रशिक्षण के दौरान उन्होंने लेखांकन, डीपीआर तैयारी, विपणन इत्यादि जैसी कई उपयोगी चीजें सीखीं।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
1 गांवों से **150** किसान	**2** व्यक्ति	**15** लाख रुपये

श्री जोतीराम भगवान यादव
ग्राम/पो.-संगरुल तालुक-करवीर
जिला-कोल्हापुर, महाराष्ट्र,
भारत

yadavbaban0260@gmail.com
+9109552408505

उद्यम: कुक्कुट पालन और परामर्श

मूल गतिविधि: उत्कर्ष पौल्ट्री फार्म एंड कंसल्टेंसी श्री जोतिराम द्वारा संगरुल गांव में स्थापित एक लोकप्रिय पौल्ट्री फार्म है। रुपये 2.5 लाख की अपनी पूंजी के साथ और बैंक ऑफ बड़ौदा, कोपार्ड शाखा से ऋण के रूप में 7.5 लाख उधार लिये गए। जिससे 5000 ब्रोइलर पक्षियों की एक इकाई स्थापित की गई। एक वर्ष में श्री जतिराम भगवान यादव पक्षियों के पांच बैच ले रहे हैं और रुपये 5/- लाख का लाभ प्राप्त कर रहे हैं। जोतिराम पौल्ट्री पर परामर्श में भी शामिल है। जोतिराम द्वारा संचालित सफल पौल्ट्री द्वारा प्रोत्साहित होकर 12 गांवों के 300 ग्रामीण युवाओं ने पौल्ट्री में प्रशिक्षण लिया और छोटे पैमाने पर पौल्ट्री फार्म लगाया।

कृषिउद्यमी: कोल्हापुर जिले के संगरुल गांव के निवासी श्री जोतिराम यादव (29) ने कृषि में डिप्लोमा धारक होने के साथ हजारों मील की यात्रा शुरू की है, वह 5000 ब्रोइलर पक्षियों की इकाई का पालन कर रहे हैं। उद्यमिता कौशल में शामिल होने के बाद कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन, उत्तूर में कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान उन्होंने एसी और एबीसी योजना के तहत ऋण और सब्सिडी के प्रावधानों पर ज्ञान प्राप्त किया, लेखाकार की मूल बातें, विपणन प्रबंधन, और उनके संचार कौशल विकसित हुए । प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान विभिन्न संस्थानों / संगठनों के संसाधक व्यक्तियों ने व्याख्यान दिया जो उनकी उद्यमशील क्षमताओं में सुधार के लिए उपयोगी थे।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
3 गांवों से 75 किसान	2 व्यक्ति	5 लाख रुपये

श्री रमेश कुमार गुप्ता
ग्राम - महम्मदपुर,
पो- केसरिया, पूर्वी चंपारण जिला,
बिहार, पिनकोड- 845428, भारत

ramesh18in @gmail.com
+91 9939701942

उद्यम: मशरूम की खेती और परामर्श

मुख्य गतिविधि: श्री रमेश कुमार गुप्ता ने न्यूनतम 70000/- का निवेश किया है। मशरूम की खेती के लिए 500 वर्ग फीट क्षेत्र में एक कच्चा शेड बनाने के लिए उन्होंने ऑयस्टर और बटन किस्मों के साथ मशरूम की खेती शुरू की। पहली कटाई के बाद से रुपये 20000/- प्रति माह का मुनाफा प्राप्त कर रहे हैं। रमेश मशरूम की खेती पर ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षण देते है। वह न केवल किसानों को तैयार खाद प्रदान करता है बल्कि अपने मशरूम उत्पादन को अच्छी तरह से स्थापित व्यापार नेटवर्क के माध्यम से बेचता है। मशरूम उत्पादन में, वह मशरूम बैग तैयार करने, तापमान प्रबंधन, स्ट्रिंग नेट तैयार करने और कम लागत वाले मशरूम की खेती पर ग्रामीण युवाओं को सलाह देने के लिए विभिन्न कम लागत वाले तरीकों का उपयोग कर रहे हैं।

कृषिउद्यमी: श्री रमेश कुमार गुप्ता (24) बिहार के पूर्वी चंपारण जिले से कृषि में स्नातक, मशरूम की खेती में शामिल हैं और बेरोजगार ग्रामीण युवाओं के बीच आदर्श उदाहरण स्थापित किए हैं। श्रुष्टि फाउन्डेशन, पटना में आयोजित कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण के दौरान, उन्होंने देखा कि स्पॉन से युक्त तैयार कंपोस्ट द्वारा भरा गया एक प्लास्टिक बैग 40 से 50 दिनों के बाद मशरूम को दे सकता हैं।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
50 गांवों से 250 किसान	3 व्यक्ति	2.2 लाख रुपये

श्री प्रदीप भगीरथ यादव
ग्राम-डुमरी स्टेशन, पो.-खंडाला
तालुक-पारसिओनी Parsioni
जिला-नागपुर, पिनकोड - 441105,
महाराष्ट्र, भारत

gokulenterprises8999@gmail.com
+91 9860936506

उद्यम: कस्टम हाईरिंग सेंटर

मूल गतिविधि: प्रशिक्षण के बाद, श्री प्रदीप ने 12.50 लाख की एक विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार की और पंजाब नेशनल बैंक, कानहान शाखा से मंजूरी प्राप्त की। इस राशि के साथ श्री प्रदीप ने मिनी कस्टम हाइरिंग केंद्र खोला जिसका नाम जय श्री दादाजी एंटरप्राइज़ रखा। उन्होंने ट्रैक्टर, रोटावेटर, लैंड लेवलर, फुल हील, कल्टिवेटर, ट्रॉली खरीदी। वह इन मशीनों को अपने गांव के कई किसानों और आसपास के गांवों को सोयाबीन, गेहूं, मक्का, गन्ना आदि जैसे फसलों की खेती के लिए किराए पर देता है और एक वर्ष में लगभग 2.5 लाख रुपये की आय कमा रहे है, जिसमें शुद्ध लाभ लगभग रु.1.75/- लाख है। श्री प्रदीप कहते हैं कि "सीजन के दौरान कस्टम हाइरिंग केंद्र की अधिक मांग होती है, लेकिन ऑफ-सीजन में सभी मशीनरी निष्क्रिय रहती हैं। इसलिए मैं डेयरी फार्म चला रहा हूं जिसमें अतिरिक्त आय के लिए 25 गाये हैं"।

कृषिउद्यमी: श्री प्रदीप यादव (31) महाराष्ट्र के नागपुर जिले के डुमरी स्टेशन से हैं। वे कृषि विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की हैं। शिक्षा के बाद, वह अपने 10 एकड़ में पूर्वजों की खेती में शामिल हुए। श्री प्रदीप ने अपने एग्रिप्रेन्यूर बनने के पीछे का राज बताते हुए कहा कि "मुझे एहसास हुआ कि एक अशिक्षित व्यक्ति छोटा सा व्यवसाय कर के साल में एक लाख से अधिक रूपए कमा सकता है तो कृषि स्नातक के रूप में मैं बस कुछ हज़ार कमा रहा हूँ वह भी कड़ी मेहनत के बावजूद। इसलिए मैंने अपने खुद का व्यवसाय शुरू करने का फैसला किया"। मैं कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रिकल्चरल फाउंडेशन (केवीएएएफ) नगपुर में कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र योजना के तहत आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हुआ।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
50 गांवों से **150** किसान	**7** व्यक्ति	**25** लाख रुपये

श्री अजिंक्य शिरीषकुमार नाइक
F-2/105, Ekt T को-ऑपरेटिव हाउसिंग सोसाइटी, दीवान एंड सन्स एन्क्लेव अम्बड़ी रोड, वसई वेस्ट जिला- ठाणे, पिनकोड-401202, महाराष्ट्र, भारत
ajinkya.naik@gmail.com
+91 9096046343, 0250-2333168

उद्यम: वाणिज्यिक डेयरी फार्म और विपणन

मूल गतिविधि: 7/- लाख रुपये सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, वसाई शाखा से बैक ऋण के साथ मैंने एक डेयरी इकाई स्थापित की। शुरू में मैंने छह मेहसाणा भैंसों को खरीदा था। दैनिक दूध उत्पादन प्रति दिन लगभग 50 लीटर था। एक साल की अवधि में मैंने अपना कारोबार बढ़ाया और अब मेरे पास 18 भैंस और 9 बछड़े हैं। अपने फ़ार्म के 18 भैंसों से दैनिक कुल दूध का उत्पादन लगभग 190-200 लीटर था जिसके परिणामस्वरूप सकल वार्षिक आय रु.25 लाख था। चरकटा, पानी की टंकी, प्राथमिक चिकित्सा किट, दुग्ध मशीन आदि जैसे डेयरी के लिए आवश्यक सभी सुविधाओं से यह डेयरी सुसज्जित है। मैं प्रतिष्ठित डेयरी 'अमूल' को दूध बेच रहा हूं" अजिंक्य ने कहा।

कृषिउद्यमी: कृषि में स्नातकोत्तर डिग्री पूरा करने के बाद, श्री अजिंक्य नाइक (29) ने डेयरी फार्म में जुटकर ग्रामीण युवाओं के बीच एक आदर्श उदाहरण स्थापित किये है। दैनिक दूध उत्पादन 190 लीटर है जो रुपये 45-47 प्रति लीटर की दर से बेचा जाता है। अजिंक्य कृष्णा वैली एड्वांस्ड एग्रीकल्चरल फाउंडेशन सुतारवाडी, पूणे से एक प्रशिक्षित एग्रिप्रेन्यूर है।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
1 गांवों से 50 किसान	1 व्यक्ति	2 लाख रुपये

श्री भरत पद्माकर भुटेकर
ए/पी-तकारवान, मानेगांव तालुक/जिला- जालना, पिनकोड - 431203, महाराष्ट्र, भारत

bhutekarbharat186@gmail.com
+919922046069

उद्यम: बकरी पालन और परामर्श

मूल गतिविधि: "रुपये 1.00 लाख के छोटे निवेश के साथ मेरे क्षेत्र की आधी एकड़ भूमि में एक अद्‌वितीय बकरी इकाई स्थापित की गई है। मैंने बाड़े में सभी जानवरों को पर्याप्त फीडर स्पेस रखा ताकि सब बकरी एक ही समय में चारा खा सकें। सभी उपकरण खिलाने और भंडारण के लिए उपलब्ध हैं। मैं हाइड्रोपोनिक प्रणाली का उपयोग करके चारा बढा रहा हूँ। पहली बार, मैंने जोखिम से बचने के लिए 16 स्थानीय बकरी के नस्लों को खरीदा। स्थानीय बाजार में 16-17 किलोग्राम वजन वाली स्थानीय बकरी रुपये 7000-8000/- के आसपास कीमत ला सकती है। हालांकि, मैंने वैज्ञानिक रूप से अपनी इकाई विकसित की, इसलिए धीरे-धीरे मैं भविष्य में उस्मानाबाद, सिरोही, जमुनापारी जैसे बकरियों का पालन करूंगा। मैं अपने व्यवसाय का विस्तार करना चाहता हूं और बैंक ऋण के लिए आवेदन किया है" भरत ने कहा।

कृषिउद्यमी: "बढ़ती जनसंख्या के साथ बकरियों की खपत भी बहुत अधिक बढ़ रही है। कीमत अधिक हाने पर भी उपभोक्ता बकरी के मांस की मांग करते हैं। इसलिए, बकरी पालन बेरोजगार ग्रामीण युवाओं के लिए वरदान है। कृषि विज्ञान में स्नातक होने के नाते, मैंने कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। कृष्णा वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चर फाउंडेशन से प्रशिक्षण पूरा करने के बाद, मैं बकरी पालन में शामिल हूं", महाराष्ट्र के जालना जिले के श्री भरत भुटेकर (25) ने कहा।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
12 गांवों से **250** किसान	**1** व्यक्ति	**5** लाख रुपये

श्री हर्षल श्रीराम पाटिल
ए/पी - सवरगाँव दुकरे,
तालुक - चिखली, जिला - बुलढाना, पिनकोड-443201,
महाराष्ट्र, भारत

+91 9158548869

उद्यम: दुग्ध डेयरी फार्म

मूल गतिविधि: "स्टार्ट-अप के लिए परिवार, विशेष रूप से माता-पिता का बिना शर्त समर्थन आवश्यकता है। मैंने अपने माता-पिता से 50000/- रु. की पूंजी उधार ली और व्यवसाय शुरू किया। शुरू में, मैंने 10 किसानों को विश्वास में लिया और कुल दूध संग्रह केवल 60 लीटर था। समय पर भुगतान और डेयरी प्रबंधन पर तकनीकी सलाह मुझे और अधिक ग्राहक बनाने में मदद करती है" हर्षल ने बताया।

कृषिउद्यमी: कृषि में डिप्लोमा धारक, श्री हर्षल पाटिल (24), महाराष्ट्र में वर्धा जिले के सवरगांव ग्राम से भूमिहीन कृषि परिवार से हैं। उन्होने दूध संग्रह केंद्र खोला और प्रति दिन लगभग 200 लीटर दूध एकत्र कर रहे हैं। "मेरे पास कोई जमीन नहीं थी और कृषि-आधारित व्यवसाय शुरू करने का कोई विकल्प नहीं था। एक स्थापित दूध संग्रह और चिलिंग सेंटर के दौरे के दौरान मुझे यह व्यवसाय शुरू करने का विचार आया" हर्षल ने बताया। उन्होंने कहा, "कृष्णा वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चरल फाउंडेशन, (केवीएएफ) नागपुर, विदर्भ क्षेत्र में एकमात्र केंद्र है, जो कृषि-क्लिनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी व एबीसी) योजना का संचालन करता है। मैं सौभाग्यशाली हूं कि मुझे यह प्रशिक्षण मिला।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
2000 किसान	**2** व्यक्ति	**10** लाख रुपये

श्री किरण तानाजी मोरे
ए/पी- कोगे तालुक - करवीर
जिला- कोल्हापुर,
महाराष्ट्र, भारत

kiranmore2693@gmail.com
+91 9404972397

उद्यम: कस्टम हॉयरिंग सेंटर

मूल गतिविधि: किरण ने 12/- लाख रुपए का कुल निवेश किया। जिनमें से बैंक ऑफ महाराष्ट्रा, बलिंगा शाखा से 8/- लाख रुपए का ऋण लिया गया था और बाकी पूंजी उनकी स्वंय की थी। शुरुआत में उन्होंने एक 55 एचपी ट्रक्टर के साथ एक रिवर्सिबल एमबी हल (2 बॉटम), फ्रंट डोजर ब्लेड, रोटावेटर (1.8 मीटर), डिस्क हेंगा (हैरो) (14 डिस्क) खरीदा उन्होने इन मशीनों को अपने गाँव और आसपास के गाँवों के लगभग 200 किसानों को 2000 एकड़ भूमि पर सोयाबीन, धान, मक्का, दालों के साथ-साथ सब्जियों आदि की खेती के लिए किराए पर दिया।

कृषिउद्यमी: कोल्हापुर जिले के कोगे ग्राम के निवासी श्री किरण तानाजी मोरे, 24) ने कृषि में डिप्लोमा किया है। उनके पास 12 एकड़ जमीन है। परंपरागत रूप से वह गन्ना, मक्का, दालें, सब्जियों आदि की खेती कर रहे थे। कृष्णा घाटी एडवांस एग्रीकल्चर फाउंडेशन, उत्तूर द्वारा एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिज़नेस सेंटर योजना पर आयोजित एक जागरूकता कार्यक्रम में उन्हे उद्यमिता कौशल व्यवसाय की योजना के बारे में जानकारी मिली और वह प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हो हुए। एक दिन, कस्टम हायरिंग सेंटर पर एक सत्र कक्षा में लगाया गया। किरण इस इकाई से मोहित हो गए और उन्होने कस्टम हायरिंग सेंटर शुरू करने का फैसला किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
6 गांवों से **150** किसान	**4** व्यक्ति	**13** लाख रुपये

श्री सुधीर रमेशराव वाडलकर
ए/पी - कोंढाली, तालुक - कटोल
जिला- नागपुर, महाराष्ट्र, भारत

+91 9422109124

उद्यम: मुर्गी पालन और परामर्श

मूल गतिविधि: श्री सुधीर ने 20/- लाख रुपये की लागत की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार की और बैंक ऑफ इंडिया, कोंढाली शाखा में जमा करा दिया। 25 प्रतिशत धनराशि काटकर उन्हें 16.50 लाख रुपए का ऋण मिला। “इस वित्तीय सहायता से मैने 5000 मुर्गियों की क्षमता वाली मुर्गी पालन इकाई की स्थापना की। मैंने सरकार के साथ वापसा खरीदी के आधार पर करार किया। पोल्ट्री द्वारा एक दिन के चूजे (चिक), दवा, चारा और पशु चिकित्सा सहायता समय पर उपलब्ध कराई जाती है, इसलिए मृत्यु दर प्रतिशत बहुत कम है। हर बैच के बाद, मुझे लगभग 70000/- रुपये का शुद्ध लाभ होता है।

कृषिउद्यमी: "यदि व्यक्ति ईमानदारी और व्यक्तिगत रूप से काम करने के लिए तैयार है, तो मुर्गी पालन व्यवसाय में आकर्षक रिटर्न की गारंटी है", महाराष्ट्र में नागपुर जिले के कतोल से श्री सुधीर वाडलकर (45), जो कृषि स्नातक हैं, ने कहा। सुधीर, उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए कृष्णा वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चर फाउंडेशन, नागपुर से जुड़ गए। सुधीर ने कहा कि एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिज़नेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना को लागू करने वाली संस्थान - स्वरोजगार के लिए वरदान है”।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
10 गांवों से 150 किसान	3 व्यक्ति	10 लाख रुपये

श्री सदानंद शिवदासजी नाटकर
ग्रम - कचुरवाही, तालुक - रामटेक
जिला - नागपुर, पिनकोड
-441106, महाराष्ट्र, भारत

+91 9422557198

उद्यम: कुक्कुट पालन और परामर्श

मूल गतिविधि: रुपये 1.30 लाख की अपनी पूंजी के साथ, श्री सदानंद शिवदासजी नाटकर ने अपने 4 एकड़ भूमि में 1500 वर्ग फुट क्षेत्र में एक पौल्ट्री इकाई स्थापित की है। उन्होंने स्थानीय कुक्कुट किसानों के साथ एक दिन पुरानी चूजें, दवाओं और दवाओं, फ़ीड और समय पर पशु चिकित्सा सेवाओं जैसे सभी सेवायें प्राप्त करने का करार किया। वजन प्राप्त करने के बाद, पक्षियों को कहा गया पौल्ट्री को बेचा गया था। सदनंद ने कहा, "स्वच्छता रखरखाव के कारण मृत्यु दर केवल 4-5% है" सदानंद ने कहा।

कृषिउद्यमी: श्री सदानंद ने कृष्णा वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चर फाउंडेशन, नागपुर से उद्यमशीलता प्रशिक्षण प्राप्त किया। कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण के दौरान, उन्होंने एक स्थापित पौल्ट्री का दौरा किया और अपनी पौल्ट्री इकाई शुरू करने का फैसला किया। संस्थान के विशेषज्ञों के तकनीकी मार्गदर्शन की छतरी के तहत, श्री सदानंद नाटकर (26) ने 5000 पक्षियों के साथ एक पौल्ट्री फार्म की स्थापना की। वह अपने गांव के बेरोजगार ग्रामीण युवाओं के बीच एक आदर्श मॉडल बन गया। उन्होंने उन्हें प्रशिक्षण का विस्तार करना शुरू किया और पौल्ट्री खेती में अतिरिक्त आय के रूप में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया। लगभग 100 ग्रामीणों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया और छोटे पैमाने पर अपनी पौल्ट्री इकाई की स्थापना की।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 गांवों से 350 किसान	3 व्यक्ति	5 लाख रुपये

श्री शिवाजी अकरम पाटिल
ग्राम/पो. - गढ़मुंडसिंगी
तालुक - हतकणंगले
जिला- कोल्हापुर, महाराष्ट्र,
भारत

+91 9890969725

उद्यम: गन्ने की फसल के लिए पौधशाला

मूल गतिविधि: “एक लाख रुपए की न्यूनतम पूंजी से मैने गन्ने की फसल की पौधशाला स्थापित की। किसान ट्रे में रेडीमेड पौधों की मांग कर रहे थे। दो साल के भीतर, मैंने 5.50 लाख पौधों का उत्पादन कर आय के रूप में लगभग 2.5 लाख रुपए अर्जित किए। मुझे विजिटिंग कार्ड छपवाकर एक बिजनेस मॉडल विकसित करने की सलाह दी गई। मैने अपनी पौधाशाला को सरकारी कार्यक्रमों में प्रतिस्पर्धी के रूप में भाग लेने के लिए एक फर्म के रूप में पंजीकरण करवाया” शिवाजी ने बताया।

कृषिउद्यमी: “आज, आय की अर्जन की समस्या ग्रामीण युवाओं के लिए सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है। कई कृषि स्नातक बेरोजगार हैं और अपनी विरासत में मिले व्यवसाय खेती की ओर वापस जा रहे हैं। यदि उन्हें समय पर उचित अवसर प्रदान किया जाए और वित्तीय सहायता के संयोजन के साथ कार्यान्वित किया जाए तो वे उद्यमी बन सकते हैं। एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना इसका सबसे अच्छा उदाहरण है जिसने साबित किया है कि कौशल से लाभ कमाया जा सकता है। मैंने कृष्णा वैली एडवांस्ड एग्रीकल्चर फाउंडेशन (केवीएएफ) सांगली, में उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया और गन्ने के पौधे उगाने की पोधशाला में शामिल हो गया” महाराष्ट्र में कोल्हापुर जिले के गढ़मुंडसिंगी ग्राम से श्री शिवाजी पाटिल (35), ने बताया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
5 गांवों से **250** किसान	**1** व्यक्ति	**15** लाख रुपये

श्री संजय महादेव वडगांवकर
ग्राम/पो.-शेंदूर तालुक- कगल,
जिला-कोल्हापुर,
महाराष्ट्र, भारत

sanja 6686@gmail.com
+91 9765503054

उद्यम: गन्ने की फसल पर कस्टम हायरिंग सेंटर और कंसल्टेंसी

मूल गतिविधि: देना बैंक, सिधनेरी शाखा से शुरू में 12 लाख रुपए के बैंक ऋण से संजय महादेव वडगांवकर ने एक रिवर्सीबल एमबी हल (2 बॉटम), फ्रंट डोजर ब्लेड, रोटावेटर (1.8 मी.), डक फुट कल्टीवेटर (7 टाइन), डिस्क हैरो (14 डिस्क), थ्रेशर (35 एचपी), फ्रंट माउंटेड रीपर, (1.5 मीटर), स्ट्रॉ रीपर (56"), एक पावर स्प्रेयर, ग्रेन क्लीनर, एक ट्रॉली (2 पहिया) के साथ 55 एचपी ट्रैक्टर खरीदा। उन्होंने इन मशीनों को अपने गांव और आसपास के गाँवों के लगभग 250 किसानों को गन्ने, सोयाबीन, दालों के साथ-साथ सब्जियों की खेती के लिए किराए पर दिया।

कृषिउद्यमी: कोल्हापुर जिले के कृषि स्नातक श्री संजय महादेव वडगांवकर (32) के पास 8 हेक्टेयर जमीन है। एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण पूरा करने के बाद, उनकी रुचि अपने गांव में कृषि मशीनरी के कस्टम हायरिंग व्यवसाय की शुरुआत करने में हुई। संजय ने बताया, "आज बैल से खेती करने की परंपरा नहीं है। किसान कम श्रम से त्वरित कार्य चाहते हैं। कस्टम हायरिंग श्रमिकों की कमी और कृषि कार्यों में समयबद्धता लाने का सही उपाय हैं। यहां तक कि छोटे और सीमांत किसान भी अपने कृषि कार्यों के लिए कृषि मशीनरी किराए पर ले सकते हैं"।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
9 गांवों से 100 किसान	2 व्यक्ति	10 लाख रुपये

श्री प्रकाश जयसिंह सावंत
ग्राम/पो. - बनगे, तालुक - कगल, जिला- कोल्हापुर, महाराष्ट्र, भारत

balirajadairyfarm@gmail.com
+91 9561597795

उद्यम: डेयरी फार्मिंग और पशुधन संरक्षण

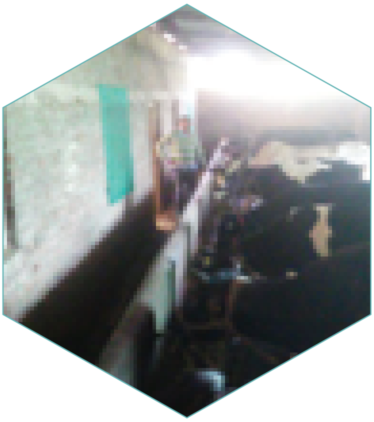

मूल गतिविधि: एसी व एबीसी प्रशिक्षण पूरा होने के बाद, श्री प्रकाश जयसिंह सावंत ने बैंक ऑफ महाराष्ट्र, मासावे शाखा में 20/- लाख रुपए ऋण के लिए आवेदन किया। तीन माह के अंतराल में, उनका ऋण स्वीकृत हो गया। उन्होंने 10 एच एफ गायों को खरीदा जो प्रतिदिन 120-130 लीटर दूध देती हैं। उन्होंने गोकुल डेयरी के साथ करार किया और 27/- प्रति लीटर दूध की बिक्री करने लगे। उन्होंने किसानों को दूध प्राप्ति के लिए स्वच्छ आहार और चारा प्रबंधन, मवेशियों की समय पर चिकित्सा और वर्मीकम्पोस्टिंग पर प्रशिक्षण दिया। उनके बढ़ते हुए व्यवसाय को देखते हुए, नाबार्ड ने उन्हें 36 प्रतिशत सब्सिडी दिया है।

कृषिउद्यमी: पशुधन ग्रामीण गरीबों के लिए मूल्यवान संपत्ति हैं और विशेष रूप से प्रतिकूल समय में उनकी आजीविका का एक महत्वपूर्ण साधन हैं। महाराष्ट्र के बनगे गांव के प्रकाश सावंत (32), पिछले बीस वर्षों से छोटे और पारंपरिक डेयरी किसान हैं। उनके पास लगभग 2 एकड़ जमीन है जिसमें उनका घर और मवेशियों के लिए शेड भी शामिल हैं। लाभ बहुत कम था और आय भी नियमित नहीं थी, क्योंकि गाय वर्ष भर दूध नहीं देती। एक दिन, वह केवीएएएफ, उत्तूर के नोडल अधिकारी के संपर्क में आए और उन्हें एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजनेस सेंटर योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने की सलाह दी गई। बाद में उन्होंने दो महीने के आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
16 गांवों से **1200** किसान	**1** व्यक्ति	**5** लाख रुपये

श्री आशुतोष श्रीवास्तव
At/Po- कस्बा ललितपुर,
तालुक - संगतमंजुंग
जिला-प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश,
भारत

+91 7525052769

उद्यम: गेहूँ की खेती के लिए ज़ीरो-टिल सीड ड्रिल को किराए पर देना

मूल गतिविधि: "स्वयं की 1.50/- लाख रुपये के निवेश से मैंने अपना कस्टम हायरिंग सेंटर खोला। शुरुआत में मैंने जेटी सीड ड्रिल खरीदा और गेहूं की खेती के लिए किराए पर देने लगा। अपेक्षाकृत छोटे चार-पहिये वाले ट्रैक्टर से जुड़ा, जेटी प्रैक्टिस ज़ीरो-टिल ड्रिल बिना जुताई वाले खेत में एक बार में ही सीधे गेंहू की बुआई कर देता है। इससे श्रम पर लागत कम आती है और समान बुवाई होती है" आशुतोष ने बताया।

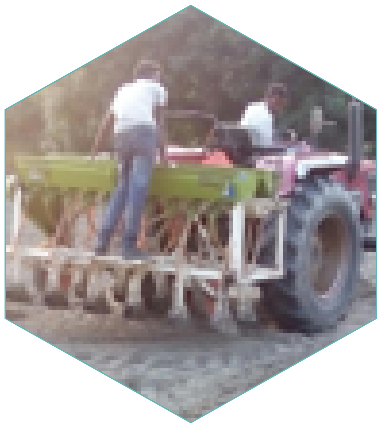

कृषिउद्यमी: "रोपण में देरी से बचने और उत्पादन की लागत को कम करने के लिए, किसानों ने गेहूं के उत्पादन में संसाधन संरक्षण तकनीकों जैसे ज़ीरो-टिल और सतही बुआई को अपनाना शुरू कर दिया है। किसानों ने श्रमिकों की कमी और बढ़ती ईंधन की कीमतों के कारण गेहूं की फसल की बुवाई के लिए जीरो-टिलेज सीड ड्रिल को प्रधानता देनी शुरू कर दिया है। इसलिए, गेहूँ उत्पादन में ज़ीरो-टिल तकनीक को अपनाने के लिए सीड ड्रिल की उपलब्धता पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। मैंने गेहूं की फसल की बुवाई के लिए 16 गांवों के लगभग 1200 किसानों को जेटी सीड ड्रिल किराए पर दिया" आशुतोष ने बताया। आशुतोष श्रीवास्तव (26), कृषि स्नातक व कृषिउद्यमी हैं। पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होने उत्तर प्रदेश में कौशांबी के कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा आयोजित एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजनेस संटर योजना के तहत प्रशिक्षण प्राप्त किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
12 गांवों से **500** किसान	**2** व्यक्ति	**10** लाख रुपये

जोतीराम महादेव हवाल
ग्राम/पोस्ट-कटगाँव,
तालुक एवं जिला - लातुर,
महाराष्ट्र, भारत

hawaljoytiram143@gmail.com
+91 9763696997

उद्यम: फल और सब्जी पौधशाला

मूल गतिविधि: लातूर जिले में बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र के औसा रोड शाखा से 5/- लाख रुपए के ऋण की वित्तीय सहायता और नाबार्ड से 36 प्रतीशत के सब्सिडी के साथ ज्योतिराम ने किसानों की आवश्यकताओं को पूरा करने वाली सभी जरूरी आवश्यक वस्तुओं से लैस पौधाशाला की स्थापना की। वह विश्वसनीय स्रोतों से आम, आंवला, अमरूद, संतरा, अनार जैसे फलों के पेंड़ और गुणवत्ता वाली सब्जियों के बीज आदि की रोपण सामग्री खरीदते है। 30,000/- रुपये के शुरुआती निवेश और 5/- लाख रुपये के बैंक ऋण के साथ उन्होने पहले ही वर्ष 10/- लाख रुपए की सकल आय अर्जित की। ज्योतिराम ने नवोदित उद्यमियों को संदेश दिया, “पौधशाला, कम निवेश से अधिक लाभ देने वाला उद्यम है। अत: आजीविका के पौधे उगाएँ”।

कृषिउद्यमी: कृषि विज्ञान में डिप्लोमा धारक श्री ज्योतिराम हवल (31), ने सजावटी, फल और सब्जियों की फसल के लिए व्यावसायिक पौधशाला की शुरुआत की। साईसृष्टी पौधशाला न केवल फलों और सब्जियों की गुणवत्ता वाली रोपण सामग्री की आपूर्ति करता है बल्कि भू-निर्माण (लैंडस्केपिंग) और ऊर्ध्वाधर बागवानी के लिए शहरी निवासियों की आवश्यकता को भी पूरा करता है। श्री ज्योतिराम, श्रीराम प्रतिष्ठान मंडल, उस्मानाबाद में एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत एक प्रशिक्षित कृषिउद्यमी हैं।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
25 गांवों से 500 किसान	2 व्यक्ति	70 लाख रुपये

श्री सुनील दिलीपराव टोनगे
ग्राम/पोस्ट - लोहता, तालुक - कल्लम्ब, जिला- उस्मानाबाद, महाराष्ट्र, भारत

sunil.tonagepatil@gmail.com
+91 09404961918

उद्यम: पार्थ एग्रो सेवाएं, सूक्ष्म-सिंचाई(माइक्रो-इरिगेशन) प्रणाली के लिए वन स्टॉप सॉल्यूशन है।

मूल गतिविधि: काल्लंब तालुका में पार्थ एग्रो सेवाएं, सूक्ष्म-सिंचाई(माइक्रो-इरिगेशन) प्रणाली के लिए वन स्टॉप सॉल्यूशन है। स्वयं के 2/- लाख रुपये के निवेश और भारतीय स्टेट बैंक, काल्लंब से 10/- लाख रुपए ऋण से सुनील ने अपनी दुकान पंजीकृत कराई तथा जैन इरीगेशन के नाम से अधिकृत डीलरशिप ली। दुकान सभी प्रकार के सिंचाई सेटों और पाइपिंग सामग्री के व्यापार में शामिल है। सुनील ने बागवानी करने वाले किसान को सूक्ष्म-सिंचाई (माइक्रो-सिंचाई) प्रणाली के लिए आवेदन करने की सलाह दी। उन्होंने कहा, "छोटी अवधि के भीतर, उस्मानाबाद जिले के काल्लंब ब्लॉक में 500 एकड़ क्षेत्र इस सिंचाई प्रणाली के अंतर्गत आ गया"।

कृषिउद्यमी: महाराष्ट्र में पिछले दशकों में सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियों (ड्रिप व स्प्रिंकलर) के बारे में तेजी से बढ़ती जागरूकता ने, विशेष रूप से बागवानी और सब्जी उगाने वाली बेल्ट में लाखों हेक्टेयर भूमि इसकी कवरेज के तहत ला दी है जिससे न केवल फसल के उत्पादन में सुधार हुआ है, बल्कि कीमती जल भी बचा है" महाराष्ट्र में उस्मानाबाद जिले के लाहोटा ग्राम के कृषि इंजीनियर श्री सुनील दिलीपराव टोनगे (28) ने बताया। सूक्ष्म-सिंचाई प्रणाली में व्यवसाय की संभावनाओं का पता लगाने के लिए, वह श्रीराम प्रतिष्ठान मंडल, उस्मानाबाद में कृषि-क्लिनिक और कृषि-बिज़नेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत उद्यमिता कौशल प्रशिक्षण में शामिल हुए।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
8 गांवों से **300** किसान	**5** व्यक्ति	**15** लाख रुपये

श्री योगेश शिवाजी गावंडे
ग्राम/पो.- बारहखेरा, तालुक - जाफराबाद, जिला - जालना, महाराष्ट्र।

yogesh.gawande1105@gmail.com
+91 09860683627

उद्यम: डेयरी फार्मिंग और दूध संग्रह केंद्र

मूल गतिविधि: एसी एंड एबीसी योजना के तहत भारतीय स्टेट बैंक जाफराबाद शाखा से 10/- लाख रुपये की वित्तीय सहायता ने योगेश के आत्मविश्वास को बढ़ाया और उन्होंने 6 मुर्रा भैंसें खरीदी। दैनिक दूध संग्रह लगभग 80 लीटर प्रति दिन तक पहुंच गया। दूध का दर प्रति लीटर 35 रु. से लेकर 40 रु. के बीच में था। डेयरी ने योगेश को अच्छा लाभ दिया है। इसके साथ ही, उन्होंने दूध संग्रह केंद्र खोले और दूध का संग्रह शुरू किया, जिससे उनकी आय दुगुनी हुई। योगेश स्वच्छ दूध देने, चारा और चारा प्रबंधन, बछड़े की स्वास्थ्य देखभाल, आदि पर परामर्श में भी शामिल होने लगे। नियमित पशु स्वास्थ्य जांच शिविर भी 4-5 गांवों में आयोजित किए जाते हैं। टीएसजी डेयरी की सेवा से 300 से अधिक किसान लाभान्वित हुए। आकांक्षी कृषि उद्यमियों, ग्रामीण युवाओं, और कृषि स्नातकों के लिए योगेश का संदेश देते हैं कि "डेयरी फार्मिंग बेहतर कमाई के रूप में रोजगार पैदा कर रही है, इसीलिए ग्रामीण युवाओं को इसमें शामिल होना चाहिए"

कृषिउद्यमी: श्री योगेश गावंडे (25) कृषि विज्ञान में एक योग्य स्नातक है और वे महाराष्ट्र में जालना जिले के भारदखेड़ा गांव के निवासी हैं। कॉलेज के दौरान, उन्होंने कृषि-क्लिनिक और कृषि-व्यवसाय केंद्र (एसीए और बीसी) योजना और बेरोजगार कृषि-पेशेवरों के लिए इसके लाभों के बारे में जाना। डिग्री के बाद, वे नोडल प्रशिक्षण संस्थानों में से एक श्रीराम प्रतिष्ठान मंडल, उस्मानाबाद में एसी एंड एबीसी योजना के तहत दो महीने के प्रशिक्षण में शामिल हुए । एक किसान परिवार से जुडेने के नाते, योगेश के पास तीन भैंस और दो देसी गायें थीं और उन्होंने इसी व्यवसाय से जुड़ने का फैसला किया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
4 गांवों से **500** किसान	**110** व्यक्ति	**1.8** करोड़ रुपये

श्री एस. इलंगोवन कुमारन नर्सरी
जिला मदुरै, वाडिपट्टी, तमिलनाडु, भारत

Kisho020@gmail.com
+9109994966642

उद्यम: सभी प्रकार के पौधों की नर्सरी, भूनिर्माण पर परामर्श और प्रशिक्षण केंद्र

मूल गतिविधि: श्री इलंगोवन ने बताया “बैंक ऑफ बड़ौदा, वाडीपट्टी, मदुरै से 20 लाख/- रु. की वित्तीय सहायता और नाबार्ड से पुनः भुगातन की शर्त पर 36 प्रतिशत सब्सिडी से मैंने ‘कुमरन नर्सरी गार्डन’ के नाम से नर्सरी फर्म का पंजीकरण किया। यह नर्सरी, तमिलनाडु के चार जिलों में फलों के पौधों, सजावटी फूल, वन, औषधीय, मसाले आदि की आपूर्ति के संबंध से जुडी है । सजावटी पौधों की सबसे ज्यादा मांग थी, इसके बाद बागवानी फसलों और वन वृक्षो के पौधों की । नर्सरी प्रबंधन में विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने हेतु वे विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों की दौरा करते हैं । श्री एलंगोवन ने किसानों और ग्रामीण युवाओं को छोटे-छोटे पौधों, रिकॉर्ड कीपिंग, व्यवसाय योजना और रणनीतियों के आधुनिक तकनीकों पर भी प्रशिक्षण दे रहे हैं, जो नर्सरी उत्पादों में मूल्यवान हैं।

कृषिउद्यमी: श्री एस. इलंगोवन (28), कृषि में स्नातक हैं । वे ‘कुमरन नर्सरी गार्डन’ के मालिक हैं जो तमिलनाडु के मदुरै में 30 एकड़ भूमि में फैली है। श्री इलंगोवन ने स्नातक होने के बाद वीएपीएस मदुरै, तमिलनाडु से एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजनेस सेंटर योजना के तहत दो महीने के प्रशिक्षण में भाग लिया। व्यावहारिक अनुभवों के दौरान उन्होंने एक स्थापित नर्सरी का दौरा किया और पौधों की प्रजातियों, अंकुरों की स्थापना, भूमि अधिग्रहण की विधि, कीमतों, बाजार और श्रम को प्रभावित करने वाले कारकों आदि पर प्रशिक्षण दिया । श्री एस. इलंगोवन ने बताया "एसी एंड एबीसी प्रशिक्षण ने मुझे नर्सरी शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया"

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
3 गांवों से 100 किसान	2 व्यक्ति	5 लाख रुपये

श्री ई. रमन
नं. 1391, अकथिकपुरम ग्राम, कथिकपुरम ग्राम, किलकोडंगलूर पोस्ट, वंदावसी तालुक, तिरुवन्नामलाई जिला-604403, तमिलनाडु, भारत
eramanagri@gmail.com
+91 9751086756

उद्यम: कस्टम हायरिंग केन्द्र

मूल गतिविधि: इंडियन बैंक, किलकोडंगलूर शाखा से 11.50/- लाख रुपये की वित्तीय सहायता और नाबार्ड से 36 प्रतिशत सब्सिडी के साथ, रमन ने कृषि यंत्र खरीदे और कस्टम हायरिंग सेंटर और परामर्श सेवा शुरू की। रमन ने विभिन्न उपकरणों को काम पर रखने और किराए देने की दरों को प्रमुखता से प्रदर्शित किया। रमन ने बताया कि इनमें प्रमुख हैं "रोटावेटर, जीरो टिल ड्रिल, ड्रम सीडर, मल्टी-क्रॉप प्लैंटर, पॉवर वीडर और चैफ कटर"।

कृषिउद्यमी: श्री ई. रमन (28) ने कृषि में डिप्लोमा की। तिरुवन्नामलाई जिलों के तीन गांवों में कृषि कार्यों के लिए समयबद्धता और शुद्धता लाने के लिए कस्टम हायरिंग सेंटर से जुडे। श्री रमन ने बताया कि महंगी कृषि मशीनरी से बचने के लिए "कस्टम हायरिंग सेंटर ने कृषि कार्यों में समयबद्धता की सुविधा और औज़ारों की कुशल उपयोगिता की सुविधा प्रदान करने में मदद करती है।" श्री रमन तमिलनाडु के नेशनल एग्रो फाउंडेशन में एग्री-क्लीनिक और एग्री-बिजनेस सेंटर योजना के तहत प्रशिक्षित हैं। रमन ने यह भी बताया कि "विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के साथ बातचीत, बाजार सर्वेक्षणों के संपर्क, संचार कौशल में प्रशिक्षण, परियोजना की तैयारी, कंप्यूटर और इंटरनेट के उपयोग ने मुझे वास्तव में सक्षम और आश्वस्त बनाया"

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
30 गांवों से **2000** किसान	**10** पुरूष **5** महिलाए	**10** लाख रुपये

श्री एम.जे. सोलमन एरोकिया डॉस
मठ नर्सरी उद्यान, दिंडिगुल से मथुराई NH-7, एलोड्ड पिरूव, आलमराथुपट्टी पोस्ट, दिन्डिगल-624303 तमिलनाडु, भारत
mj.solomondoss@gmail.com
+91 09791776549

उद्यम: सजावटी नर्सरी और भूनिर्माण

मूल गतिविधि: माता-पिता से पूरे समर्थन और 1.00 लाख रुपये की वित्तीय सहायता के साथ, श्री सोलमन ने अपनी नर्सरी को 'एमजेएस' नाम दिया, जो तमिलनाडु के दिन्डिगल जिले के किसानों के बीच उच्च गुणवत्ता की सामग्री खरीदने के लिए एक लोकप्रिय और विश्वसनीय नाम बन गया। यहां की मुख्य गतिविधि भूनिर्माण और सभी प्रकार के अंकुरों की बिक्री में परामर्श देना है। क्रॉपिंग सीज़न की शुरुआत में श्री सोलमन आसपास के गाँवों के लिए सब्जियों की पौधों की बिक्री के काम में जुडे रहते हैं।

कृषिउद्यमी: दिन्डिगल जिले के श्री एम.जे. सोलमन (24) सजावटी नर्सरी और भूनिर्माण कार्य में जुडे रहते हैं। एग्रीकल्चर में डिप्लोमा पूरा करने के बाद वे नेशनल एग्रो फाउंडेशन, तमिलनाडु से एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजनेस सेंटर (एसी एंड एबीसी) योजना में शामिल हुए। तब तक वे नर्सरी के विपणन पहलुओं और बढ़ते शहरी क्षेत्रों में भूनिर्माण अवसर के साथ अच्छी तरह से वाकिफ थे। उन्होंने महसूस किया कि शहरी क्षेत्रों के लिए दोहरे उद्देश्य से सजावटी पौधों की सामग्री और किसानों के लिए मौसमी सब्जी की फसल के लिए अपनी नर्सरी शुरू करने का समय आ गया है। सोलमन बागवानी नर्सरी के लिए प्रशिक्षण केंद्र शुरू करना चाहते हैं।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
30 गांवों से **500** किसान	**10** कुशल व्यक्ति	**1** करोड़ रुपये

श्री एफ. थॉमस सहया राज
भारती एजेंसियां
9/1 वेंकटचलम स्ट्रीट,
कन्ननकुरिची, सेलम, तमिलनाड़ु-636 008, भारत

bharathiagenciessalem@gmail.com
+919942543795

उद्यम: हाई-टेक आग्री-परामर्श और कृषि इनपुटों की बिक्री

मूल गतिविधि: भारती एजेंसीस कृषि-परामर्श से संबंधी विभिन्न सेवाएं प्रदान करती है। यह एजेंसी किसानों, बागवानों, पॉली-हाउस मालिकों, सब्जी उत्पादकों, किसानों की सटीक खेती, आदि के साथ काम कर रही है। भारती एजेंसीस ने गुणवत्ता वाले कृषि-इनपुटो की बिक्री में शामिल है। इस दुकान में बीज से लेकर मशीनरी तक 200 से अधिक उत्पाद बेचे जाते हैं।

कृषिउद्यमी: श्री थॉमस (44) सेलम जिले के निवासी है और इन्होंने कृषि और उससे संबद्ध क्षेत्र के लिए समर्थ समाधान प्रदान करने वाली एक स्टार्ट-अप परामर्श फर्म की स्थापना की। फार्मिंग टेक्नोलॉजी साइंसेज में स्नातक करने के बाद, श्री थॉमस एक बीज कंपनी में शामिल हो गए। बिक्री और विपणन में समृद्ध 11 वर्षों का अनुभव प्राप्त करने के बाद श्री थॉमस स्वयं उपक्रम शुरू करना चाहते थे। श्री थॉमस को वीएपीएस, मदुरै में उद्यमी कौशल विकास कार्यक्रम में शामिल हुए, जो कृषि-क्लिनिक और कृषि-व्यवसाय केंद्र योजना के तहत पहचान किए गए नोडल प्रशिक्षण संस्थानों में से एक है। प्रशिक्षण ने न केवल उनके आत्मविश्वास को बढ़ाया, बल्कि अपनी इकाई को और अधिक किसान हितैषी तरीके से स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया, साथ ही कुछ परिवर्तित समाधान भी ढूंढ लिया।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
10 गांवों से 150 किसान	3 व्यक्ति	25 लाख रुपये

श्री सत्यपाल सिंह
ग्राम- लाडवा, पोस्ट- लाडवा
तहसील- बाघरा, जिला-
मुजफ्फरनगर, पिनकोड-251306,
उत्तर प्रदेश, भारत

+91 9639768092

उद्यम: मुर्गी पालन, पिछवाड़े में मुर्गी पालन के लिए स्थानीय नस्ल और परामर्श

मूल गतिविधि: प्रशिक्षण पूरा होने के बाद, श्री सत्यपाल ने पोल्ट्री फार्म की स्थापना की। उन्होंने पंजाब नेशनल बैंक, मुजफ्फरनगर जिले की बाघरा शाखा से 10 लाख रुपये का बैंक ऋण लिया। इकाई में 5000 ब्रायलर पक्षी उपलब्ध हैं। सत्यपाल ने फ़ीड प्रबंधन, समय पर टीकाकरण, पानी, धूप और वातन का एक अच्छे स्रोत की व्यवस्था में गहरी देखरेख कर रहे है। पोल्ट्री शेड में स्वच्छता बनए रखने पर पक्षियों को तेजी से बढ़ने और वजन प्राप्त करने में मदद मिलती है। सत्यपालन ने बताया कि हाल ही में मैं स्थानीय पोल्ट्री नस्ल कड़कनाथ के पालन-पोषण में भी शामिल हो गया हूं।

कृषिउद्यमी: लाडवा गाँव के निवासी श्री सत्यपाल सिंह (42) एक प्रगतिशील किसान है। कृषि में स्नातक होने के बाद, उन्होंने अच्छे अवसर के लिए बहुत कोशिश की, लेकिन एक उपयुक्त नौकरी पाने में असफल रहे। जब वे कृषि-क्लिनिक और कृषि-व्यवसाय केंद्र (एसी एंड एबीसी) योजना के बारे में जानें, तो वे खेती में शामिल हो गये, वे सीएआरडी, मुज़फ्फरनगर में आयोजित उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिए।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
1500 किसान उत्तर प्रदेश राज्य	5 व्यक्ति	2 करोड़ रुपये

श्री अमित कुमार तलियान
सुपुत्र - श्री बाबूराम वर्मा,
ग्रम/पोस्ट- छुर, ब्लॉक - भुनी,
जिला- मेरठ, पिनकोड -
250342 उत्तर प्रदेश, भारत

amitkumartaliyan@gmail.com
+91 9997272080

उद्यम: सभी प्रकार के फार्म मशीनरी और जैविक कृषि इनपुट की तैयारी

मूल गतिविधि: 'गार्गी एग्रो इंडस्ट्रीज' फर्म खेती में आवश्यक सभी प्रकार की कृषि संबंधी मशीनरी के लिए एक समाधान है। श्री अमित ने बताया "हमारे विनिर्माण संयंत्रों को युक्तिपूर्वक रखा गया है, जिसका अर्थ है कि हम अपने ग्राहकों को कुशलतापूर्वक सेवा देने में सक्षम हैं,"। हम हमेशा कुशल फार्म मशीनरी की तलाश में रहते हैं जो खेती की कम लागत पर उत्पादन में वृद्धि के लिए काम करती हो। हम किसानों की मांगों पर कृषि उपकरण जैसे रोटावेटर, कल्टीवेटर, स्प्रेयर, सब-सॉइलर, लेज़र, इको-फ्रेंडली सिकल, वीडर आदि का निर्माण कर रहे हैं।

कृषिउद्यमी: अमित कुमार तलियान (33) मैनेजमेंट स्टडीज में मास्टर के साथ-साथ एक कृषि स्नातक हैं। पढ़ाई पूरी होने के बाद वे एक कृषि मशीनरी निर्माण कंपनी से जुड़ गए। बिक्री के दौरान, उनकी रुचि विनिर्माण क्षेत्र में बढ़ी, और उन्होंने आर एंड डी विभाग में काफी समय बिताया और तकनीकी जानकारी हासिल की। वह अपनी इकाई शुरू करना चाहते थे। कृषि-क्लिनिक और कृषि-व्यवसाय केंद्र (एसी एंड एबीसी) योजना के तहत वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए वे सीएआरडी, मुज़फ्फरनगर में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिए ।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
8 गांवों से 50 किसान	3 व्यक्ति	5 लाख रुपये

श्री मदन पाल
सुपुत्र- सूरज पाल तोमर,
पोस्ट- मलकपुर, H. No.- 415,
जिला- बागपत, पिनकोड - 250611
उत्तर प्रदेश, भारत

smtmpt@gmail.com
+91 8057434885

उद्यम: मछली पालन और परामर्श

मूल गतिविधि: श्री मदन के पास 2 बीघा के चार पानी के तालाब हैं जो प्रत्येक के आधे एकड़ के बराबर हैं। श्री मदन पाल के खेत में लगभग एक एकड़ में मछली पालन के लिए सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। आम तौर पर पालन की जाने वाली पाँच प्रजातियाँ हैं - कटला (कटला कटला), रोहू (लबियो रोहिता), मृगल (सिरहिनस मृगला), सिल्वर कार्प (हाइपोथैल्मिचिस मोलिट्रिक्स), ग्रास कार्प (केटेनोफ्रींजोडोन आइडेला)। ये अंतर्देशीय जल प्रणाली में मछलियों की सबसे सभ्य प्रजाति मानी जाती है। हर साल मदन जून के मध्य से फिंगरलिंग डालना शुरू करते थे और उसे सितंबर तक जारी रखते थे। मदन ने बताया - ब्रूड-फिश की न्यूनतम गड़बड़ी, ट्रे-फीडिंग और एक अच्छी इको-हैचरी की उपलब्धता ने उनके उपक्रम में सफलता को जोड़ा।

कृषिउद्यमी: श्री मदन पाल, आयु 41 वर्ष, उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के तोमल गाँव में स्थित 'सोना फिश फार्म' के मालिक हैं और मूल रूप से एक कार्प बीज उत्पादक और मछली किसान हैं। उन्होंने बताया, "उन्हें वैज्ञानिक विशेषज्ञता सीएआरडी, मुज़फ्फरनगर में आयोजित एग्री-क्लीनिक और एग्री-बिजनेस सेंटर (एसी व एबीसी) योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा होने के बाद ही प्राप्त हुई । अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद मैं पारंपरिक रूप से मत्स्य पालन में शामिल हुआ। हालांकि, वैज्ञानिक और वाणिज्यिक मछली उत्पादन ने मुझे बहुत लाभ पहुंचाया"।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
15 गांवों से **150** किसान	**4** व्यक्ति	**15** लाख रुपये

श्री राशीद अहमद
सुपुत्र- श्री जाहिद हसन,
गाँव- अब्दुल्लापुर, तेल-बेहट,
जिला- सहारनपुर,
पिन-247121, उत्तर प्रदेश, भारत

rashidahmad253@gmail.com
+91 9756221044

उद्यम: संरक्षित और खुले क्षेत्र के सब्जियों की नर्सरी

मूल गतिविधि: 50,000/- रु. के कम निवेश के साथ श्री रशीद अहमद ने सब्जी की फसल की नर्सरी शुरू की। नर्सरी में सब्जी, टमाटर, बैगन, मिर्च, हरी/लाल मिर्च, सभी गार्ड, ककड़ी, इत्यादि सब्जियों को उगाये जाने लगा और उसकी बिक्री साल भर की जाने लगी । रशीद ने बताया "पौधों की उगाई मूल रूप से की जाती थी और अच्छी तरह से स्थापित रूट सिस्टम के साथ वितरित की जाती हैं"।

कृषिउद्यमी: उत्तर प्रदेश में सहारनपुर जिले के अब्दुल्लापुर गाँव के श्री रशीद अहमद (26) ने कृषि में इंटरमीटिएट की तथा वे एक बहुत गतिशील कृषि उद्यमी हैं और वर्ष 2010 से कृषि और ग्रामीण विकास केंद्र (सीएआरडी), मुज़फ्फरनगर से जुड़े। शुरुआती दिनों में, उन्होंने नोडल प्रशिक्षण संस्थान को खानपान सेवाएं प्रदान कीं। एक बार एक चर्चा में, उन्होंने कृषि-क्लिनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी एंड एबीसी) योजना के बारे में जाना। यह जानकर कि इंटरमीडीएट कृषि उम्मीदवार भी प्रशिक्षण के लिए आवेदन कर सकते हैं, तो वे बहुत प्रसन्न हुए और कोई देरी किए बिना प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हो गये। राशीद ने बताया "अनुभव ही प्रमुख सीख है, एक स्थापित इकाई में तकनीकी और प्रबंधकीय कौशल के लिए तीन दिन का प्रशिक्षण अनिवार्य था"। उन्होंने एक नर्सरी के साथ काम किया और सभी जानकारी ली और आश्चर्यचकित हुए कि, सब्जी के बीजों की कीमत 5 रु. से लेकर 35 रु. तक होती है। प्रशिक्षण के बाद, वे नर्सरी के व्यवसाय में शामिल हुए।

सेवा प्राप्त किसान	रोजगार	वार्षिक टर्नओवर
3 गांवों से **200** किसान	**1** व्यक्ति	**10** लाख रुपये

श्री तारा प्रसाद गौड़ा
ग्राम/पो. - अनदुडाडी, पो.-नांदेर, जिला, गंजाम, उड़ीसा, भारत

goudatara@gmail.com
+91 7873281849

उद्यम: धान विशिष्ट कृषि उपकरणों के लिए कस्टम हायरिंग सेंटर

मूल गतिविधि: 'ओम एग्रो एजेंसी' एक कस्टम हायरिंग सेंटर है जिसकी स्थापना धान उगाने वालों के लिए कृषि यंत्रों को किराए पर देने के लिए 15 लाख रुपये की पूंजी के साथ की गई थी। एक महीने के भीतर ही श्री तारा प्रसाद गौड़ा को कृषि उपकरणों की माँग मिली और उन्होंने अपने गाँव और अन्य तीन गाँवों से लगभग 7-10 किलोमीटर के क्षेत्र को कवर करने वाले 200 से अधिक किसानों को सेवा प्रदान की। उनके उपकरणों को किराए पर सेवा के लिए प्रदान किये जाते हैं, उनके पास ट्रैक्टर चलाकर किसानों के लिए बुनियादी काम करने के लिए एक ड्राइवर भी है। किराए पर देने वाले कृषि उपकरण हैं - पैडी हर्वेस्टर, रोटावेटर, केज व्हील, एक्सेल धान कोल्हू, लाइन टिलर, पानी पंप और एक ट्रैक्टर आदि । रोटावेटर और केज व्हील के लिए किराया दर लगभग 700/- रु. प्रति घंटा, एक्सेल धान कोल्हू 900/- रु. प्रति घंटा, लाइन टिलर 7/- रु. प्रति घंटा और पानी का पंप 300/- प्रति घंटा है।

कृषिउद्यमी: श्री तारा प्रसाद गौडा एक 23 वर्षीय नवोदित उद्यमी हैं और अब एक कस्टम हायरिंग सेंटर-"ओम एग्रो एजेंसी" के सगर्व मालिक हैं । वे 2016 में सेंटर फॉर यूथ एंड सोशल डेवलपमेंट (सीवाईएसडी), भुवनेश्वर में एग्री-क्लिनिक और एग्री-बिजनेस सेंटर प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षित हुए।

कृषि-क्लीनिक और कृषि-व्यापार केंद्र (एसी एवं एबीसी) योजना कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की एक प्रमुख योजना है, जिसे 9 अप्रैल, 2002 को प्रारंभ किया गया था। राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान (मैनेज) इस योजना को लागू करने के लिए नोडल एजेंसी है। इस योजना के लिए देश भर में फैले 132 नोडल प्रशिक्षण संस्थानों का एक नेटवर्क हैं। इस योजना का उद्देश्य कृषि उद्यमों को स्थापित करने के लिए योग्य कृषि पेशेवरों को सुविधा प्रदान करके सार्वजनिक उद्यमों के प्रयासों का पूरक बनाना है और किसानों को उनके दहलीज पर मूल्यवर्धित विस्तार सलाहकार सेवाएं प्रदान करना है। इसके अलावा कृषि उद्यमियों को स्व-रोज़गार के अवसर प्रदान करना है। हितधारकों द्वारा किए गए प्रयासों के परिणाम स्वरूप 60,063 कृषि स्नातकों के प्रशिक्षण और देश भर में 25,865 सफल कृषि उद्यमों की स्थापना संभव हो पाई हैं। उद्यमिता ने देश में रोजगार उत्पन्न करने और ग्रामीण युवाओं के प्रवास को कम करने के मामले में दोहरा प्रभाव डाला हैं। एग्रिप्रेन्यूरों की कई सफल कहानियों को विभिन्न राज्यों से कृषि विस्तार और कृषि उद्यमिता में बढ़ते महत्व को दर्शाते हुए रिपोर्ट किया गया है और इस प्रकाशन में 200 उद्यमशील कृषिउद्यमियों की कहानियाँ संकलित है (www.agriclinics.net)।

MANAGE
मैनेज

राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान (मैनेज)

(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार का संगठन)

राजेंद्रनगर, हैदराबाद – 500 030, तेलंगना राज्य, भारत

www.manage.gov.in